

मैं मौत को ध्यान में रखकर जीना चाहता हूँ।

विषय-सूची

परिचय

आइए मृत्यु के प्रति एक नज़रिया अपनाएँ।

एक संत की मृत्यु

“जीवित लोग इसे दिल से लेंगे”

अंत सभी के लिए एक जैसा होता है।

मृत्यु अंत नहीं है।

मेरे मरने से पहले...

“अपने घर-बार को व्यवस्थित करें”

इसहाक, मारे जाने के डर से

मृत्यु का सामना करने का संकल्प

वर्तमान दुःख और भविष्य की महिमा

“काश मैं तुम्हारी जगह मर जाता”

जीवन का सुखद अंत कैसे किया जा सकता है?
मरने से पहले करने योग्य बातें
अपने प्रिय परिवार से बिछड़ने के लिए मुझे कैसे तैयारी करनी चाहिए?
आइए अंतिम संस्कार की तैयारी पहले से ही सावधानीपूर्वक करें।
"मेरे आँसुओं को अपनी बोतल में रख लें"
जब हमें कोई लाइलाज बीमारी हो जाए और जब हम उससे ठीक हो जाएँ
जब मेरी मृत्यु का समय निकट आए
जीवन और मृत्यु के मोड़ पर भी ईश्वर का धन्यवाद करने के तीन कारण?
काम-काज से विराम और विश्राम पाना
मैं शांति से आँखें मूँदना चाहता हूँ।
मृत्यु अब और नहीं होगी।
क्या होगा यदि मृत लोग फिर से जीवित न हों?
"वह तुम्हारे नश्वर शरीरों को भी जीवन देगा"
पुनरुत्थान की आशा
उन लोगों के विषय में जो सो गए हैं
मेरी मृत्यु है...
मैंने अपनी मृत्यु पर विचार किया है।
हमें अपनी मृत्यु पर विचार करना चाहिए।
नए साल के दिन, 1 जनवरी से...
जीवन का समापन?
यदि ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाए जहाँ मैं पूरी तरह से वेंटिलेटर पर निर्भर रहूँ...
मुझे गेहूँ का एक दाना बन जाना चाहिए...
मृत्यु के माध्यम से भी...
मृत्यु
"मृत्यु पर चिंतन"
क्या मृत्यु को गंभीरता से अनुभव करने की आवश्यकता है?

"यदि आपको फिर से जीवन मिले, तो आप कैसे जीना चाहेंगे?"

आइए मृत्यु के प्रति एक नज़रिए के साथ जिएँ।

हमें मृत्यु के प्रति एक नज़रिया अपनाना चाहिए।

हमें इस नज़रिए के साथ जीना चाहिए... क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु...

किसी प्रियजन की मृत्यु...

किसी प्रियजन की मृत्यु के माध्यम से...

एक शहीद की पत्नी की डायरी

क्या प्रेम मृत्यु से अधिक शक्तिशाली नहीं होना चाहिए? ...

कैंसर रोगी की भावनाएँ?

"प्रेम मृत्यु के समान शक्तिशाली है"

मरने से पहले क्षमा करें

मरने से पहले आपको मेल-मिलाप कर लेना चाहिए। अगर आप ऐसा नहीं करते हैं, तो आपको ज़िंदगी भर पछताना पड़ेगा।

मौत ही सब कुछ खत्म नहीं करती।

मौत भी खूबसूरत होती है।

सच तो यह है कि हमारे पास प्यार करने के लिए ही समय है।

टाइटेनिक के डूबने के बारे में बचे हुए एक अफ़सर की दिल को छू लेने वाली कहानी

मंगोलिया की एक बहन की आखिरी इच्छा और वसीयत

मौत

बच्चों के साथ बातचीत

सबसे बड़ी संतान की मौत

पापा ने क्या सबक सीखा?

चिंता मत करो, माँ!

"मैं पापा का अंतिम संस्कार करने जा रहा हूँ"

दादी जैंग का प्यार भरा चुंबन

मैं दुख बाँटना और साथ मिलकर रोना चाहता हूँ।

दादी इम बोंग-ही

नेल क्लिपर (नाखून काटने वाला)

नर्सिंग होम जाना

स्वर्गीय मिस्टर ली जिन-गू, शांति से आराम करें

मेरी सबसे बड़ी बुआ के पति

हमें कुछ देने का मौका नहीं गँवाना चाहिए...

मुझे उनकी याद आएगी।

दादी चोई बुन-नाम

स्वर्गीय दादी चोई बुन-नाम की यादें

निष्कर्ष

परिचय

प्रभु मुझे मृत्यु के बारे में एक नज़रिया सिखा रहे थे।

जब मैं कुछ समय के लिए कोरिया लौटा ताकि सियोह्युन चर्च में एजुकेशन पास्टर के तौर पर सेवा कर सकूँ, तो प्रभु ने मेरे दिल में युवाओं के लिए एक लगन और जुनून पैदा किया। हालाँकि, मत्ती 16:18 के वादे—“मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा”—के ज़रिए, उन्होंने मुझे सेंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च वापस भेजा ताकि मैं वहाँ के बुजुर्ग सदस्यों की सेवा कर सकूँ। मैंने बहुत संघर्ष किया और प्रार्थना की, ताकि इस मामले में प्रभु की इच्छा को समझ सकूँ। इस दौरान, उन्होंने मुझे इन बुजुर्ग सदस्यों के अंतिम संस्कार कराने का काम सौंपा, जिससे मुझे अपनी खुद की मृत्यु के बारे में भी सोचने का मौका मिला। मृत्यु के बारे में उन्होंने मुझे जो सबक सिखाए, उनसे मेरे दिल में यह नज़रिया पैदा हुआ। मुझे कुछ हद तक यह एहसास हुआ कि यही प्रभु की इच्छा थी: मुझे सेंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च वापस लाकर बुजुर्गों की सेवा करने का मौका देकर, वे मुझे सिखा रहे थे कि मृत्यु को किस नज़रिए से देखना चाहिए। उस समय से, मैंने खुद को और अपनी कलीसिया के सदस्यों को मृत्यु के प्रति इस नज़रिए के साथ जीने के लिए प्रोत्साहित करना शुरू किया। इसके अलावा, मैंने इन शिक्षाओं को—इस बात पर ज़ोर देते हुए कि हम सभी को मृत्यु के प्रति एक सही नज़रिया अपनाकर जीना चाहिए—ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म जैसे कि मेरे नेवर ब्लॉग, फ़ेसबुक और काकाओस्टोरी के ज़रिए साझा करना शुरू किया।

फिर, कल सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान, यशायाह 40:1—“तुम्हारा परमेश्वर कहता है, ‘सांत्वना दो, हाँ, मेरे लोगों को सांत्वना दो!’”—पर उपदेश देने के बाद, जब मैं अकेले प्रार्थना कर रहा था, तो अचानक मेरे मन में एक विचार आया: यह बहुत अच्छा होगा अगर मैं अपने नेवर ब्लॉग पर लिखी उन पोस्ट्स को इकट्ठा करूँ जिनमें मृत्यु के प्रति उस नज़रिए का ज़िक्र है जो प्रभु ने मुझे सिखाया था, उन्हें एक पांडुलिपि (मैन्युस्क्रिप्ट) में संकलित करूँ और कलीसिया के साथ साझा करूँ। मेरी उम्मीद यह थी कि न केवल उन लोगों को सांत्वना दी जाए जो अपने प्रिय परिवार के सदस्यों, दोस्तों या विश्वास में भाई-बहनों को खोने का दुख झेल रहे हैं, बल्कि उन्हें थोड़ी मदद भी दी जाए ताकि वे भी मृत्यु के प्रति उस नज़रिए को अपना सकें जो प्रभु ने मुझे सिखाना शुरू किया है।

इसी मकसद से, मैंने अपने ब्लॉग से उन सभी पोस्ट्स को इकट्ठा करने में समय लगाया है जो मृत्यु के प्रति इस नज़रिए को विकसित करने में मदद कर सकती हैं, और उन्हें यहाँ "मैं मृत्यु के प्रति एक नज़रिए के साथ जीना चाहता हूँ" शीर्षक के तहत संकलित किया है। इन लेखों में मुख्य रूप से धर्मग्रंथों पर चिंतन, संक्षिप्त मनन और मेरे परिवार व चर्च की सेवकाई के अनुभवों का विवरण शामिल है। मेरी प्रार्थना है कि प्रभु मेरे दिल की इच्छा पूरी करें—कि मैं मौत के बारे में इस नज़रिए के साथ उनकी मर्ज़ी के मुताबिक़ जी सकूँ और आखिर में एक सुंदर अंत पा सकूँ—और यह कि इस लेख के ज़रिए, वे अपने लोगों को दिलासा दें और उनमें भी यही नज़रिया पैदा करें।

यीशु मसीह के बारे में सोचते हुए, जो मुझ जैसे पापी के लिए क्रूस पर मरे,

पास्टर जेम्स किम का एक संदेश

(1 अगस्त, 2018; उन प्यारे भाइयों और बहनों को याद करते हुए जो पहले ही प्रभु की गोद में जा चुके हैं)

आइए मौत के नज़रिए को अपनाएँ।

“दावत वाले घर में जाने से शोक वाले घर में जाना बेहतर है, क्योंकि यही सभी इंसानों का अंत है, और जो जीवित हैं, वे इस बात पर गंभीरता से विचार करेंगे” (सभोपदेशक 7:2)।

2008 की शुरुआत से, मैं दो अंतिम संस्कार में शामिल हो चुका हूँ—और दोनों ही एक हफ़्ते के अंदर हुए। इन अंतिम संस्कारों में शामिल होने से मुझे सभोपदेशक 7:2 पर फिर से सोचने का मौका मिला। इस बात पर विचार करते हुए कि मौत ही हर किसी का अंतिम अंत है, और एक जीवित व्यक्ति के तौर पर इसे दिल से महसूस करते हुए, मैंने खुद से फिर पूछा, “तो फिर, मुझे कैसे जीना चाहिए?” खासकर आज, यह खबर सुनकर कि मेरे प्यारे तीसरे चाचा, रेवरेंड किम चांग-ह्युक, के पास डॉक्टर के अनुसार जीने के लिए केवल दो या तीन हफ़्ते बचे हैं, मैं इस आयत पर गहराई से सोचने के लिए प्रेरित हुआ। इन विचारों के बीच, मुझे मौत के नज़रिए को ध्यान में रखकर जीने की चुनौती महसूस हुई।

हमें मौत के नज़रिए से क्यों जीना चाहिए? क्योंकि ऐसा करने से हमें फ़ायदा होता है। वह फ़ायदा क्या है? वैसे तो कई फ़ायदे हैं, लेकिन मैं तीन खास बातें बताना चाहूँगा।

पहली बात, जब हम मौत के नज़रिए से जीते हैं, तो हम इंसानों की कमज़ोरी और बेबसी को स्वीकार करते हैं, जिससे हम पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर हो जाते हैं।

उन दो अंतिम संस्कारों में शामिल होने से मुझे फिर से याद आया कि इंसान उसी मिट्टी में लौटने के लिए बने हैं जिससे वे आए थे। मुझे याद दिलाया गया कि, जैसा कि बाइबल कहती है, हम उस धुंध की तरह हैं जो थोड़ी देर

के लिए दिखाई देती है और फिर गायब हो जाती है (याकूब 4:14)। मौत के सामने खड़े होकर, कोई भी इंसान अपनी पूरी बेबसी और कमज़ोरी महसूस किए बिना नहीं रह सकता। कोई कितना भी ताकतवर, मशहूर या अमीर क्यों न हो, हर इंसान मौत के सामने बेबसी और लाचारी महसूस करता है। खासकर मेरे जैसे युवाओं को अंतिम संस्कार में शामिल होना चाहिए। ऐसा करने से हम इंसानी कमज़ोरी और बेबसी को पूरी तरह समझ पाते हैं। ऐसी कोशिश क्यों करें? मैं ऐसा इसलिए करता हूँ ताकि मैं अपनी ताकत पर भरोसा करना छोड़ सकूँ। दूसरे शब्दों में, मैं अंतिम संस्कार में इसलिए शामिल होना चाहता हूँ ताकि मैं खुद पर निर्भरता छोड़ सकूँ और इसके बजाय परमेश्वर की शक्ति और सामर्थ्य पर निर्भर हो सकूँ। हमें खुद को विनम्र बनाना होगा—सिर्फ दूसरों के सामने ही नहीं, बल्कि पूरी तरह से परमेश्वर के सामने भी। परमेश्वर की उपस्थिति में मौत के बारे में सोचते हुए, हमें अपनी ताकत को एक तरफ़ रखकर उनके सामने झुकना चाहिए और उनकी शक्ति पर भरोसा करना चाहिए। अंतिम संस्कार के ज़रिए, हमें यह सीखना चाहिए कि जीवन, मृत्यु, सौभाग्य और दुर्भाग्य को परमेश्वर ही नियंत्रित करते हैं। हमें परमेश्वर की सर्वोच्चता को मानना और इस सच्चाई को स्वीकार करना सीखना चाहिए कि हमारा जीवन पूरी तरह से प्रभु पर निर्भर है। ऐसा करने के लिए, हमें मौत के नज़रिए से खुद को देखना होगा।

व्यक्तिगत रूप से, मुझे अक्सर भजन 342, "व्हेन ट्रायल्स कम" (या "व्हेन आई फेस डिफिकल्टीज़") गाना अच्छा लगता है। पहले पद और कोरस के बोल कुछ इस तरह हैं: (पद 1) "जब मैं मुश्किलों का सामना करता हूँ और मेरा विश्वास कमज़ोर होता है, तो मैं उस प्रभु पर और ज़्यादा निर्भर होता हूँ जिस पर मेरा भरोसा है"; (कोरस) "जैसे-जैसे समय बीतता है, वही मेरा एकमात्र सहारा है; चाहे जो भी हो, मेरा भरोसा यीशु पर है।" मेरे प्रियजन अभी जिन मुश्किलों का सामना कर रहे हैं, उनके ज़रिए परमेश्वर मुझे यह एहसास दिला रहे हैं कि मेरा अपना विश्वास कितना कमज़ोर है। नतीजतन, प्रभु मुझे पूरी तरह से केवल उन्हीं पर निर्भर रहने की ओर ले जा रहे हैं। जैसे-जैसे समय बीत रहा है, मैं इंसानी कमज़ोरी और परमेश्वर की ताकत के बारे में सीख रहा हूँ, साथ ही इस सच्चाई का भी सामना कर रहा हूँ कि इंसान बूढ़े होते हैं और बीमार पड़ते हैं। इसलिए, मेरी और भी ज़्यादा इच्छा है कि मैं मौत के नज़रिए से अपने जीवन को देखूँ।

दूसरी बात, जब हम मौत के नज़रिए से जीते हैं, तो हम क्षणभंगुर चीज़ों के बजाय शाश्वत चीज़ों को पाने की कोशिश करते हैं।

हम अक्सर कहते हैं कि हम इस दुनिया में खाली हाथ आते हैं और खाली हाथ ही जाते हैं। फिर भी, यह सच्चाई जानने के बावजूद, हम व्यस्त जीवन जीते हैं और अपने हाथों को चीज़ों से भरने की कोशिश करते हैं। जब हम किसी प्रियजन के अंतिम संस्कार में शामिल होते हैं, तो हम एक बार फिर सोचने पर मजबूर हो जाते हैं—चाहे कुछ ही पल के लिए सही—कि हम किसके लिए जी रहे हैं और हमें कैसे जीना चाहिए। लेकिन जल्द ही, हम अंतिम संस्कार में किए गए संकल्पों को भूल जाते हैं और एक बेचैन, व्यस्त जीवन में लौट आते हैं, और एक बार फिर अपने हाथों को चीज़ों से भरने की कोशिश करने लगते हैं। बिना सच्चा आराम पाए इतनी कड़ी मेहनत करने का क्या नतीजा निकलता है? आखिरकार, हम अंत में खाली हाथ ही कब्र में जाएंगे। अगर हम यीशु में सच में विश्वास करते हैं, तो हमें अंतिम संस्कार के मौकों का इस्तेमाल अपनी ज़िंदगी के बारे में मौत के नज़रिए से सोचने के लिए करना चाहिए। हमें यह भी सोचना चाहिए कि धरती पर भगवान ने हमें जो बाकी दिन दिए हैं, उनमें हमें कैसे और किस मकसद के लिए जीना चाहिए। ऐसा करने से, हम अपना ध्यान इस दुनिया की चीज़ों के बजाय ऊपर की चीज़ों पर लगाएंगे और हम कुछ समय के लिए रहने वाली चीज़ों के बजाय हमेशा रहने वाली चीज़ों को पाने का संकल्प लेंगे। हमें एहसास होगा कि यह दुनिया हमारा घर नहीं है और, इब्रानियों 11 में बताए गए विश्वास के नायकों की तरह, हम एक बेहतर देश और स्वर्ग की यात्रा करने की इच्छा रखेंगे। ऐसा क्यों है? क्योंकि जब हम दुनिया को मौत के नज़रिए से देखते हैं, तो हमें उपदेशक सुलैमान की बात माननी ही पड़ती है कि जिन दुनियावी चीज़ों के पीछे हम भागते हैं, वे पूरी तरह से बेकार हैं (सभोपदेशक 1:2; 12:8)। हमें एहसास होता है कि जब यह दुनिया खत्म हो जाएगी, तो सिर्फ़ वही चीज़ें हमेशा के लिए रहेंगी जो कभी खत्म नहीं होतीं। हम उन क्षणभंगुर चीज़ों को छोड़ना सीखते हैं जिनकी हमने कभी इच्छा की थी और जिनके पीछे हम इस दुनिया में भागे थे; अब हम उन्हें ज़्यादा महत्व नहीं देते। ऐसा करते हुए, हम एक बार फिर उन चीज़ों को महत्व देने और उनके लिए जीने का संकल्प लेते हैं जो सच में हमेशा रहने वाली हैं। हम हमेशा रहने वाले प्रभु के लिए, हमेशा रहने वाले प्यार से प्रेरित होकर और हमेशा रहने वाले वचन से निर्देशित होकर, हमेशा रहने वाली आत्माओं के साथ सुसमाचार साझा करने की अपनी प्रतिबद्धता को नवीनीकृत करते हैं।

जब मैं अपने प्रियजनों के शरीरों को देखता हूँ—जो मिट्टी से आए थे और मिट्टी में ही मिल जाते हैं—या उनमें रखे ताबूतों को देखता हूँ, तो मैं अक्सर अपनी मौत और अंतिम संस्कार के बारे में सोचता हूँ। मैं खुद को सभोपदेशक 7:1 के अर्थ पर विचार करते हुए पाता हूँ, जो बताता है कि मौत का दिन जन्म के दिन से बेहतर होता है। राजा सुलैमान, जो उपदेशक थे, ने कहा था कि अच्छा नाम कीमती इत्र से बेहतर है (पद 1); मैं सोचता हूँ कि क्या मेरी

मौत के बाद, "किम जी-वोन" या "जेम्स किम" नाम को वे लोग अच्छे से याद रखेंगे जिन्हें भगवान ने मेरी ज़िंदगी में रखा है। मैं कल्पना करता हूँ कि कितने लोग मेरे नाम के बारे में सोचेंगे और कहेंगे, "किम जी-वोन (जेम्स किम) ने हमेशा रहने वाली चीज़ों को पाने की कोशिश की और अब वह उस हमेशा रहने वाली जगह पर चले गए हैं जिसकी उन्होंने बहुत गहराई से इच्छा की थी।" दोस्तों, आने वाली दुनिया के नागरिकों के तौर पर इस दुनिया में जीने के लिए, हमें ऐसे नज़रिए के साथ जीना होगा जो मौत को अपनाता हो। हमें इस दुनिया में रहते हुए हमेशा रहने वाली चीज़ों को पाने की कोशिश करनी चाहिए और हमेशा रहने वाला नज़रिया रखना चाहिए। आखिर में, तीसरा पॉइंट: मौत को ध्यान में रखकर जीने से हम अपने समय का सही इस्तेमाल कर पाते हैं।

जो लोग मौत को ध्यान में रखकर जीते हैं, वे समझदार होते हैं। और समझदार लोग उस चीज़ को अपनाते हैं जो हमेशा रहने वाली है। ऐसे में, समझदार व्यक्ति इस बात का ध्यान रखता है कि वह कैसा व्यवहार करता है और सचमुच समझदारी से जीता है (इफिसियों 5:15)। मिसाल के तौर पर, समझदार व्यक्ति नशे और अय्याशी भरी ज़िंदगी नहीं जीता (वचन 18)। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे ऐसी जीवनशैली को मूर्खतापूर्ण मानते हैं (वचन 17)। यह जानते हुए कि समय बुरा है, वे अपने समय का सही इस्तेमाल करते हैं (वचन 16)। इसके अलावा, वे प्रभु की इच्छा को समझने और उसे पूरा करने की कोशिश करते हैं (वचन 17)। नतीजतन, वे पवित्र आत्मा से भरी ज़िंदगी जीते हैं और दिल से परमेश्वर की स्तुति और आराधना करते हैं (वचन 19)। वे हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से हर चीज़ के लिए पिता परमेश्वर का लगातार धन्यवाद करते हुए भी जीते हैं (वचन 20)।

यह ज़िंदगी की एक सच्चाई है कि जैसे-जैसे हमारी उम्र बढ़ती है, हमें एहसास होता है कि समय कितनी तेज़ी से बीतता है—हालाँकि, बहुत से लोग इस सच्चाई को नज़रअंदाज़ करते हैं और अपना समय बर्बाद करते हैं। तो फिर, हम तेज़ी से बीतते इस समय का सही इस्तेमाल कैसे कर सकते हैं? किसी अंतिम संस्कार में शामिल होना और अपनी मौत के बारे में सोचना एक तरीका है। हम अक्सर अपनी ज़िंदगी बहुत व्यस्तता में बिताते हैं, मानो हम हमेशा जीवित रहेंगे; फिर भी, जब हम किसी प्रियजन के अंतिम संस्कार में शामिल होते हैं, तो हमें कम से कम रुककर अपनी ज़िंदगी पर नज़र डालनी चाहिए और उसके आखिरी अंजाम के बारे में सोचना चाहिए। हमें सोचना चाहिए कि हमें कैसे जीना चाहिए और अपनी ज़िंदगी का अंत कैसे करना चाहिए। वजह यह है कि हमारा अपना अंतिम संस्कार भी ज़्यादा दूर नहीं है; हमारे बीच का फ़र्क बस डिग्री का है—जैसे ओक के बीजों की ऊँचाई की तुलना करना।

मैं चालीस साल का हो चुका हूँ। अगर औसत उम्र सत्तर या अस्सी साल है, तो मैंने अपनी आधी ज़िंदगी जी ली है—हालाँकि, सिर्फ़ परमेश्वर ही जानते हैं कि वे मुझे कब अपने पास बुलाएँगे। हाल ही में, मैं गुज़रते हुए हर दिन की अहमियत के बारे में सोच रहा हूँ, क्योंकि कोई नहीं जानता कि कल क्या होगा। चूँकि परमेश्वर ने मुझे यह दिन दिया है, इसलिए मैं बस उनकी महिमा के लिए पूरी तरह से जीने की कोशिश करता हूँ; जहाँ तक कल की बात है, अगर उनकी मर्ज़ी हुई, तो मुझे यकीन है कि मैं इसी सोच के साथ जी सकता हूँ। न तो मेरी इच्छा है कि मैं पुरानी बातों में उलझा रहूँ, और न ही मुझे भविष्य की तैयारी के नाम पर चिंता करने की ज़रूरत महसूस होती है। मैं बस हर दिन प्रभु के साथ चलने वाली ज़िंदगी जीना चाहता हूँ—जो खुशी, आनंद और कृतज्ञता से भरी हो। मेरा मानना है कि अगर मैं इस तरह जीऊँ, तो अगर आज रात मेरी मृत्यु भी हो जाए, तो भी मैं आभारी मन से प्रभु के सामने खड़ा हो सकूँगा। आखिर, जो साल बीत चुके हैं, उनके बारे में क्या किया जा सकता है? मुझे नहीं पता कि ईश्वर ने मेरे लिए इस धरती पर कितना समय रखा है—और न ही मुझे यह जानने की ज़रूरत है—लेकिन मैं बस हर दिन प्रभु पर भरोसा करते हुए उन चीज़ों की ओर बढ़ना चाहता हूँ जो अनंत हैं। मैं उनकी महिमा के लिए जीना चाहता हूँ, उनके साथ-साथ चलना चाहता हूँ और उस सेवा-कार्य को ईमानदारी से पूरा करना चाहता हूँ जो उन्होंने मुझे सौंपा है।

प्यारे पादरी किम चांग-ह्युक अभी बहुत कमज़ोर हो गए हैं। मुझे याद है कि उन्हें सोफ़े से खुद उठने में भी कितनी तकलीफ़ होती थी। फिर भी, उस हालत में भी, वे पूरे भरोसे के साथ भजन 40 का कोरस ज़ोरदार आवाज़ में गाते थे—"मेरी आत्मा प्रभु की महानता और महिमा की स्तुति करती है"। भले ही उनका शरीर बहुत कमज़ोर है, लेकिन उनकी आत्मा एक बाज़ की तरह स्वर्ग की ओर उड़ान भरती है। उनकी आत्मा, जो परमेश्वर की महानता और महिमा की स्तुति करती है, पूरी तरह से उस अनंत परमेश्वर पर टिकी है। उनकी इस सच्ची प्रार्थना में शामिल होते हुए—चाहे कितनी भी अपूर्णता के साथ क्यों न हो—कि केवल परमेश्वर की महिमा प्रकट हो, मैं परमेश्वर और आप सभी के सामने यह स्वीकार करता हूँ: "मैं ऐसे जीना चाहता हूँ जैसे मैं पहले ही मर चुका हूँ।" मैं मौत को ध्यान में रखकर जीना चाहता हूँ। इसके लिए, मैं राजा सुलैमान—जो उपदेशक भी थे—की सलाह मानना चाहता हूँ और अंतिम संस्कार की सभाओं में जाना चाहता हूँ। मैं अंतिम संस्कार में शामिल होना चाहता हूँ और जीवित रहते हुए भी मौत—यानी इस दुनिया में जीवन के अंत—के बारे में सोचना चाहता हूँ। मैं इसे गहराई से महसूस करना चाहता हूँ और इसे अपने दिल में बसा लेना चाहता हूँ। और मौत के प्रति इसी नज़रिए के साथ,

मैं अपने बाकी दिन जीना चाहता हूँ—प्रभु पर और ज़्यादा भरोसा करते हुए और अनंत चीज़ों की ओर बढ़ते हुए। मेरा विश्वास है कि ऐसा करने से, मैं मौत के बाद भी हमेशा जीवित रहूँगा। आमीन।

“ज़िंदा लोग इस बात को दिल से लगाएंगे।”

“अच्छा नाम कीमती मरहम से बेहतर है, और मौत का दिन जन्म के दिन से बेहतर है। दावत वाले घर में जाने से बेहतर है मातम वाले घर में जाना, क्योंकि यही हर इंसान का अंत है, और ज़िंदा लोग इस बात को दिल से लगाएंगे। हंसी से बेहतर है दुख, क्योंकि चेहरे की उदासी से दिल खुश होता है। समझदार का दिल मातम वाले घर में होता है, लेकिन मूर्खों का दिल मौज-मस्ती वाले घर में होता है” (उपदेशक 7:1-4)।

मुझे कोरियाई न्यूज़ चैनल YTN पर रात 11 बजे के प्रसारण में देखा गया एक न्यूज़ सेगमेंट याद है। इसमें कोरिया के ग्योंगगी-डो में एक “डेथ एक्सपीरियंस सेंटर” (मौत का अनुभव कराने वाला केंद्र) दिखाया गया था, जहाँ लोग अपनी मौत का नकली अनुभव कर सकते थे। इसमें हिस्सा लेने वाले लोग अपनी अंतिम संस्कार वाली तस्वीरें खिंचवाते, अपनी वसीयत लिखते और पढ़ते, और यहाँ तक कि अपनी तस्वीरें लेकर एक नकली मुर्दाघर में जाते और ज़ोर-ज़ोर से अपनी वसीयत पढ़ते। मैंने कई लोगों को—खासकर उन्हें जो अपनी वसीयत पढ़ रहे थे—आँसू बहाते देखा। सिर्फ़ वसीयत पढ़ने के अलावा, लोग सचमुच ताबूत में लेटते थे। फिर, कोई दूसरा व्यक्ति धीरे-धीरे ढक्कन पर मिट्टी डालता था। ऊँचाई से मिट्टी गिरते हुए और उसकी आवाज़ गूँजते हुए देखकर, मुझे एहसास हुआ कि ताबूत के अंदर लेटे हुए वह आवाज़ सुनने से ज़िंदा लोगों को मौत का अनुभव बहुत असली लगेगा। इस अनुभव से गुज़रने वाले लोगों की प्रतिक्रियाएँ ज़्यादातर ऐसी थीं, “मैं और जीना चाहता हूँ।” उन्होंने यह भी कहा कि इस पूरी प्रक्रिया के दौरान, उनके मन में सबसे ज़्यादा

ख्याल अपने परिवार का आया। एक इंटरव्यू में, केंद्र के डायरेक्टर ने बताया कि आज के दौर में जब लोग "अच्छी सेहत" (well-being) पर इतना ध्यान देते हैं, तो उन्होंने यह प्रोग्राम इसलिए शुरू किया ताकि लोग "अच्छी मौत" (well-dying) के लिए तैयार हो सकें। हो सकता है कि यह खबर देखकर आप सोचें, "आजकल लोग कुछ भी करते हैं," लेकिन व्यक्तिगत रूप से, मुझे लगा, "यह बहुत अच्छा विचार है।" मेरा मानना है कि अगर ऐसे अनुभव लोगों को मौत की सच्चाई को सचमुच समझने और उसके लिए तैयार होने में मदद करते हैं, तो यह अच्छी बात है।

आज के हिस्से में, उपदेशक 7:2 में, राजा सुलैमान—वह शिक्षक जिसने यह किताब लिखी—कहते हैं, "ज़िंदा लोग इस बात को दिल से लगाते हैं।" यह "बात" क्या है? यह सच है कि "सभी लोगों का अंत" मौत ही है। उपदेशक 7:2 को देखें: "दावत वाले घर में जाने से शोक वाले घर में जाना बेहतर है, क्योंकि यही सभी इंसानों का अंत है..." हमें अपनी मौत के बारे में गहराई से सोचना चाहिए। हमें गंभीरता से इस बात पर विचार करना चाहिए कि एक दिन हम भी इस ट्रेन से उतरेंगे और अपनी आखिरी मंज़िल तक पहुँचेंगे। इसलिए, हमें पूरे दिल से सोचना चाहिए कि इस सच्चाई को ध्यान में रखते हुए हम अपनी बाकी ज़िंदगी कैसे जिएँ। हम ऐसा कैसे कर सकते हैं? राजा सुलैमान उपदेशक 7:2 में हमें एक व्यावहारिक तरीका बताते हैं: शोक वाले घर में जाना (पद 2)। दूसरे शब्दों में, किसी के अंतिम संस्कार में शामिल होना मौत के बारे में सोचने का एक बेहतरीन तरीका है। शायद अपनी मौत के बारे में गहराई से सोचने का इससे बेहतर कोई तरीका नहीं है कि हम किसी के अंतिम संस्कार में शामिल हों। जब हम मरने वाले के लिए शोक मनाते हैं, तो हमें उस मौत के बारे में भी सोचना चाहिए जो हमारा इंतज़ार कर रही है। व्यक्तिगत रूप से, जब भी मैं किसी अंतिम संस्कार में शामिल होता हूँ और मौत की सच्चाई को गहराई से महसूस करता हूँ, तो अक्सर मेरे मन में एक विचार आता है: अच्छी मौत के लिए, मुझे अच्छी ज़िंदगी जीनी होगी। आखिरकार, अंतिम संस्कार इस बात पर विचार करने का एक कीमती मौका देता है कि मैं अपनी बाकी ज़िंदगी सार्थक तरीके से कैसे जीऊँ।

अच्छी मौत के लिए हमें अच्छी ज़िंदगी जीनी चाहिए। तो, अच्छी ज़िंदगी जीने का क्या मतलब है? हम कैसे जान सकते हैं कि हम अच्छी ज़िंदगी जी रहे हैं या नहीं? ऐसा लगता है कि किसी ने अच्छी ज़िंदगी जी है या नहीं, इसका सही मूल्यांकन मौत के बाद ही किया जा सकता है। तो फिर, हम कैसे जान सकते हैं? हम अपने

नाम पर विचार करके इसका जवाब पा सकते हैं। दूसरे शब्दों में, हम यह अंदाज़ा लगा सकते हैं कि हमने अपनी ज़िंदगी कैसे जी, यह देखकर कि लोग हमारे अंतिम संस्कार में हमारे बारे में अच्छी बातें कहते हैं या नहीं—यानी वे हमारे नाम की तारीफ़ करते हैं या नहीं। एक पुरानी कहावत है कि हर इंसान के तीन नाम होते हैं: (1) माता-पिता द्वारा दिया गया नाम, (2) वह नाम जिससे दूसरे हमें बुलाते हैं, और (3) वह नाम जो हम खुद कमाते हैं। हम किस तरह का नाम कमा रहे हैं? यीशु में विश्वास रखने वालों के तौर पर, हमें इस बात पर सोचना चाहिए कि क्या हमारा नाम ऐसा है जिसकी तारीफ़ न सिर्फ़ परमेश्वर करते हैं, बल्कि लोग भी करते हैं, क्योंकि हमने एक नेक ज़िंदगी जी है? नीतिवचन 10:7 कहता है, "नेक लोगों की याद एक आशीष होती है, लेकिन बुरे लोगों का नाम सड़ जाता है।" इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि जब नेक लोगों को मरने के बाद याद किया जाता है, तो उनकी तारीफ़ की जाती है। उनका नाम मुबारक होता है; यह एक "अच्छा नाम" होता है (7:1)। यह अच्छा नाम बढ़िया तेल या दुनिया की दौलत से भी ज़्यादा कीमती होता है।

लेकिन, समस्या क्या है? इंसान की फितरत होती है कि वह मातम वाले घर के बजाय दावत वाले घर जाना पसंद करता है। उपदेशक 7:3—जो आज हमारा मुख्य वचन है—के अनुसार, इसका मतलब है कि हम दुख के बजाय हंसी-खुशी को पसंद करते हैं। दूसरे शब्दों में, डॉ. पार्क युन-सन की व्याख्या के अनुसार, लोग मरने वाले के दुखी परिवार से मिलने के बजाय शारीरिक सुख-सुविधाओं में मग्न रहना पसंद करते हैं। फिर भी, जैसा कि राजा सुलैमान, जो उपदेशक भी थे, ने उपदेशक 2:11 में कहा है, ऐसा शारीरिक सुख आखिर में बेकार होता है। दूसरे शब्दों में, दावत में दुनियावी सुखों का आनंद लेने का परमेश्वर की नज़र में कोई असली फ़ायदा नहीं है। राजा सुलैमान, उपदेशक ने कहा कि परमेश्वर की नज़र में असली फ़ायदा मातम वाले घर जाने और दुख महसूस करने में है। उन्होंने ऐसा क्यों कहा कि हंसी से बेहतर दुख है? क्योंकि उदास चेहरा दिल को बेहतर बनाता है (वचन 3)। इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि मौत के बारे में सोचने से हमारा दिल नरम हो जाता है (पार्क युन-सन)। जब हमारा दिल नरम हो जाता है, तो हम बेकार, दुनियावी सुखों के पीछे भागकर अपनी ज़िंदगी बर्बाद नहीं करते। इसके बजाय, नरम दिल के साथ, हम नम्रता से परमेश्वर के वचन का पालन करते हैं और ऐसी ज़िंदगी जीते हैं जो उसे पसंद हो। इसीलिए राजा सुलैमान हमें उपदेशक 7:4 में बताते हैं: "बुद्धिमान का मन मातम वाले घर में होता है, लेकिन मूर्खों का मन मौज-मस्ती वाले घर में होता है।"

हमारा मन मौज-मस्ती वाले घर में नहीं लगा रहना चाहिए। हमारा मन ऐसी दावतों में नहीं लगा होना चाहिए जहाँ शारीरिक सुखों का आनंद लिया जाता है। बल्कि, हमारा मन मातम वाले घर में होना चाहिए। हमें अंतिम संस्कार में शामिल होना पसंद करना चाहिए। अंतिम संस्कार में, मरने वाले के सामने खड़े होकर, हमें अपनी मौत के बारे में सोचना चाहिए। हमें भी जाना होगा जब प्रभु हमें बुलाएंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि मौत ही सभी लोगों का आखिरी अंजाम है (वचन 2)। इसलिए, जब हम अपनी मौत के बारे में सोचते हैं, तो हमें यह सोचना चाहिए कि आज का दिन कैसे जिएं जो परमेश्वर की नज़र में सुंदर हो। हमें इस दुनिया में एक सुंदर विरासत—एक अच्छा नाम—छोड़कर जाना चाहिए। हमें अपने बच्चों और आने वाली पीढ़ियों के दिलों में वह सुंदर नाम छोड़ना चाहिए। सबसे सुंदर नाम कौन-सा है? वह नाम है "यीशु"। यीशु में विश्वास रखने वालों के तौर पर, हमें उनके जैसा बनने की कोशिश करनी चाहिए। यीशु जैसी ज़िंदगी जीकर, हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों और उन पड़ोसियों के लिए उनकी यादें छोड़नी चाहिए जो एक दिन हमारे अंतिम संस्कार में शामिल होंगे। इसलिए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि जब हमारे बच्चे, आने वाली पीढ़ियाँ या पड़ोसी भी हमारे नामों के बारे में सोचें, तो वे सच्चे दिल से हमारी तारीफ़ करें। साथ ही, मैं प्रार्थना करता हूँ कि जब लोग हमारे जाने पर शोक मनाएँ, तो परमेश्वर के प्रति धन्यवाद और प्रशंसा की आवाज़ें गूँजें।

हर किसी का आखिरी अंजाम एक ही होता है।

[सभोपदेशक 9:2-6]

क्या आपने कभी "पॉल सिंड्रोम" के बारे में सुना है? यह शब्द उस घटना के लिए इस्तेमाल किया जाता है जो दक्षिण अफ्रीका वर्ल्ड कप के दौरान "भविष्य बताने वाले ऑक्टोपस" पॉल की वजह से चर्चा में आई थी। जर्मनी के ओबरहाउजेन में एक एक्वेरियम में रहने वाले पॉल ने वर्ल्ड कप मैचों के नतीजों की भविष्यवाणी करने में 100% सटीकता हासिल की थी। उसने आठ मैचों—जिनमें फाइनल और जर्मनी के सात मैच शामिल थे—के नतीजों की बिल्कुल सही भविष्यवाणी की थी। मैंने टीवी और इंटरनेट पर इस ऑक्टोपस के बारे में खबरें देखीं, और मुझे यह सब बहुत अजीब लगा। यह बात बेतुकी इसलिए लगी क्योंकि उस ऑक्टोपस के बाद, भविष्य बताने वाले कई और जानवर—जैसे कि भविष्यवाणी करने वाला मगरमच्छ—सामने आने लगे। सट्टेबाजी करने वाली कंपनियों ने शायद पॉल ऑक्टोपस की वजह से खूब पैसा कमाया। मैंने तो फाइनल में जीतने वाला गोल करने वाले स्पेनिश खिलाड़ी को भी टीवी पर "पॉल अमर रहे" कहते हुए देखा, और मैं हैरान रह गया।

आपको क्या लगता है, लोग अपना भविष्य जानने के लिए भविष्य बताने वालों के पास क्यों जाते हैं? क्या इसलिए नहीं कि वे भविष्य जानना चाहते हैं? फिर भी, बाइबल इस मामले में साफ-साफ कहती है। सभोपदेशक 7:14 और 8:7 में, राजा सुलैमान कहते हैं कि हम भविष्य को समझ या जान नहीं सकते। सिर्फ सर्वज्ञानी परमेश्वर—जो अतीत, वर्तमान और भविष्य को नियंत्रित करते हैं—ही जानते हैं कि हमारे लिए आगे क्या है। हालाँकि, भविष्य के बारे में एक बात ऐसी है जिसे आप और मैं पूरी निश्चितता के साथ जान सकते हैं: वह यह कि हर इंसान का आखिरी अंजाम मौत है। ऐसा कोई नहीं है जो इस बात से अनजान हो। और न ही कोई ऐसा है जो इस बात से इनकार करेगा कि मौत हर इंसान का आखिरी अंजाम है। फिर भी, हम अक्सर

इस बात को नज़रअंदाज़ कर देते हैं कि जिस निश्चित भविष्य को हम सब मानते हैं, उसके प्रति लोग अलग-अलग तरह से प्रतिक्रिया देते हैं। तो फिर, उस मौत को ध्यान में रखते हुए आप अपनी ज़िंदगी कैसे जी रहे हैं जो आपका इंतज़ार कर रही है?

आज के सभोपदेशक 9:2-3 के हिस्से में, उपदेशक राजा सुलैमान ने "एक ही अंजाम" (या "एक ही बात") वाक्यांश का इस्तेमाल चार बार किया है। वह बार-बार किस "एक ही अंजाम" की बात कर रहे हैं? वह है मौत—हम सभी का आखिरी अंजाम। दूसरे शब्दों में, सुलैमान कह रहे हैं कि भले ही हम सबका आखिरी अंजाम एक ही है—और वह अंजाम मौत है। उपदेशक 9:2 को देखें: "सबका अंजाम एक ही होता है—नेक और बुरे, अच्छे और पवित्र-अपवित्र, बलि चढ़ाने वाले और न चढ़ाने वाले। जैसा अच्छे लोगों के साथ होता है, वैसा ही पापी के साथ; जैसा कसम खाने वालों के साथ होता है, वैसा ही कसम खाने से डरने वालों के साथ।" राजा सुलैमान कहते हैं कि चाहे कोई नेक हो या बुरा, अच्छा हो या पापी, पवित्र हो या अपवित्र, पूजा करने वाला हो या न करने वाला—आखिरकार हर कोई मरता है। दुनिया में ऐसा कोई इंसान नहीं है जो इस सच्चाई से इनकार करे। हर कोई जानता है कि धरती पर जीवन का आखिरी पड़ाव मौत ही है। यीशु को मानने वाले ईसाई और न मानने वाले गैर-ईसाई, दोनों ही एक बात पर सहमत हैं: कि इंसानियत के लिए मौत ही आखिरी पड़ाव है। हालाँकि, एक बात ऐसी है जिस पर ईसाई और गैर-ईसाई सहमत नहीं हैं: मौत के *बाद* क्या होता है। दूसरे शब्दों में, जबकि ईसाई और गैर-ईसाई दोनों इस बात पर सहमत हैं कि *इस युग* में जीवन का आखिरी पड़ाव मौत है, वे *आने वाले युग* की सच्चाई पर सहमत नहीं हैं—और असल में, सहमत हो भी नहीं सकते—जो मौत के बाद आता है। हम ईसाई आने वाले युग में विश्वास करते हैं; हम अनंत जीवन में विश्वास करते हैं। चाहे वह स्वर्ग में अनंत जीवन हो या नरक में अनंत अस्तित्व, हम ऐसे जीवन में विश्वास करते हैं जो इस दुनिया से परे है। लेकिन, गैर-ईसाई बाइबल में बताए गए अनंत स्वर्ग और नरक में विश्वास नहीं करते। यही ईसाई और गैर-ईसाई लोगों के बीच बुनियादी फ़र्क है।

तो फिर, हमें क्या करना चाहिए? हम—जो गैर-ईसाइयों के उलट आने वाले युग में विश्वास करते हैं—अपना जीवन कैसे जिँएँ? हमें उपदेशक 7:2 की बातों पर ध्यान देना चाहिए: "दावत वाले घर में जाने से बेहतर है मातम वाले घर में जाना, क्योंकि मौत हर इंसान का अंजाम है; ज़िंदा लोगों को यह बात दिल में बिठा लेनी

चाहिए।" आज जो लोग ज़िंदा हैं और साँस ले रहे हैं, उन्हें यह बात दिल में बिठा लेनी चाहिए कि इस धरती पर हर किसी के लिए मौत ही आखिरी पड़ाव है। इसे ध्यान में रखते हुए, हमें अपना बाकी जीवन ऐसे नज़रिए से जीना चाहिए जो मौत को स्वीकार करता हो। तो फिर, ऐसे नज़रिए के साथ हमें इस दुनिया में कैसे जीना चाहिए? मैं आज के उपदेशक 9:2-6 के हिस्से पर ध्यान देते हुए, दो बातों के ज़रिए इस पर चर्चा करना चाहूँगा।

पहली बात, हमें ऐसे नज़रिए के साथ जीना चाहिए जो मौत को स्वीकार करे और हमारे दिलों में भरे पापों के लिए पछतावा करे।

आज के हिस्से में उपदेशक 9:3 को देखें: "सूरज के नीचे होने वाली हर चीज़ में यह बुराई है: सबका अंजाम एक ही होता है। इसके अलावा, लोगों के दिल बुराई से भरे होते हैं और जब तक वे जीवित रहते हैं, उनके दिलों में पागलपन होता है, और बाद में वे मरे हुएों में शामिल हो जाते हैं।" राजा सुलैमान देखते हैं कि, चूँकि इस दुनिया में नेक और बुरे लोगों के अनुभवों में आखिर में बहुत कम फ़र्क होता है, इसलिए जो लोग दुनिया के हैं, वे इसे अपनी पूरी ज़िंदगी को पाप करने का मौका बनाने के बहाने के तौर पर इस्तेमाल करते हैं (पार्क युन-सन)। उदाहरण के लिए, जब बुरे लोग नेक विश्वासियों को भी वैसी ही तकलीफ़ झेलते हुए देखते हैं जैसी वे खुद झेलते हैं, तो वे यह नतीजा निकालते हैं कि यीशु पर विश्वास करने और न करने में कोई असली फ़र्क नहीं है; नतीजतन, वे और भी ज़्यादा पाप करते हैं। इसके अलावा, वे इतनी हिम्मत के साथ पाप इसलिए करते हैं क्योंकि उनके बुरे कामों के लिए परमेश्वर का फैसला तुरंत लागू नहीं होता (8:11)। इस तरह, मौत का सामना करते हुए, बुरे लोग न केवल अपने पापों के लिए पछतावा करने में नाकाम रहते हैं, बल्कि वे ऐसा करने में असमर्थ भी होते हैं; इसके बजाय, वे मौत के सामने भी हिम्मत के साथ पाप करते रहते हैं।

अगर आपको पता चले कि आपकी मौत जल्द ही होने वाली है, तो आप कैसी प्रतिक्रिया देंगे? उदाहरण के लिए, अगर कोई डॉक्टर आपसे कहे, "आपके पास जीने के लिए सिर्फ़ छह महीने—या ज़्यादा से ज़्यादा एक साल—बचा है," तो आप क्या करेंगे? मेरा मानना है कि एक या दो संभावित प्रतिक्रियाएँ हो सकती हैं। वे दो प्रतिक्रियाएँ हैं: (1) समय कम होने के कारण अपनी मनचाही चीज़ें पूरी तरह से करने की कोशिश करना, या (2) मौत के सामने अपनी ज़िंदगी पर सोचना और परमेश्वर के खिलाफ़ किए गए पापों के लिए पछतावा

करना। मेरी राय में, दूसरी प्रतिक्रिया की तुलना में पहली प्रतिक्रिया ज़्यादा आम हो सकती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जो लोग यीशु पर विश्वास नहीं करते, वे मौत का सामना करते समय अपनी ज़िंदगी पर सही ढंग से सोचने और परमेश्वर के सामने सच्चा पछतावा करने में असमर्थ होते हैं। इसलिए, अगर हम उन लोगों पर विचार करें जो विश्वास नहीं करते और उन विश्वासियों पर भी जो—नास्तिकों की तरह—मरते समय पछतावा करने के बजाय अपनी इच्छाओं को पूरा करना चुनते हैं, तो पहली प्रतिक्रिया ही ज़्यादा आम लगती है। मिस्र से बाहर निकलने के समय इस्राएलियों को देखकर हमें इसका बाइबिल-आधारित प्रमाण मिल सकता है; परमेश्वर के क्रोध और अनुशासन के बावजूद, उन्होंने बहुत ज़्यादा ज़िद और अड़ियलपन दिखाया और पछतावा करने से इनकार कर दिया। मेरा मानना है कि हम भी उनसे अलग नहीं हैं। हम ऐसे लोग हैं जो अपने पापों को पहचानने और पछतावा करने में देर करते हैं, यहाँ तक कि मौत का सामना करते समय भी। नतीजतन, मुझे लगता है कि बहुत से लोग अपने जीवन पर विचार करने और परमेश्वर के विरुद्ध किए गए पापों के लिए पछतावा करने के बजाय अपने बचे हुए दिन अपनी मज़ी के काम करने में बिताना पसंद करते हैं। अगर हम मौत के पल तक अपनी इच्छा के अनुसार जीवन जीते हैं, तो यह अंततः मृतकों की श्रेणी में शामिल होने से पहले हमारे दिलों में "पागलपन" पालने के अलावा और कुछ नहीं है—ठीक वैसे ही जैसे आज के पाठ के तीसरे पद में राजा सुलैमान, उपदेशक, ने बताया है। हमें इस तरह से अपना अंत नहीं करना चाहिए; इसके बजाय, मौत का सामना करने से पहले, हमें उन पापों के लिए परमेश्वर से पछतावा करना चाहिए जो हमारे दिलों में भरे हुए हैं।

मौत पर विचार करते समय, मुझे पादरी वॉरेन वियर्सबे के शब्द बहुत प्रभावशाली लगते हैं। उन्होंने कहा कि मौत में "एक्स-रे" (वियर्सबे) जैसी शक्ति होती है। इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि, जैसे हम मेडिकल जांच के दौरान एक्स-रे करवाते हैं, वैसे ही मौत एक एक्स-रे की तरह काम करती है जो हमारे दिलों के अंदर की बात को उजागर करती है। इस प्रकार, जैसे एक्स-रे हमारी आंतरिक स्थिति को उजागर करता है, वैसे ही मौत हमारे अंदर छिपे गहरे पापों को सामने लाती है, जिससे हमें परमेश्वर के सामने पछतावा करने का अवसर मिलता है। इसका अर्थ है कि परमेश्वर मौत का उपयोग हमारे दिलों में भरे पापों को उजागर करने और हमें पछतावे की ओर ले जाने के लिए एक साधन के रूप में करते हैं, जिससे हम उनके पवित्र लोग बन सकें। इसलिए, जब हम इस दुनिया में रहते हैं, तो हमें मौत के नज़रिए से जीवन को देखना चाहिए और अपने दिलों में भरे पापों के लिए पछतावा करना चाहिए। हमें अपने बचे हुए दिनों को अपनी मौत को

यीशु की क्रूस पर हुई मौत से जोड़कर जीना चाहिए, और बार-बार अपने पापों को क्रूस के चरणों में रखना चाहिए। हमें पूरी लगन से अपने पापों को क्रूस पर रखना चाहिए। वहाँ यीशु के बहाए गए अनमोल लहू की शक्ति पर भरोसा करते हुए, हमें लगातार अपने पाप उनके सामने समर्पित करने चाहिए। भले ही हमें मौत की सज़ा का सामना करना पड़े, हमें धरती पर अपना बचा हुआ समय अपने भीतर के पापों के लिए पश्चाताप करते हुए बिताना चाहिए। ऐसा करने से, हम परमेश्वर के पवित्र लोगों के रूप में, उन्हें प्रसन्न करने वाले तरीके से मृत्यु का सामना कर पाएँगे।

दूसरी और आखिरी बात, हमें मौत को ध्यान में रखते हुए दिल में उम्मीद के साथ जीना चाहिए।

आज के वचन, उपदेशक 9:4 को देखिए: "जो कोई जीवितों में है, उसे उम्मीद है—यहाँ तक कि एक जीवित कुत्ता मरे हुए शेर से बेहतर है!" यह बात कि "एक जीवित कुत्ता मरे हुए शेर से बेहतर है," आपको कैसी लगती है? यहूदी लोगों के लिए, कुत्ता जानवरों में सबसे घृणित माना जाता था (वाल्वोर्ड)। शेर, जैसा कि हम जानते हैं, जानवरों की दुनिया का राजा है। फिर भी, राजा सुलैमान कहते हैं कि एक जीवित कुत्ता मरे हुए शेर से बेहतर है। इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि जीवित रहना मरने से बेहतर है। जीवन मौत से बेहतर क्यों है? इसलिए क्योंकि एक बार जब कोई व्यक्ति मर जाता है, तो सही ढंग से जीने का कोई मौका नहीं रहता; हालाँकि, जीवित रहते हुए, पछतावा करने और चीजों को ठीक करने की उम्मीद होती है (पार्क युन-सन)। इस प्रकार, एक जीवित कुत्ता वास्तव में मरे हुए शेर से बेहतर है। इसलिए, आप और मैं—जो जीवित हैं और सांस ले रहे हैं—उन लोगों से बेहतर स्थिति में हैं जो पहले ही मर चुके हैं, चाहे वे मरे हुए लोग कितने भी प्रसिद्ध, अमीर या शक्तिशाली क्यों न रहे हों।

तो फिर, हमें—जो आज जीवित हैं और सांस ले रहे हैं—कैसे जीना चाहिए? हमें इस बात के एहसास के साथ जीना चाहिए कि हम मरेंगे। उपदेशक 9:5 को देखिए: "क्योंकि जीवित जानते हैं कि वे मरेंगे, लेकिन मरे हुए कुछ नहीं जानते; उन्हें आगे कोई इनाम नहीं मिलता, और उनकी याद भी भुला दी जाती है।" जैसा कि राजा सुलैमान यहाँ कहते हैं, मरे हुए कुछ नहीं जानते। मरे हुए के लिए, न कोई प्यार है, न नफरत, और न ही जलन (वचन 6)। मर जाने के बाद, उनका इस दुनिया में होने वाली किसी भी चीज़ में कोई हिस्सा नहीं

रहता—हमेशा के लिए (वचन 6)। संक्षेप में, मरे हुएों के लिए कोई उम्मीद नहीं है। मरे हुएों में ऐसा कोई एहसास नहीं होता जो उन्हें इनाम पाने की उम्मीद में कुछ करने के लिए प्रेरित करे (पार्क युन-सन)। मरे हुएों के पास कोई उम्मीद नहीं होती, और उनके नाम भुला दिए जाते हैं। हालाँकि, जीवितों के पास उम्मीद होती है। यह किस तरह की उम्मीद है? क्योंकि जीवित जानते हैं कि वे मरेंगे, इसलिए उनके पास ऐसी उम्मीद होती है जो उन्हें सतर्क रहने और नए संकल्प के साथ जीने में मदद करती है (पार्क युन-सन)। क्या हम सच में यह उम्मीद रखते हैं? क्या हमें सच में एहसास है कि हम मरेंगे? और क्योंकि हम जानते हैं कि हम मरेंगे, क्या हम सच में सावधानी और नए संकल्प के साथ जी रहे हैं? जब तक मौका है, हमें पश्चाताप करना चाहिए; पश्चाताप का मौका हमेशा नहीं मिलता। यह जानते हुए कि हम आखिर में मरेंगे, हमें जीते-जी पाप से दूर हो जाना चाहिए। हमें परमेश्वर के साथ सही रिश्ते में रहते हुए सही रास्ते पर चलना चाहिए। परमेश्वर हमें पश्चाताप का जो मौका देते हैं, उसे हमें कभी नहीं गंवाना चाहिए, वरना बाद में पछताना पड़ेगा। जब पछतावे का कोई फायदा न हो, तब पश्चाताप करने की कोशिश न करें। मरने के बाद, न तो कोई पश्चाताप कर सकता है और न ही पछतावा महसूस कर सकता है। पश्चाताप करने का सही समय अभी है।

आखिरकार सबका अंत एक जैसा ही होता है। चाहे कोई नेक हो या बुरा, सभी लोगों का आखिरी अंजाम मौत ही है। यह जानते हुए, हमें इस दुनिया में मिले समय में कैसे जीना चाहिए? हमें अपनी नश्वरता (मौत की सच्चाई) को ध्यान में रखते हुए जीना चाहिए और अपने दिलों में भरे पापों के लिए पश्चाताप करना चाहिए। मौत पर गहराई से सोचकर—जो एक एक्स-रे की तरह हमारे दिलों की सच्चाई दिखाती है—और मौत के नज़रिए से ज़िंदगी को देखकर, हमें पवित्र परमेश्वर के सामने रोज़ पश्चाताप करना चाहिए और यीशु के क्रूस के कीमती लहू की शक्ति पर भरोसा करना चाहिए। इसके अलावा, मौत की सच्चाई को ध्यान में रखते हुए भी हमें उम्मीद के साथ जीना चाहिए। जीवित लोगों के तौर पर, हमारे पास वह उम्मीद है जो हमें सावधान रहने और नए संकल्प के साथ जीने में मदद करती है। इस उम्मीद के बीच, जीवित लोगों के तौर पर हमें पश्चाताप करना चाहिए और नए संकल्प के साथ प्रभु के बताए सही रास्ते पर चलना चाहिए। जब हम प्रभु के रास्ते पर चलते हैं, तो हमारे पास भविष्य के लिए उम्मीद होती है। आइए इन शब्दों को याद रखें: "एक ज़िंदा कुत्ता मरे हुए शेर से बेहतर है।"

मौत ही सब कुछ खत्म नहीं कर देती।

“इसलिए, सावधान रहो और याद रखो कि तीन साल तक मैंने दिन-रात आँसू बहाते हुए हर किसी को समझाया... मैंने तुम्हें हर बात में दिखाया कि इस तरह कड़ी मेहनत करके तुम्हें कमज़ोर लोगों की मदद करनी चाहिए और प्रभु यीशु के उन शब्दों को याद रखना चाहिए, जो उन्होंने खुद कहे थे: ‘लेने से ज़्यादा धन्य देना है’” (प्रेरितों के काम 20:31, 35)।

जब मैं परमेश्वर के वचन पर मनन करता हूँ, तो पवित्र आत्मा मेरे दिल में जीवन के प्रति एक खास नज़रिया पैदा करता है। इस नज़रिए का एक पहलू यह एहसास है कि इंसान मिट्टी से बना है और मिट्टी में ही मिल जाता है। दूसरे शब्दों में, पवित्र आत्मा परमेश्वर के वचन का इस्तेमाल करके मेरे अंदर ऐसा नज़रिया पैदा करता है जो मौत की सच्चाई को स्वीकार करता है। उपदेशक 7:2 पर गौर करें: “दावत वाले घर में जाने से शोक वाले घर में जाना बेहतर है, क्योंकि हर इंसान का अंत यही है, और जो जीवित हैं, वे इसे दिल में उतारते हैं।” हालाँकि मैं अभी जीवित हूँ, फिर भी मैं उस मौत के बारे में सोचता हूँ जो मेरा इंतज़ार कर रही है; मैं प्रार्थना करता हूँ, सोच-विचार करता हूँ और मौत के उस नज़रिए को ध्यान में रखते हुए इस धरती पर ऐसा जीवन जीने की कोशिश करता हूँ जो परमेश्वर को भाए। ऐसा करते समय—खासकर सुबह की प्रार्थना सभा में प्रेरितों के काम 20:17–38 पर उपदेश देने के बाद—मेरे मन में बार-बार यह विचार आता रहा: “मौत ही सब कुछ खत्म नहीं कर देती।” बेशक, मैं जानता हूँ कि मौत आखिरी पड़ाव नहीं है क्योंकि मैं मरने के बाद के जीवन में विश्वास करता हूँ। फिर भी, “मौत ही सब कुछ खत्म नहीं कर देती” वाला विचार सिर्फ़ आने वाली

दुनिया की सोच से नहीं आया; बल्कि यह इस एहसास से आया कि मरने के बाद भी हम अपने प्यारे परिवार के सदस्यों और साथी विश्वासियों के दिलों में यादें छोड़ जाते हैं—ऐसी यादें जो बनी रहती हैं। दूसरे शब्दों में, क्योंकि हम उन लोगों के साथ यादें छोड़ जाते हैं जिनसे प्रभु ने हमें इस धरती पर मिलने का मौका दिया है—परिवार, रिश्तेदार, चर्च के साथी सदस्य, दोस्त और पड़ोसी—इसलिए मौत ही सब कुछ खत्म नहीं कर देती। हालाँकि मरने पर हम इस दुनिया को छोड़कर स्वर्ग चले जाते हैं, लेकिन हमारे प्रियजन यहीं रहते हैं और जीते हुए अपने दिलों में हमारी यादें संजोए रखते हैं; इस तरह, हमारा जाना कोई आखिरी अंत नहीं होता। इस नज़रिए को अपनाना—कि मौत अंत नहीं है—मुझे प्रभु के सामने घुटने टेकने और इस बात पर गहराई से सोचने के लिए प्रेरित करता है कि मुझे धरती पर अपनी बाकी ज़िंदगी कैसे जीनी चाहिए।

परमेश्वर अपने वचन के ज़रिए मुझमें जो नज़रिया विकसित कर रहे हैं, उसका एक और पहलू यह विचार है कि "ज़िंदगी यादें बनाने के बारे में है।" धरती पर हमारा समय मिलने और बिछड़ने का एक लगातार चलने वाला चक्र है। इन मुलाकातों और विदाई के बीच, हम साथ बिताए समय में अपने रिश्तों के भीतर यादें बनाते हैं। हम प्यारी, सकारात्मक यादें और कभी-कभी अनचाही, नकारात्मक यादें भी बनाते हैं। इसलिए, हमें इस बात पर विचार करना चाहिए कि परमेश्वर ने हमें यहाँ जो रिश्ते दिए हैं, उनके ज़रिए हम दूसरों में किस तरह की यादें बो रहे हैं। यह बहुत ज़रूरी है क्योंकि हम जो यादें बोते हैं, वे हमारे गुज़र जाने के बाद भी उन लोगों पर असर डालती रहेंगी। उदाहरण के लिए, हमारे परिवारों को ही लें: हममें अपने परिवार के सदस्यों के दिलों में अच्छी और बुरी, दोनों तरह की यादें बोने की क्षमता है। अगर हम अनचाही, नकारात्मक यादों के बजाय प्रभु में बसी सकारात्मक यादें बोकर इस दुनिया से जाते हैं, तो वे यादें हमारे जाने के बहुत बाद भी हमारे परिवार के सदस्यों की ज़िंदगी पर अच्छा असर डालती रहेंगी। इसके विपरीत, अगर हम अपने प्रियजनों के दिलों में दुखद यादें बोकर इस दुनिया से जाते हैं, तो हम उनके जाने के बाद भी उनकी ज़िंदगी पर बुरा असर डालते रहेंगे। इसीलिए, सुबह-सुबह की शांति में, मेरे मन में यह विचार आया: "मौत अंत नहीं है।"

आज सुबह की प्रार्थना सभा में प्रेरितों के काम 20:17-38 के आधार पर वचन सुनाने और प्रार्थना करने के बाद, मैं अब उस हिस्से पर फिर से विचार कर रहा हूँ। मैं खास तौर पर आयत 31 और 35 पर ध्यान देना चाहता हूँ, क्योंकि दोनों में "याद रखने" (आयत 31) या "याद रखना चाहिए" (आयत 35) का निर्देश है। मैं इस बात के दो मुख्य पहलुओं पर विचार करना चाहता हूँ कि प्रेरित पौलुस ने इफिसुस में विश्वासियों के बीच

अपने तीन साल के प्रवास (आयत 18) के दौरान कैसा व्यवहार किया—और उन्होंने उनके दिलों में किस तरह की यादें बोई—जिसके कारण उन्होंने अपने विदाई भाषण के दौरान इफिसुस के बुजुर्गों से इन बातों को "याद रखने" का आग्रह किया।

पहला, प्रेरित पौलुस ने इफिसुस की कलीसिया में विश्वासियों के दिलों में परमेश्वर का वचन बोया। आज के वचन, प्रेरितों के काम 20:31 को देखिए: "इसलिए सावधान रहो! याद रखो कि तीन साल तक मैंने दिन-रात आँसू बहाते हुए तुममें से हर एक को चेतावनी देना कभी नहीं छोड़ा।" मिलेटुस में रहते हुए, पौलुस ने इफिसुस की कलीसिया के बुजुर्गों (वचन 17) को बुलाया और अपनी विदाई के भाषण में उनसे कहा कि वे याद रखें कि कैसे उसने तीन साल तक हर व्यक्ति को—लगातार, दिन-रात और आँसू बहाते हुए—चेतावनी दी थी (वचन 31)। प्रेरित पौलुस ने इफिसुस के बुजुर्गों से "अपनी चेतावनियों को याद रखने" का आग्रह क्यों किया? कारण यह था कि पौलुस जानता था कि उसके इफिसुस छोड़ने के बाद, "खूँखार भेड़िये" उनके बीच आ जाएँगे (वचन 29)—ऐसे लोग जो चेलों को अपने पीछे खींच लेंगे और गलत बातें कहेंगे (वचन 30)—और आखिरकार इफिसुस की कलीसिया के "झुंड" को धोखा देने (वचन 29) और उन्हें विश्वास छोड़ने के लिए उकसाने की कोशिश करेंगे। दूसरे शब्दों में, क्योंकि पौलुस ने पहले ही देख लिया था कि गलत शिक्षा देने वाले लोग संतों को धोखा देने के लिए आएँगे—जिससे कुछ लोग गलत शिक्षा के शिकार हो जाएँगे, टेढ़ी-मेढ़ी बातें कहेंगे और विश्वास से भटक जाएँगे—इसलिए उसने बुजुर्गों (इफिसुस की कलीसिया के देखरेख करने वालों, वचन 28) से गंभीरता से आग्रह किया कि वे याद रखें कि कैसे उसने तीन साल तक दिन-रात आँसू बहाते हुए हर व्यक्ति को समझाया था। क्या आप और मैं सचमुच पौलुस के दिल की इस बात को समझते हैं?

मैंने इस स्थिति को अपने परिवार पर लागू करके पौलुस के दिल की बात को समझने की कोशिश की। मैंने कल्पना की कि मैं घर का मुखिया हूँ और जीवन-मरण की दहलीज पर खड़ा हूँ, और सोचा कि अगर मुझे अपनी प्यारी पत्नी और तीन बच्चों को इस दुनिया में पीछे छोड़ना पड़े, तो मैं उनसे क्या कहूँगा। मैंने खुद से पूछा कि क्या अपने तीनों बच्चों को अपनी पत्नी की देखरेख में सौंपते समय, मैं उसे वैसी ही सलाह दे पाऊँगा जैसी पौलुस ने इफिसुस की कलीसिया के बुजुर्गों को दी थी। मुझे लगता है कि मैं शायद अपनी प्यारी पत्नी

से कुछ ऐसा कहूँगा: "याद रखना, मेरी प्यारी पत्नी। याद रखना कि तुम्हारे और हमारे बच्चों के साथ बिताए समय में मैंने क्या सिखाने की कोशिश की थी। मैंने तुममें और हमारे तीनों बच्चों में यीशु से प्रेम करने की आज्ञा को बिठाने की कोशिश की। मुझे उम्मीद है कि तुम्हें वह याद रहेगा। और मेरे जाने के बाद भी, मुझे उम्मीद है कि तुम यीशु से दोगुना प्रेम करोगी।" "और मुझे उम्मीद है कि जिस तरह से तुम यीशु से प्यार करती हो, वही प्यार हमारे तीनों बच्चों के दिलों में भी बसेगा।" मौत के साये में अपनी प्यारी पत्नी से यह बात कहने की हिम्मत मुझे इसलिए हुई क्योंकि शादी से पहले—और उससे मिलने से भी पहले—मैंने उस परिवार के लिए प्रार्थना की थी जिसे प्रभु आगे चलकर बनाने वाले थे। मेरी दो खास प्रार्थनाओं में से एक यह थी: "कृपया मुझे अपने जीवनसाथी से परमेश्वर के प्रेम से प्यार करने के काबिल बनाओ, और मेरे जीवनसाथी को भी मुझसे परमेश्वर के प्रेम से प्यार करने के काबिल बनाओ।" परमेश्वर के प्रेम से अपनी पत्नी और तीनों बच्चों से प्यार करने का असल में क्या मतलब है? इसका मतलब है परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना (यूहन्ना 14:21)। और परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने के लिए, मुझे पूरी लगन से परमेश्वर के वचन को अपने दिल में बसाना होगा। मेरी ज़िम्मेदारी है कि मैं पहले परमेश्वर के वचन के प्रति अपनी निष्ठा दिखाऊँ, और फिर अपनी पत्नी और बच्चों को बाइबल से प्यार करने के लिए प्रेरित करूँ—ताकि वे उसमें लिखे परमेश्वर के वचन को पढ़ें, सुनें, सीखें और मानें। क्या मैं अनंत जीवन के नज़रिए से अपने प्यारे परिवार और विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सदस्यों—जो मेरा आध्यात्मिक परिवार हैं—के प्रति इस ज़िम्मेदारी को ईमानदारी से निभा रहा हूँ? आज सुबह, मुझे फिर से इस कर्तव्य की भारी ज़िम्मेदारी का एहसास हो रहा है। मैं सोचता हूँ: क्या प्रेरित पौलुस की तरह, मेरे जाने के बाद मैं अपने परिवार और चर्च के सदस्यों को सच्चे दिल से यह समझा पाऊँगा कि वे गलत शिक्षाओं (शैतान के प्रलोभनों) की घुसपैठ और धोखे को पहचानें और परमेश्वर के उस वचन को याद रखें जो मैंने उन्हें पूरी लगन से सिखाया था? हमें एक ऐसा परिवार और चर्च बनना चाहिए जो परमेश्वर के वचन पर मज़बूती से खड़ा रहे—और जब तक हम प्रभु से न मिलें, तब तक अपने विश्वास के रास्ते पर वफादार बने रहें; शैतान चाहे कितने भी धोखे क्यों न अपनाए, हम यीशु से मुंह न मोड़ें। मैं खुद से पूछता हूँ: क्या मैं—पौलुस की तरह—दिन-रात बिना रुके, परमेश्वर के वचन का इस्तेमाल करते हुए, आंसुओं के साथ उन्हें समझा रहा हूँ, ताकि वे सचमुच ऐसे लोग बन सकें? यह कितनी बड़ी आशीष होगी अगर मेरे गुज़र जाने के बाद भी, मेरे बच्चे और चर्च का परिवार परमेश्वर के उस वचन को याद रखे जो मैंने उन्हें सिखाया था—और अगर वे उस याद रखे हुए वचन के ज़रिए आध्यात्मिक लड़ाइयों में जीत हासिल करते

हुए, पूरी निष्ठा के साथ विश्वास का जीवन जिएं। मैं सोचता हूँ कि मैं कितना खुशकिस्मत पति, पिता और पादरी होऊँगा अगर—भले ही "जेम्स" नाम का व्यक्ति भुला दिया जाए—लोग उस वचन को याद रखें जो परमेश्वर ने मेरे ज़रिए कहा था और अपने विश्वास पर मज़बूती से कायम रहें, उस वचन का पालन करें और जीत के भरोसे के साथ आध्यात्मिक संघर्ष में लगे रहें। ऐसी आशीष और खुशी पाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए? जैसे पौलुस ने इफिसुस में अपने तीन साल के समय में, बिना किसी हिचकिचाहट के विश्वासियों को वह सब सिखाया जो उनके लिए फायदेमंद था—चाहे सार्वजनिक रूप से हो या घर-घर जाकर (वचन 20)—वैसे ही मुझे भी याद आता है कि मुझे भी अपने परिवार और चर्च परिवार के साथ बिताए समय में परमेश्वर के फायदेमंद वचन को लगन और ईमानदारी से सिखाना चाहिए। और जैसे पौलुस ने इफिसुस के बुजुर्गों को प्रभु और उनके अनुग्रह के वचन के हवाले किया—उस पर भरोसा करते हुए जो उन्हें मज़बूत बनाने और उन सभी लोगों के बीच विरासत देने में समर्थ है जो पवित्र किए गए हैं (वचन 32)—वैसे ही मैं भी अपने प्यारे परिवार और विकट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सदस्यों—जो मसीह की देह हैं—को प्रभु और उनके अनुग्रह के वचन के हवाले करता हूँ। मेरा विश्वास है कि प्रभु अपने वचन के ज़रिए परमेश्वर की संतानों को मज़बूती से तैयार करेंगे। इसलिए, आज सुबह, मैं खुद को फिर से प्रभु को समर्पित करता हूँ। मैं अपने शारीरिक परिवार और अपने आध्यात्मिक परिवार—चर्च के सदस्यों—के दिलों में परमेश्वर के वचन को लगन से बोलने का संकल्प लेता हूँ, क्योंकि वे उस वचन से प्रेम करते हैं।

दूसरी और आखिरी बात, प्रेरित पौलुस ने इफिसुस की कलीसिया के विश्वासियों के मन में यीशु की छवि बसाई।

आज के वचन, प्रेरितों के काम 20:35 को देखिए: "मैंने हर बात में तुम्हें दिखाया है कि इस तरह कड़ी मेहनत करके हमें कमज़ोर लोगों की मदद करनी चाहिए और खुद प्रभु यीशु के उन शब्दों को याद रखना चाहिए, जिन्होंने कहा था, 'लेने से ज़्यादा धन्य देना है।'" यह अंश इफिसुस की कलीसिया के अगुवों के लिए पौलुस के विदाई संदेश से लिया गया है; वहाँ के विश्वासियों के साथ बिताए अपने तीन सालों के दौरान हर बात में मिसाल कायम करने का ज़िक्र करते हुए, उन्होंने अगुवों से यीशु की बातों को याद रखने का आग्रह किया। यीशु के वे शब्द क्या थे? वे ये थे कि लेने से ज़्यादा धन्य देना है। इस शिक्षा को याद रखने के लिए प्रेरित करने

के बाद, पौलुस ने अगुवों को बताया कि यीशु के इसी वचन का पालन करके उन्होंने खुद इफिसुस के सभी विश्वासियों के लिए हर मामले में एक मिसाल कायम की थी। एक उदाहरण के तौर पर, पौलुस ने किसी के भी चाँदी, सोने या कपड़ों का लालच नहीं किया (वचन 33)। संक्षेप में, वह लालच से मुक्त थे। कारण यह है कि एक लालची व्यक्ति यीशु की इस शिक्षा का पालन नहीं कर सकता कि लेने से ज़्यादा धन्य देना है। इसके बजाय, एक लालची व्यक्ति यीशु के शब्दों के ठीक उलट मानता और काम करता है—यह मानते हुए कि देने से ज़्यादा धन्य लेना है। पौलुस न केवल लालच से दूर रहे, बल्कि अपनी और अपने साथियों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए अपने हाथों से काम भी किया (वचन 34)। पौलुस ने इफिसुस के विश्वासियों से कुछ नहीं लिया; बल्कि, उन्हें दिया। उन्होंने क्या दिया? उन्होंने इफिसुस की कलीसिया के विश्वासियों को परमेश्वर की पूरी इच्छा के बारे में खुलकर बताया (वचन 27)। उन्होंने सार्वजनिक रूप से और घर-घर जाकर—बिना कुछ छिपाए—वह सब सिखाया और बताया जो उनके लिए फायदेमंद था (वचन 20)। इफिसुस में, उन्होंने यहूदियों और यूनानियों, दोनों के सामने परमेश्वर की ओर मन-फिराव और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास के बारे में गवाही दी (वचन 21)। पौलुस ने केवल अपने होंठों से प्रचार नहीं किया; उन्होंने अपने जीवन के ज़रिए यीशु मसीह पर विश्वास की गवाही दी। उन्होंने अपने जीने के तरीके से परमेश्वर की इच्छा का प्रचार किया—और परमेश्वर की वह इच्छा प्रभु की सेवा करना है। इसीलिए उन्होंने इफिसुस की कलीसिया के बुजुर्गों से कहा कि उन्होंने पूरी नम्रता और आँसुओं के साथ प्रभु की सेवा की है और कई मुश्किलों का सामना किया है (वचन 19)। इसके अलावा, भले ही पवित्र आत्मा ने उन्हें यरूशलेम जाने के लिए प्रेरित किया (वचन 22)—और उन्हें हर शहर में आत्मा की गवाही से अच्छी तरह पता था कि जेल और मुश्किलें उनका इंतज़ार कर रही हैं (वचन 23)—फिर भी उन्होंने बुजुर्गों के सामने परमेश्वर की कृपा के सुसमाचार की गवाही देने के काम के प्रति अपना पक्का इरादा ज़ाहिर किया: "लेकिन मैं अपनी ज़िंदगी को अपने लिए कुछ नहीं समझता, बस मैं अपनी दौड़ पूरी कर सकूँ और उस काम को पूरा कर सकूँ जो प्रभु यीशु ने मुझे दिया है—परमेश्वर की कृपा के सुसमाचार की गवाही देने का काम" (वचन 24)। पौलुस ने अपनी ज़िंदगी से ज़्यादा परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने—यानी सुसमाचार की गवाही देने—को अहमियत दी। दूसरे शब्दों में, वह परमेश्वर के मकसद को पूरा करने के लिए अपनी जान देने को भी तैयार थे। पौलुस ने इफिसुस की कलीसिया के बुजुर्गों से इसी मिसाल वाली ज़िंदगी को याद रखने का आग्रह किया।

जब मैं पौलुस की इस मिसाल के बारे में सोचता हूँ, तो मुझे अपने पिता की याद आती है। मुझे स्वर्गीय हेनरी नूवेन की किताब का टाइटल भी याद आता है, *अ पर्सन हू रिमाइंड्स अस ऑफ़ जीसस* (एक ऐसा व्यक्ति जो हमें यीशु की याद दिलाता है)। और मुझे भजन 507 भी याद आता है, "वन हू इमिटेट्स द लॉर्ड्स हार्ट" (जो प्रभु के दिल जैसा बनने की कोशिश करता है), जिसे हमने आज सुबह की प्रार्थना सभा में दो बार गाया था। और मैं परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ: "हे प्रभु, मेरी इच्छा है कि मैं यीशु के दिल जैसा बनूँ। मैं यीशु जैसा बनना चाहता हूँ। मुझे ऐसा व्यक्ति बनाओ जो दूसरों को यीशु की याद दिलाए।" निजी तौर पर, अपने परिवार के बारे में, शादी से पहले से ही मेरी दो प्रार्थनाओं में से एक यह रही है: "मेरे जीवनसाथी को मुझमें यीशु की छवि दिखे, और बदले में, मुझे उसमें यीशु की छवि दिखे।" जब से मैंने प्रार्थना करना शुरू किया है, तब से लेकर उस दिन तक जब प्रभु मुझे अपने पास बुलाएँगे, मेरी कोशिश यही रही है कि मुझमें यीशु की छवि दिखे। इसलिए, मेरा मानना है कि अगर मरने से पहले मैं अपनी प्यारी पत्नी और तीन बच्चों को यीशु की एक झलक भी दिखा सकूँ, तो यह उनके लिए मेरा सबसे बड़ा तोहफ़ा होगा। इसीलिए, आज सुबह की प्रार्थना सभा में, मैंने भजन 518 गाया—खासकर चौथा पद: "मैं यीशु जैसा बनना चाहता हूँ; सचमुच, सचमुच, मैं यीशु जैसा बनना चाहता हूँ; सचमुच, सचमुच, सचमुच, मैं यीशु जैसा बनना चाहता हूँ; सचमुच।" यही मेरी सच्ची प्रार्थना है। मैं इतनी शिद्दत से प्रार्थना इसलिए करता हूँ क्योंकि मेरा मानना है कि जो व्यक्ति यीशु का अनुसरण करता है, उसकी सेवा का काम मरने के बाद भी जारी रहता है। मेरा मानना है कि जो लोग यीशु जैसा बनने की कोशिश करते हैं, उनके द्वारा प्रिय भाई-बहनों के दिलों में बोई गई अच्छी यादें—जो यीशु के उदाहरण पर चलकर बनी हैं—उनके गुज़र जाने के बाद भी उन लोगों के दिलों में काम करती रहती हैं। हमें उन लोगों की कद्र करनी चाहिए जो हमें यीशु की याद दिलाते हैं—जो मरने के बाद भी जीवित हैं—और प्रभु में उनसे मिलने और संगति करने से हमारे दिलों में जो खूबसूरत यादें बनी हैं, उन्हें संजोकर रखना चाहिए। जिस व्यक्ति के दिल में ऐसी कई खूबसूरत यादें होती हैं, वह सचमुच धन्य और सचमुच अमीर है।

वह समय आएगा। एक दिन ज़रूर आएगा जब हमें यह दुनिया छोड़कर प्रभु के पास जाना होगा। मृत्यु के प्रति इस नज़रिए के साथ, हमें उन रिश्तों और मुलाकातों की कद्र करनी चाहिए जो परमेश्वर अपनी सर्वोच्च इच्छा से हमें इस दुनिया में रहने के दौरान देते हैं। इसके अलावा, हमें इन मुलाकातों के ज़रिए प्रभु में खूबसूरत यादें बनाने के लिए खुद को समर्पित करना चाहिए। भले ही हमारा पापी स्वभाव हमें एक-दूसरे को बुरी यादें देने के लिए उकसाए, फिर भी हमें ऐसे जीवन के लिए प्रयास करना चाहिए जहाँ हम प्रभु में ढेर सारी अच्छी

यादें बनाने के लिए खुद को समर्पित करें—ऐसी यादें जो आखिरकार बुरी यादों पर हावी हो जाएँ। जैसे-जैसे हमारे बिछड़ने का समय नज़दीक आता है, हमें एक-दूसरे पर सकारात्मक प्रभाव डालना चाहिए, जो प्रभु द्वारा दी गई खूबसूरत यादों पर आधारित हो। ऐसा करते हुए, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि पृथ्वी पर भी प्रभु की इच्छा वैसे ही पूरी हो जैसे स्वर्ग में होती है। दूसरे शब्दों में, हमें विनम्रता, आँसुओं और धैर्य के साथ प्रभु की सेवा करनी चाहिए और उनके सुसमाचार का प्रचार करने के काम में अपना जीवन समर्पित कर देना चाहिए। मिशन की इस पक्की भावना के साथ, हमें अपने प्रियजनों से बिछड़ने के समय के लिए तैयारी करनी चाहिए—पृथ्वी पर होने वाले उस पल भर के अलगाव के लिए तैयारी करनी चाहिए। मैं पूरे दिल से प्रार्थना करता हूँ कि मृत्यु को एक अनंत नज़रिए से देखते हुए, हम इतनी सुंदर यादें बनाएँ जो उन रिश्तों में यीशु की सुगंध बिखेरें जो उन्होंने हमें दिए हैं, ताकि हमारे गुज़र जाने के बाद भी हम अपने प्रियजनों पर सकारात्मक प्रभाव डालते रहें।

मरने से पहले...

“हे प्रभु, जो समस्त मानवजाति की आत्माओं का परमेश्वर है, इस समुदाय के ऊपर एक ऐसे व्यक्ति को नियुक्त कर जो उनके आगे-पीछे आ-जा सके, जो उन्हें बाहर ले जाए और भीतर लाए, ताकि प्रभु के लोग चरवाहे के बिना भेड़ों के समान न रह जाएं... मिद्यानियों से इस्राएलियों का बदला ले। उसके बाद, तू अपने लोगों में जा मिलेगा” (गिनती 27:16-17; 31:2)।

मरने से पहले मैं प्रभु से क्या पाना चाहता हूँ? मेरे जीवन के अंत से पहले प्रभु मुझे कौन सा अंतिम कार्य सौंपेंगे?

गिनती 27:16-17 का आज का अंश मूसा को दिखाता है—जो जानता था कि उसे भी अपने भाई हारून की तरह मरना है (पद 13)—और वह परमेश्वर से अपनी इच्छा के अनुसार कुछ मांग रहा था। उसने परमेश्वर से अपने जीवन को बढ़ाने की मांग नहीं की (तुलना करें: 2 राजा 20:6)। मूसा ने परमेश्वर से कनान में प्रवेश करने की भी विनती नहीं की, वह भूमि जिसे देखने की उसने बहुत गहरी इच्छा की थी (तुलना करें: व्यवस्थाविवरण 34)। वास्तव में, परमेश्वर के वचन के अनुसार, मूसा अबारीम पर्वत पर चढ़ा, कनान की उस भूमि को देखा जो परमेश्वर ने इस्राएलियों को दी थी, और फिर उसमें प्रवेश किए बिना ही मर गया (गिनती 27:12-13)। तो, मरने से पहले मूसा की क्या इच्छा थी? वह चाहता था कि इस्राएली समुदाय के ऊपर एक नेता नियुक्त किया जाए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि परमेश्वर के लोग चरवाहे के बिना भेड़ों की तरह न रह जाएं (पद 16-17)। दूसरे शब्दों में, मरने से पहले, मूसा ने परमेश्वर से एक ऐसे नेता को नियुक्त करने की

विनती की जो उसकी जगह ले सके और इस्राएलियों को कनान देश में ले जा सके। यह अंश बताता है कि मूसा को अपनी तुलना में इस्राएल के लोगों की अधिक चिंता थी; दूसरे शब्दों में, उसकी मुख्य चिंता और विचार अपने स्वयं के स्वार्थ के बजाय परमेश्वर के लोगों पर केंद्रित थे।

जब मैंने इस अंश पर मनन किया, तो मुझे उन पादरियों की याद आई जो अपनी कलीसिया की भलाई के लिए जल्दी रिटायरमेंट चुनते हैं। मैंने उन लोगों के बारे में सोचा जिन्होंने बीस, तीस या चालीस साल से ज़्यादा समय तक चर्च की सेवा करने और उसे स्थापित करने के बाद, समय से पहले ही पद छोड़ने का फैसला किया—उन्होंने खुद से ज़्यादा चर्च परिवार और लोगों की परवाह की—और मैंने सोचा कि उनके मन में क्या चल रहा होगा। यह निश्चित रूप से कोई आसान फैसला नहीं है; रिटायर होने के बाद, वे उपदेश देने के लिए मंच पर नहीं खड़े होंगे, बल्कि बेंचों पर बैठकर किसी दूसरे पादरी का उपदेश सुनेंगे। फिर भी, जब मैं उन पादरियों के बारे में सोचता हूँ जो अपनी मंडली की भलाई के लिए जल्दी रिटायर होने का फैसला करते हैं, तो मुझे लगता है कि यह सच में एक लीडर के दिल की बात दिखाता है। मूसा का ध्यान अपनी आने वाली मौत के बजाय इज़राइल के लोगों—यानी परमेश्वर की मंडली—पर था। वह नहीं चाहते थे कि वे बिना चरवाहे की भेड़ों की तरह रह जाएँ (वचन 17)। इसलिए, उन्होंने परमेश्वर से दिल से प्रार्थना की कि उनके गुज़रने से पहले इज़राइल के लोगों की अगुवाई करने के लिए एक नया लीडर नियुक्त किया जाए। परमेश्वर ने उनकी प्रार्थना सुनी और नून के बेटे यहोशू को उनका लीडर नियुक्त किया (वचन 18–23)। जब मैं मूसा की उस प्रार्थना के बारे में सोचता हूँ जो उन्होंने मरने से पहले परमेश्वर से की थी, तो मुझे यीशु के शब्द याद आते हैं: "जब यीशु किनारे पर पहुँचे और उन्होंने बहुत बड़ी भीड़ देखी, तो उन्हें उन पर तरस आया, क्योंकि वे बिना चरवाहे की भेड़ों की तरह थे। इसलिए उन्होंने उन्हें बहुत सी बातें सिखानी शुरू कीं" (मरकुस 6:34), और "जब उन्होंने भीड़ को देखा, तो उन्हें उन पर तरस आया, क्योंकि वे परेशान और बेबस थे, जैसे बिना चरवाहे की भेड़ें" (मत्ती 9:36)। यीशु ने बड़ी भीड़ देखी—वे बहुत से लोग जो उनके पीछे दूर की जगह तक चले आए थे (मरकुस 6:32)—और उन्हें उन पर तरस आया क्योंकि वे बिना चरवाहे की भेड़ों की तरह थे (मरकुस 6:34)। इसी तरह, जब वे सभी कस्बों और गाँवों में घूमते हुए सभा-घरों में राज्य का सुसमाचार सुनाते और हर तरह की बीमारी और तकलीफ़ को ठीक करते थे (मत्ती 9:35), तो वे भीड़ को तरस भरी नज़रों से देखते थे (मत्ती 9:36)। इसका कारण यह था कि वे परेशान और बेबस थे, जैसे बिना चरवाहे की भेड़ें (मत्ती 9:36)। यीशु के इस हृदय का अनुसरण करते हुए, मेरा विश्वास है कि मरने से पहले, मैं भी विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च

के सदस्यों—वह आध्यात्मिक परिवार जिसे प्रभु ने मेरे जीवन के अंत तक सेवा करने के लिए मुझे सौंपा था—और साथ ही अपने भौतिक परिवार: अपनी पत्नी और तीन बच्चों के लिए परमेश्वर से पूरी लगन से प्रार्थना करूँगा। विशेष रूप से, जब मैं विक्ट्री समुदाय—मसीह की देह—के लिए प्रार्थना करूँगा, तो मैं परमेश्वर से एक ऐसे नेता को खड़ा करने के लिए कहूँगा जिसके पास यहोशू की तरह एक नए युग के लिए प्रभु पर केंद्रित दृष्टि हो, और जो विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च को आगे ले जाए। मैं ऐसी प्रार्थना इसलिए करता हूँ क्योंकि मैं नहीं चाहता कि हमारे चर्च के सदस्य बिना चरवाहे की भेड़ों की तरह हो जाएं। मुझे विश्वास है कि परमेश्वर इस अयोग्य सेवक की प्रार्थना सुनेंगे।

आज के वचन, गिनती 31:2 में, हम देखते हैं कि परमेश्वर मूसा को उसकी मृत्यु से पहले एक अंतिम मिशन सौंपते हैं। वह अंतिम मिशन यह आदेश था कि "इस्राएलियों की ओर से मिद्यानियों से बदला लो" (वचन 2)। परमेश्वर ने मूसा को यह मिशन क्यों सौंपा? इसलिए क्योंकि बिलाम की सलाह मानकर, उन्होंने पओर की घटना के दौरान इस्राएलियों से प्रभु के विरुद्ध पाप करवाया था, जिसके कारण प्रभु की सभा में महामारी फैल गई थी (वचन 16)। "पओर की घटना" उस समय को दर्शाती है जब इस्राएली शित्तीम में रहते हुए मोआबी महिलाओं के साथ अनैतिक यौन संबंध बनाने लगे थे; उनके निमंत्रण को स्वीकार करते हुए, वे उन महिलाओं के देवताओं के सामने झुके और बाल-पओर (मोआबी देवता बाल) की पूजा में शामिल हो गए (25:1-3)। इस घटना के कारण इस्राएल पर परमेश्वर का क्रोध भड़क उठा (वचन 3); सभा के बीच महामारी फैल गई (31:16), जिसमें 24,000 लोगों की जान चली गई (25:9)। परिणामस्वरूप, परमेश्वर ने मूसा को आदेश दिया कि वह मिद्यानियों को दुश्मन माने और उन पर प्रहार करे (वचन 17, *समकालीन कोरियाई संस्करण*)। कारण यह था कि उन्होंने चालाकी से पओर में इस्राएलियों को बाल की पूजा करने के लिए धोखा दिया था और उन्हें प्रलोभन में डाला था—इस कार्य का उदाहरण कोज़बी की घटना से मिलता है, जो एक मिद्यानी सरदार की बेटी थी और महामारी फैलने पर मारी गई थी (वचन 18, *समकालीन कोरियाई संस्करण*)। इस तरह, परमेश्वर का बदला पूरा करने के लिए, मूसा ने परमेश्वर की बात मानी और हर कबीले से 1,000 आदमी चुने—कुल मिलाकर 12,000—उन्हें हथियार दिए और मिद्यान के खिलाफ लड़ने के लिए भेजा (31:3-6)। जब उन्हें युद्ध के मैदान में भेजा गया, तो मूसा ने याजक एलीआज़र के बेटे फ़ीनहास को उनके साथ भेजा, जो पवित्र स्थान की चीज़ें और संकेत देने वाली तुरहियाँ साथ ले गया (वचन 6)। इससे पता चला कि मूसा और इस्राएल के लोगों को परमेश्वर पर भरोसा था (पार्क युन-सन)। आखिर में, ठीक वैसे ही

जैसे परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा दी थी, उन्होंने मिद्यान पर हमला किया और सभी पुरुषों को मार डाला, साथ ही मिद्यान के पाँच राजाओं और बेओर के बेटे बिलाम को भी तलवार से मार गिराया (वचन 7-8)। लेकिन समस्या यह थी कि हालाँकि इस्राएली सेना ने मिद्यान पर हमला किया और हर पुरुष को मार डाला (वचन 7), उन्होंने मिद्यान की सभी औरतों को छोड़ दिया—वही औरतें जिन्होंने "बिलाम की सलाह मानकर, पओर में इस्राएलियों को यहोवा के खिलाफ पाप करने के लिए उकसाया था और उनके बीच महामारी फैलने का कारण बनी थीं" (वचन 16)। नतीजतन, मूसा सेना के कमांडरों—हजारों के कप्तान और सैकड़ों के कप्तान—पर गुस्सा हो गया, जो युद्ध से वापस आए थे (वचन 14)।

जब मैं उस आखिरी मिशन के बारे में सोचता हूँ जो परमेश्वर ने मूसा को उसकी मौत से पहले दिया था, तो मुझे निर्गमन (Exodus) अध्याय 3 और 4 की बातें याद आती हैं। उन वचनों में दिखाया गया है कि परमेश्वर मूसा को बुला रहा है। मूसा को बुलाने के पीछे परमेश्वर का मकसद उसे मिस्र के राजा फ़िरौन के पास भेजना था, ताकि वह इस्राएलियों—परमेश्वर के लोगों—को मिस्र से बाहर ले जा सके (निर्गमन 3:10)। यह पहला मिशन था जो परमेश्वर ने मूसा को सौंपा था। इसके अलावा, परमेश्वर चाहता था कि मूसा इस्राएल के लोगों को कनान की प्रतिज्ञा की हुई भूमि में ले जाए (वचन 17)। आदर्श रूप से, यह मूसा का आखिरी मिशन होना चाहिए था। लेकिन, क्योंकि मूसा परमेश्वर पर भरोसा करने में नाकाम रहा और मेरिबा में उससे झगड़ रहे इस्राएलियों के सामने परमेश्वर की पवित्रता को बनाए नहीं रखा, इसलिए उसे उन्हें कनान में ले जाने से रोक दिया गया, वह भूमि जो परमेश्वर ने उन्हें दी थी (गिनती 20:12)। इसलिए, मूसा का आखिरी मिशन—अपनी मौत से पहले—ईश्वर के आदेश के अनुसार इस्राएलियों के दुश्मन मिद्यान से बदला लेना था; खास तौर पर, मिद्यान पर हमला करके उसे पूरी तरह खत्म करना था (गिनती 31:2-3)। यह बात थोड़ी हैरान करने वाली है कि इस्राएलियों का बदला लेने के लिए—और इस तरह ईश्वर के दुश्मनों से बदला लेने के लिए—मिद्यान को खत्म करना ही वह आखिरी मिशन था जो ईश्वर ने मूसा को सौंपा था। अगर मूसा का पहला मिशन इस्राएलियों को मिस्र से बाहर निकालना था, तो उनका आखिरी मिशन उनकी तरफ से बदला लेना था।

मूसा के इस आखिरी मिशन के बारे में सोचते हुए, मेरे मन में यह ख्याल आया कि मरने से पहले ईश्वर मुझे कौन सा आखिरी मिशन सौंप सकते हैं। जो बात मेरे मन में आई, वह रोमियों 5:10 थी: "क्योंकि अगर, जब

हम ईश्वर के दुश्मन थे, तब उसके बेटे की मौत के ज़रिए हमारा उससे मेल-मिलाप हुआ, तो मेल-मिलाप होने के बाद, उसके जीवन के ज़रिए हम और भी ज़्यादा बचाए जाएँगे!" इसमें बताया गया है कि कैसे यीशु मसीह, जो ईश्वर के इकलौते बेटे हैं, ने क्रूस पर ईश्वर के पूरे क्रोध का बोझ उठाया—पिता द्वारा त्याग दिए जाने, मरने और फिर से जी उठने के ज़रिए—उन लोगों के लिए जो कभी ईश्वर के दुश्मन थे और विनाश के लायक थे; इसके ज़रिए, मुझे अपने सभी पापों की माफ़ी मिली, मुझे धर्मी ठहराया गया, और मैं ईश्वर की संतान बन गया। जब मैं उद्धार की इस अद्भुत कृपा को समझने लगा—जिसके ज़रिए कोई व्यक्ति जो कभी ईश्वर का दुश्मन था, उनकी संतान बन गया—तो मेरी इच्छा हुई कि मैं अपना जीवन आखिर तक यीशु और सुसमाचार के लिए जीऊँ (मरकुस 10:29)। मेरा मानना है कि यही वह मिशन है जो ईश्वर ने मुझे दिया है। इसलिए, मेरी प्रार्थना है कि जो लोग ईश्वर के दुश्मन हैं, वे यीशु मसीह का सुसमाचार सुनें और यीशु को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करें, ताकि वे अब ईश्वर के क्रोध के अधीन न रहें, बल्कि उनकी बचाने वाली कृपा और प्रेम में रहें।

लगभग 15 साल पहले, मैं सीनियर पास्टर के तौर पर सेवा करने के लिए विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च लौटा। मैंने मत्ती 16:18 में दिए गए इस वादे को अपनाया कि प्रभु अपना चर्च खुद बनाएँगे। अपनी सेवा के दौरान, खासकर चर्च के बुजुर्ग सदस्यों की देखभाल करते हुए, प्रभु मुझे मौत के नज़रिए के बारे में सिखाते रहे हैं। इन नेक लोगों के धरती पर आखिरी पलों को देखने और उनके अंतिम संस्कार की रस्में निभाने से मुझे अपनी खुद की मौत के बारे में गहराई से सोचने का मौका मिला है। मुझे यह एहसास हो रहा है कि न सिर्फ़ अपने निजी विश्वास के सफ़र में, बल्कि अपने परिवार और चर्च की सेवा में भी, मुझे मौत के इस नज़रिए को ध्यान में रखना चाहिए। इसी पृष्ठभूमि में, और नंबर्स 27:16–17 और 31:2 के अंशों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैंने इस बात पर चिंतन किया कि मूसा ने अपनी मौत से पहले परमेश्वर से क्या चाहा था और परमेश्वर ने उन्हें कौन सा आखिरी मिशन सौंपा था। इससे मेरे मन में यह सवाल उठा: "मरने से पहले मैं प्रभु से दिल से क्या चाहूँगा?" और "मेरे जाने से पहले प्रभु मुझे कौन सा आखिरी मिशन पूरा करने का आदेश देंगे?" मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु मुझे उनके सामने रखने के लिए एक आखिरी, सच्ची प्रार्थना की विनती दें और मुझे वह कृपा और शक्ति दें जिससे मैं उस आखिरी मिशन को पूरा कर सकूँ जो उन्होंने मेरे लिए तय किया है।

“अपने घर को व्यवस्थित करें”

“उन दिनों हिजकिय्याह बीमार पड़ गया और मरने ही वाला था। आमोस का बेटा यशायाह नबी उसके पास गया और कहा, ‘प्रभु का यह कहना है: अपने घर को व्यवस्थित कर लो, क्योंकि तुम मरने वाले हो; तुम ठीक नहीं होगे’” (2 राजा 20:1)।

क्या आपके घर में व्यवस्था है? क्या आपका परिवार अभी बाइबल के पारिवारिक नियमों का पालन कर रहा है? क्या पति अपनी पत्नियों से प्रेम करते हैं (इफिसियों 5:25-30), और क्या पत्नियाँ सम्मान के साथ अपने पतियों के अधीन रहती हैं (पद 22-24, 33)? क्या बच्चे प्रभु में अपने माता-पिता की आज्ञा मानते हैं (6:1), और क्या माता-पिता अपने बच्चों को क्रोध न दिलाते हुए, बल्कि प्रभु की शिक्षा और अनुशासन में उनका पालन-पोषण करते हैं (पद 4)? ऐसा लगता है कि किसी कारण से, हमारे परिवार तेज़ी से अव्यवस्था की ओर बढ़ रहे हैं। पारिवारिक बंधन, तालमेल और व्यवस्था खत्म हो रही है; सदस्य अपनी मर्ज़ी से जीते हैं, परिवार की एकता बनाए रखने में विफल रहते हैं, जबकि झगड़े और फूट बढ़ती जा रही है। हमें क्या करना चाहिए?

आज के वचन, 2 राजा 20:1 में, परमेश्वर यशायाह नबी के ज़रिए राजा हिजकिय्याह से कहते हैं: “अपने घर को व्यवस्थित कर लो, क्योंकि तुम मरने वाले हो; तुम ठीक नहीं होगे।” परमेश्वर की ओर से यह कितना डरावना वचन है! परमेश्वर हिजकिय्याह से कह रहे थे, “तुम मरने वाले हो और ठीक नहीं होगे, इसलिए तुम्हें अपने घर को व्यवस्थित करना चाहिए!” बेशक, यहाँ “घर” का मतलब यहूदा देश से है। घर को व्यवस्थित करने के आदेश का मतलब है एक राजा के तौर पर राज्य के कामकाज का हस्तांतरण करना (पार्क युन-सन)। हालाँकि, मैं इस वचन को हमारे अपने घरों—हमारे असली परिवारों—पर लागू करना चाहूँगा। दूसरे शब्दों में, मेरा मानना है कि परमेश्वर चाहते हैं कि हम अपने घरों को व्यवस्थित करें। बेशक, हिजकिय्याह के

विपरीत, हम ज़रूरी नहीं कि तुरंत मौत का सामना कर रहे हों। फिर भी, मेरा मानना है कि हमें अपनी मौत को ध्यान में रखते हुए अपने घरों को व्यवस्थित करना चाहिए। जिस तरह राजा हिज़किय्याह को अपनी मौत से पहले राज्य के कामकाज के उत्तराधिकार की व्यवस्था करनी थी, उसी तरह हमें मरने से पहले अपने बच्चों—और आने वाली पीढ़ियों—को अपना विश्वास सौंपना चाहिए। इस ज़िम्मेदारी के भारीपन को देखते हुए, मुझे लगता है कि अगर हम अपने घर-परिवार को ठीक से व्यवस्थित करने में नाकाम रहते हैं, तो यह ऐसा ही है जैसे परमेश्वर हमें वही चेतावनी दे रहे हों: "तुम मर जाओगे और जीवित नहीं रहोगे।" हमारे परिवारों को सही रास्ते पर लाने की हमारी ज़िम्मेदारी कितनी अहम है, यह इसी से पता चलता है। हमें इस मामले को कभी भी हल्के में नहीं लेना चाहिए। तो फिर, हमें क्या करना चाहिए? मरने से पहले हम अपने बच्चों तक अपना विश्वास कैसे पहुँचा सकते हैं? मैं 2 राजा 20:2-3 से दो बातें बताना चाहूँगा:

पहली बात, हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए।

2 राजा 20:2 को देखिए: "हिज़किय्याह ने अपना मुँह दीवार की ओर किया और प्रभु से प्रार्थना की।" भविष्यद्वक्ता यशायाह से यह संदेश मिलने के बाद—"अपने घर को व्यवस्थित कर लो, क्योंकि तुम मरने वाले हो; तुम ठीक नहीं होगे"—राजा हिज़किय्याह ने अपना मुँह दीवार की ओर किया और परमेश्वर से प्रार्थना की। अपनी प्रार्थना में, वह फूट-फूटकर रोया और परमेश्वर से गिड़गिड़ाकर विनती की (वचन 3)। क्या हमें भी फूट-फूटकर नहीं रोना चाहिए? जब हम अपने बच्चों के विश्वास के बारे में सोचते हैं, तो क्या हमें फूट-फूटकर रोना और परमेश्वर से सच्चे दिल से प्रार्थना नहीं करनी चाहिए? खासकर जब हम उन बच्चों के बारे में सोचते हैं जो अभी विश्वास नहीं करते, तो हमें फूट-फूटकर रोना चाहिए और उनकी आत्माओं की मुक्ति के लिए परमेश्वर से विनती करनी चाहिए। कारण यह है कि जैसे-जैसे हम अपने शरीर की मृत्यु के करीब आते हैं, हम अपने बच्चों की आत्माओं के अनंत भविष्य के बारे में गहराई से सोचने के लिए मजबूर हो जाते हैं। अगर हमारे बच्चे यीशु पर विश्वास नहीं करते, जबकि हम—उनके विश्वास करने वाले माता-पिता—अभी जीवित हैं, तो हमारे जाने के बाद उनकी मुक्ति का क्या होगा? यह एक गंभीर मामला है—प्रार्थना का एक ऐसा विषय जिसके लिए हमें फूट-फूटकर रोने और परमेश्वर से गिड़गिड़ाकर विनती करने की ज़रूरत है।

दूसरी और आखिरी बात, हमें ईमानदारी और पूरे दिल से समर्पण के साथ प्रभु के सामने धार्मिकता का जीवन जीना चाहिए।

2 राजा 20:3 पर विचार करें: "हे प्रभु, मैं विनती करता हूँ, याद कर कि मैं तेरे सामने सच्चाई और वफादार दिल से कैसे चला हूँ, और मैंने वह काम किया है जो तेरी नज़र में अच्छा था।" और हिजकिय्याह फूट-फूटकर रोया। जब राजा हिजकिय्याह फूट-फूटकर रोते हुए परमेश्वर से विनती कर रहा था, तो उसने परमेश्वर से याद करने को कहा कि वह कैसे ईमानदारी और पूरे दिल से समर्पण के साथ उनके सामने चला था, और कैसे उसने वह काम किया था जो उनकी नज़र में अच्छा था। इस प्रार्थना पर विचार करते हुए 2 राजा 18:3 के शब्द याद आते हैं—कि राजा हिजकिय्याह ने वही किया जो प्रभु की नज़र में सही था। सचमुच, प्रभु के सामने ईमानदारी से जीवन जीने वाले राजा के तौर पर, जब उन्हें पता चला कि उनकी मृत्यु होने वाली है, तो उन्होंने परमेश्वर से अपने सच्चे, पूरे मन से किए गए और नेक कामों को याद करने की विनती की। यह वाकई अद्भुत है कि परमेश्वर का यह वचन सुनकर कि "तुम मर जाओगे और जीवित नहीं रहोगे," हिजकिय्याह यह कह सके कि उन्होंने अपना पूरा जीवन प्रभु के सामने ईमानदारी और पूरे मन की भक्ति के साथ नेक कामों में बिताया है। ज़रा सोचिए: क्या आप और मैं, मौत का सामना करते समय, अपने बच्चों और आने वाली पीढ़ियों से वही बात कह सकते हैं जो राजा हिजकिय्याह ने कही थी? जब हम यशायाह 38:1 के शब्दों पर विचार करते हैं—"अपने घर-बार का प्रबंध कर ले"—तो हमें खुद से पूछना चाहिए: क्या मरने से पहले अपने बच्चों और आने वाली पीढ़ियों को आखिरी बात कहते हुए हम सचमुच यह कह पाएंगे, "मैंने अपना जीवन प्रभु के सामने सच्चाई और पूरे मन से भलाई करते हुए बिताया है," और उनसे भी यह कह पाएंगे कि वे "प्रभु के सामने सच्चाई और पूरे मन से भलाई करें"? ऐसी विरासत छोड़ने के लिए, हमें अभी से ही नेक जीवन जीना शुरू करना होगा और प्रभु के सामने सच्चाई और पूरे मन से काम करना होगा।

जब राजा हिजकिय्याह फूट-फूटकर रोए और परमेश्वर से विनती की, तो प्रभु ने उनकी प्रार्थना सुनी, उनके आँसू देखे और उन्हें तुरंत जवाब दिया (पद 4; पद 5–6)। प्रार्थना के इस जवाब को तीन बातों में बताया जा सकता है। पहला, परमेश्वर ने कहा कि वे हिजकिय्याह की बीमारी को ठीक कर देंगे (पद 5)। उन्होंने बताया कि तीन दिनों के भीतर, हिजकिय्याह पूरी तरह ठीक हो जाएंगे और—सबसे पहले—धन्यवाद देने के लिए प्रभु के भवन में जाएंगे (पार्क युन-सन)। दूसरा, परमेश्वर ने हिजकिय्याह की उम्र पंद्रह साल और बढ़ाने का

वादा किया (पद 6)। लंबी उम्र के इस वरदान का मकसद यह था कि वे प्रभु के सामने सच्चाई और पूरे मन से भलाई करते रह सकें (पार्क युन-सन)। आखिर में, परमेश्वर ने हिजकिय्याह को भरोसा दिलाया कि वे दाऊद के नगर को अश्शूर के राजा के हाथों से बचाएंगे और नगर की रक्षा करेंगे (पद 6)। क्योंकि परमेश्वर का वचन अच्छा है (पद 19), इसलिए राजा हिजकिय्याह ने इस प्रार्थना के जवाब के ज़रिए परमेश्वर की भलाई का अनुभव किया। उनके जीवन के दिन शांति और सच्चाई से भरे रहे (पद 19)।

मैं प्रार्थना करता हूँ कि आपके घरों में शांति और सच्चाई बनी रहे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर आपके और मेरे परिवारों की प्रार्थनाओं का जवाब दें। खासकर, मैं दिल से उम्मीद करता हूँ कि हमारे जाने से पहले, हमारी चर्च की मंडली यह अद्भुत आशीष देखे कि हमारे बच्चे प्रभु के पास लौट आए हैं और पूरा परिवार परमेश्वर के भवन में इकट्ठा होकर धन्यवाद के साथ उनकी आराधना कर रहा है। उस दिन के आने तक— और जब तक प्रभु हमें अपने पास नहीं बुला लेते—हम प्रभु के सामने पूरे दिल और सच्चाई से भलाई करते हुए अपने बच्चों और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुंदर मिसाल बनें।

इसहाक का मारे जाने का डर

“इसलिए इसहाक गरार में ही रहा। जब वहाँ के लोगों ने उससे उसकी पत्नी के बारे में पूछा, तो उसने कहा, ‘वह मेरी बहन है,’ क्योंकि उसे यह कहने में डर लगता था कि ‘वह मेरी पत्नी है।’ उसने सोचा, ‘यहाँ के लोग रिबेका की वजह से मुझे मार डाल सकते हैं, क्योंकि वह बहुत सुंदर है’” (उत्पत्ति 26:6–7)।

कल मुझे पता चला कि मेरे एक दोस्त का बेटा—वह पहला दोस्त जो मुझे अमेरिका आने के बाद मिला था—कैंसर से जूझ रहा है। यह खबर सुनकर मुझे बहुत धक्का लगा। यह सुनकर कि उसका बेटा, जो अभी बहुत छोटा होगा, कैंसर के लिए कीमोथेरेपी करवा रहा है, मुझे उस समय की याद आ गई जब मेरा अपना पहला बच्चा इंटेंसिव केयर यूनिट (ICU) में था; मैंने अपने दोस्त से कहा कि मैं उनके लिए प्रार्थना करूँगा। इस बीच, मुझे यह देखकर अच्छा लगा कि मेरे दोस्त ने अपने विश्वास के बारे में गहरी बात बताई, क्योंकि उसने परमेश्वर की अद्भुत कृपा का अनुभव किया था। ऐसा कैसे हो सकता है?

आज सुबह की प्रार्थना सभा के बाद, जब मैं अकेले अपने दोस्त के बेटे के लिए प्रार्थना कर रहा था, तो मैंने अपने दोस्त और उसकी पत्नी के दिलों के बारे में सोचा। इससे मुझे हमारी प्रेस्बिटरी के एक सीनियर पादरी के पिता की याद आई—जिनसे मैं पिछले हफ़्ते मिलने गया था—और वे भी कैंसर से जूझ रहे हैं। जब मैं अस्पताल गया, तो मैंने देखा कि पिता धीरे-धीरे अपने पादरी-बेटे के सिर पर हाथ फेर रहे थे और उन जगहों को छू रहे थे जहाँ उसे दर्द हो रहा था; मैंने सोचा कि उस पिता के मन में क्या चल रहा होगा। मुझे याद है कि

उन्होंने कहा था कि भले ही आधुनिक चिकित्सा बहुत आगे बढ़ गई है, लेकिन ऐसा लगता है कि हम अभी भी कैंसर पर काबू नहीं पा सके हैं। मेरे मन में एक पादरी की पत्नी का भी ख्याल आया जो अभी कैंसर की सर्जरी और इलाज से ठीक हो रही है; यह जानकर कि उसके माता-पिता—जो मिशनरी थे—अब इस धरती पर नहीं हैं, मैंने कल्पना की कि उसका दिल कितना भारी होगा। एक और बहन है जिसमें कैंसर के लक्षण दिख रहे हैं—हालाँकि अभी उसकी पक्की जाँच होनी बाकी है—और यह जानकर कि वह लंबे समय से अपने माता-पिता से अलग हो गई है और उसका कोई परिवार नहीं बचा है, मैंने उसके लिए प्रार्थना करने की ज़रूरत महसूस की। मुझे एक प्यारे सीनियर पास्टर की बात याद आती है, जिन्हें कभी कैंसर की वजह से मौत का सामना करना पड़ा था। उन्होंने पिछले हफ़्ते काकाओटॉक (KakaoTalk) पर मुझसे कहा था: "मौत के मुहाने पर खड़े होकर मुझे एहसास हुआ कि सम्मान, ऊँचे पद, पैसा और प्रभावशाली आँकड़े... इनमें से किसी भी चीज़ का असल में कोई महत्व नहीं है। 'मेगा-मिनिस्ट्री,' 'महान पास्टर' या 'पास्टोरल सफलता' जैसे शब्द बुनियादी तौर पर गलत लगते हैं। कैंसर के ज़रिए मुझे यह एहसास हुआ कि सार्थक, गहरे और खुशी से जीना और काम करना ही सबसे ज़्यादा मायने रखता है।"

आपको क्या लगता है कि अगर हमें कैंसर हो जाए और मौत का सामना करना पड़े, तो हम कैसा महसूस करेंगे? क्या हम डरेंगे नहीं? या फिर, उस स्थिति में भी, क्या हम—मेरे दोस्त की तरह—ईश्वर की अद्भुत कृपा को स्वीकार करेंगे?

आज के हिस्से में, उत्पत्ति 26:6-7 में, हम इसहाक से मिलते हैं, जो इस डर से घिरा हुआ था कि कहीं उसे मार न दिया जाए। उसके डर की वजह उसकी पत्नी रिबेका की सुंदरता थी (आयत 7)। शुरू में यह समझना मुश्किल हो सकता है कि कोई पति सिर्फ़ इसलिए अपनी जान के लिए क्यों डरेगा क्योंकि उसकी पत्नी सुंदर है; हालाँकि, अगर हम इसहाक के नज़रिए से स्थिति को देखें, तो उसका डर समझ में आता है। उस समय, इसहाक और रिबेका गेरार में रह रहे थे, जो कनान की दक्षिणी सीमा के दक्षिण-पश्चिम में स्थित एक शहर था (आयत 6)। यह शहर फिलिस्तीनियों के राजा अबीमेलेक के शासन में था (आयत 8)। इसहाक अकाल के कारण ही रिबेका के साथ गेरार गया था (आयत 1)। एक दिलचस्प बात यह है कि इसहाक के पिता अब्राहम के समय में भी अकाल पड़ा था, और इसहाक के समय में भी एक और अकाल पड़ा, जिसके कारण उसे गेरार जाना पड़ा (आयत 1, 6)। हालाँकि, ऐसा नहीं लगता कि अकाल पड़ने पर इसहाक का शुरू में

गेरार जाने का इरादा था। हम यह बात उससे कही गई ईश्वर की बातों से समझ सकते हैं: "प्रभु इसहाक के सामने प्रकट हुए और कहा, 'मिस्र मत जाओ; उस देश में रहो जहाँ मैं तुम्हें रहने के लिए कहूँ'" (आयत 2)। इससे पता चलता है कि अकाल पड़ने पर इसहाक ने शायद मिस्र जाने के बारे में सोचा होगा। फिर भी, परमेश्वर ने उसे मिस्र न जाने का हुक्म दिया, बल्कि "उस देश में रहने को कहा जहाँ मैं तुम्हें रहने के लिए कहूँ" (आयत 2) और उसे एक वादा दिया: "कुछ समय के लिए इसी देश में रहो, और मैं तुम्हारे साथ रहूँगा और तुम्हें आशीष दूँगा। क्योंकि मैं तुम्हें और तुम्हारे वंशजों को ये सभी देश दूँगा और उस शपथ को पूरा करूँगा जो मैंने तुम्हारे पिता अब्राहम से खाई थी। मैं तुम्हारे वंशजों को आकाश के तारों के समान अनगिनत बनाऊँगा और उन्हें ये सभी देश दूँगा, और तुम्हारी संतान के द्वारा पृथ्वी की सभी जातियों को आशीष मिलेगी" (आयतें 3-4)। इस प्रकार, परमेश्वर से आशीष का यह वादा पाकर, इसहाक मिस्र नहीं गया बल्कि गेरार में बस गया। हालाँकि, क्योंकि उसकी पत्नी रिबका सुंदर थी, उसे डर था कि स्थानीय लोग उस पर बुरी नज़र डाल सकते हैं और उसे मार डाल सकते हैं, इसलिए वह उसे अपनी पत्नी बताने से डरता था (आयत 7)। नतीजतन, जब वहाँ के लोगों ने उसके बारे में पूछा, तो वह यह नहीं कह पाया कि वह उसकी पत्नी है; इसके बजाय, उसने कहा कि वह उसकी बहन है (आयत 7)। इसहाक—यह अच्छी तरह जानते हुए कि रिबका उसकी पत्नी थी—ऐसा झूठ कैसे बोल सकता था और उसे अपनी बहन कैसे कह सकता था? चूँकि वह लंबे समय तक गेरार में रहा (आयत 8), ऐसा लगता है कि इसहाक ने न केवल अपनी पत्नी रिबका को अपनी बहन बताकर स्थानीय पलिशियों को धोखा दिया, बल्कि जब भी वे देख रहे होते थे, तो वह उसके साथ बहन जैसा व्यवहार भी करता था। हम आयत 8 से यह अनुमान लगा सकते हैं, जिसमें कहा गया है: "इसहाक को वहाँ रहते हुए काफी समय हो गया था, जब पलिशियों के राजा अबीमेलेक ने खिड़की से बाहर देखा और इसहाक को अपनी पत्नी रिबका के साथ प्यार-दुलार करते हुए देखा।" यह अंश बताता है कि गेरार में अपने लंबे प्रवास के दौरान—जब तक कि राजा अबीमेलेक ने उसे देख नहीं लिया—इसहाक रिबका के साथ अपनी पत्नी जैसा व्यवहार (जैसे उसे प्यार-दुलार करना) तभी करता था जब उसे लगता था कि कोई नहीं देख रहा है, जबकि सार्वजनिक रूप से वह उसके साथ बहन जैसा व्यवहार करता था। इस व्यवहार पर विचार करने पर यह बात हैरान करती है कि अपनी सुंदर पत्नी के अपहरण, यौन उत्पीड़न या यहाँ तक कि उसे चाहने वाले पलिशियों द्वारा मारे जाने के डर के बजाय, उसे इस बात का डर था कि कहीं उसकी वजह से *वह* (इसहाक) उनके हाथों मारा न जाए। ऐसा लगता है कि इसहाक बहुत स्वार्थी व्यक्ति था। वह रिबका से—

जिसके साथ वह "एक शरीर" था—उतना प्यार नहीं करता था जितना वह खुद से करता था। नतीजतन, उसने लंबे समय तक दोहरी ज़िंदगी जी; उसने गेरार के फ़िलिस्तीनियों को यह झूठ बोलकर धोखा दिया कि उसकी पत्नी उसकी बहन है। फिर, एक दिन, राजा अबीमेलेक ने उसे रिबेका के साथ प्यार-मुहब्बत करते हुए पकड़ लिया (आयत 8)। राजा अबीमेलेक ने इसहाक को बुलाया और पूछा, "साफ़ है कि वह तुम्हारी पत्नी है; तुमने क्यों कहा कि वह तुम्हारी बहन है?" (आयत 9)। इसहाक ने जवाब दिया, "मुझे लगा कि कहीं उसकी वजह से मेरी जान न चली जाए" (आयत 9)।

आइजैक की सोच बिल्कुल ऐसी ही थी। हालाँकि परमेश्वर ने आइजैक से साफ़ तौर पर वादा किया था (वचन 3-4), फिर भी आइजैक उस वादे या उस वादे को करने वाले परमेश्वर पर भरोसा नहीं कर पाया। अपनी जान बचाने और मौत से बचने के लिए, उसने यह झूठ बोला कि उसकी पत्नी उसकी बहन है, और वह तब तक ऐसा करता रहा जब तक कि राजा अबीमेलेक ने उसका सच नहीं पकड़ लिया (वचन 8)। नहीं, परमेश्वर ने आइजैक से वादा किया था, "मैं तुम्हारे वंश को आकाश के तारों के समान अनगिनत कर दूँगा और यह सारी ज़मीन तुम्हारे वंश को दे दूँगा" (वचन 4)। क्या परमेश्वर गेरार में रहने वाले फिलिस्तीनियों के हाथों आइजैक को उसकी खूबसूरत पत्नी रिबेका की वजह से मारे जाने देता? परमेश्वर ऐसा कभी नहीं होने देता; और अगर फिलिस्तीनी खूबसूरत रिबेका को पाने के लिए आइजैक को मारने की कोशिश भी करते, जैसा कि आइजैक ने सोचा था, तो परमेश्वर सिर्फ़ तमाशा नहीं देखता; वह निश्चित रूप से उसे बचाता। तो फिर, आइजैक ने मौत के डर से उन चीज़ों के बारे में क्यों सोचा जो अभी हुई ही नहीं थीं? और क्यों वह गेरार में लंबे समय तक लोगों को धोखा देता रहा और झूठ बोलता रहा—वही झूठ जिसे शैतान, जो झूठ का पिता है, पसंद करता है? और यह आइजैक, विश्वास के पिता अब्राहम का बेटा था। हालाँकि, उसके पिता अब्राहम के पास कहने के लिए कुछ नहीं था, क्योंकि उसने भी गेरार में सारा को अपनी बहन बताया था (वचन 2), यह डरते हुए कि वहाँ के लोग, जो परमेश्वर से नहीं डरते थे, उसकी पत्नी सारा की वजह से उसे मार डाल सकते थे (20:11)। ऐसा लगता है कि "जैसा बाप, वैसा बेटा" वाली कहावत सच साबित हुई। फिर भी, परमेश्वर की अद्भुत और वफादार कृपा यह है कि जब आइजैक ने उस ज़मीन पर खेती की, तो परमेश्वर ने उसे आशीष दी, जिससे उसे उसी साल सौ गुना फसल मिली, वह समृद्ध हुआ, और आखिरकार बहुत अमीर आदमी बन गया (वचन 12-13, मॉडर्न इंग्लिश वर्शन)। उसके पास भेड़-बकरियों और मवेशियों के झुंड थे, और उसके बहुत सारे नौकर-चाकर हो गए (वचन 14)। यहाँ तक कि वहाँ के फिलिस्तीनी आइजैक से जलने लगे (वचन

14)। परमेश्वर की यह कैसी कृपा है? परमेश्वर ने इसहाक पर कितनी अद्भुत आशीर्ष बरसाई—जबकि इसहाक ने लंबे समय तक झूठ बोला, दूसरों को धोखा दिया, अपने ही विचारों पर भरोसा किया और परमेश्वर के वादों पर पूरी तरह विश्वास नहीं किया। फिर भी, परमेश्वर ने अविश्वासी और बेईमान इसहाक से किए गए अपने वादे को वफ़ादारी से पूरा किया। इसका कारण यह है कि भले ही हम बेईमान हों, प्रभु हमेशा वफ़ादार रहते हैं और खुद का इनकार नहीं कर सकते (2 तीमुथियुस 2:13)।

हमें भी इसहाक की तरह मारे जाने का डर हो सकता है। इसलिए, हम भी इसहाक की तरह झूठ बोल सकते हैं और दूसरों को धोखा दे सकते हैं। सिर्फ़ एक-दो दिन के लिए नहीं, बल्कि लंबे समय तक। आखिरकार, परमेश्वर पर पूरी तरह भरोसा करने के बजाय, हम खुद को बचाने और कृत्रिम तरीकों से अपनी जान बचाने के लिए अपनी ही समझ पर निर्भर हो सकते हैं। हालाँकि, हमें यह याद रखना चाहिए कि परमेश्वर, जो जीवन, मृत्यु और भाग्य को नियंत्रित करते हैं, हमारे जीवन की रक्षा और सुरक्षा करते हैं। इसके अलावा, हमें इस सच्चाई पर विश्वास करना चाहिए कि वाचा का वफ़ादार परमेश्वर निश्चित रूप से अपने वादे के शब्दों को अपने समय और अपने तरीके से पूरा करेगा। इसलिए, हमें अपनी समझ पर निर्भर नहीं रहना चाहिए, बल्कि पूरे दिल से परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए (नीतिवचन 3:5)। साथ ही, हमें विश्वास से जीना चाहिए, न कि जो दिखाई देता है उसके आधार पर (2 कुरिन्थियों 5:7)। अगर हम अपनी समझ पर निर्भर रहते हैं, तो हमें डर हो सकता है कि हम या हमारा कोई प्रियजन कैंसर की बीमारी से मर सकता है। हालाँकि, अगर हम परमेश्वर पर भरोसा करते हैं और विश्वास से जीते हैं, तो हम परमेश्वर की अद्भुत कृपा का अनुभव कर पाएंगे—ठीक मेरे उस दोस्त की तरह जिसके बेटे को कैंसर है—और इस तरह अपने आस-पास के लोगों के सामने उस अद्भुत कृपा को स्वीकार कर पाएंगे। भले ही हम जीवन में अकाल या डरावनी स्थितियों में हों, मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप और मैं केवल यीशु की ओर देखें, जो हमारे विश्वास के रचयिता और उसे पूरा करने वाले हैं (इब्रानियों 12:2), प्रभु द्वारा दिए गए वादों को मजबूती से थामे रखें, और विश्वास के साथ बोलें और काम करें।

मरने के लिए तैयार

“तब पौलुस ने जवाब दिया, ‘तुम क्यों रो रहे हो और मेरा दिल क्यों तोड़ रहे हो? मैं न केवल बंधने के लिए, बल्कि प्रभु यीशु के नाम के लिए यरूशलेम में मरने के लिए भी तैयार हूँ” (प्रेरितों के काम 21:13)।

लड़ाई में, जो व्यक्ति मरने के पक्के इरादे के साथ आगे बढ़ता है, वह सचमुच बहुत ताकतवर होता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे अपनी जान दांव पर लगाकर लड़ रहे होते हैं। अगर ऐसा कोई व्यक्ति पूरे जोश और पक्के इरादे के साथ हमारी तरफ़ बढ़े—और उसे इस बात की परवाह न हो कि इस दौरान वह ज़िंदा रहेगा या मर जाएगा—तो उसे कौन रोक सकता है?

आज के वचन, प्रेरितों के काम 21:13 में, हम प्रेरित पौलुस को यरूशलेम जाने के लिए पूरी तरह तैयार और मरने के लिए भी तैयार देखते हैं। हालाँकि पवित्र आत्मा ने गवाही दी थी कि हर शहर में उसे कैद और मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा (20:23), फिर भी यरूशलेम जाने का पौलुस का इरादा अडिग रहा। उन शहरों में से, यह वचन कैसरिया में उसके पहुँचने का ज़िक्र करता है। वहाँ, अगबुस नाम का एक नबी यहूदिया से आया, उसने पौलुस की बेल्ट ली और उससे अपने ही हाथ-पैर बाँध लिए। उसने भविष्यवाणी की कि पवित्र आत्मा ने कहा है कि यरूशलेम में यहूदी लोग बेल्ट के मालिक—पौलुस—को इसी तरह बाँध लेंगे और उसे रोमियों के हवाले कर देंगे (वचन 11)। यह सुनकर, पौलुस के साथियों और वहाँ के विश्वासियों ने उससे यरूशलेम न जाने का आग्रह किया (वचन 12)। पौलुस ने जवाब दिया, “तुम क्यों रो रहे हो और मेरा दिल क्यों तोड़ रहे हो?” (वचन 13), और कहा कि वह न केवल बंधने के लिए, बल्कि प्रभु यीशु के नाम के लिए यरूशलेम में मरने के लिए भी तैयार है (वचन 13)।

पौलुस यीशु मसीह के लिए मरने को तैयार व्यक्ति था। वह ऐसा व्यक्ति था जिसने यीशु मसीह के सुसमाचार के लिए अपनी जान दांव पर लगा दी थी। वह कलीसिया—जो मसीह की देह है—और परमेश्वर के राज्य की खातिर मरने के लिए तैयार व्यक्ति था। प्रेरितों के काम 20:24 पर गौर करें: “हालाँकि, मैं अपनी जान को अपने लिए कुछ नहीं समझता; मेरा एकमात्र मकसद दौड़ पूरी करना और उस काम को पूरा करना है जो प्रभु यीशु ने मुझे सौंपा है—परमेश्वर के अनुग्रह की खुशखबरी की गवाही देने का काम।” पौलुस ने प्रभु यीशु से मिले मिशन को अपनी जान से ज़्यादा अहमियत दी। उन्होंने परमेश्वर के अनुग्रह की खुशखबरी (सुसमाचार) सुनाने के काम को पूरा करने को अपनी ज़िंदगी से भी ज़्यादा कीमती माना। कितनी अद्भुत सोच थी उनकी! पौलुस प्रभु से मिले मिशन—खासकर खुशखबरी सुनाने के काम—को अपनी ज़िंदगी से भी ज़्यादा कीमती कैसे मान पाए? मुझे लगता है कि इसका कारण भजन संहिता 63:3 में मिलता है: “क्योंकि तेरा प्रेम जीवन से भी उत्तम है, इसलिए मेरे होंठ तेरी स्तुति करेंगे।” पौलुस प्रभु से मिले मिशन को अपनी ज़िंदगी से ज़्यादा महत्व इसलिए दे पाए क्योंकि परमेश्वर का प्रेम अनंत है। उस अनंत प्रेम को समझने और महसूस करने के बाद, पौलुस इतने आभारी और विस्मय से भर गए थे कि प्रभु द्वारा दिए गए मिशन—खुशखबरी सुनाने—को पूरा करने के मामले में उन्हें अपनी ज़िंदगी की कोई परवाह नहीं थी। प्रभु यीशु से मिले मिशन के लिए पौलुस में ज़बरदस्त जोश था; जब लोगों ने उन्हें—जो न केवल बंधने बल्कि यरूशलेम में मरने के लिए भी तैयार थे—वहाँ न जाने के लिए मनाया, तो आखिरकार उन्होंने यह कहकर उन्हें रोकना छोड़ दिया, “प्रभु की इच्छा पूरी हो” (21:14)। फिर, कुछ दिनों बाद, पौलुस और उनके साथी यात्रा के लिए तैयार हुए और यरूशलेम गए (पद 15)।

यरूशलेम जाते हुए पौलुस की तस्वीर देखकर मुझे किसी तरह यीशु की याद आती है—जैसे कोई मेमना वध के लिए ले जाया जा रहा हो (यशायाह 53:7)। यीशु ने बेथलहम की चरनी से लेकर कलवरी के क्रूस तक का जीवन जिया; जीवन के साक्षात स्वरूप के रूप में, उन्होंने हमारी मुक्ति और अनंत जीवन के लिए स्वेच्छा से क्रूस पर अपनी जान दे दी, और पिता परमेश्वर की आज्ञा का पालन मृत्यु तक किया (फिलिप्पियों 2:8)। यीशु की तरह, प्रेरित पौलुस भी मृत्यु की ओर आगे बढ़े। यह सोचकर कि उन्होंने अपनी सांसारिक ज़िंदगी को कितना कम महत्व दिया, मुझे एक बार फिर प्रभु से मिले मिशन के महत्व और उसे पूरा करने की ज़रूरत

के बारे में सोचने पर मजबूर होना पड़ा। मेरी इच्छा है कि मैं अपनी बाकी ज़िंदगी एक ऐसे सुसमाचार प्रचारक के रूप में बिताऊँ जिसमें मिशन का जोश हो—और मैं प्रभु द्वारा मुझे सौंपे गए काम को पूरा करने के लिए पूरी तरह दृढ़ रहूँ, भले ही इसके लिए मुझे अपनी जान ही क्यों न देनी पड़े।

अभी का दुख और भविष्य की महिमा

क्योंकि हम परमेश्वर की संतान हैं—और इस तरह वारिस भी (रोमियों 8:17)—इसलिए हमें "अभी के दुख" का सामना करना ही पड़ता है (वचन 18)। फिर भी, इस दुख को सहते हुए भी, हमें पक्के और निश्चित भरोसे के साथ अपने विश्वास पर अडिग रहना चाहिए। वह भरोसा उस महिमा का है जो भविष्य में हमें दिखाई जाएगी (वचन 18)।

भविष्य में दिखाई जाने वाली महिमा की तुलना अभी के दुख से नहीं की जा सकती (वचन 18)। वह महान, अनंत महिमा उन हल्की और कुछ समय की परेशानियों से कहीं बढ़कर है जिनका सामना हम अभी कर रहे हैं (2 कुरिन्थियों 4:17; रोमियों 8:18)। आखिर वह भविष्य की महिमा क्या है जिसकी तुलना अभी के दुख से नहीं हो सकती? यह हमारे शरीरों का छुटकारा है (वचन 23)। जिस दिन यीशु इस धरती पर लौटेंगे—जब आखिरी तुरही फूँकी जाएगी (1 कुरिन्थियों 15:52)—तब हमारे नाशवान शरीर फिर से जी उठेंगे और अविनाशी शरीरों में बदल जाएंगे (वचन 52)। हमारे शरीर उनके महिमामय शरीर जैसे हो जाएंगे (फिलिप्पियों 3:21)। इसके अलावा, आने वाले युग की महिमा में स्वर्ग में अनंत जीवन का आनंद लेना, प्रभु को आमने-सामने देखना (1 कुरिन्थियों 13:12; प्रकाशितवाक्य 22:4), और मसीह के साथ राज्य करना शामिल है (प्रकाशितवाक्य 22:5)। हम ऐसा जीवन जिएंगे जो हमेशा चमकता रहेगा (वचन 5)।

इसलिए, उस महिमा का भरोसा रखते हुए जो हमारा इंतज़ार कर रही है, हमें उस मिशन को ईमानदारी से पूरा करना चाहिए जो हमें सौंपा गया है, और अभी के दुख के बीच भी धैर्य और दृढ़ता के साथ आगे बढ़ते रहना चाहिए।

“काश, तुम्हारी जगह मैं मर गया होता”

“राजा बहुत दुखी हुआ और फाटक के ऊपर बने कमरे में जाकर रोने लगा। और जाते हुए उसने कहा, ‘हे मेरे बेटे अबशालोम, मेरे बेटे, मेरे बेटे अबशालोम! काश, तुम्हारी जगह मैं मर गया होता, हे अबशालोम, मेरे बेटे, मेरे बेटे!’” (2 शमूएल 18:33)।

एक पिता का दिल अपने बच्चे के लिए प्यार से भरा होता है। जब बच्चा तकलीफ में होता है, तो पिता का दिल दया और करुणा से भर जाता है। उस तकलीफ में डूबे बच्चे को देखकर उसे तरस और दुख होता है; उसका दिल तड़प उठता है। इसलिए, वह मन ही मन रोता है। वह चाहता है कि अपने प्यारे बच्चे की जगह वह खुद दर्द सह ले; वह चाहता है कि उनकी जगह वह खुद तकलीफ और मुश्किलों का सामना करे। वह तो यहाँ तक चाहता है कि उनकी जगह वह खुद मर गया होता।

आज के वचन, 2 शमूएल 18:33 में, हम राजा दाऊद को गहरे दुख में देखते हैं। उसका दिल बहुत दुखी था क्योंकि उसे खबर मिली थी कि उसका बेटा अबशालोम मर गया है (वचन 28, 31-32)। दिल को चीर देने वाले दुख से भरकर, दाऊद शहर के फाटक के ऊपर बने कमरे में गया और चिल्लाकर रोया: “हे अबशालोम, मेरे बेटे, मेरे बेटे अबशालोम—काश, तुम्हारी जगह मैं मर गया होता! ओह अबशालोम, मेरे बेटे, मेरे बेटे!” (वचन 33, *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन*)। जिन माता-पिता ने अपने जीते-जी अपने प्यारे बच्चे को खो दिया है, उन्होंने शायद इसी तरह का दिल तोड़ने वाला दुख महसूस किया होगा। एक बार मैं भी बहुत दुख में फूट-फूटकर रोया था, जब मैंने अपने पहले बच्चे, चैरिस (जिसका ग्रीक भाषा में अर्थ है “अनुग्रह”) को पहली और आखिरी बार इंटेंसिव केयर यूनिट में अपनी गोद में लिया था। मैं इतनी ज़ोर से रोया कि मुझे लगा जैसे मेरी साँस ही रुक जाएगी; वह दर्द और दिल का दुख सहने लायक नहीं था। मेरा दुख इतना गहरा था कि मैं बार-

बार ज़ोर-ज़ोर से सिसक-सिसककर रोता रहा। मैं अपराध-बोध की गहरी भावना से टूट गया था, यह सोचकर कि मेरे अपने पाप के कारण मेरे बच्चे की मौत मेरी जगह हो गई (12:14, 18)—जबकि असल में पापी मैं था और मरने के लायक मैं था, न कि वह बच्चा। एक पिता के तौर पर डेविड ने इसी दर्द में पुकार लगाई: "हे अबशालोम, मेरे बेटे, मेरे बेटे अबशालोम—काश तुम्हारी जगह मैं मर जाता! ओह अबशालोम, मेरे बेटे, मेरे बेटे!" (18:33, *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन*)। डेविड ने यह कहते हुए रोते हुए पुकार लगाई कि काश वह अपने बेटे अबशालोम की जगह मर सकता। मेरा मानना है कि यह एक माता-पिता के सच्चे दिल को दिखाता है। जब कोई प्यारा बच्चा हमसे पहले इस दुनिया से चला जाता है, तो हम उन्हें अपनी ज़िंदगी भर अपने दिल में बसाए रखते हैं; जब हम उस बच्चे की साफ़ यादों से भावुक होकर परमेश्वर के सामने आँसू बहाते हैं, तो अक्सर यह ख्याल आता है: "काश उनकी जगह मैं मर जाता।" डेविड की उस दर्द भरी पुकार पर सोचते हुए, अचानक मेरे मन में एक सवाल आया: "डेविड अपने बेटे अबशालोम के साथ अपने रिश्ते में ऐसा क्या अलग कर सकता था जिससे ऐसी दुखद मौत को रोका जा सकता था?" मैंने उस हफ़्ते डेविड और अबशालोम से जुड़ी बाइबल की उन आयतों पर विचार किया जिन पर हमने सुबह की प्रार्थना सभाओं में चर्चा की थी। मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि अगर डेविड—एक पिता के तौर पर—तीन खास स्थितियों को सही ढंग से संभालता, तो शायद उसके बेटे अबशालोम का अंत इतना दुखद न होता।

पहला, क्या होता अगर डेविड उस अहम पल में न्याय के साथ काम करता?

जब उसके बेटे अम्नोन ने तामार—जो उसके दूसरे बेटे अबशालोम की बहन थी (2 शमूएल 13:14)—के साथ बलात्कार किया, तो डेविड बहुत गुस्से में था (आयत 21) लेकिन उसने कोई कदम नहीं उठाया। हालाँकि अम्नोन ने तामार के साथ साफ़ तौर पर एक मूर्खतापूर्ण और शर्मनाक काम किया था (आयत 12), फिर भी डेविड ने, उसके पिता होने के नाते, उसे प्यार से भी नहीं डाँटा। डेविड उस बेटे को डाँटने में कैसे नाकाम रह सकता था जिसने इतना गंभीर पाप किया था? अगर वह सच में अपने बच्चे से प्यार करता था, तो क्या उसे उसे अनुशासित नहीं करना चाहिए था? क्या परिवार के मुखिया के तौर पर यह उसका फ़र्ज़ नहीं था? और बलात्कार की शिकार तामार के नज़रिए से सोचें, तो उसने अपने पिता डेविड के बारे में क्या सोचा होगा? अबशालोम के नज़रिए से सोचें—जो अपनी बहन से इतना प्यार करता था कि उसने अपनी बेटी का नाम भी तामार रखा था (14:27)—जब उसने देखा कि उसकी बहन अपने सौतेले भाई अम्नोन द्वारा बलात्कार किए

जाने के बाद घर में कितनी बुरी हालत में जी रही थी (13:20)। उसने अपने पिता डेविड के बारे में क्या सोचा होगा? शायद उसने सोचा होगा, "मेरी बहन के साथ इतना बुरा हादसा होने के बाद भी, पिता सिर्फ गुस्से में क्यों आ गए और उन्होंने अमोन को कोई सज़ा क्यों नहीं दी?" आखिर, परिवार में शांति और व्यवस्था बनाए रखने के लिए घर के मुखिया को न्याय नहीं करना चाहिए? दाऊद ने अमोन के खिलाफ़ कोई कदम क्यों नहीं उठाया और सिर्फ़ गुस्सा क्यों किया? क्या इसलिए कि उसे बतशेबा (ऊरिय्याह की पत्नी) के साथ किए गए अपने पुराने पाप की याद सता रही थी (11:4)? क्या वह इसलिए चुप रहा और उसने कोई डांट-फटकार नहीं लगाई—भले ही उसके बेटे अमोन ने ताकत के दम पर अबशालोम की खूबसूरत बहन तामार के साथ ज़बरदस्ती की और उसका रेप किया (13:1, 14)—क्योंकि उसने खुद बतशेबा को नहाते हुए देखा था और उसकी खूबसूरती से मोहित होकर (वचन 2), उसके साथ संबंध बनाए थे (वचन 4), जबकि वह जानता था कि वह एक शादीशुदा औरत है (वचन 3)? अगर ऐसा था, तो यह दाऊद का नज़रिया था; लेकिन तामार, जो रेप की शिकार थी, या उसके भाई अबशालोम का क्या? तामार के दिल पर क्या गुज़री होगी जब वह अपने भाई के घर में इतनी दुख भरी ज़िंदगी जी रही थी? कम से कम हम यह तो जानते हैं कि अबशालोम—तामार का भाई—अमोन से नफ़रत करता था। अमोन ने न सिर्फ़ अपनी बहन के साथ रेप जैसा बुरा काम किया था, बल्कि उसे घर से निकालकर (वचन 16) और भी बुरा काम किया था; इसलिए, अबशालोम ने उससे बात करने से भी इनकार कर दिया (वचन 22)। उस नफ़रत के बीच अबशालोम क्या सोच रहा था? बदला लेने के बारे में। दो साल तक, अबशालोम के मन में बदला लेने की इच्छा रही और वह अमोन को मारने की योजना बनाता रहा (वचन 23)। यह किसकी गलती थी? मेरा मानना है कि इसकी ज़िम्मेदारी उनके पिता, दाऊद की थी। अगर दाऊद ने सही कदम उठाया होता—बजाय इसके कि वह सिर्फ़ गुस्से में आ जाए (वचन 21) जब उसे पता चला कि उसके बेटे अमोन ने उसकी बेटी तामार के साथ क्या किया है—तो अबशालोम को अमोन को मारने की बदले की भावना के साथ दो साल नहीं बिताने पड़ते। सोचिए अबशालोम को कैसा लगा होगा: उसके पिता ने अमोन के खिलाफ़ कोई कदम नहीं उठाया—यहाँ तक कि उसे डांटा भी नहीं—और अबशालोम को यह देखना पड़ा कि अमोन शाही महल में शांति से रह रहा है, मानो कुछ हुआ ही न हो। भगवान के दिए हुए तीन बच्चों की परवरिश करते समय, जब वे छोटे थे, तो मैंने अक्सर एक बात सुनी: "यह सही नहीं है।" मुझे ठीक-ठीक तो याद नहीं, लेकिन मुझे लगता है कि मेरी सबसे छोटी बेटी ही अक्सर ऐसा कहती थी। ऐसा इसलिए क्योंकि वही मुझसे अपनी बात बहुत साफ़-साफ़ कहती है। उदाहरण के लिए,

हाल ही में उसने अपनी स्थिति की तुलना अपनी बड़ी बहन से की और कहा कि उसके साथ भी वैसा ही बर्ताव होना चाहिए। उसका मुख्य संदेश यही था कि मैं उसके और उसकी बहन के साथ एक जैसा व्यवहार करूँ। इसलिए, मैंने उसे भी वही इजाज़त दे दी जो मैंने उसकी बड़ी बहन को दी थी। एक पिता के तौर पर, मैं अपने तीनों बच्चों से बराबर प्यार करने की कोशिश करता हूँ, फिर भी मुझे अक्सर लगता है कि मैं कहीं न कहीं कमी कर जाता हूँ। मुझे खास तौर पर इस बात का अफ़सोस है कि जब मेरी सबसे छोटी बेटी छोटी थी, तो मैं उसे सचित्र बाइबल पढ़कर सुनाता था, लेकिन अपनी बड़ी बेटी के साथ मैंने ऐसा नहीं किया। हालाँकि, मैं शुक्रगुज़ार हूँ कि हाल ही में मेरी अपनी बड़ी बेटी के साथ नज़दीकी बढ़ी है; ऐसा लगता है कि भगवान मुझे दोनों बेटियों से संतुलित तरीके से प्यार करने में मदद कर रहे हैं। मैं अपने सबसे बड़े बेटे से भी—जो यूनिवर्सिटी के डॉरमिटरी में रहता है—काफी बातचीत करता हूँ, खासकर जब मैं उसे शुक्रवार और रविवार को घर और स्कूल के बीच गाड़ी से ले जाता-लाता हूँ। कभी-कभी, मैं शनिवार की दोपहर को उसके और उसके दोस्तों के साथ बास्केटबॉल भी खेलता हूँ। हालाँकि मैं तीनों बच्चों से बराबर प्यार करने की कोशिश करता हूँ, लेकिन हो सकता है कि वे मेरी मंशा और कोशिशों को अलग-अलग नज़रिए से देखते हों। मुझे आज भी वह समय याद है जब मैंने उन तीनों को एक साथ अनुशासित किया था, जब वे एलिमेंट्री स्कूल में पढ़ते थे। मैंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि मेरा मानना था कि एक बच्चे को अनुशासित करना और दूसरे को छोड़ देना गलत है, लेकिन अब मुझे एहसास होता है कि बच्चों ने शायद उस स्थिति को अलग नज़रिए से देखा होगा। आज जब मैं दाऊद और अबशालोम के रिश्ते के बारे में सोचता हूँ, तो मुझे लगता है: अगर दाऊद ने प्यार से तुरंत अम्नोन को अनुशासित किया होता, तो शायद अबशालोम के मन में अम्नोन के लिए दो साल तक नफ़रत न पनपती और न ही वह उसे मारने का बदला लेने की योजना बनाता। मेरा मानना है कि दाऊद को न्यायपूर्ण तरीके से काम करना चाहिए था ताकि अबशालोम के दिल में अम्नोन के प्रति नफ़रत के बीज न पनपें।

दूसरी बात, इस स्थिति पर विचार करें: "क्या होता अगर उसके पिता डेविड ने उसे थोड़ा पहले ही ढूंढ लिया होता?"

डेविड के बेटे अबशालोम को अम्नोन से नफ़रत थी—जिसने उसकी बहन तामार के साथ बलात्कार किया था और फिर उसे निकाल दिया था—और उसने उसे मारने का फैसला किया (2 शमूएल 13:32)। उसने दो

साल तक बदला लेने की यह इच्छा मन में पाले रखी (वचन 23) और आखिरकार अमोन को मार डाला (वचन 23-29)। इसके बाद, अबशालोम भाग गया (वचन 34) और गशूर के राजा अम्मीहद के बेटे तलमाई के पास रहने लगा (वचन 37)। वहाँ रहने के तीन साल बाद (वचन 38), सेनापति योआब को एहसास हुआ कि उसके मालिक, राजा डेविड, अबशालोम को बहुत याद कर रहे थे (वचन 39; 14:1); इसलिए उसने एक समझदार महिला को सिखाया कि राजा से क्या कहना है (वचन 2)। उसने उसे डेविड से बात करने के लिए भेजा (वचन 4-20), और आखिरकार, राजा ने योआब को अबशालोम को वापस लाने की अनुमति दे दी (वचन 21)। हालाँकि, यह बात समझना थोड़ा मुश्किल है। बाइबल साफ़ तौर पर कहती है कि राजा डेविड का दिल अपने बेटे अबशालोम के लिए तड़पता था (13:39; 14:1)। फिर भी, यह हैरानी की बात है कि जब अबशालोम गशूर भाग गया था और वहाँ तीन साल से रह रहा था, तो डेविड ने उसे सक्रिय रूप से खोजने की कोशिश नहीं की, बल्कि सिर्फ़ अपने दिल में उसे याद करते रहे। अगर वह सच में अपने भागे हुए बेटे को याद करते थे, तो क्या एक पिता के तौर पर उन्हें उसे पहले नहीं ढूँढना चाहिए था? एक देश के राजा के तौर पर, क्या वह अपने भागे हुए बेटे को खोजने के लिए अपने सभी संसाधनों, ताकत और लोगों को नहीं लगा सकते थे? लेकिन डेविड ने कुछ क्यों नहीं किया? उन्होंने अपने भागे हुए बेटे को सिर्फ़ अपने दिल में ही क्यों याद किया? आखिरकार, क्या सेनापति योआब ही नहीं थे—न कि खुद डेविड—जिन्होंने डेविड से अनुमति लेने के बाद तीन साल बाद गशूर में अबशालोम को खोजने की पहल की? ऐसा कौन सा पिता होगा जो घर छोड़कर चले गए बच्चे को खोजने की कोशिश किए बिना बस उसके लिए तड़पता रहे? क्या ऐसा हो सकता है कि पिता ने सच में अपने बच्चे को दिल से माफ़ न किया हो? शायद डेविड ने अबशालोम को इसलिए नहीं ढूँढा क्योंकि वह उस बेटे को माफ़ नहीं कर पा रहा था जिसने अमोन को मार डाला था। डेविड—वही आदमी जिसने कभी बाथशेबा (एक शादीशुदा औरत जिसकी खूबसूरती ने उसे तब मोहित कर लिया था जब वह नहा रही थी) के बारे में पता लगाने के लिए किसी को भेजा था—वह अमोन (जिसने उसकी बहन का रेप किया था) को मारने और गशूर भाग जाने के बाद पूरे तीन साल तक अबशालोम का हाल-चाल जानने या उसे वापस लाने के लिए किसी को क्यों नहीं भेज पाया? एक पिता जो अपने बच्चे को माफ़ किए बिना ही दिल में उसकी कमी महसूस करता है, वह आसानी से उस बच्चे को गहरे घाव, कड़वाहट और दर्द दे सकता है।

भगवान की कृपा से, मेरा सबसे बड़ा बेटा यूनिवर्सिटी में दाखिला ले चुका है और अभी कॉलेज की ज़िंदगी जी रहा है। चूँकि उसका स्कूल हमारे घर से लगभग 45 मिनट की ड्राइव पर है, इसलिए मैं हर शुक्रवार को

उसे लेने जाता हूँ और रविवार शाम को उसे उसके डॉरमिटरी वापस छोड़ देता हूँ। अब तो सब ठीक है, लेकिन जब वह पहली बार डॉर्म के लिए निकला था, तो उसके खाली कमरे को देखकर मुझे खालीपन महसूस होता था। अठारह साल तक साथ रहने के बाद, जब भी मैं सोचता था कि इतने समय बाद मेरा बेटा घर छोड़कर आज़ादी से रहने जा रहा है, तो मुझे हमारी साथ बिताई कई यादें आ जाती थीं। जब से मेरा बेटा कॉलेज की डॉरमिटरी में रहने गया है और घर पर सिर्फ़ तीन औरतें—मेरी पत्नी और दो बेटियाँ—रह गई हैं, तब कई बार एक पिता के तौर पर मुझे उसकी कमी खलती है (मैंने अपनी सबसे छोटी बेटी से अपनी पत्नी के सामने ही यह बात कही थी; मेरी सबसे बड़ी बेटी ने भी लिविंग रूम में बैठे हुए यह सुना था)। मैंने एक बार सोचा था कि अगर मेरा बेटा कॉलेज के लिए नहीं, बल्कि अपनी किसी बहन को मारकर भाग गया होता, तो एक पिता के तौर पर मैं क्या करता। मैंने यह स्थिति इसलिए सोची क्योंकि मैं डेविड के दिल की बात समझना चाहता था। जैसे डेविड अब्सालोम के लिए तड़पता था—जिसने अपने सौतेले भाई अम्नोन को मार डाला था और गेशूर भाग गया था—मुझे लगता है कि मैं भी उस बेटे को बहुत याद करता जो भाग गया होता। फिर भी, मैं खुद से पूछता हूँ: क्या मैं डेविड की तरह बस उसे याद करता रहता और उसे ढूँढने की कोशिश न करता, या मैं उसे ढूँढने के लिए बाहर निकलता? जब मैं लूक 15 की खोई हुई भेड़ या खोए हुए सिक्के की कहानियों के बारे में सोचता हूँ, तो मुझे लगता है कि मैं अपने भागे हुए बेटे को पूरी शिद्दत से ढूँढता। लेकिन, जब मैं 'खोए हुए बेटे' (यानी घर छोड़कर चले गए बेटे) की कहानी के बारे में सोचता हूँ, तो मुझे लगता है कि शायद मैं उसके खुद घर लौटने का इंतज़ार करता। बेशक, उस इंतज़ार का मतलब भी यही है कि पिता ने इंतज़ार करने से पहले खोए हुए बेटे को बहुत ढूँढा होगा। आखिरकार, मेरा मानना है कि पिता का दिल वही है जो अपने बच्चे को ढूँढता है, भले ही उस बच्चे ने कोई गलती की हो और भाग गया हो। अगर किसी बच्चे को पता चले कि उसका पिता ऐसे दिल से उसे ढूँढ रहा है, तो उसे अपने पिता के बारे में कैसा महसूस होगा? इसके उलट, अगर बच्चे को पता चले कि उसका पिता उसे ढूँढ ही नहीं रहा है, तो उसे कैसा लगेगा? यह एहसास निश्चित रूप से बच्चे के दिल में गहरे घाव, कड़वाहट और दर्द पैदा करेगा। आखिर में, तीसरी बात यह है कि अगर उसके पिता दाऊद ने उसे तभी माफ़ कर दिया होता, तो क्या हुआ होता?

अब्सालोम, जिसने अम्नोन से बदला लेने की इच्छा दो साल तक मन में रखी और आखिरकार उसे मारकर गेशूर भाग गया था, तीन साल बाद यरूशलेम लौटा (14:23)। फिर भी, बेटे के लौटने पर दाऊद ने अब्सालोम को सीधे अपने घर जाने का आदेश दिया और उसे अपना चेहरा देखने से मना कर दिया (वचन 24)। संक्षेप

में, दाऊद अब्शालोम को देखना नहीं चाहता था (वचन 24, *कंटेम्पररी कोरियन बाइबिल*)। अब्शालोम को न देखने की उसकी इच्छा इतनी मज़बूत थी कि उसने पूरे दो साल तक उसे नहीं देखा (वचन 28)। आखिरकार, भले ही कोई माता-पिता अपने बच्चे को न देखना चाहे, लेकिन क्या एक पिता को—जिसने तीन साल तक याद करने के बाद बेटे को लौटने की इजाज़त दी हो—उस बेटे का चेहरा तुरंत नहीं देखना चाहिए? अब्शालोम को न देखते हुए दो साल गुज़ारने के लिए उसकी नफ़रत कितनी गहरी रही होगी, जबकि वह नौजवान यरूशलेम में ही था? यह कुल मिलाकर पाँच साल हो जाते हैं, है ना? दाऊद ने अब्शालोम को उन तीन सालों के दौरान नहीं देखा जब बेटा गेशूर में निर्वासित जीवन जी रहा था (या शायद "न देखने का फैसला किया" कहना ज़्यादा सही होगा); तो फिर वह कैसा पिता होगा जो यरूशलेम लौट आए अपने बेटे को अपना चेहरा देखने का मौका अगले दो साल तक न दे? वह अपने ही बच्चे को देखने के लिए इतना अनिच्छुक क्यों था? पाँच साल का समय अपने बच्चे को न देख पाना बहुत लंबा समय है; असल में, अगर योआब ने राजा दाऊद के दिल की बात न समझी होती और शाही इजाज़त से अबशालोम को यरूशलेम वापस न लाया होता, तो शायद दाऊद उससे और भी लंबे समय तक न मिल पाते। इसके अलावा, अगर अबशालोम ने मिलने के लिए योआब के खेत में आग न लगाई होती (वचन 30), तो वह कभी भी अपने पिता दाऊद का चेहरा न देख पाता—भले ही दो साल बीत चुके थे। इसीलिए अबशालोम ने योआब से कहा, "मेरे लिए वहीं [गेशूर में] रहना बेहतर होता" (वचन 32)। अबशालोम के नज़रिए से देखें तो यह कितना क्रूर कदम था; वह तीन साल बाद गेशूर से यरूशलेम लौटा था, लेकिन फिर भी उसे दो साल तक अपने पिता से मिलने नहीं दिया गया क्योंकि दाऊद उससे मिलना नहीं चाहते थे। आखिर, अगर दाऊद अपने बेटे का चेहरा नहीं देखना चाहते थे, तो उन्होंने अबशालोम को गेशूर से यरूशलेम वापस ही क्यों बुलाया? वह तो अबशालोम को गेशूर में ही रहने दे सकते थे। यह समझना मुश्किल है कि दाऊद के दिल में अबशालोम के लिए इतनी गहरी तड़प क्यों थी। जब उनके नौकर योआब को भी उनकी तड़प साफ़ दिख रही थी, तो लगता है कि उनकी इच्छा वाकई बहुत गहरी थी; फिर भी, हम ऐसे पिता को कैसे समझें जिसने न तो अपने बेटे को ढूँढा और न ही—अगर ऐसा सोचा भी हो—तो उसे ढूँढने के लिए कोई असल कदम उठाया? अगर यरूशलेम में उन दो सालों के दौरान उनका अबशालोम से मिलने का कोई इरादा नहीं था, तो उन्होंने योआब को उसे वापस लाने की इजाज़त क्यों दी? अगर वह इजाज़त देने से साफ़ मना कर देते, तो अबशालोम गेशूर में ही रहता और यरूशलेम में दो साल तक बिना अपने पिता का चेहरा देखे रहने की इस अजीब स्थिति से बच जाता। अपनी किताब

David: A Spirituality Rooted in Reality में, यूजीन पीटरसन का तर्क है कि जिस पाप के लिए दाऊद को सबसे भारी कीमत चुकानी पड़ी, वह था अपने बेटे अबशालोम को सच में माफ़ न कर पाना। हालाँकि वे यरूशलेम के एक ही शाही महल में रहते थे, फिर भी दाऊद ने अपने बेटे अबशालोम को लगभग दो साल तक बिना सच्चे दिल से माफ़ किए दूर रखा। अगर डेविड ने तुरंत अबशालोम को माफ़ कर दिया होता—जिसने अम्नोन को मारा था—ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर ने डेविड को बतशेबा के साथ व्यभिचार करने और उसके पति उरिय्याह की हत्या करने के पापों के लिए माफ़ किया था (12:13), तो शायद अबशालोम अपने पिता को मारने की कोशिश करने की हद तक नहीं जाता (16:11)। क्योंकि डेविड ने माफ़ी नहीं दी, इसलिए अबशालोम ने—यरूशलेम लौटने और अपने पिता का चेहरा देखने के बाद—अगले चार साल (15:7) इस्राएलियों का दिल जीतने (v. 6) और उनकी वफ़ादारी को अपनी ओर मोड़ने (v. 13) में बिताए, और आखिरकार अपने पिता को मारने के लिए तख़्तापलट कर दिया। आखिरकार, पिता द्वारा बेटे को माफ़ न कर पाने का नतीजा यह हुआ कि उस बेटे की जान चली गई।

जब माता-पिता अपने प्यारे बच्चे को तकलीफ़ में देखते हैं, तो उन्हें बहुत दया आती है; बच्चा उन्हें बहुत लाचार और दुखियारा लगता है। इसलिए, माता-पिता अक्सर चाहते हैं कि वे खुद उस तकलीफ़ को सह लें, न कि उनका बच्चा, क्योंकि वे नहीं चाहते कि उनका बच्चा और कोई दर्द सहें। इसके अलावा, माता-पिता का दिल अपने प्यारे बच्चे को तड़पते और मरते हुए नहीं देख सकता। पछतावे का दर्द—खासकर यह एहसास कि बच्चे की मौत उनकी अपनी गलती की वजह से हुई—हर उस माता-पिता के लिए अलग-अलग होता है जिसने इसे महसूस किया है; यह माता-पिता का दिल ही समझ सकता है, कोई और इसे पूरी तरह नहीं समझ सकता। राजा दाऊद का दिल इतनी गहरी पीड़ा में था कि वह गम में डूब गए थे (18:33)। ऐसा इसलिए था क्योंकि उन्हें अपने बच्चे की मौत की खबर मिली थी। दिल तोड़ने वाले दुख से भरे दाऊद रो पड़े: "हे अब्सालोम, मेरे बेटे, मेरे बेटे अब्सालोम—काश मैं तेरी जगह मरा होता! ओह, अब्सालोम, मेरे बेटे, मेरे बेटे!" (पद 33, *कंटेम्पररी कोरियन बाइबल*)। दाऊद चाहते थे कि वे अपने बेटे अब्सालोम की जगह मरे होते। हालाँकि अब्सालोम की मौत के बाद दाऊद के लिए कुछ भी बदलना बहुत देर हो चुकी थी, लेकिन जब उन्होंने अपने बेटे के साथ अपने रिश्ते के बारे में सोचा, तो कम से कम तीन बातें थीं जिन पर उन्हें गौर करना चाहिए था: (1) "काश मैंने एमनोन को उसके गुनाह के लिए सही सज़ा दी होती—सिर्फ़ गुस्सा होने के बजाय—जब मुझे पता चला कि अब्सालोम की बहन तामार के साथ उसने ज़बरदस्ती की थी और उसे

निकाल दिया था, तो अब्सालोम के मन में मेरे लिए इतनी नफ़रत नहीं होती"; (2) "काश मैंने गेशूर भागने के बाद अपने बेटे अब्सालोम को जल्दी ढूँढ लिया होता, तो उसे तीन साल तक मेरे खिलाफ़ ज़ख़्म, कड़वाहट और शिकायतें पालकर नहीं रहना पड़ता"; और (3) "काश मैंने यरूशलेम लौटने पर अब्सालोम को तुरंत माफ़ कर दिया होता—उसे दो साल तक अपना चेहरा न दिखाने देने के बजाय (और शायद खुद उससे माफ़ी भी माँगता?)—तो वह चार साल तक इज़राइल के लोगों का दिल जीतने, तख़्तापलट करने और यहाँ तक कि मुझे मारने की कोशिश करने में नहीं बिताता।" जब मैं सोचता हूँ कि डेविड ने अपने बेटे अब्सालोम के लिए कितना विलाप किया था—जो अपने पिता की सेना के खिलाफ़ लड़ते हुए मारा गया था—और चिल्लाया था, "हे अब्सलोम, मेरे बेटे, मेरे बेटे! काश तुम्हारी जगह मैं मरा होता! ओह अब्सलोम, मेरे बेटे, मेरे बेटे!" (वचन 33), तो मुझे यीशु की वह पुकार याद आती है जो उन्होंने क्रूस पर लगाई थी, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?" (मत्ती 27:46; मरकुस 15:34)। जब यीशु मसीह—परमेश्वर के निष्पाप पुत्र—ने हमारी जगह क्रूस पर मरते हुए पुकारा, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?"—जबकि हम पापी और परमेश्वर के दुश्मन थे, और उसके क्रोध और अनंत मृत्यु के हकदार थे—तो स्वर्ग में पिता परमेश्वर के मन में क्या विचार आए होंगे जब उन्होंने वह पुकार सुनी? यीशु को—जिन्होंने इतनी पीड़ा में पुकारा था—क्रूस पर कीलों से जड़े हुए और मरते हुए देखकर, क्या पिता परमेश्वर भी दिल को चीर देने वाले दुख से भरकर रोए और चिल्लाए नहीं होंगे: "मेरे बेटे यीशु, मेरे बेटे यीशु... काश तुम्हारी जगह मैं मरा होता! ओह, यीशु, मेरे बेटे, मेरे बेटे!"?

मैं अपनी जिंदगी को एक सार्थक अंजाम तक कैसे पहुँचा सकता हूँ?

“हालाँकि मैं कभी ईशनिंदा करने वाला, सताने वाला और हिंसक व्यक्ति था, फिर भी मुझ पर दया की गई क्योंकि मैंने अज्ञानता और अविश्वास में ऐसा किया था। हमारे प्रभु की कृपा मुझ पर भरपूर मात्रा में बरसी, साथ ही वह विश्वास और प्रेम भी मिला जो मसीह यीशु में है” (1 तीमुथियुस 1:13-14)।

“कोरिया के लिए 2017 इंटरनेट मिनिस्ट्री” पहल के तहत कोरिया जाने से पहले, मैं बेचैन महसूस कर रहा था। एक प्रिय मार्गदर्शक पादरी की रिटायरमेंट प्रक्रिया के बारे में कई बातें सुनकर मैं गहराई से सोचने लगा। मैंने खुद से ऐसे सवाल पूछना शुरू किया: मुझे अपनी पादरी की सेवा का समापन और रिटायरमेंट कैसे करना चाहिए? अच्छी तरह से समापन करने का क्या मतलब है? इन विचारों ने मुझे न केवल सेवा से रिटायरमेंट के बारे में, बल्कि अपनी मौत के बारे में भी सोचने पर मजबूर किया। मैं फिर से इस बात पर विचार करने लगा कि प्रभु और दूसरों के सामने मुझे अपनी जिंदगी का समापन कैसे करना चाहिए। जब मैंने इस बारे में सोचा कि अपनी जिंदगी का अंत ऐसे कैसे करूँ जिससे परमेश्वर की महिमा हो, तो मुझे एहसास हुआ कि कई ऐसी बातें हैं जिनसे सावधान रहने की ज़रूरत है—लेकिन मुझे अपनी उपलब्धियों को लेकर खुद को अहम समझने की भावना से सावधान रहने की खास ज़रूरत महसूस हुई। जब तक मैं जीवित हूँ, प्रभु की देह—यानी कलीसिया—की सेवा करता रहूँगा और परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिए काम करता रहूँगा, तब तक मैं संख्याओं या अपने ट्रैक रिकॉर्ड में उलझना नहीं चाहता। मैं अपनी खूबियों का

दिखावा नहीं करना चाहता और न ही दूसरों के सामने अपनी बड़ाई करना चाहता हूँ—चाहे वह कितने सालों तक सेवा करने की बात हो, प्रभु के लिए किए गए कामों की गिनती हो, या सेवा खत्म होने पर कलीसिया से रिटायरमेंट के लिए खास रकम की माँग करना हो। सबसे बढ़कर, मैं प्रेरित पौलुस जैसा बनना चाहता हूँ—यह स्वीकार करना चाहता हूँ कि “परमेश्वर की कृपा से ही मैं वह हूँ जो हूँ,” और उस कृपा से मिली शक्ति से प्रभु का काम करना चाहता हूँ। मैं अपनी ज़िंदगी के आखिर में यह कहना चाहता हूँ: “मैंने अच्छी लड़ाई लड़ी है, मैंने दौड़ पूरी कर ली है, और मैंने विश्वास बनाए रखा है; अब मेरे लिए सिर्फ़ धार्मिकता का मुकुट पाना बाकी है” (2 तीमुथियुस 4:6-7)। इसे हासिल करने के लिए क्या करना चाहिए, इस पर विचार करते हुए मैं कोरिया गया और एक ऐसे पादरी से मिला जिन्हें मैं ऑनलाइन मिनिस्ट्री के ज़रिए जानता था। अमेरिका लौटने से पहले शुक्रवार की सुबह, जब मैं चर्च की असलियत के बारे में उनकी बातें सुन रहा था—वे बातें जो उन्होंने देखी, सुनी और महसूस की थीं—तो मेरे दिल में एक असहनीय भारीपन और सुन्नपन महसूस हुआ, जैसा मैंने पहले कभी महसूस नहीं किया था; मेरा मन रोने का कर रहा था। नौबत यहाँ तक आ गई कि मैं और ज़्यादा सुनने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था। ठीक एक दिन पहले—गुरुवार को—मैं एक एसोसिएट पास्टर और उनकी पत्नी से मिला था और कोरियाई चर्च के बारे में निराशाजनक बातें सुनी थीं, जिससे मुझे यह लिखने का मन हुआ: “हम पास्टरों को पश्चाताप करना चाहिए। कृपया प्रार्थना करें कि हम ऐसा कर सकें। धन्यवाद।” ठीक अगली सुबह एक और एसोसिएट पास्टर से कोरियाई चर्च के बारे में और भी नकारात्मक बातें सुनकर वह भारी, दिल को झकझोर देने वाला एहसास और भी गहरा हो गया। जब मैं समस्याग्रस्त पास्टरों के बारे में ये कहानियाँ सुन रहा था, तो मुझे एहसास हुआ कि हमारे पास्टर अहंकार और भौतिक धन के लालच में इसलिए पड़ जाते हैं क्योंकि वे परमेश्वर की कृपा को भूल गए हैं। मुझे यह भी ख्याल आया कि ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हम परमेश्वर की दया को भूल गए हैं।

आज के वचन—1 तीमुथियुस 1:13-14—में प्रेरित पौलुस अपने आध्यात्मिक बेटे, तीमुथियुस को लिखते हैं और दो खास बातों पर ज़ोर देते हैं: प्रभु की दया और प्रभु की कृपा। सबसे पहले, पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि वे पहले किस तरह के इंसान थे: “मैं पहले निंदा करने वाला, सताने वाला और बदमिज़ाज आदमी था...” (पद 13)। दमिश्क के रास्ते पर जी उठे यीशु से मिलने से पहले (प्रेरितों के काम 9:4; 26:14), पौलुस यीशु मसीह की निंदा करने वाले और उनके चर्च को बेरहमी से सताने वाले व्यक्ति थे। दूसरे शब्दों में, यीशु

पर विश्वास करने से पहले (1 तीमुथियुस 1:13), वे ऐसे व्यक्ति थे जो पूरे जोश के साथ चर्च को सताते थे (फिलिप्पियों 3:6)। पौलुस ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उन्हें एहसास नहीं था कि यीशु ही मसीह (Christ) हैं (1 तीमुथियुस 1:13)। इसलिए, उन्हें दया मिली। उन्हें यह दया इसलिए मिली क्योंकि यीशु मसीह ने पहले उनके प्रति अपना संपूर्ण धैर्य दिखाया था (पद 16)। जब मैंने इस वचन पर मनन किया, तो मैंने अपने प्रति प्रभु की दया के बारे में सोचा। मुझे याद दिलाया गया कि अपने पापों के कारण, मैं एक पापी हूँ और हमेशा के विनाश की सज़ा का हकदार हूँ (2 थिस्सलुनीकियों 1:9)। जब मैं सोचता हूँ कि प्रभु ने मुझ पर—एक ऐसा पापी जो हमेशा की आग की सज़ा का हकदार था (यहूदा 1:7)—कितना धैर्य दिखाया, तो इसे प्रभु की दया के अलावा और क्या कहा जा सकता है? परमेश्वर—जिन्होंने मेरे सारे पाप अपने निष्पाप, एकलौते पुत्र यीशु पर डाल दिए, ताकि वे मेरे पापों की सज़ा भुगतें और क्रूस का दुख सहें—उन्होंने मुझे वह सज़ा नहीं दी जिसका मैं हकदार था; इसके बजाय, उन्होंने मुझ पर धैर्य रखा, जबकि मैं विनाश के लिए तैयार क्रोध का पात्र था (रोमियों 9:22)। इसे प्रभु की दया के अलावा और क्या कहा जा सकता है? यह जानते हुए कि प्रभु का धैर्य ही मेरा उद्धार बना (2 पतरस 3:15), मैं उनकी दया के लिए आभारी और विनम्र क्यों न होऊँ?

पौलुस तीमुथियुस से प्रभु की कृपा के बारे में एक और बात कहते हैं: "और हमारे प्रभु की कृपा मसीह यीशु में विश्वास और प्रेम के साथ बहुत अधिक थी" (1 तीमुथियुस 1:14)। पौलुस—जो जी उठे यीशु से मिलने से पहले निंदा करने वाले, सताने वाले और घमंडी व्यक्ति थे—उन्होंने पूरी तरह से माना कि वे पापियों में सबसे बड़े पापी थे (पद 15)। पापियों में सबसे बड़े पौलुस पर यीशु मसीह ने सबसे पहले अपना अपार धैर्य दिखाया (पद 16)। प्रभु ने उन पर दया की और उन्हें हमेशा के विनाश और क्रोध की सज़ा नहीं दी। इसके बजाय, प्रभु ने उन्हें हमेशा का जीवन (पद 16) और साथ ही भरपूर विश्वास और प्रेम (पद 14) दिया। इसके अलावा, प्रभु ने पौलुस को विश्वासयोग्य माना और उन्हें एक सेवा का काम सौंपा (पद 12)। जब हम अविश्वासी होते हैं, तब भी प्रभु विश्वासयोग्य बने रहते हैं—क्योंकि वे खुद का इनकार नहीं कर सकते (2 तीमुथियुस 2:13)—और उन्होंने पौलुस को विश्वासयोग्य माना और उन्हें गैर-यहूदियों के प्रेरित का पद सौंपा (रोमियों 11:13)। अगर यह परमेश्वर की कृपा नहीं है, तो क्या है? यह एक गहरी कृपा है कि जिस व्यक्ति ने यीशु पर विश्वास करने से पहले जोश के साथ कलीसिया का विरोध किया और सताया, उसे हमेशा के विनाश की सज़ा के बजाय हमेशा का जीवन मिला; फिर भी प्रभु ने और भी आगे बढ़कर न केवल उन्हें बचाया, बल्कि उन्हें गैर-

यहूदियों के लिए प्रेरित (Apostle) की सेवा भी सौंपी—इससे बड़ी कृपा और क्या हो सकती है? इसीलिए पौलुस ने हमारे प्रभु मसीह यीशु का धन्यवाद किया, जिन्होंने उन्हें सामर्थ्य दिया (1 तीमुथियुस 1:12)। जब मैंने इस वचन पर मनन किया, तो मैंने उस कृपा के बारे में सोचा जो प्रभु ने मुझ पर की है। यह सचमुच बहुत बड़ी कृपा है। मैं उस बचाने वाली कृपा के लिए धन्यवाद किए बिना नहीं रह सकता जिसने मुझे जैसे पापी को विश्वास का उपहार दिया और मुझे यीशु मसीह को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करने के योग्य बनाया। इसके अलावा, विश्वासयोग्य प्रभु ने मुझे जैसे अविश्वासी व्यक्ति को भरोसे के योग्य समझा और मुझे पास्टर का पद सौंपा; यह कितनी बड़ी कृपा है।

मुझे याद है कि मैंने एक ऑनलाइन लेख में स्वर्गीय रेवरेंड हान क्युंग-चिक के बारे में एक कहानी पढ़ी थी। उस कहानी में बताया गया था कि 1992 में टेम्पलटन पुरस्कार मिलने के समारोह के दौरान, उन्होंने सबके सामने कहा, "सबसे पहले, मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं एक पापी हूँ। मैंने शिंतो मंदिर की पूजा में भाग लिया था।" कहा जाता है कि स्वर्गीय रेवरेंड पार्क युन-सन ने भी एक सभा का नेतृत्व करते हुए शिंतो मंदिर की पूजा में अपनी भागीदारी को स्वीकार किया था और कहा था: "मैंने भी शिंतो मंदिर की पूजा में भाग लेने का पाप किया था—भले ही केवल एक बार—और मैं उस बात से होने वाली पीड़ा को कभी दबा नहीं सका; इसलिए, मैंने मंडली के सामने उस पाप को सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया" (इंटरनेट)। मेरी नज़र में, इन दोनों व्यक्तियों ने, जिन्होंने शिंतो मंदिर की पूजा के अपने पाप को सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया था, अंत तक प्रभु और लोगों के सामने विनम्रतापूर्वक जीवन व्यतीत किया। मेरा मानना है कि वे ऐसा इसलिए कर पाए क्योंकि पवित्र प्रभु के करीब आते हुए वे लगातार अपने पिछले पापों को याद करते थे, जिससे उन्हें उन पापों की गंभीरता का और भी गहरा एहसास होता था। नतीजतन, मेरा मानना है कि उन्हें प्रभु की दया और कृपा की महानता का एहसास और भी व्यापक, भरपूर और गहरे तरीके से हुआ। जो ईसाई अपने पाप की गहराई और गंभीरता को जितना अधिक समझते हैं, वे परमेश्वर की दया और कृपा को भी उतना ही बेहतर और गहराई से समझ पाते हैं। परिणामस्वरूप, वे परमेश्वर के सामने विनम्र रहने के लिए प्रेरित होते हैं, क्योंकि वे कृपा की गहरी भावना से भरे होते हैं। ऐसा ईसाई, जो परमेश्वर की कृपा के एहसास से भरा हो, अपनी पादरी की सेवा पूरी करने के बाद भी—सिर्फ होंठों से नहीं, बल्कि दिल से—ईमानदारी से यह कहेगा, "परमेश्वर की कृपा से ही मैं वह हूँ जो हूँ" (1 कुरिन्थियों 15:10), और अपनी ज़िंदगी के आखिर में भी विनम्रता

से यही बात दोहराएगा। साथ ही, वह प्रार्थना करेगा, "हे प्रभु, हमें नहीं, हमें नहीं, बल्कि अपने नाम को महिमा दे, अपनी दया और सच्चाई के कारण" (भजन संहिता 115:1)।

मरने से पहले मुझे जो काम करने हैं

"और उस पहाड़ पर मर जाओ जिस पर तुम चढ़ोगे, और अपने लोगों में जा मिलो, ठीक वैसे ही जैसे तुम्हारा भाई हारून माउंट होर पर मरा और अपने लोगों में जा मिला" (व्यवस्थाविवरण 32:50)।

आज सुबह-सुबह मुझे खबर मिली कि मेरे एक प्यारे साथी पास्टर—जो सेमिनरी में मेरे क्लासमेट भी थे—के एक दोस्त का निधन हो गया है। यह जानकर कि घर पर दिल का दौरा पड़ने से उनकी मौत हुई, मैंने उस चर्च की वेबसाइट देखी जहाँ उन्होंने सेवा की थी। सबसे पहले मैंने एक संदेश देखा जो स्वर्गीय पास्टर किम ने अमेरिका में रहने वाले अपने बेटों के लिए लिखा था। मैंने चर्च की वेबसाइट की गैलरी में तस्वीरें भी देखीं। मैंने देखा कि स्वर्गीय पास्टर किम का जन्मदिन 7 अक्टूबर को था—मेरे जन्मदिन से बस एक दिन का अंतर—और मैंने मंडली के लोगों के खिले हुए, खुशमिजाज चेहरे देखे जो उनका खास दिन मना रहे थे। उनकी पत्नी, बच्चों, चर्च परिवार और साथी सेवकों को जो गहरा दुख हो रहा होगा, उसके बारे में सोचकर मैंने परमेश्वर पिता से प्रार्थना की, चाहे वह प्रार्थना कितनी भी अपर्याप्त क्यों न हो। प्रार्थना करते समय, मैंने अपनी खुद की मौत के बारे में सोचा। खासकर, मैंने उन तीन बातों पर मनन किया जो मूसा ने मरने से पहले की थीं—व्यवस्थाविवरण 32:50 पर ध्यान केंद्रित करते हुए, जो उन अध्यायों (31 और 32) का एक वचन था जिन्हें मैंने सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान पढ़ा था—और उन शब्दों को अपने जीवन में लागू करते हुए परमेश्वर से प्रार्थना की। अब, इसे लिखकर, मैं खुद को इन बातों की फिर से याद दिलाना चाहता हूँ।

पहली बात, मरने से पहले मूसा ने जो काम किए, उनमें से एक था इस्राएल की सभा के सामने अपने उत्तराधिकारी, यहोशू को नियुक्त करना और उसका हौसला बढ़ाना।

व्यवस्थाविवरण 31:7-8 को देखिए: “तब मूसा ने यहोशू को बुलाया और सारे इस्राएल के सामने उससे कहा, ‘मजबूत और हिम्मत वाले बनो, क्योंकि तुम्हें इन लोगों के साथ उस देश में जाना है जिसे देने की शपथ प्रभु ने उनके पूर्वजों से खाई थी, और तुम्हें इसे उनकी विरासत के तौर पर उनके बीच बांटना है। प्रभु खुद तुम्हारे आगे-आगे चलेगा और तुम्हारे साथ रहेगा; वह तुम्हें कभी नहीं छोड़ेगा और न ही त्यागेगा। डरो मत; हिम्मत मत हारो।’” मरने से पहले, मूसा ने परमेश्वर से प्रार्थना की: “प्रभु, जो सभी जीवित प्राणियों को सांस देता है, वह इस समुदाय पर किसी ऐसे व्यक्ति को नियुक्त करे जो उनके आगे-पीछे आ-जा सके, जो उनकी अगुवाई कर सके, ताकि प्रभु के लोग चरवाहे के बिना भेड़ों की तरह न रहें” (गिनती 27:16-17)। उस समय, परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वह नून के बेटे यहोशू को ले, उस पर अपना हाथ रखे, उसे याजक एलीआज़र और पूरी सभा के सामने पेश करे, उनकी मौजूदगी में उसे नियुक्त करे, अपना कुछ अधिकार उसे सौंप दे, और पूरे इस्राएली समुदाय की कमान उसे सौंप दे (पद 18-20)। इसलिए मूसा ने परमेश्वर की बात मानी (पद 22-23)। फिर, 120 साल की उम्र में यह महसूस करते हुए कि वह कनान देश में प्रवेश करने के लिए यरदन नदी पार नहीं कर सकता, उसने इस्राएल की पूरी सभा से घोषणा की—जैसा कि परमेश्वर पहले ही कह चुका था—कि परमेश्वर उनके आगे-आगे यरदन पार करेगा, उनके सामने कनानी जातियों को नष्ट करेगा, और इस्राएल के लोगों को उस देश पर कब्ज़ा करने में मदद करेगा (व्यवस्थाविवरण 31:1-3)। यह कहने के बाद कि परमेश्वर उनके आगे-आगे यरदन पार करेगा, मूसा ने अपने उत्तराधिकारी के बारे में कहा, “यहोशू तुम्हारे आगे-आगे पार जाएगा” (पद 3)। इसका क्या मतलब है? यह अंश बताता है कि कैसे परमेश्वर मूसा के उत्तराधिकारी यहोशू के साथ रहेगा (पद 6), और इस्राएल के लोगों के आगे-आगे यरदन पार करेगा। इसके बाद, मूसा ने पूरे इस्राएल के सामने यहोशू को बुलाया और इन शब्दों से उसका हौसला बढ़ाया: “मजबूत और हिम्मतवाला बन, क्योंकि तुझे इन लोगों को उस देश में ले जाना है जिसे देने की कसम प्रभु ने उनके पूर्वजों से खाई थी, और तुझे उस देश पर कब्ज़ा करने में उनकी मदद करनी है। प्रभु खुद तेरे आगे-आगे चलेगा और तेरे साथ रहेगा; वह न तो तुझे कभी छोड़ेगा और न ही तुझे त्यागेगा। डर मत; हिम्मत मत हार” (पद 7-8)।

अपनी मृत्यु से पहले, मैं प्रभु के उस काम में हिस्सा लेते रहना चाहता हूँ जिसमें ऐसे काम करने वाले (मज़दूर) तैयार किए जाते हैं जिनके सपने प्रभु पर केंद्रित हों। ऐसे समय में—जब फसल तो बहुत है लेकिन काम

करने वाले कम हैं—मैं प्रभु से विनती करना चाहता हूँ कि वह “अपनी फसल के लिए काम करने वालों को भेजे” (लूका 10:2) और साथ ही, मैं खुद को परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिए और भी पूरी तरह से समर्पित करना चाहता हूँ। इसके लिए मैं फसल के काम के लिए होनहार लोगों की पहचान करूँगा, उन्हें तैयार करूँगा और उन्हें काम पर लगाऊँगा।

दूसरी बात, अपनी मृत्यु से पहले, मूसा ने व्यवस्था (कानून) को लिखा और उसे ज़ोर से पढ़वाया ताकि पूरा इस्राएल उसे सुन सके। व्यवस्थाविवरण 31:9-13 को देखिए: “मूसा ने इस व्यवस्था को लिखा और इसे याजकों (पुजारियों)—जो लेवी के वंशज थे और प्रभु की वाचा का संदूक उठाते थे—तथा इस्राएल के सभी बुजुर्गों को सौंप दिया। मूसा ने उन्हें यह आज्ञा दी: ‘हर सात साल के आखिर में, कर्ज़ माफ़ करने वाले साल में, और डेरों के पर्व (Festival of Tabernacles) के दौरान—जब पूरा इस्राएल उस जगह पर प्रभु अपने परमेश्वर के सामने हाज़िर होगा जिसे वह चुनेगा—तब तुम उनके सामने यह व्यवस्था पढ़कर सुनाना। लोगों को इकट्ठा करना—पुरुषों, महिलाओं, बच्चों और तुम्हारे शहरों में रहने वाले परदेसियों को—ताकि वे सुन सकें और प्रभु अपने परमेश्वर का भय मानना सीख सकें और इस व्यवस्था की सभी बातों का ध्यान से पालन कर सकें। उनके बच्चे, जो इस व्यवस्था को नहीं जानते, उन्हें इसे सुनना चाहिए और प्रभु अपने परमेश्वर का भय मानना सीखना चाहिए, जब तक तुम उस देश में रहोगे जिस पर कब्ज़ा करने के लिए तुम यरदन नदी पार कर रहे हो।’” अपनी मृत्यु से पहले, मूसा ने व्यवस्था को लिखा और इस्राएल के सभी लोगों को उसे सुनाया। उसने पुरुषों, महिलाओं, बच्चों और उनके शहरों में रहने वाले परदेसियों को इकट्ठा किया ताकि वे व्यवस्था को सुन सकें और सीख सकें। इसका मकसद इस्राएल के सभी लोगों को प्रभु अपने परमेश्वर का भय मानना सिखाना था (पद 13)। मूसा ने ऐसा क्यों किया? इसलिए क्योंकि वह जानता था कि जब इस्राएली कनान देश में पहुँचेंगे, तो वे वहाँ के विदेशी देवताओं को मानकर व्यभिचार करेंगे, परमेश्वर को छोड़ देंगे और उस वाचा को तोड़ देंगे जो परमेश्वर ने उनसे बाँधी थी (वचन 16)। मूसा को यह कैसे पता चला? इसलिए क्योंकि परमेश्वर ने उसे यह बात बताई थी (वचन 16)। मूसा इस सच्चाई से अच्छी तरह वाकिफ़ था: अगर लोग उसके जीवित रहते हुए और उसके साथ रहते हुए परमेश्वर के विरुद्ध बगावत कर सकते थे, तो उसके मरने के बाद—जब वे कनान देश में पहुँचकर पेट भर खाना खाएँगे और समृद्ध हो जाएँगे—तो वे निश्चित

रूप से दूसरे देवताओं की सेवा करने लगेंगे, परमेश्वर का अनादर करेंगे और उसकी वाचा को तोड़ देंगे (वचन 27; वचन 20)। इसीलिए, मरने से पहले उसने व्यवस्था (कानून) को लिख दिया ताकि इस्राएल के सभी लोग उसे सुन सकें और सीख सकें, और परमेश्वर का भय मानते हुए उस व्यवस्था की सभी बातों को मान सकें और उनका पालन कर सकें (वचन 12)।

मरने से पहले, मेरी इच्छा है कि मैं प्रेरित पौलुस के सभी पत्रों पर व्याख्यात्मक उपदेशों की एक श्रृंखला (sermon series) दूँ और उन उपदेशों को एक किताब का रूप दूँ। अभी, मैं अक्सर अपने तीन बच्चों के लिए "पारिवारिक कहानियाँ" लिखता हूँ। मैं परमेश्वर के वचन पर अपने विचारों (Quiet Time/QT) को विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च की मंडली के साथ—जहाँ मैं सेवा करता हूँ—और साथ ही प्यारे भाई-बहनों और ऑनलाइन साथी विश्वासियों के साथ भी साझा करता हूँ। मैं ऐसा सिर्फ इसलिए करता हूँ ताकि परमेश्वर ने अपने वचन के द्वारा जो अनुग्रह दिया है, उसे दूसरों के साथ बाँट सकूँ। मैं इस उम्मीद में इन विचारों को साझा करता रहता हूँ कि पवित्र आत्मा उन्हें पढ़ने वालों को अनुग्रह दे। फिर भी, सबसे बढ़कर, मरने से पहले मेरी गहरी इच्छा एक ऐसा जीवन जीने की है जो ज़्यादा से ज़्यादा यीशु जैसा हो, ताकि मैं अपने प्यारे परिवार, भाई-बहनों, उन दोस्तों जिनके साथ मैं सुसमाचार बाँटना चाहता हूँ, और उन सभी लोगों के दिलों में जिन्हें मैं जानता हूँ, यीशु की एक छोटी सी याद बसा सकूँ।

तीसरी बात, मरने से पहले मूसा ने एक गीत रचा, उसे इस्राएलियों को सिखाया और उनसे वह गीत गवाया। व्यवस्थाविवरण 31:19 को देखिए: "इसलिए अब, तुम अपने लिए यह गीत लिख लो और इसे इस्राएल के बच्चों को सिखाओ; इसे उनके मुँह में डाल दो, ताकि यह गीत इस्राएल के बच्चों के विरुद्ध मेरे लिए गवाही बन सके।" मूसा ने मरने से पहले यह गीत लिखा था। फिर उन्होंने इसराइल की सभा के सामने उस गीत के शब्द पूरे-पूरे सुनाए (पद 30, 32:44)। इस गीत का विवरण व्यवस्थाविवरण 32:1-43 में दर्ज है। मूसा ने यह गीत क्यों लिखा और इसराइल की पूरी सभा को इसके शब्द क्यों सुनाए? ऐसा इसलिए था क्योंकि वह चाहते थे कि यह गीत इसराइल के लोगों के खिलाफ गवाही दे (31:19)। उन्होंने भविष्य की एक स्थिति की कल्पना की थी: कनान देश में प्रवेश करने के बाद, लोग खाएंगे-पिएंगे, तृप्त होंगे और समृद्ध होंगे; फिर वे दूसरे देवताओं की सेवा करने लगेंगे, परमेश्वर का अनादर करेंगे और उनके साथ किए गए वाचा को तोड़ देंगे, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें कई विपत्तियों और कष्टों का सामना करना पड़ेगा। उस मुश्किल समय में, मूसा

चाहते थे कि यह गीत—जिसे उनकी आने वाली पीढ़ियाँ गाना नहीं भूलेंगी—उनके सामने एक गवाह के रूप में खड़ा रहे (पद 20-21)। इसीलिए मूसा ने यह गीत लिखा और इसे इसराइल के लोगों को सिखाया (पद 22)।

अपने निधन से पहले, मैं उन भजनों और आराधना गीतों को संकलित करना चाहता हूँ जिन्हें गाना मुझे पसंद रहा है और एक किताब लिखना चाहता हूँ—चाहे वह कितनी भी साधारण क्यों न हो—जिसमें उन गीतों के माध्यम से परमेश्वर द्वारा दी गई कृपा का वर्णन हो, और इसे अपने परिवार, अपने चर्च परिवार और विश्वास में अपने भाई-बहनों के साथ साझा करना चाहता हूँ। यदि संभव हो, तो मैं गिटार बजाते हुए इन गीतों को गाते हुए अपनी रिकॉर्डिंग भी करना चाहता हूँ और उस रिकॉर्डिंग को अपने बच्चों के लिए छोड़ना चाहता हूँ। मुझे आशा है कि मेरे अंतिम संस्कार के समय, मेरा परिवार, चर्च के सदस्य और शोक मनाने वाले लोग परमेश्वर की स्तुति करने के लिए इनमें से कुछ गीत गाएंगे। मरने से पहले मैं तीन काम पूरे करना चाहता हूँ: मसीह-केंद्रित सपनों वाले 'राज्य के सेवकों' (Kingdom workers) को तैयार करना, धर्मग्रंथों के मनन पर किताबें प्रकाशित करना, और स्तुति और गवाहियों (testimonies) के संग्रह जारी करना। मैं प्रार्थना करता हूँ कि इन सभी प्रयासों के माध्यम से परमेश्वर की महिमा हो और बहुत से प्रिय लोगों को आशीष मिले।

हमें अपने प्यारे परिवार से विदा लेने की तैयारी कैसे करनी चाहिए?

“यह कहने के बाद, वह उन सबके साथ घुटनों के बल बैठा और प्रार्थना की। वे सब रोए, उन्होंने उसे गले लगाया और चूमा। उन्हें सबसे ज़्यादा दुख इस बात का था कि वे उसका चेहरा फिर कभी नहीं देख पाएँगे। फिर वे उसे जहाज़ तक छोड़ने गए” (प्रेरितों के काम 20:36–38)।

मुझे स्वर्गीय क्रोन-सा (सीनियर डीकनेस) किम जा-ओक के शब्द याद आते हैं: “कैंसर सिर्फ़ एक मुश्किल नहीं है; यह एक ऐसी बीमारी है जो विदाई की तैयारी करने का समय देती है।” शायद यह बात इसलिए दिल को छूती है क्योंकि हम समझते हैं कि हर किसी को अपने प्रियजनों से बिछड़ने की तैयारी करने का मौका नहीं मिलता। इससे मुझे यह सोचने पर मजबूर होना पड़ा: “मुझे अपनी प्यारी पत्नी और बच्चों से विदा लेने की तैयारी करनी चाहिए।” मैं इस नतीजे पर इसलिए पहुँचा क्योंकि इस दुनिया से जाने का कोई तय क्रम नहीं है, और हमें नहीं पता कि परमेश्वर हमें कब अपने पास बुला ले। मेरा मानना है कि उस विदाई के लिए धीरे-धीरे तैयारी करना समझदारी है, खासकर जब मैं अपने प्यारे परिवार के बारे में सोचता हूँ। तो, हमें अपने प्यारे परिवार से विदा लेने की तैयारी कैसे करनी चाहिए?

प्रेरितों के काम 20:36–38 में हम पढ़ते हैं कि जब प्रेरित पौलुस ने मिलेटुस में इफिसुस की कलीसिया के बुजुर्गों (पद 17) को अपना विदाई संदेश (पद 18–35) दिया, तो वह उनके साथ घुटनों के बल बैठा और प्रार्थना की। वे ज़ोर-ज़ोर से रोए, उसे गले लगाया और चूमा, और उसे जहाज़ तक छोड़ने गए। इस हिस्से

और पौलुस के विदाई संदेश पर विचार करते हुए, मैंने सात तरीके पहचाने हैं जिनसे हम अपने प्यारे परिवार के सदस्यों से विदा लेने की तैयारी कर सकते हैं।

पहला, मैं हमेशा अपने प्यारे परिवार के प्रति वफ़ादारी दिखाना चाहता हूँ। प्रेरितों के काम 20:18 को देखिए: "जब वे पहुँचे, तो उसने उनसे कहा: 'आप जानते हैं कि जब तक मैं आपके साथ रहा, मैंने कैसा जीवन जिया, उस पहले दिन से जब मैं एशिया प्रांत में आया था।'" प्रेरित पौलुस ने इफिसुस की कलीसिया के बुजुर्गों को याद दिलाया कि एशिया में अपने आने के "पहले दिन" से लेकर "अब तक"—तीन साल की अवधि तक—वह उनके बीच कैसे रहा था (पद 31)। तो फिर, उन तीन सालों के दौरान इफिसुस की कलीसिया के विश्वासियों के साथ रहते हुए पौलुस ने कैसा जीवन जिया? मेरा मानना है कि पॉल ने उनके बीच ईमानदारी से जीवन बिताया; यानी, इफिसुस की कलीसिया में अपने तीन साल के कार्यकाल के दौरान, उन्होंने कलीसिया के प्रति ईमानदारी दिखाई। मैं ऐसा इसलिए मानता हूँ क्योंकि पॉल ने बुजुर्गों से कहा था कि वे जानते हैं कि एशिया में पहली बार आने के समय से ही उन्होंने "उनके बीच हमेशा कैसा व्यवहार किया" (वचन 18)। जब मैं इस कथन में "हमेशा" शब्द पर विचार करता हूँ, तो मुझे लगता है कि इसका अर्थ है कि उन तीन वर्षों के दौरान, पॉल ने "हमेशा"—बिना डगमगाए, लगातार और ईमानदारी से—ऐसा व्यवहार किया जो बुजुर्गों को स्पष्ट रूप से दिखाई देता था।

मुझे नहीं पता कि मैं अपने प्यारे परिवार से कब अलग हो जाऊँगा, लेकिन मेरी इच्छा है कि मैं उस दिन और पल तक ईमानदार रहूँ—ठीक प्रेरित पॉल की तरह। जैसे सच्चा प्रभु मुझ जैसे बेईमान पापी के प्रति ईमानदारी से व्यवहार करता है, वैसे ही मैं भी उसकी कृपा की शक्ति से ईमानदारी का जीवन जीना चाहता हूँ। मैं ईमानदारी से जीने का प्रयास करता हूँ; यह कितनी अनमोल कृपा होगी यदि, मेरे गुजर जाने के बाद भी, मेरा प्यारा परिवार मेरे जीवन को याद करते हुए कहे, "मेरे पति—या हमारे पिता—ने लगातार एक जैसा जीवन जिया, कभी भी दाँएँ या बाँएँ नहीं भटके।" बेशक, मेरा परिवार किसी और की तुलना में मेरी कमियों को अधिक देखेगा; फिर भी, यह कितनी गहरी कृपा और आशीर्वाद होगा यदि, उन कमियों के बीच भी, वे यह देख सकें कि कैसे—परमेश्वर की कृपा से—मैं कुछ हद तक लगातार एक जैसा जीवन जीने में सफल रहा। इसीलिए मैं आज, कल और अपनी मृत्यु के दिन तक अपने परिवार के सामने एक लगातार और ईमानदार

जीवन का उदाहरण पेश करना चाहता हूँ। मैं प्रार्थना करता हूँ कि इस दुनिया से जाने के बाद भी, वे प्रभु की उस ईमानदारी को याद रखें जो मेरे जीवन के माध्यम से, चाहे थोड़ी ही सही, दिखाई दी थी।

दूसरी बात, मैं अपने प्यारे परिवार को दिखाना चाहता हूँ कि प्रभु की सेवा करना कैसा होता है।

प्रेरितों के काम 20:19 पर विचार करें: "मैंने पूरी विनम्रता और आँसुओं के साथ प्रभु की सेवा की, हालाँकि यहूदियों की साजिशों के कारण मुझे कड़ी परीक्षाओं का सामना करना पड़ा" [(आधुनिक कोरियाई संस्करण) "मैंने हमेशा विनम्रता और आँसुओं के साथ प्रभु की सेवा की है, यहाँ तक कि यहूदियों की साजिशों के कारण विभिन्न परीक्षाओं का सामना करते हुए भी"]। इफिसुस में विश्वासियों के साथ बिताए तीन सालों के दौरान, प्रेरित पौलुस का लगातार और वफादार व्यवहार प्रभु की सेवा से पहचाना जाता था (पद 19)। उन्होंने पूरी वफादारी से प्रभु की सेवा की, और यह बात इफिसुस की कलीसिया के बुजुर्गों को अच्छी तरह पता थी (पद 18)। इसलिए, अपनी विदाई के भाषण में, पौलुस ने उन्हें याद दिलाया कि उन तीन सालों में उनके बीच रहते हुए उन्होंने कितनी वफादारी से प्रभु की सेवा की थी। उन्होंने उन्हें यह भी बताया कि उन्होंने "पूरी नम्रता और आँसुओं के साथ" और "मुसीबतों को सहते हुए" प्रभु की सेवा की थी (पद 19)। नम्रता से सेवा करते हुए उन्हें निश्चित रूप से कई मुश्किलों का सामना करना पड़ा होगा; फिर भी, उन्होंने इफिसुस की कलीसिया के संतों को उत्साहित किया और तीन साल तक बिना रुके, दिन-रात आँसुओं के साथ उनमें से हर एक को समझाया-बुझाया (पद 31)। निश्चित रूप से, इफिसुस की कलीसिया के संतों ने उनके आँसू देखे थे। कम से कम, कलीसिया के बुजुर्गों ने तो उन तीन सालों में पौलुस द्वारा बहाए गए आँसुओं को देखा और याद रखा होगा। वे पौलुस के उन कीमती आँसुओं को कैसे भूल सकते थे, जिन्होंने उनसे इतना वफादार प्रेम किया और तीन साल तक रोते हुए उनकी सेवा की? भले ही उन्हें उनकी खास शिक्षाएँ और नसीहतें पूरी तरह याद न रही हों, लेकिन इफिसुस की कलीसिया के संतों ने निश्चित रूप से उनके आँसुओं की याद को हमेशा अपने दिलों में संजोकर रखा होगा। मैं खुद को इफिसुस के बुजुर्गों की भावनाओं के बारे में सोचते हुए पाता हूँ जब उन्होंने उन्हें विदाई दी—पौलुस के बारे में सोचते हुए, जिन्होंने पूरी नम्रता और आँसुओं के साथ उनकी सेवा करके प्रभु की सेवा की, यहाँ तक कि यहूदियों की उन्हें मारने की साजिशों के कारण आई मुसीबतों को भी सहा (पद 19)। आज का वचन, प्रेरितों के काम 20:37, हमें बताता है कि वे सब फूट-फूटकर रोए, पौलुस को गले लगाया और उन्हें चूमा। इफिसुस की कलीसिया के बुजुर्ग ज़ोर-ज़ोर से रोए जब वे पौलुस से अलग हुए,

जिन्होंने तीन साल तक दिन-रात आँसुओं के साथ उनमें से हर एक को समझाया-बुझाया था। यह सचमुच प्यार से निकले आँसुओं का एक सुंदर दृश्य था।

मैं भी ऐसे आँसू बहाना चाहता हूँ। खासकर, मैं उन तीन तरह के आँसुओं को और ज़्यादा बहाना चाहता हूँ जो मैंने मई 1987 में स्युंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च की कॉलेज मिनिस्ट्री रिट्रीट के दौरान बहाए थे: पश्चाताप के आँसू, कृतज्ञता के आँसू और समर्पण के आँसू। मैं अक्सर सोचता हूँ कि कितना अच्छा होगा अगर न केवल मेरे प्यारे स्वर्गीय पिता, बल्कि मेरा प्रिय परिवार भी उन आँसुओं को देख सके और—पवित्र आत्मा की प्रेरणा और मार्गदर्शन से—वे भी प्रभु की सेवा करने का और भी दृढ़ संकल्प लें, और उनकी आँखों में भी सेवा करते हुए आँसू हों। मैं इस बात पर भी विचार करता हूँ कि जब मेरे परिवार से अलग होने का समय आएगा, तो प्रभु में ऐसे आँसू साझा करना कितना सुंदर होगा। मैं उनके साथ ऐसी सुंदर विदाई का अनुभव करना चाहता हूँ। मैं मौत का सामना इस तरह करना चाहता हूँ जो न केवल परमेश्वर की नज़र में, बल्कि मेरे परिवार की नज़र में भी सुंदर हो। यह कितनी बड़ी कृपा और कितनी लाभकारी मृत्यु होगी यदि मेरी प्यारी पत्नी और तीन बच्चे मेरे जाने के बाद यह संकल्प ले सकें: "मेरे पति—हमारे पिता—ने जीवन भर केवल प्रभु की सेवा की। उनकी सेवा करते हुए उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा होगा, फिर भी उन्होंने धैर्य और दृढ़ता के साथ उनका सामना किया; उनके बहाए गए सभी आँसुओं को याद करते हुए, मैं भी जीवन भर केवल प्रभु की सेवा करना चाहती हूँ, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने किया।"

तीसरी बात, मैं अपने प्यारे परिवार की भलाई चाहता हूँ।

प्रेरितों के काम 20:20-21 पर विचार करें: "आप जानते हैं कि मैंने ऐसी कोई भी बात बताने में संकोच नहीं किया जो आपके लिए लाभकारी हो, बल्कि मैंने आपको सार्वजनिक रूप से और घर-घर जाकर सिखाया है। मैंने यहूदियों और यूनानियों दोनों को बताया है कि उन्हें पश्चाताप करके परमेश्वर की ओर मुड़ना चाहिए और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करना चाहिए।" इफिसुस की कलीसिया के साथ अपने तीन वर्षों के दौरान, प्रेरित पौलुस ने पूरी विनम्रता और आँसुओं के साथ प्रभु की सेवा की, और यहूदियों की साजिशों के कारण आई परीक्षाओं को सहा (पद 19)। विशेष रूप से, उन्होंने इफिसुस की कलीसिया के विश्वासियों को वह सब कुछ बताया और सिखाया जो उनके लिए लाभकारी था—सार्वजनिक रूप से और घर-घर जाकर—बिना

कुछ छिपाए (पद 20)। उन्होंने जो कुछ भी बिना किसी संकोच के बताया और सिखाया, वह था परमेश्वर के प्रति पश्चात्ताप और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास (पद 21)। उन्होंने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार की गवाही दी (पद 24)। संक्षेप में, प्रेरित पौलुस ने इफिसुस के विश्वासियों को परमेश्वर की पूरी इच्छा बताने में संकोच नहीं किया (पद 27)। पौलुस ने इफिसुस के विश्वासियों के प्रति ऐसा व्यवहार क्यों किया? उन्होंने उन्हें खुलकर वह सब क्यों बताया और सिखाया जो उनके लिए लाभकारी था? इसकी वजह यह है कि पौलुस इफिसुस की कलीसिया के विश्वासियों से प्रेम करते थे। इससे 1 कुरिन्थियों 13:5 की ये बातें याद आती हैं: प्रेम "...अपनी भलाई नहीं चाहता..." क्योंकि पौलुस इफिसुस के विश्वासियों से प्रेम करते थे, इसलिए उन्होंने अपना फ़ायदा नहीं, बल्कि उनका फ़ायदा चाहा। इस तरह, उन्होंने परमेश्वर के अनुग्रह की खुशखबरी की गवाही दी—जो उनके फ़ायदे के लिए थी—और परमेश्वर की ओर मन-फिराव और प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने का प्रचार और शिक्षा दी।

कौन सा पति या पिता अपने परिवार के बजाय अपना फ़ायदा सोचेगा? क्या वह अपने प्यारे परिवार की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत नहीं करता? लेकिन, मेरा मानना है कि भौतिक मदद से भी ज़्यादा ज़रूरी एक और तरह की देखभाल है: घर के मुखिया के तौर पर पति और पिता की भूमिका, जो अपने परिवार की देखभाल और परवरिश के लिए ज़िम्मेदार है। इसलिए, मैं इफिसियों 5:29 और 6:4 की बातों को याद रखता हूँ, जो मुझे अपनी प्यारी पत्नी और तीन बच्चों की देखभाल करने की बड़ी ज़िम्मेदारी की याद दिलाती हैं। तो फिर, मुझे अपने परिवार की देखभाल कैसे करनी चाहिए? मुझे अपनी पत्नी और तीन बच्चों को शिष्य बनाना चाहिए। घर के आध्यात्मिक गुरु के तौर पर, मुझे अपनी प्यारी पत्नी को वे सभी बातें माननी सिखानी चाहिए जिनका प्रभु ने आदेश दिया है (मत्ती 28:19)। ऐसा करने का मकसद परमेश्वर के वचन के ज़रिए उसे शुद्ध करना है (हालाँकि, बेशक, मुझे खुद भी रोज़ाना प्रभु के वचन से शुद्ध होना चाहिए)। जब मैं ऐसा करता हूँ, तो मैं और मेरी पत्नी सच्चे दिल से एक-दूसरे से गहरा प्यार कर पाएँगे (1 पतरस 1:22)। इसके अलावा, अपने तीन बच्चों के आध्यात्मिक गुरु के तौर पर, मुझे उन्हें गुस्से में नहीं लाना चाहिए, बल्कि प्रभु की शिक्षा और सलाह में उनकी परवरिश करनी चाहिए। इस परवरिश के दौरान, मुझे उन्हें परमेश्वर पिता की आज्ञा मानना और उस आज्ञाकारिता को अमल में लाना सिखाना चाहिए। मुझे उन्हें ऐसे बच्चे बनाना है जो परमेश्वर पिता के प्रति अपनी आज्ञाकारिता के कारण अपने माता-पिता की भी आज्ञा मानें (इफिसियों 6:1)। मेरा मानना है कि जो बच्चे अपने माता-पिता का सम्मान करते हैं (वचन 2), वे दूसरे बड़ों का भी सम्मान

कर पाएँगे। मुझे ऐसा क्यों करना चाहिए? क्योंकि यही मेरी प्यारी पत्नी और बच्चों की आत्माओं के हर मामले में फलने-फूलने का राज है (3 यूहन्ना 1:2)। मेरा मकसद साफ़ है: अपने प्यारे परिवार की भलाई चाहना। वजह यह है कि मैं अपनी पत्नी और तीन बच्चों से परमेश्वर जैसा प्यार करता हूँ। चौथी बात, मैं अपने प्यारे परिवार को एक ऐसे जीवन के बारे में दिखाना चाहता हूँ जो एक ईश्वरीय मकसद से प्रेरित हो।

बाइबल में प्रेरितों के काम 20:24 को देखिए: “लेकिन, मैं अपनी ज़िंदगी को अपने लिए कुछ भी नहीं समझता, बस मैं अपनी दौड़ पूरी कर सकूँ और उस काम को पूरा कर सकूँ जो प्रभु यीशु ने मुझे सौंपा है—परमेश्वर के अनुग्रह की खुशखबरी की गवाही देने का काम।” पवित्र आत्मा ने प्रेरित पौलुस को यरूशलेम जाने के लिए प्रेरित किया, भले ही उन्हें यह नहीं पता था कि वहाँ उनके साथ क्या होगा (पद 22)। उन्हें बस इतना पता था कि पवित्र आत्मा हर शहर में यह गवाही देती थी कि उन्हें जेल और मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा (पद 23)। पौलुस को शायद यह भी पता था कि उन्हें मारने की कोशिश कर रहे यहूदियों के हाथों अपनी जान गंवाने का खतरा है। फिर भी, पौलुस ने अपने मिशन की तुलना में अपनी जान को कोई महत्व नहीं दिया (पद 24)। उन्होंने प्रभु यीशु से मिले मिशन को अपनी जान से ज़्यादा महत्व दिया। इसीलिए, जब परमेश्वर की कृपा के सुसमाचार की गवाही देने का काम पूरा करने की बात आई, तो उन्होंने अपनी जान को कीमती नहीं समझा। वे परमेश्वर के कितने महान व्यक्ति थे! क्या हमें भी ऐसे ही मूल्य नहीं अपनाने चाहिए?

मुझे प्रभु से दो वादे मिले हैं। पहला वादा 1987 में विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च में कॉलेज मिनिस्ट्री रिट्रीट के दौरान मिला; प्रभु ने जॉन 6:1-15 के अंश का उपयोग करते हुए गेस्ट स्पीकर के माध्यम से मुझसे बात की। उस वचन को सुनकर, पवित्र आत्मा ने मेरे दिल को प्रेरित किया और मुझे अपना जीवन—जो दो मछलियों और पाँच रोटियों की तरह बिल्कुल अपर्याप्त था—प्रभु को सौंपने और अर्पित करने के लिए प्रेरित किया। नतीजतन, परमेश्वर की अपार कृपा से, मैं एक पादरी बन गया हूँ और अब चर्च की सेवा करता हूँ, जो मसीह का शरीर है। प्रभु से मुझे दूसरा वादा 2003 में कोरियन पास्टर्स काउंसिल फॉर चर्च रिन्यूअल (Gyogaenghyeop) द्वारा आयोजित एक रिट्रीट के दौरान मिला; एक गेस्ट स्पीकर के माध्यम से, प्रभु ने मुझे मैथ्यू 16:18 के वचन दिए। प्रभु की यह घोषणा, “मैं अपना चर्च बनाऊँगा,” सुनने के बाद, मैंने भजन 208, “आई लव दार् किंगडम, लॉर्ड” (I Love Thy Kingdom, Lord) गाया और स्युंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च के बारे में सोचते हुए फूट-फूट कर रोया। मुझे स्युंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च की बहुत याद आई, वह प्यारी मंडली

जिसे प्रभु ने अपने ही लहू से खरीदा था। इस तरह, मैंने उस साल नवंबर के आखिर में कोरिया के सियोह्युन चर्च से इस्तीफा दे दिया, 3 दिसंबर को अमेरिका लौट आया, और 21 दिसंबर को स्युंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च के सीनियर पास्टर के तौर पर पदभार संभाला। तब से, मैं अपनी प्यारी पत्नी और तीन बच्चों के साथ प्रभु के चर्च की सेवा कर रहा हूँ। प्रभु के वादों पर सोचते हुए, मुझे एहसास होता है कि मेरा मिशन परमेश्वर के वचन (यूहन्ना 6:1-15; मत्ती 16:18) को साझा करके प्रभु के चर्च—यानी उनके शरीर—को बनाना और उस चर्च को बनाकर परमेश्वर के राज्य का विस्तार करना है। मेरा विज़न ऐसे सेवकों को तैयार करना और भेजना है जिनके मन में मसीह-केंद्रित सपने हों, और इस तरह परमेश्वर के राज्य का विस्तार करना है। इस मिशन को पूरा करने के लिए, मुझे घर में एक लीडर के तौर पर अपनी प्यारी पत्नी और बच्चों को तैयार और सशक्त बनाना होगा, और उसी तरह चर्च में एक लीडर के तौर पर अपने प्यारे चर्च परिवार को भी तैयार और सशक्त बनाना होगा। मेरी प्रार्थना है कि परमेश्वर की कृपा से, मैं इस मिशन को आखिर तक ईमानदारी से पूरा कर सकूँ। इसलिए, जब मैं इस दुनिया से जाऊँगा, तो मुझे उम्मीद है कि मेरी प्यारी पत्नी और तीन बच्चे मेरे बारे में ऐसा सोचेंगे: "मेरे पति—हमारे डैड—प्रभु से मिले मिशन के लिए समर्पित थे; उन्होंने इसे विनम्रता और ईमानदारी से पूरा किया, और फिर वे उस प्रभु की गोद में समा गए जिसके लिए वे इतनी शिद्दत से तरसते थे।"

पाँचवीं बात, मैं अपने प्यारे परिवार को परमेश्वर और उनके अनुग्रह के वचन को सौंप दूँगा।

बाइबल में प्रेरितों के काम 20:32 को देखें: "अब मैं तुम्हें प्रभु और उनके अनुग्रह के वचन को सौंपता हूँ, जो तुम्हें बना सकता है और उन सभी के बीच तुम्हें विरासत दे सकता है जो पवित्र किए गए हैं" [(मॉडर्न कोरियन वर्शन) "अब मैं तुम्हें परमेश्वर और उनके अनुग्रह के वचन को सौंपता हूँ। वह वचन तुम्हारे विश्वास को मज़बूत कर सकता है और तुम्हें स्वर्ग के राज्य का वह आशीर्वाद दे सकता है जो सभी संतों को मिलता है"]। प्रेरित पौलुस ने इफिसुस के चर्च के बुजुर्गों से कहा, "खुद पर और उस पूरे झुंड पर नज़र रखो जिसके लिए पवित्र आत्मा ने तुम्हें रखवाला बनाया है। परमेश्वर के चर्च के चरवाहे बनो, जिसे उन्होंने अपने ही लहू से खरीदा है" (पद 28)। उन्होंने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि उन्हें पता था कि उनके जाने के बाद, बाहर से खूंखार भेड़िये इफिसुस की कलीसिया में घुस आएंगे और झुंड को नहीं बख्शेंगे (वचन 29)। इसके अलावा, पौलुस जानते थे कि कलीसिया के भीतर से ही ऐसे लोग उठेंगे जो शिष्यों को अपने पीछे खींचने के लिए गलत बातें कहेंगे

(वचन 30)। इसीलिए, इफिसुस के बुजुर्गों (एल्डर्स) को दिए अपने विदाई संदेश में, पौलुस ने उनसे आग्रह किया: "इसलिए सावधान रहो! याद रखो कि तीन साल तक मैंने दिन-रात आँसू बहाते हुए तुम में से हर एक को चेतावनी देना कभी बंद नहीं किया" (वचन 31)। इसके बाद, उन्होंने इफिसुस की कलीसिया के बुजुर्गों को प्रभु और उनके अनुग्रह के संदेश के हवाले कर दिया (वचन 32)। उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उन्हें भरोसा था कि इस संदेश में उन्हें मजबूती से खड़ा करने और उन सभी लोगों के बीच विरासत देने की शक्ति है जो पवित्र किए गए हैं (वचन 32)। क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं? यदि कलीसिया के बुजुर्ग—चाहे वे सिखाने वाले बुजुर्ग (पास्टर) हों या शासन करने वाले बुजुर्ग—अनुग्रह के संदेश पर मजबूती से खड़े रहने में विफल रहते हैं, तो झुंड (मंडली) का क्या होगा? उन भारी प्रलोभनों के बीच पूरी कलीसिया का क्या होगा—चाहे वे बाहरी हों या आंतरिक—जिनका मकसद उन्हें विश्वास से दूर ले जाना और उन्हें दाएं या बाएं रास्ते पर भटकाना है? क्या सिर्फ इसके बारे में सोचना ही डरावना नहीं है?

मैं अक्सर उस दिन के बारे में सोचता हूँ जब मैं इस दुनिया को छोड़ दूँगा, और अपनी प्यारी पत्नी और तीन बच्चों को पीछे छोड़ जाऊँगा। सोचने की यह आदत तब विकसित हुई जब मैं कोरिया के सियोह्युन चर्च में युवा सेवा (यूथ मिनिस्ट्री) से अमेरिका के विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च में वरिष्ठ सेवा (सीनियर मिनिस्ट्री) में आया; वहाँ बुजुर्गों को गुजरते हुए देखने से मुझे मृत्यु के बारे में एक गहरी समझ मिली। जब मैं नश्वरता के ज़रिए से अपने जीवन को पीछे मुड़कर देखता हूँ और उस तरह की मृत्यु के बारे में सोचता हूँ जिसका मैं सामना करना चाहता हूँ, तो मैं अक्सर सोचता हूँ कि प्रभु के मिशन से प्रेरित होकर और उनके साधन के रूप में इस्तेमाल होकर इस जीवन से विदा होना कितना अद्भुत होगा। फिर भी, साथ ही, मैं अपने प्यारे परिवार के बारे में सोचे बिना नहीं रह पाता। मेरे जाने के बाद उनका जीवन कैसा होगा? उनके विश्वास की यात्रा का क्या होगा—परमेश्वर की महिमा के लिए जीने के उनके बुलावे का क्या होगा? इन और अनगिनत अन्य विचारों के बीच, एक ही काम मैं कर सकता हूँ, और वह है प्रार्थना के माध्यम से अपने परिवार को परमेश्वर को सौंपना। मैं प्रार्थना में सब कुछ उन्हें सौंप देता हूँ। जैसा कि बाइबल कहती है, "अपनी सारी चिंताएँ उस पर डाल दो क्योंकि वह तुम्हारी परवाह करता है" (1 पतरस 5:7), मैं प्रार्थना के ज़रिए अपनी सारी चिंताएँ परमेश्वर को सौंपता हूँ। इसका कारण यह है कि परमेश्वर मेरे परिवार से किसी भी अन्य व्यक्ति की तुलना में कहीं अधिक प्रेम करते हैं। मुझे अपने परिवार को परमेश्वर को—खासकर उनके अनुग्रह के वचन को (पद 32)—सौंपने

का निर्देश दिया गया है। इस संबंध में मेरी ज़िम्मेदारी है कि मैं परमेश्वर के अनुग्रह के वचन—परमेश्वर के अनुग्रह का सुसमाचार (पद 24)—को अपने परिवार के साथ साझा करूँ और उन्हें सिखाऊँ, ताकि वे परमेश्वर के उद्धार के अनुग्रह में बने रह सकें। जब मैं ऐसा करता हूँ, तो इस दुनिया से जाने के बाद भी, मेरा परिवार परमेश्वर के अनुग्रह के वचन में मज़बूती से स्थापित रहेगा और स्वर्ग के राज्य के उन आशीषों को प्राप्त करने और उनका आनंद लेने में सक्षम होगा जो सभी संतों के लिए हैं (पद 32, *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन*)।

छठी बात, मैं अपने प्यारे परिवार को लालच भरी ज़िंदगी के बजाय मेहनत-मशक्कत वाली ज़िंदगी दिखाना चाहता हूँ।

प्रेरितों के काम 20:33–34 पर गौर कीजिए: “मैंने किसी के भी चाँदी, सोने या कपड़ों का लालच नहीं किया। आप जानते हैं कि मेरे इन हाथों ने मेरी और मेरे साथियों की ज़रूरतें पूरी की हैं” [(समकालीन कोरियाई संस्करण) “मैंने किसी के भी चाँदी, सोने या कपड़ों का लालच नहीं किया। जैसा कि आप जानते हैं, मैंने अपने हाथों से वह कमाया जिसकी मुझे और मेरे साथियों को ज़रूरत थी”]। प्रेरित पौलुस ने इफिसुस की कलीसिया के बुजुर्गों को विदाई देते हुए ऐसा क्यों कहा कि “मैंने किसी के भी चाँदी, सोने या कपड़ों का लालच नहीं किया” और “जैसा कि आप जानते हैं, मैंने अपने हाथों से वह कमाया जिसकी मुझे और मेरे साथियों को ज़रूरत थी” (पद 33–34)? क्या उन्होंने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि बुजुर्गों के सामने चीज़ों का ऐसा ज़बरदस्त लालच था—ऐसा लालच जिससे मन में लोभ पैदा होता है—कि ऐसी बात कहना ज़रूरी हो गया था? क्या पौलुस को शायद इस बात की चिंता थी कि चाँदी का कारीगर डेमेट्रियस (19:24)—जो देवी आर्टेमिस की मूर्तियाँ बनाकर बहुत पैसा कमाता था—बुजुर्गों को पैसे का लालच देकर बहकाने की कोशिश कर सकता है? क्या यह उन “बहुत-सी आजमाइशों” (20:19) में से एक हो सकती है जिनका सामना पौलुस ने इफिसुस में अपने तीन साल के दौरान किया था? अगर बुजुर्गों ने सचमुच ऐसी आजमाइशों का सामना किया था, तो पौलुस ने उन्हें ज़रूर सलाह दी होगी कि वे परमेश्वर के अनुग्रह के वचन पर मज़बूती से डटे रहें और—उनकी तरह—लालच के बहकावे में न आएँ, क्योंकि लालच मूर्तिपूजा के पाप की ओर ले जाता है (कुलुस्सियों 3:5)। आखिर, क्या इफिसुस की कलीसिया के सभी लोग खुद लालच के बहकावे को ठुकरा नहीं पाते, अगर

वे देखते कि उनके बुजुर्ग ऐसे लालच से दूर हैं? और क्या उस लालच का सामना करने का एक अच्छा तरीका यह नहीं होता कि कड़ी मेहनत करके अपनी रोज़ी-रोटी कमाई जाए, ठीक वैसे ही जैसे पौलुस ने किया था? (प्रेरितों के काम 20:34) सबसे बड़ी बात तो यह है कि अगर इफिसुस की कलीसिया के बुजुर्गों ने सच में अपने पड़ोसियों—यानी उसी कलीसिया के भाई-बहनों—से प्यार किया होता, तो वे दस आज्ञाओं में दी गई इस बात को मानते: "अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना... अपने पड़ोसी की चीज़ों का लालच न करना" (निर्गमन 20:17)। वे भी अपना पैसा कमाने के लिए मेहनत करते। कलीसिया के अगुवे के लिए पैसे के लालच से दूर रहकर वफादार ज़िंदगी जीना कितनी अनमोल मिसाल है!

मुझे आज भी वह सलाह अच्छी तरह याद है जो मेरे पिता ने मुझे तब दी थी जब मैंने उनसे लगभग उन्नीस साल पहले एक उलझन के बारे में सलाह मांगी थी। उन्होंने मुझसे कहा था कि "भौतिक चीज़ों की चिंता से ऊपर उठो।" उस समय, मैं अपनी पत्नी और सास के साथ शादी के लिए फ़र्नीचर खरीदने गया था। मेरी सास, जिन्होंने अपनी प्यारी बड़ी बेटी की शादी का दस साल से इंतज़ार और तैयारी की थी, हमें तोहफ़े में बढ़िया फ़र्नीचर दिलाना चाहती थीं; लेकिन मेरी पत्नी को उसकी कीमत बहुत ज़्यादा लगी और वह कुछ सस्ता फ़र्नीचर लेना चाहती थी, जिससे दोनों महिलाओं के बीच अनबन हो गई। बीच में फँसा होने और यह न समझ पाने के कारण कि क्या करूँ, मैंने इस स्थिति को संभालने के लिए अपने पिता से सलाह ली। मुझे आज भी नतीजा याद है: आखिरकार मेरी सास बहस "जीत" गई (?) और उन्होंने हमें ऐसा फ़र्नीचर खरीदकर दिया जो हमारी ज़रूरत से कहीं ज़्यादा महंगा था। एक और याद जो खास तौर पर याद आती है, वह हमारी शादी के कुछ समय बाद की है, जब मेरी पत्नी ने—थोड़े अचरज भरे लहजे में—पूछा कि कैसे एक *जियोन्दोसा* (सहायक पादरी या सुसमाचार प्रचारक) *गाल्बी* (मैरीनेट की हुई बीफ़ रिब्स) खा सकता है। हाहा। शायद मेरी पत्नी को लगा कि सुसमाचार प्रचारक को महंगी *गाल्बी* (मैरीनेट की हुई रिब्स) नहीं खानी चाहिए। हाहा। लेकिन आखिर में, मैंने *गाल्बी* खाई। मैं प्रेरित पौलुस (फिलिप्पियों 4:11-12) की तरह संतोष का राज़ सीखना चाहता हूँ—कि कैसे कम खर्च में जिया जाए, भौतिक चीज़ों से ऊपर उठा जाए, धन के लालच से आज्ञादी का आनंद लिया जाए और लालच के बजाय सिर्फ़ प्रभु में ही संतुष्टि पाई जाए। इसलिए, मैं अपने प्यारे परिवार को दिखाना चाहता हूँ कि सिर्फ़ प्रभु के साथ संतोष से जीने का मतलब क्या है। मैं बिना किसी लालच के प्रभु के लिए मेहनत से काम करने वाला जीवन जीना चाहता हूँ। मेरी उम्मीद है कि जब मैं

यह दुनिया छोड़ूँगा, तो मेरी पत्नी और बच्चे सोचेंगे, "मेरे पति—या हमारे पिता—बिना लालच के जिए, उन्हें सिर्फ़ प्रभु में ही संतुष्टि मिली, और वे आखिर तक उनके लिए कड़ी मेहनत करते रहे।"

सातवीं और आखिरी बात, मैं अपने प्यारे परिवार के लिए एक मिसाल कायम करना चाहता हूँ।

प्रेरितों के काम 20:35 को देखिए: "मैंने जो कुछ भी किया, उसमें मैंने तुम्हें दिखाया कि इस तरह की कड़ी मेहनत से हमें कमज़ोरों की मदद करनी चाहिए, और प्रभु यीशु के उन शब्दों को याद रखना चाहिए जो उन्होंने खुद कहे थे: 'लेने से ज़्यादा धन्य देना है।'" प्रेरित पौलुस ने इफिसुस की कलीसिया के बुजुर्गों के लिए एक मिसाल कायम की। वह लालच से बच पाए क्योंकि उन्हें प्रभु यीशु के शब्द याद थे और वे उन्हीं के अनुसार जीते थे: "लेने से ज़्यादा धन्य देना है" (वचन 35)। इसी वजह से, पौलुस लालच के प्रलोभन में नहीं फँसे; बल्कि, उन्होंने अपने और अपने साथियों के गुज़ारे के लिए अपने हाथों से कड़ी मेहनत की (वचन 34)। इसके अलावा, पौलुस ने कमज़ोरों की मदद करने के लिए कड़ी मेहनत वाला जीवन जिया (वचन 35)। यह मिसाल कायम करने के बाद, पौलुस ने इफिसुस की कलीसिया के बुजुर्गों से आग्रह किया कि वे उनके नक्शेकदम पर चलें—मेहनत से काम करें और कमज़ोरों की मदद करें। उन्होंने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि ऐसा जीवन सचमुच धन्य होता है (वचन 35)।

मैं अपने प्यारे परिवार को दिखाना चाहता हूँ कि एक धन्य जीवन कैसा होता है। मैं अपने तीनों बच्चों को—शब्दों के बजाय अपने कामों से, और अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में कायम की गई मिसाल से—यह दिखाना चाहता हूँ कि परमेश्वर की नज़र में कैसा जीवन धन्य है। उन्हें सिर्फ़ रास्ता दिखाने के अलावा, मैं चाहता हूँ कि वे अपने पिता को परमेश्वर की कृपा से मिलने वाली आशीषों को पाते और उनका आनंद लेते हुए देखें। अगर मैं सचमुच "सच्चाई के नमूने" (रोमियों 2:20)—कि लेने से ज़्यादा धन्य देना है—को अपने जीवन में उतार सकूँ, तो मुझे विश्वास है कि जब मैं मौत में अपनी आँखें बंद करूँगा, तब भी मेरे प्यारे बच्चे अपनी आध्यात्मिक आँखें खोलेंगे और मेरे नक्शेकदम पर चलेंगे (1 पतरस 2:21)। खासकर, मैं उम्मीद करता हूँ कि जब तक मैं सक्षम हूँ, तब तक कड़ी मेहनत करके और कमज़ोरों की मदद करके अपने परिवार के लिए एक सुंदर

विरासत छोड़ सकूँ। इसलिए, इस दुनिया से जाने के बाद भी, मेरी प्रार्थना है कि मेरे कदमों की छाप—जो उनके दिलों पर बनी है—उन्हें उसी रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करे।

इस हफ़्ते, मैंने टीवी न्यूज़ पर एक दिल को छू लेने वाली कहानी देखी। यह कहानी जोसेफ़िन स्मिथ नाम की एक अमेरिकी महिला के बारे में थी, जिन्होंने 9/11 के हमलों में अपने फ़ायरफ़ाइटर पिता को खो दिया था; तेरह साल बाद, उन्होंने अपने पिता के नक्शेकदम पर चलते हुए, न्यूयॉर्क शहर में फ़ायरफ़ाइटर बनने के लिए ज़रूरी कठिन परीक्षाएँ और ट्रेनिंग पूरी की। उस न्यूज़ रिपोर्ट के दो दृश्य मुझे हमेशा याद रहेंगे। पहले दृश्य में स्मिथ—जो खुद एक फ़ायरफ़ाइटर हैं—अपनी वर्दी पहने और एक इमारत के सहारे लगी सीढ़ी पर खड़ी होकर मुस्कुराती हुई दिखाई दीं। दूसरे दृश्य में उनके स्वर्गीय पिता की तस्वीर थी; उनका चेहरा सचमुच बहुत दयालु और सुखद था। चूँकि 47 साल की उम्र में 9/11 के हमलों में उनकी मृत्यु हो गई थी, इसलिए उनकी बेटी स्मिथ उस समय हाई स्कूल की उम्र की रही होंगी; मैंने सोचा कि किशोरावस्था के उन अहम सालों में अपने प्यारे पिता को खोने पर उन्हें कितना दुख हुआ होगा। मुझे उनके प्रति उनके गहरे प्यार पर भी हैरानी हुई, क्योंकि उन्होंने उनके नक्शेकदम पर चलने और खुद एक फ़ायरफ़ाइटर बनने का फैसला किया। जोसेफ़िन स्मिथ के बारे में सोचकर—एक ऐसी महिला जिन्होंने न्यूयॉर्क शहर की सेवा के लिए फ़ायरफ़ाइटर के तौर पर अपने प्यारे पिता का अनुसरण किया—मुझे अपने तीन प्यारे बच्चों के लिए एक बेहतर रोल मॉडल बनने की प्रेरणा मिलती है। मैं इस संकल्प को अमल में लाना चाहता हूँ, इसे आदत बनाना चाहता हूँ और अपने चरित्र में बदलाव लाना चाहता हूँ। मैं अपने परिवार को ऐसा जीवन दिखाना चाहता हूँ जो प्रभु के काम के लिए समर्पित हो और जिसमें हर तरह के लालच को लगातार दूर रखा जाए। इसके अलावा, मैं उनके लिए एक आशीर्वाद बनना चाहता हूँ—नम्रता, वफ़ादारी और अटूट धैर्य का जीवन जीकर यह दिखाना चाहता हूँ कि प्रभु द्वारा दिए गए मिशन के जवाब में उनकी सेवा करना कैसा होता है। अपने प्यारे परिवार को परमेश्वर के वचन की कृपा पर सौंपते हुए, मैं यीशु जैसा जीवन जीना चाहता हूँ, जब तक कि वे मुझे अपने पास न बुला लें, और उनके दिलों पर ऐसी सुंदर छाप छोड़ना चाहता हूँ जिसका वे भी अनुसरण कर सकें।



आइए, हम पूरी ताकत से अपने अंतिम संस्कार की तैयारी करें।

“उसने जो कुछ कर सकती थी, किया; उसने मेरे शरीर पर दफ़नाने से पहले ही लेप लगा दिया... लेकिन पतरस ने ज़ोर देकर कहा, ‘भले ही मुझे आपके साथ मरना पड़े, मैं कभी भी आपको नहीं नकारूँगा।’ और बाकी सबने भी यही कहा” (मरकुस 14:8, 31)।

क्या आपने कभी अपने अंतिम संस्कार के बारे में सोचा है? अगर हाँ, तो क्या आप इसकी तैयारी कर रहे हैं? और अगर कर रहे हैं, तो कैसे कर रहे हैं? आज के मनन का विषय—“आइए, हम पूरी ताकत से अपने अंतिम संस्कार की तैयारी करें”—आपको कैसा लगता है? जो भाई-बहन अभी शादीशुदा नहीं हैं, उन्हें यह बात थोड़ी अजीब लग सकती है। उन्हें लग सकता है कि यह समय शादी की तैयारी में अपनी सारी ऊर्जा लगाने का है, न कि अंतिम संस्कार की। फिर भी, जैसा कि हम सब जानते हैं, भविष्य की कोई गारंटी नहीं दे सकता। हमें नहीं पता कि हम कब या कैसे इस दुनिया से जाएँगे। इसके बावजूद, युवा अक्सर मान लेते हैं कि वे बुजुर्गों से ज़्यादा समय तक जीवित रहेंगे, इसलिए वे अंतिम संस्कार के बजाय शादी की तैयारी पर अपना ध्यान केंद्रित करते हैं। मैं बुजुर्गों के बारे में भी सोचता हूँ। हालाँकि वे अक्सर कहते हैं कि उनके पास जीने के लिए ज़्यादा समय नहीं बचा है, लेकिन मुझे पक्का नहीं पता कि वे सचमुच अपने अंतिम संस्कार की तैयारी कर रहे हैं या नहीं—या पूरी ताकत से तैयारी कर रहे हैं या नहीं। आखिरकार, “मैं जल्द ही मरना चाहता हूँ” कहना बुजुर्गों द्वारा बोले जाने वाले “तीन बड़े झूठों” में से एक माना जाता है। मैं आजकल रॉब मोल की किताब *द आर्ट ऑफ़ डाइंग* (मरने की कला) पढ़ रहा हूँ, और इसके कुछ हिस्से मुझे बहुत अच्छे लगे।

आज के दौर की एक बात यह है कि जैसे-जैसे मेडिकल टेक्नोलॉजी आगे बढ़ रही है और लोग पहले से कहीं ज़्यादा समय तक जीवित रह रहे हैं, ध्यान मरने की तैयारी के बजाय जीने पर दिया जाता है। नतीजतन, ऐसा लगता है कि हम नहीं जानते कि प्रभु में अच्छी तरह से कैसे मरें। इसका परिणाम यह भी होता है कि हमें अच्छी तरह से जीने की समझ की भी कमी लगती है—भले ही परमेश्वर अपने संतों की मृत्यु को अनमोल मानते हैं (भजन संहिता 116:15)। मरकुस 14 में उस औरत की कहानी पढ़ते समय, जिसने संगमरमर की कीमती शीशी तोड़ी थी, मेरा ध्यान आयत 8 पर गया। दो लोगों के बीच के फ़र्क ने मेरा ध्यान खींचा: प्रेरित पतरस, जो तीन साल तक यीशु के साथ रहा था, उसने "ज़ोरदार ढंग से" कहा था—"भले ही मुझे आपके साथ मरना पड़े, मैं आपको कभी नहीं नकारूँगा!" (आयत 31)—फिर भी उसने परमेश्वर की बातों के बजाय इंसानी बातों पर ध्यान दिया (मत्ती 16:23); और दूसरी तरफ़ वह औरत जिसने बहुत कीमती, शुद्ध नर्द (सुगंधित तेल) की शीशी तोड़ी (मरकुस 14:3), और जिसने यीशु के शरीर पर इत्र डालने के लिए "अपनी पूरी ताकत लगा दी" (या "जो कुछ वह कर सकती थी, किया"), और इस तरह उन्हें दफ़नाने के लिए पहले से ही तैयार कर दिया (आयत 8)। हालाँकि मैंने अक्सर उस औरत की कहानी को बिना ज़्यादा सोचे-समझे ही पढ़ लिया था, लेकिन मैंने इस बात की तुलना की कि उसने "अपनी पूरी ताकत से" (आयत 8) यीशु को दफ़नाने की तैयारी की, जबकि पतरस ने "ज़ोरदार ढंग से" कहा था (आयत 31) कि वह मरते दम तक प्रभु को कभी नहीं नकारेगा। पतरस, जो यीशु का मुख्य चेला था, पहले ही यीशु की यह शिक्षा सुन चुका था कि "मनुष्य के पुत्र को बहुत दुख सहना होगा और बुजुर्गों, मुख्य याजकों और कानून के शिक्षकों द्वारा नकारा जाएगा, और उसे मार डाला जाएगा और तीन दिन बाद वह फिर जी उठेगा" (मरकुस 8:31); फिर भी, उसने यीशु को अलग ले जाकर विरोध किया और कहा, "कभी नहीं, प्रभु! आपके साथ ऐसा कभी नहीं होगा!" (मत्ती 16:22)। इसके उलट, जिस औरत ने संगमरमर की शीशी तोड़ी थी, उसने "अपनी पूरी ताकत से" यीशु को दफ़नाने की तैयारी की (मरकुस 14:8)। जहाँ पतरस का ध्यान इंसानी बातों पर था, वहीं उस औरत का ध्यान परमेश्वर के काम पर था। उसने अपनी पूरी ताकत यीशु की क्रूस पर होने वाली मौत की तैयारी में लगा दी, जबकि पतरस ने अपनी ताकत उस मौत को रोकने की कोशिश में लगाई (देखिए मत्ती 16:22)—यहाँ तक कि जब यीशु को गिरफ़्तार किया जा रहा था, तो उसने अपनी तलवार निकाली और महायाजक के नौकर पर वार करके उसका कान काट दिया (मत्ती 26:51)। बाद में, पीटर ने बहुत ज़ोर-शोर से—"खुद को कोसते हुए और कसम खाते हुए" (वचन 74)—यीशु को तीन बार नकार दिया। प्रभु की तारीफ़ के लायक काम किसने किया? उस औरत के बारे में सोचते हुए जिसने अपनी पूरी ताकत से उन्हें दफ़नाने की तैयारी की थी,

यीशु ने अपने शिष्यों से कहा: "मैं सच कहता हूँ, दुनिया भर में जहाँ भी सुसमाचार का प्रचार किया जाएगा, वहाँ उसकी याद में उसके किए गए काम की भी चर्चा होगी" (मरकुस 14:9)।

अभी आप अपनी पूरी ताकत से किस चीज़ की तैयारी कर रहे हैं? क्या आप अपनी पूरी ताकत से अपने अंतिम संस्कार की तैयारी करना चाहते हैं? ऐसा करके, क्या आप परमेश्वर द्वारा दिए गए हर दिन को—मौत के नज़रिए से ज़िंदगी को देखते हुए—अपनी मर्ज़ी से नहीं, बल्कि सिर्फ़ परमेश्वर की मर्ज़ी के अनुसार जीना नहीं चाहेंगे? अच्छी तरह मरने के लिए हमें अच्छी तरह जीना होगा, लेकिन अच्छी तरह जीने के लिए हमें मौत की भी अच्छी तैयारी करनी होगी। मौत की सही तैयारी के लिए, हमारे अंदर पुनरुत्थान के प्रति विश्वास और आशा होनी चाहिए। इसके अलावा, हमें यीशु के दूसरे आगमन के लिए भी पूरी लगन से तैयारी करनी चाहिए। दुल्हन के तौर पर, कलीसिया को अपनी पूरी ताकत दूल्हे यीशु की वापसी की तैयारी में लगानी चाहिए। उन पाँच समझदार कुँवारियों की तरह जिन्होंने तेल और दीयों के साथ यीशु के आने की तैयारी की थी, कलीसिया को—दुल्हन के तौर पर—एक शानदार कलीसिया (इफिसियों 5:27) बनने और दूल्हे यीशु का खुशी-खुशी स्वागत करने के लिए तैयार होना चाहिए।

“मेरे आँसुओं को अपनी बोतल में रख लें”

“आप मेरा दुख जानते हैं। मेरे आँसुओं को अपनी बोतल में रख लें...” (भजन संहिता

56:8a)।

मेरे दिल के पात्र में कुछ आँसू समाए हुए हैं—ऐसे आँसू जिन्हें मैं जीते-जी कभी नहीं भूल पाऊँगा। मुझे वे पल आज भी अच्छी तरह याद हैं जब वे आँसू गिरे थे; उनका मेरे लिए बहुत गहरा और अनमोल अर्थ है। मेरे दिल पर सबसे गहरा असर डालने वाले आँसू मेरी पहली संतान, जू-यंग की आँखों से गिरी एक बूँद थी। जब जू-यंग—जो पहली और आखिरी बार खुद से बैठी थी—मेरी गोद में शांति से सो गई, तो उसकी दाईं आँख के कोने में एक आँसू जमा था। जब भी मैं पवित्र भोज (Holy Communion) कराता हूँ, तो मैं जान-बूझकर उस बच्ची के बारे में सोचता हूँ, जिसने पचास दिन इंटेंसिव केयर यूनिट (ICU) में अनगिनत सुइयों के निशान सहते हुए बिताए थे। हर बार, उसका वह एक आँसू मेरे दिल को गहराई से छू जाता है। मेरे दिल पर गहरा असर डालने वाले दूसरे आँसू मेरी प्यारी पत्नी के हैं। मुझे उसका रोना याद है—आँसू उसके चेहरे पर बह रहे थे—जब वह थोड़ी दूर खड़ी होकर ICU में जू-यंग को देख रही थी; हमारी बच्ची की हालत बहुत गंभीर थी, दिल और रक्त संचार (circulatory system) फेल होने के कारण उसका पूरा शरीर नीला पड़ रहा था। मेरी पत्नी उस पल में मुझे पहले कभी इतनी सुंदर नहीं लगी थी। मेरी पत्नी के आँसुओं का एक और कभी न भूलने वाला पल जू-यंग के अंतिम संस्कार के बाद आया। हम एक छोटी नाव में उसकी अस्थियों वाला छोटा डिब्बा लेकर जा रहे थे, तभी मेरी पत्नी—जो नाव चलाते समय मेरे पीछे बैठी थी—अचानक मेरी ओर देखकर बोली, “टाइटेनिक,” और उसके चेहरे पर आँसू बहने लगे। मैं अपनी पत्नी को कभी नहीं भूल पाऊँगा, जिसने इतने गहरे दुख के बीच भी वह मज़ाक (?) किया था। “मेरे दिल की बोतल” में जमा एक और आँसू वह है जो

मेरे दादाजी की दाईं आँख के कोने से टपका था। यह एक रविवार की सुबह हुआ था—अस्पताल में उनके गुजरने से एक दिन पहले—ठीक तब जब मैंने प्रार्थना खत्म की थी और उन्होंने अपनी आँखें खोली थीं। हालाँकि वे बोल नहीं पा रहे थे क्योंकि वे वेंटिलेटर पर थे, लेकिन मैं वह आँसू कभी नहीं भूल पाया। मैं अपनी दादी के आँसू भी नहीं भूल सकता। जब मैं और मेरी पत्नी उनसे अस्पताल में मिलने गए, तो वे अचानक रोने लगीं। मैंने पूछा, "दादी, क्या आप इसलिए रो रही हैं क्योंकि आपको मौत से डर लग रहा है?" उन्होंने जवाब दिया कि वह ईश्वर के प्रति बहुत ज़्यादा शुक्रगुज़ार होने के कारण रो रही थीं। जब मैंने पूछा कि वह किस बात के लिए इतनी शुक्रगुज़ार हैं, तो उन्होंने कहा कि वह इस बात के लिए शुक्रगुज़ार हैं कि ईश्वर ने हमारे परिवार के सदस्यों में से कई लोगों को प्रभु की सेवा के लिए चुना है। शुक्रगुज़ारी के वे आँसू भी मेरे दिल की बोतल में जमा हैं।

अपनी आस्था की ज़िंदगी में, मैंने हमेशा अपने दिल की उस बोतल में जमा आँसुओं पर ही ध्यान दिया था। लेकिन, कल रात आज सुबह की प्रार्थना सभा के लिए बाइबल का हिस्सा पढ़ते समय, मेरी नज़र भजन संहिता 56:8 पर पड़ी। भजनकार दाऊद की ईश्वर से की गई विनती ने मुझे बहुत प्रभावित किया: "हे प्रभु, तू मेरे दुख को जानता है; मेरे आँसुओं को अपनी बोतल में रख ले।" मैंने शायद यह आयत पहले कई बार पढ़ी होगी, फिर भी ऐसा लगता है कि कल रात तक मैंने इस पर कभी ध्यान नहीं दिया था। फिर, आज सुबह की प्रार्थना सभा में भजन संहिता 56:4 पर आधारित संदेश देते समय, मेरी दिलचस्पी एक बार फिर आयत 8 में जगी; इसी नए नज़रिए के साथ मैं अब उस हिस्से पर सोच-विचार कर रहा हूँ और ये शब्द लिख रहा हूँ। अब मैं अपना ध्यान अपने दिल के दुख के बर्तन में जमा आँसुओं से हटाकर अपने अपनों के आँसुओं पर लगाना चाहता हूँ—वे आँसू जो प्रभु के अपने बर्तन में रखे हैं। सचमुच, इस भरोसे के साथ कि मेरे अपनों के आँसू—जो मेरे अपने दिल में भी मौजूद हैं—पहले से ही प्रभु के बर्तन में जमा हैं, मैं उन्हें पूरी तरह से प्रभु को सौंपना चाहता हूँ; क्योंकि वह उनसे मुझसे कहीं ज़्यादा प्यार करते हैं और उनके आँसुओं को किसी भी दूसरे व्यक्ति से बेहतर समझते हैं। मैं भला कैसे समझ सकता हूँ कि मेरी पहली संतान जू-यंग, मेरी पत्नी या मेरे दादा-दादी की आँखों से गिरे आँसुओं का पूरा मतलब क्या है? फिर भी, क्योंकि सब कुछ जानने वाले ईश्वर उन आँसुओं के महत्व को पूरी तरह जानते और समझते हैं, इसलिए मैं प्रार्थना करता हूँ कि वह उन सभी आँसुओं को अपने बर्तन में जमा कर लें। ऐसा करते हुए, मैं यह भी प्रार्थना करता हूँ कि वह उन तीन तरह के आँसुओं को भी जमा कर लें जो मैंने मई 1987 में स्युंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च के यूनिवर्सिटी ग्रुप के साथ कॉलेज रिट्रीट

के दौरान बहाए थे: पछतावे के आँसू, समर्पण के आँसू और शुक्रगुजारी के आँसू। मैं प्रार्थना करता हूँ कि मैं अभी और भविष्य में भी इन तीन तरह के आँसुओं को बहाता रहूँ और इस तरह प्रभु के बर्तन को उनसे भरता रहूँ।

जब हमें कोई जानलेवा बीमारी होती है और जब हम उससे ठीक होते हैं

"यहूदा के राजा हिजकिय्याह का लिखा हुआ लेख, जब वह बीमार पड़ा और अपनी बीमारी से ठीक हो गया" (यशायाह 38:9)।

अगर आपका डॉक्टर बायोप्सी करे और आपसे कहे, "आपको कैंसर है," तो आप कैसा महसूस करेंगे? क्या होगा अगर वे कहें कि यह शुरुआती स्टेज का कैंसर नहीं, बल्कि स्टेज 4 का कैंसर है? जब हम "स्टेज 4 कैंसर" के बारे में सुनते हैं, तो हम अक्सर इसे आखिरी स्टेज—यानी मौत की सज़ा—मान लेते हैं। लेकिन क्या स्टेज 4 कैंसर सच में अंत है? और अगर ऐसा हो भी, तो क्या हमें बस ज़िंदगी से हार मान लेनी चाहिए और मौत का इंतज़ार करना चाहिए? आज, मैं यशायाह 38:9-20 से कुछ बातें बताना चाहता हूँ—यह हिस्सा राजा हिजकिय्याह ने एक जानलेवा बीमारी से ठीक होने के बाद लिखा था—कि जब हमें कोई जानलेवा बीमारी हो और जब हम उससे ठीक हों, तो हमें कैसा रवैया अपनाना चाहिए। मेरी प्रार्थना है कि हम इन बातों को दिल में उतारें, उन पर अमल करें और परमेश्वर की स्तुति करके उसकी महिमा करें।

पहली बात यह है कि जब हमें कोई जानलेवा बीमारी हो, तो हमें मौत का डटकर सामना करना चाहिए।

यशायाह 38:10 देखिए: "मैंने कहा, 'अपनी जवानी के दिनों में ही मुझे शेओल (मृत्युलोक) के दरवाज़ों से गुज़रना होगा; मैं अपने बाकी सालों से वंचित रह जाऊँगा।'" परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता यशायाह के ज़रिए हिजकिय्याह से कहा था, "अपने घर का इंतज़ाम कर ले, क्योंकि तू मरेगा; तू ठीक नहीं होगा" (पद 1)। संक्षेप में, राजा हिजकिय्याह को परमेश्वर की ओर से मौत की सज़ा मिल चुकी थी। ऐसी सज़ा का सामना करते

समय, इंसान की स्वाभाविक प्रतिक्रिया इसे नकारने की होती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम मौत से डरते हैं। हालाँकि, हमें मौत से डरना नहीं चाहिए; बल्कि, हमें उसके लिए तैयारी करनी चाहिए। जो मसीही मौत के लिए तैयारी करता है, वह मौत की सज़ा मिलने पर उसे नकारने के बजाय उसका डटकर सामना करता है। चूँकि हम मौत के लिए तैयारी करते हैं, इसलिए हमें उसका सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

दूसरी बात यह है कि जब हम किसी जानलेवा बीमारी की चपेट में आते हैं, तो हमें अपने जीवन पर विचार करना चाहिए।

यशायाह 38:11 को देखिए: “मैंने कहा, ‘मैं जीवितों के देश में प्रभु को नहीं देख पाऊँगा; मैं दुनिया के लोगों के बीच फिर किसी इंसान को नहीं देख पाऊँगा।’” जब राजा हिजकियाह को परमेश्वर से मृत्यु का आदेश मिला, तो उन्होंने अपने जीवन पर विचार किया। मौत का सामना करते हुए, उन्होंने परमेश्वर के बारे में सोचा—जिन्हें वे इस दुनिया में फिर कभी नहीं देख पाएँगे—और उन लोगों के बारे में जिनसे वे फिर कभी नहीं मिल पाएँगे। हमें यह जानना चाहिए कि मौत का सामना करते समय अपने जीवन को कैसे देखा जाए। और जब हम विचार करते हैं, तो हमें यह सोचना चाहिए कि—इस धरती पर रहते हुए—क्या हमने परमेश्वर (जिन्हें हम यहाँ फिर कभी नहीं देख पाएँगे) से अपने पूरे दिल, ताकत और भक्ति के साथ प्रेम किया, और क्या हमने अपने पड़ोसियों से खुद की तरह प्रेम किया।

तीसरी सीख यह है कि जब हम किसी लाइलाज बीमारी से पीड़ित हों, तो हमें विश्वास करना चाहिए कि प्रभु ही जीवन और मृत्यु को नियंत्रित करते हैं।

यशायाह 38:12–13 को देखिए: “मेरा घर चरवाहे के तंबू की तरह उखाड़कर मुझसे दूर कर दिया गया है; जुलाहे की तरह मैंने अपना जीवन लपेट लिया है; वह मुझे करघे से अलग कर देता है; सुबह से शाम तक आप मेरा अंत कर देते हैं। मैंने सुबह तक धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की, लेकिन शेर की तरह वह मेरी सारी हड्डियाँ तोड़ देता है; सुबह से शाम तक आप मेरा अंत कर देते हैं।” यहाँ, राजा हिजकियाह दो बार दोहराते हैं कि “वह मुझे करघे से अलग कर देगा” और “वह दिन और रात के बीच मेरे जीवन का अंत कर देगा।” संक्षेप में, इसका अर्थ है कि जीवन और मृत्यु पर प्रभु का ही अधिकार है। भले ही इलाज करने वाला डॉक्टर मृत्यु की

घोषणा कर दे, हम तब तक नहीं मरते जब तक परमेश्वर का आदेश न हो। हालाँकि, यदि प्रभु हमारे लिए मृत्यु का आदेश जारी करते हैं, तो वही हमारे जीवन को छोटा करते हैं। इसलिए, हमें अपनी जान खुद नहीं लेनी चाहिए। जीवन और मृत्यु परमेश्वर के अधीन हैं। हमें इस बात पर विश्वास करना चाहिए कि प्रभु ही हमारे जीवन और मृत्यु को नियंत्रित करते हैं।

चौथी सीख यह है कि जब हम किसी जानलेवा बीमारी से पीड़ित हों, तो हमें तब तक प्रभु की ओर देखते रहना चाहिए जब तक कि हमारी आँखें थक न जाएँ। बाइबल में यशायाह 38:14 देखें: "मैं अबाबील या सारस की तरह चहचहाया; मैं कबूतर की तरह कराहता रहा। ऊपर देखते-देखते मेरी आँखें थक गईं। हे प्रभु, मैं सताया हुआ हूँ; मेरा पक्ष ले!" परमेश्वर से मौत की सज़ा मिलने के बाद भी, राजा हिजकियाह फूट-फूटकर रोया और प्रभु से विनती की, जिनका जीवन और मृत्यु पर अधिकार है। भविष्यद्वक्ता यशायाह के ज़रिए परमेश्वर का मौत का फैसला सुनने के बाद, उसने अपना मुँह दीवार की ओर किया और ज़ोर-ज़ोर से रोते हुए और गिड़गिड़ाते हुए प्रार्थना की (पद 2-3)। उसने प्रार्थना की, "मुझे चंगा कर और मुझे जीने दे" (पद 16), और परमेश्वर से याद करने को कहा कि कैसे वह सच्चाई और पूरे मन से प्रभु के सामने चला था, और कैसे उसने वह काम किया था जो उनकी नज़र में अच्छा था (पद 3)। संक्षेप में, राजा हिजकियाह फूट-फूटकर रोया और तब तक प्रभु की ओर देखता रहा जब तक उसकी आँखें थक नहीं गईं (पद 14)। हमें भी, मौत की सज़ा मिलने के बाद भी, प्रभु से—जो जीवन और मृत्यु को नियंत्रित करते हैं—फूट-फूटकर रोते हुए और ज़ोर-ज़ोर से विलाप करते हुए प्रार्थना करनी चाहिए। यहाँ तक कि जब हम किसी लाइलाज बीमारी से पीड़ित हों, तब भी हमें परमेश्वर को पुकारना चाहिए, क्योंकि हो सकता है कि वह अपना मन बदल लें और हमारी ज़िंदगी बढ़ा दें।

पाँचवाँ सबक यह है कि जब हम किसी लाइलाज बीमारी से ठीक हो जाते हैं, तो हमें प्रभु की महिमा करनी चाहिए।

यशायाह 38:15 देखें: "मैं क्या कहूँ? उन्होंने मुझसे बात भी की है और खुद इसे पूरा भी किया है। मैं अपनी आत्मा की कड़वाहट के कारण अपने सभी सालों में सावधानी से चलूँगा।" जब हिजकियाह रोया और प्रार्थना की, और परमेश्वर की ओर देखते-देखते उसकी आँखें थक गईं, तो परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना सुनी, उसके आँसू देखे, और उसकी ज़िंदगी में पंद्रह साल और जोड़ दिए (पद 5)। ज़िंदगी का यह बढ़ा हुआ समय मिलने

के बाद, हिजकिय्याह ने परमेश्वर की महिमा की। खास तौर पर, उसने इस बात को माना कि परमेश्वर ने व्यक्तिगत रूप से उस वादे को पूरा किया था जो उन्होंने उससे किया था (पद 15)। उसने कभी भी परमेश्वर की महिमा को खुद के लिए नहीं लिया; ऐसा इसलिए था क्योंकि वह जानता था कि परमेश्वर ने ही उसकी ज़िंदगी बढ़ाई थी। हमें भी यह बात समझनी चाहिए। जब हम जीवन-मरण की स्थिति से बचकर निकलते हैं, तो हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यह पूरी तरह से परमेश्वर की कृपा से हुआ है। केवल परमेश्वर ही हमारी ज़िंदगी बढ़ा सकते हैं। सिर्फ परमेश्वर ही हमारी बीमारियों को ठीक कर सकते हैं। इसलिए, परमेश्वर की कृपा से किसी जानलेवा बीमारी से ठीक होने के बाद, हमें—हिजकिय्याह की तरह—अपनी बाकी ज़िंदगी में प्रभु के सामने विनम्रता से चलना चाहिए (पद 15)।

छठा सबक यह है कि जब हम किसी जानलेवा बीमारी से ठीक होते हैं, तो हमें यह समझना चाहिए कि इंसानी ज़िंदगी पूरी तरह से परमेश्वर के वचन पर निर्भर करती है।

यशायाह 38:16 को देखिए: “हे प्रभु, इन्हीं बातों से मनुष्य जीवित रहता है, और इन्हीं में मेरी आत्मा का जीवन है; इसलिए तू मुझे चंगा करेगा और जीवित रखेगा।” जानलेवा बीमारी से ठीक होने के बाद—जैसा कि परमेश्वर ने वादा किया था—राजा हिजकिय्याह को एहसास हुआ कि इंसानी ज़िंदगी परमेश्वर के वचन पर निर्भर करती है। दूसरे शब्दों में, वह समझ गया कि उसकी आत्मा का जीवन पूरी तरह से परमेश्वर के वचन पर टिका था। सच तो यह है कि हमारी आत्माओं का जीवन पूरी तरह से परमेश्वर के वचन पर निर्भर करता है; हमारा अस्तित्व भी उसी पर टिका है। हमें यह जानना चाहिए कि “मनुष्य केवल रोटी से ही नहीं, बल्कि हर उस वचन से जीवित रहता है जो प्रभु के मुँह से निकलता है” (व्यवस्थाविवरण 8:2)। और हमें परमेश्वर के वचन के अनुसार जीना चाहिए।

सातवाँ सबक यह है कि जब हम जानलेवा बीमारी से ठीक होते हैं, तो हमें इतनी बड़ी तकलीफ़ देने के पीछे प्रभु के मकसद को समझना चाहिए।

यशायाह 38:17 को देखिए: “सचमुच मेरी अपनी शांति के लिए ही मुझे इतनी कड़वाहट सहनी पड़ी; लेकिन तूने प्यार से मेरी आत्मा को विनाश के गड्ढे से बचाया है, क्योंकि तूने मेरे सारे पापों को अपनी पीठ के पीछे

फेंक दिया है।” तो फिर, हमें जानलेवा बीमारी की इतनी बड़ी तकलीफ़ से गुज़रने देने के पीछे परमेश्वर का क्या मकसद है? राजा हिज़कियाह को एहसास हुआ कि परमेश्वर का मकसद उसके पापों को माफ़ करके उसे शांति देना था। यह परमेश्वर की कितनी बड़ी आशीष और कृपा है! अगर जानलेवा बीमारी के ज़रिए भी हमारे पापों का मसला हल हो जाए—माफ़ हो जाएँ—और नतीजतन हम उस बेहतरीन शांति का आनंद ले सकें जो परमेश्वर देता है, तो यह कितनी गहरी आशीष और कृपा है! हमें शारीरिक चंगाई से भी ज़्यादा पापों की माफ़ी की चाहत रखनी चाहिए। और पापों की माफ़ी के ज़रिए, हमें परमेश्वर की उस शांति का आनंद लेना चाहिए जो दुनिया नहीं दे सकती।

आठवां और आखिरी सबक यह है कि जब हम जानलेवा बीमारी से ठीक हो जाते हैं, तो हमें प्रभु की स्तुति और धन्यवाद करना चाहिए।

कृपया यशायाह 38:18–20 देखें: “क्योंकि शेओल (मृत्युलोक) आपका धन्यवाद नहीं कर सकता, मृत्यु आपकी स्तुति नहीं कर सकती; जो लोग कब्र में उतर जाते हैं, वे आपकी सच्चाई की आशा नहीं कर सकते। जीवित लोग, केवल जीवित लोग ही आपका धन्यवाद करते हैं, जैसा कि मैं आज कर रहा हूँ; पिता अपने बच्चों को आपकी सच्चाई के बारे में बताते हैं। प्रभु मुझे बचाएंगे, और हम अपने जीवन के सभी दिनों में प्रभु के घर में तार वाले वाद्ययंत्रों के साथ उनके गीत गाएंगे।” यहाँ, हिज़कियाह अपनी बीमारी से छुटकारा पाने के बाद परमेश्वर की स्तुति करने का मौका मिलने पर आभार व्यक्त करता है (पार्क युन-सन)। हिज़कियाह पाप से बचाए जाने के बाद परमेश्वर की सच्ची कृपा और प्रेम के लिए धन्यवाद करते हुए उनकी स्तुति करता है। जो विश्वासी परमेश्वर की ऐसी सच्ची और बचाने वाली कृपा का अनुभव करता है, वह उनकी स्तुति और धन्यवाद किए बिना नहीं रह सकता। मेरी प्रार्थना है कि आप और मैं, हिज़कियाह की तरह, परमेश्वर की बचाने वाली कृपा का अनुभव करें और आभारी हृदय से उनकी स्तुति करें।

जब मेरे मरने का समय पास आ जाए

“प्रभु ने मूसा से कहा, ‘तुम्हारे मरने का समय पास आ गया है; यहोशू को बुलाओ और दोनों मिलकर ‘मिलन-तम्बू’ में आओ, ताकि मैं उसे आज्ञा दे सकूँ।’ तब मूसा और यहोशू गए और ‘मिलन-तम्बू’ में खड़े हो गए” (व्यवस्थाविवरण 31:14)।

कुछ ही देर में, मैं एक *क्वोंसा* (चर्च में एक वरिष्ठ महिला सदस्य) के अंतिम संस्कार में शामिल होने जा रहा हूँ। मैंने सुना है कि कई सालों तक एक गंभीर बीमारी से जूझने के बाद शांति से उनका निधन हो गया। सबसे दुखद बात यह है कि उनके पति—जो एक ‘एल्डर’ (बुजुर्ग या चर्च के नेता) थे—ने बहुत गहरे समर्पण के साथ उनकी देखभाल की थी। उनके दामाद ने उनकी देखभाल को सच्चे “प्रेम का कार्य” (1 थिस्सलुनीकियों 1:3) बताया। फिर भी, एक शादी से घर लौटने के कुछ ही समय बाद, उन्होंने पाया कि उनकी पत्नी सोती हुई ही चल बसी थीं। मैं उनके दिल की हालत का अंदाज़ा भी नहीं लगा सकता। उनके निधन की खबर सुनकर, और कल रात अपनी पत्नी को सोते हुए देखकर, मेरे मन में कई तरह के विचार आए। मेरी पत्नी की तबीयत आजकल ठीक नहीं है; वह इतनी थकी हुई थीं कि मेरे अंदर आने, लाइट जलाने और किताब पढ़ने के बावजूद वह गहरी नींद में सोती रहीं। उन्हें सोते हुए देखकर, मैं सोचने लगा कि अगर वह मुझसे पहले चली जाएँ तो मुझे कैसा लगेगा। किसी प्रियजन की मृत्यु को स्वीकार करना सचमुच बहुत मुश्किल होता है; यह गहरे और कभी न मिटने वाले दुख का समय होता है। आज के वचन, व्यवस्थाविवरण 31:14 में, हम देखते हैं कि परमेश्वर मूसा से कह रहे हैं, “तुम्हारे मरने का समय पास आ गया है।” इसलिए, परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा दी कि वह यहोशू को ‘मिलन-तम्बू’ में लाए, क्योंकि उन्हें यहोशू को कुछ निर्देश देने थे (वचन 14)। जब मैंने इस वचन पर मनन किया, तो मैंने मूसा के नज़रिए के बारे में सोचा जब वह अपने जीवन के अंतिम पड़ाव पर थे। वह जानते थे कि वह कनान—वह ‘प्रतिज्ञा की हुई भूमि’ जिसे देखने की उनकी बहुत इच्छा

थी—में कभी प्रवेश किए बिना ही मर जाएँगे; और उन्हें यह भी पता था कि उनकी मृत्यु के बाद, इस्राएल के लोग भ्रष्ट हो जाएँगे। वह जानते थे कि वे उस रास्ते से भटक जाएँगे जिसका परमेश्वर ने आदेश दिया था, वे बुराईयाँ करेंगे जिन्हें परमेश्वर ने मना किया था, और परमेश्वर के क्रोध को भड़काएँगे (वचन 29)। उन्हें यह इसलिए पता था क्योंकि परमेश्वर ने उनसे कहा था: "...तुम अपने पूर्वजों के साथ विश्राम करने वाले हो, और ये लोग जल्द ही उस देश के पराये देवताओं के पीछे जाकर व्यभिचार करेंगे जहाँ वे जा रहे हैं; वे मुझे छोड़ देंगे और उस वाचा को तोड़ देंगे जो मैंने उनसे बाँधी थी। अपने क्रोध में मैं उन्हें छोड़ दूँगा और उनसे अपना मुँह छिपा लूँगा, और वे नष्ट हो जाएँगे। उन पर बहुत सी विपत्तियाँ और मुसीबतें आएँगी, और उस समय वे पूछेंगे, 'क्या ये विपत्तियाँ हम पर इसलिए नहीं आई हैं क्योंकि हमारा परमेश्वर हमारे बीच नहीं है?' और उस समय मैं निश्चित रूप से अपना मुँह छिपा लूँगा क्योंकि उन्होंने दूसरे देवताओं की ओर मुड़कर बहुत बुराई की है" (पद 16–18)। मूसा ने पहले ही देख लिया था कि जब इस्राएली कनान देश में प्रवेश करेंगे—"जब वे खा-पीकर तृप्त और मोटे-ताज़े हो जाएँगे"—तो वे परमेश्वर से मुँह मोड़ लेंगे, उन्हें छोड़ देंगे, उस देश के पराये देवताओं के पीछे चलेंगे, उनसे वाचाएँ करेंगे और हर तरह की बुराई करेंगे (व्यवस्थाविवरण 31:20, 15)। उन्हें पता था कि इसके परिणामस्वरूप, परमेश्वर का क्रोध उन पर भड़केगा; परमेश्वर उन्हें छोड़ देंगे, उनसे अपना मुँह छिपा लेंगे और उन पर अनगिनत विपत्तियाँ और कष्ट लाएँगे। इसलिए, मूसा ने इस्राएल के लोगों से कहा: "क्योंकि मैं तुम्हारी बगावत और तुम्हारी हठधर्मिता को जानता हूँ। यदि आज, जब मैं जीवित हूँ और तुम्हारे साथ हूँ, तुम प्रभु के विरुद्ध बागी रहे हो, तो मेरी मृत्यु के बाद तुम और कितना अधिक बागी हो जाओगे!" (31:27)। मूसा जानते थे कि उनकी मृत्यु के बाद, इस्राएली भ्रष्ट हो जाएँगे, उस रास्ते से भटक जाएँगे जिस पर चलने का उन्होंने उन्हें आदेश दिया था, और प्रभु की दृष्टि में बुराई करेंगे—जिससे वे उन्हें क्रोधित करेंगे और आने वाले दिनों में अपने ऊपर विपत्ति लाएँगे (31:29)। यह सब जानते हुए, मूसा ने अपनी मृत्यु का सामना किया। तो फिर, उनके दिल में क्या भावनाएँ रही होंगी?

आस्था रखने वाले माता-पिता को कैसा महसूस होता है जब उनकी मृत्यु का समय निकट आता है? उन्हें कैसा लगता है, खासकर तब जब उन्हें पता हो कि उनके बच्चे अपनी आस्था को लेकर पूरे मन से समर्पित नहीं रहे हैं—सिर्फ माता-पिता के दबाव में चर्च जाते हैं और आस्थापूर्ण जीवन जीने का दिखावा करते हैं—और उन्हें यह एहसास हो कि उनके गुज़र जाने के बाद, उनके बच्चे शायद चर्च को पूरी तरह छोड़ देंगे और सांसारिक लोगों की तरह जीवन बिताएँगे? क्या वे सचमुच शांति से अपनी आँखें बंद कर सकते हैं? ऐसी

स्थिति में, माता-पिता के तौर पर हम क्या कर सकते हैं? हमें उस सच्चे और भरोसेमंद परमेश्वर की ओर विश्वास से देखना चाहिए जो अपने वादे को पूरा करता है, और उससे प्रार्थना करनी चाहिए। परमेश्वर हमारे बच्चों पर दया करेगा (32:36)। जब हमारे बच्चों के पास कुछ नहीं बचेगा (वचन 36) और वे परमेश्वर की प्यार भरी सीख के कारण आई मुश्किलों से लड़खड़ाने लगेंगे (वचन 35), तब परमेश्वर उन पर दया करेगा (वचन 36)। इसके अलावा, परमेश्वर हमारे बच्चों के पापों का प्रायश्चित्त करेगा (वचन 43)। नतीजतन, हमारे बच्चे—जो प्रभु के लोग हैं—आनंदित होंगे (वचन 43)। मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर हमें इस सच्चाई को समझने और अपने बच्चों के अंतिम भविष्य को पहचानने की समझ दे (वचन 29)।

जीवन और मृत्यु के मोड़ पर भी परमेश्वर का धन्यवाद करने के तीन कारण?

[भजन संहिता 23]

अभी यहाँ रविवार की शाम है। बाहर बारिश की आवाज़ सुनाई दे रही है—एक ऐसी आवाज़ जो मुझे बहुत पसंद है। मैं अभी अपने पादरी के दफ़्तर में हूँ और आज की संयुक्त 'थैंक्सगिविंग संडे' (धन्यवाद रविवार) सर्विस के दौरान भजन संहिता 23 का संदेश सुनाने के बाद—जिसे मैंने पिछले शुक्रवार को स्वर्गीय प्रचारक आन डियोक-इल के साथ साझा किया था—इसे लिखने की हिम्मत जुटा रहा हूँ। इससे पहले, मैंने अपने चिंतन के लिए सिर्फ़ शीर्षक लिखा था—"जीवन और मृत्यु के मोड़ पर भी परमेश्वर का धन्यवाद करने के तीन कारण?"—लेकिन असल में अपने विचार नहीं लिखे थे। अब, नई हिम्मत पाकर, मैं अकेले अपने कंप्यूटर पर बैठा हूँ और बारिश की आवाज़ सुनते हुए परमेश्वर के वचन पर ये विचार लिख रहा हूँ। मैं ऐसा तीन कारणों से कर रहा हूँ: पहला, यह पक्का करने के लिए कि मैं उन तीन सीखों को न भूलूँ जो परमेश्वर ने मुझे स्वर्गीय प्रचारक आन डियोक-इल के जीवन और मृत्यु के ज़रिए सिखाई; दूसरा, उनकी याद का सम्मान करने के लिए; और तीसरा, इन विचारों को आप सभी के साथ साझा करने के लिए।

पिछले शुक्रवार, मुझे प्रचारक आन की बेटी का 'काकाओटॉक' (KakaoTalk) मैसेज मिला जिसमें पूछा गया था, "पादरी जी, क्या आप अस्पताल आ सकते हैं? ऐसा लगता है कि पापा के पास अब ज़्यादा समय नहीं बचा है।" मैं जल्दी से उस अस्पताल पहुँचा जहाँ उन्हें भर्ती कराया गया था। उन्हें दूसरी मंज़िल पर बने 'इंटेंसिव केयर यूनिट' (ICU) से पहली मंज़िल पर बने 'कम्फर्ट केयर' (हॉस्पिस) रूम में ले जाया गया था और वे अपने बिस्तर पर लेटे हुए थे। उनकी पत्नी (एक सीनियर डीकनेस), उनकी बेटी और उनकी छोटी बहन—

जो कोरिया से तुरंत आई थीं—उनके साथ कमरे में थीं। मैं उनके बिस्तर के पास गया और परमेश्वर की स्तुति की। उस समय, वे पूरी तरह होश में थे; वे मेरी हर बात समझ रहे थे और जवाब में सिर हिला रहे थे। इसलिए, परमेश्वर की स्तुति करने और प्रचारक को भजन संहिता 23 पढ़कर सुनाने के बाद, मैंने उन्हें हिम्मत बढ़ाने वाली तीन बातें कहीं।

पहली बात, मैंने उन्हें परमेश्वर के सामने यह स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित किया: "मेरा प्याला उमड़ रहा है।"

आज के वचन, भजन संहिता 23:5 को देखिए: "तू मेरे शत्रुओं के सामने मेरे लिए मेज़ तैयार करता है; तू मेरे सिर पर तेल लगाता है; मेरा प्याला उमड़ रहा है।" जब प्रचारक आन अपने हॉस्पिस बेड पर लेटे थे—चेहरे पर ऑक्सीजन मास्क पहने और कई तरह की दवाइयाँ ले रहे थे, और शायद बहुत दर्द में थे—तो मैंने उन्हें अपने सत्तर या अस्सी साल के जीवन को पीछे मुड़कर देखने के लिए प्रोत्साहित किया। मैंने उनसे आग्रह किया कि वे उस भरपूर कृपा पर विचार करें जो परमेश्वर ने उनकी पूरी यात्रा के दौरान उन पर बरसाई थी। मैंने प्रार्थना की कि इन हालात में भी, उनका दिल परमेश्वर की दिखाई गई अपार और अनेक प्रकार की कृपा से भर जाए। इस तरह, मुझे उम्मीद थी कि वे भी भजनकार दाऊद की तरह यह कह पाएँगे, "मेरा प्याला उमड़ रहा है।"

दूसरी बात, मैंने उन्हें परमेश्वर से यह कहने के लिए प्रोत्साहित किया, "मुझे किसी चीज़ की कमी नहीं होगी।"

आज के वचन, भजन संहिता 23:1 को देखें: "यहोवा मेरा चरवाहा है; मुझे किसी बात की घटी न होगी।" मैंने प्रचारक आन को समझाया कि मूल हिब्रू भाषा में, भजन संहिता 23:1 का अर्थ है: "मुझे किसी चीज़ की कमी नहीं है; इसका कारण यह है कि परमेश्वर मेरा चरवाहा है।" फिर मैंने प्रचारक को बताया कि कैसे, पिछले जून में कोरिया में अपनी छुट्टी के दौरान, मैं उस कोलंबेरियम (जहाँ अस्थियाँ रखी जाती हैं) में गया था, जहाँ स्वर्गीय सिस्टर पार्क जिन-यंग—जिनसे मैं सियोह्युन चर्च में मिला था—को रखा गया था। वहाँ, उनकी बड़ी बहन, छोटे भाई और सिस्टर जोंग-मी के साथ, मैंने परमेश्वर की आराधना की और यही संदेश साझा किया। किसी प्रियजन को खोने के बाद, परमेश्वर की आराधना करना और यह कहना कैसे संभव है कि "मुझे किसी

चीज़ की कमी नहीं होगी"? इसका कारण बस यही है कि परमेश्वर हमारा चरवाहा है। स्वर्गीय प्रचारक आन देओक-इल के माध्यम से, मैंने भजन 384, "ऑल द वे माई सेवियर लीड्स मी" (मेरा उद्धारकर्ता हर कदम पर मेरी अगुवाई करता है) के बोलों में एक सबक सीखा—खासकर यह पंक्ति, "जब मैं मुश्किलों का सामना करता हूँ, तब भी वह मुझे पर्याप्त कृपा देता है।" परमेश्वर ने सचमुच प्रचारक आन को उनकी मुश्किल घड़ी में पर्याप्त कृपा दी; उस कृपा की झलक खुद देखने के बाद, मुझे उम्मीद थी कि मैं भी उनके साथ मिलकर यह कह सकूँगा—ठीक वैसे ही जैसे भजनकार दाऊद ने कहा था—"मुझे किसी चीज़ की कमी नहीं है, क्योंकि यहोवा मेरा चरवाहा है।" सबसे बढ़कर, क्योंकि केवल प्रभु ही हमारी संतुष्टि का स्रोत हैं, मैंने प्रार्थना की कि हम, प्रेरित पौलुस की तरह, संतोष का रहस्य सीखें (फिलिप्पियों 4:11-12) और किसी भी परिस्थिति में यह कह सकें कि "मुझे किसी चीज़ की कमी नहीं है।" तीसरी और आखिरी बात, मैंने प्रचारक को परमेश्वर के सामने यह स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित किया: "मैं हमेशा प्रभु के घर में रहूँगा।"

आज के वचन, भजन संहिता 23:6 को देखें: "निश्चय ही भलाई और करुणा मेरे जीवन भर मेरे साथ रहेंगी, और मैं हमेशा प्रभु के घर में रहूँगा।" जब प्रचारक आन हॉस्पिस रूम में लेटे थे, तो मैंने बार-बार उनसे आग्रह किया कि वे अपनी नज़रें केवल प्रभु पर टिकाए रखें—जो हमारी सच्ची आशा हैं—और केवल स्वर्ग के उस अनंत राज्य की ओर देखें, जहाँ कोई दुख-दर्द नहीं है। मैंने उन्हें भजन संहिता 27:4 पढ़कर सुनाया, वह वचन जिसने मेरे पसंदीदा अंग्रेज़ी गॉस्पेल गीतों में से एक, "वन थिंग आई आस्क" (एक चीज़ जो मैं माँगता हूँ) को प्रेरित किया था: "मैं प्रभु से एक ही चीज़ माँगता हूँ, बस यही चाहता हूँ: कि मैं अपने जीवन के सभी दिनों में प्रभु के घर में रहूँ, प्रभु की सुंदरता को निहारूँ और उनके मंदिर में उन्हें खोजूँ।" इस अंश को पढ़ने के बाद, मैंने उन्हें प्रभु से वही एक चीज़ माँगने के लिए प्रोत्साहित किया: परमेश्वर के घर में रहना, उनकी सुंदरता को निहारना और उसकी चाहत रखना। इस प्रकार, जब वे जीवन और मृत्यु के बीच की दहलीज पर खड़े थे, मैंने प्रार्थना की कि वे—उस परमेश्वर की भलाई और करुणा के सहारे जो निश्चित रूप से उनके साथ थे—अपने दिल में वही स्वीकार करें जो भजनकार दाऊद ने किया था: "मैं हमेशा प्रभु के घर में रहूँगा।"

इतना लिखने के बाद, मैंने देखा कि बाहर बारिश की आवाज़ धीमी हो गई है। उस दिन—थैंक्सगिविंग संडे 2016—को याद करते हुए, मुझे विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च (कोरियाई, अंग्रेज़ी और हिस्पैनिक) में तीनों मंत्रालयों

के प्यारे सदस्यों के साथ कृतज्ञतापूर्वक आराधना करना याद आता है। शोक संतप्त परिवार की उपस्थिति में, मैंने मंडली के साथ वे तीन बातें साझा कीं जो मैंने ठीक पिछले शुक्रवार को प्रचारक आन डुक-इल को बताई थीं। इससे कुछ समय पहले, हिस्पैनिक मंडली ने अपनी आराधना सभा की थी और चर्च से जाने से पहले साथ में भोजन किया था। चर्च के पादरी के ऑफिस में अकेले बैठकर और प्यारे प्रचारक आन (Evangelist Ahn) को याद करते हुए, मैंने एक बार फिर भजन संहिता 23 (Psalm 23) के शब्दों पर मनन किया है और उन्हें लिखा है। स्वर्गीय प्रचारक आन डियोक-इल (Ahn Deok-il) की तरह, मैं प्रार्थना करता हूँ कि जीवन और मृत्यु के दोराहे पर भी, मैं विश्वास के साथ यह कह सकूँ—परमेश्वर की भरपूर कृपा के सहारे जो उन्होंने मेरे जीवन पर बरसाई है—कि "मेरा प्याला उमड़ रहा है," कि "मुझे किसी चीज़ की कमी नहीं होगी" क्योंकि प्रभु मेरा अच्छा चरवाहा है, और "मैं हमेशा प्रभु के घर में रहूँगा" क्योंकि परमेश्वर की भलाई और दया निश्चित रूप से मेरे जीवन के हर दिन मेरे साथ रहेगी।



वे अपनी मेहनत से आराम पाएँगे।

“तब मैंने स्वर्ग से एक आवाज़ सुनी जो कह रही थी, ‘लिखो: धन्य हैं वे मरे हुए लोग जो अब से प्रभु में मरते हैं।’ ‘हाँ,’ आत्मा कहती है, ‘वे अपनी मेहनत से आराम पाएँगे, क्योंकि उनके काम उनके साथ जाएँगे’” (प्रकाशितवाक्य 14:13)।

कल, गुरुवार की सुबह, मैं एक हॉस्पिस (गंभीर रूप से बीमार लोगों की देखभाल करने वाली जगह) गया, जहाँ हमारी प्रेस्बिटरि के एक साथी पादरी ठहरे हुए थे। वहाँ पहुँचने पर, मैंने देखा कि प्रेस्बिटरि के एक पूर्व मॉडरेटर और दो महिलाएँ पहले से ही वहाँ मौजूद थीं; हॉलवे में अकेले इंतज़ार करते हुए, मैंने यह लिखा: “साल का अंत हो रहा है, और मैं अस्पताल—एक हॉस्पिस—में आया हूँ, जहाँ हमारी प्रेस्बिटरि के एक पादरी भर्ती हैं। साल को समेटते हुए, मैं अपने जीवन के अंत के बारे में सोच रहा हूँ। जब मैं अपनी मौत के बारे में सोचता हूँ, तो मैं अपने प्यारे परिवार, चर्च के सदस्यों, दोस्तों, साथियों और मसीह में कई भाई-बहनों से कुछ समय के लिए अलग होने के बारे में सोचे बिना नहीं रह पाता। फिर भी, मुझे मौत से डर नहीं लगता। मुझे ज़्यादा डर इस बात का है कि प्रभु के सामने खड़े होकर हिसाब देना होगा और शायद उनकी तारीफ़ न मिल पाए।” इसके बाद, जब पूर्व मॉडरेटर कमरे से बाहर निकले तो मैंने उनका अभिवादन किया, फिर पादरी से मिलने अंदर गया, जो अपनी बीमारी से जूझ रहे थे। मुझे पता चला कि वहाँ मौजूद दो महिलाओं में से एक पादरी की माँ थीं; उनसे मिलने के बाद, हमने पादरी के बारे में बात की। बातचीत के दौरान, उन्होंने मिशन क्षेत्र में बिताए उनके समय के बारे में कई कहानियाँ सुनाईं। उनकी बातें सुनकर बहुत खुशी हुई, क्योंकि उन्होंने अपने बेटे से उसके मिशन पोस्ट पर मिलने के दौरान उन घटनाओं को खुद देखा था। यह जानकर मुझे खुशी और शुक्रगुज़ारी महसूस हुई कि प्रभु ने परमेश्वर के वचन का प्रचार करने और बहुत से लोगों तक

अनुग्रह पहुँचाने के लिए उनका कितना अनमोल इस्तेमाल किया था। बातचीत के बाद, मैं पादरी के पास गया, प्रार्थना में उनका हाथ पकड़ा, और फिर सीधे पार्किंग लॉट की ओर चल दिया ताकि अपने चर्च लौट सकूँ। हालाँकि, कुछ समय बाद मुझे अपने पिता से खबर मिली कि मिसेज़ किम—पादरी की पत्नी, जिन्हें मैं दादी जैसा मानता था—का पेट के कैंसर से निधन हो गया है। मैं उनके पति, यानी पादरी को कभी नहीं भूल सकता; उन्हीं के ज़रिए प्रभु ने मुझे हमारे चर्च के कॉलेज रिट्रीट के दौरान यूहन्ना 6:1-15 का संदेश सुनने का मौका दिया। उस अनुभव से मुझे उद्धार मिला और खुद को समर्पित करने की प्रेरणा मिली, जिससे आखिरकार मैंने खुद पास्टर बनने का फैसला किया। जब 2002 में उन पास्टर का निधन हुआ, तो मैं अपनी पत्नी और तीन बच्चों के साथ उनके अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए कोरिया से अमेरिका गया। अब, मैं उनकी पत्नी के अंतिम संस्कार में शामिल हो रहा था। जब मुझे पता चला कि वह बहुत बीमार हैं, तो मैं उनसे आखिरी बार मिलना चाहता था, लेकिन परिवार के एक बड़े-बुजुर्ग ने मुझे रोक दिया। उन्होंने समझाया कि उनकी हालत बहुत नाजुक है; इसलिए, उनके गुज़रने की खबर मिलने से पहले मैं उनसे मिल नहीं पाया।

मुझे भजन संहिता 90:10 याद आता है: "हमारी उम्र सत्तर या अस्सी साल की हो सकती है, अगर हममें ताकत बनी रहे; फिर भी, उनमें से सबसे अच्छे दिन भी दुख और परेशानी से भरे होते हैं, क्योंकि वे तेज़ी से बीत जाते हैं, और हम उड़ जाते हैं।" सचमुच, यह दुनिया मेहनत और दुख से भरी है—एक ऐसी दुनिया जहाँ मौत का खतरा मंडराता रहता है और हमें दिन-रात मेहनत करनी पड़ती है। फिर भी, प्रकाशितवाक्य 14:13 में आज के वचन को देखें तो बाइबल हमें बताती है कि वे अपनी मेहनत से आराम पाएँगे। वे "कौन" हैं? वे "वे लोग हैं जो प्रभु में मरते हैं" (वचन 13)। बाइबल कहती है कि जो लोग प्रभु में मरते हैं, वे धन्य हैं (वचन 13)। कहा जाता है कि मरने पर वे अपनी मेहनत से आराम पाएँगे। तो फिर, जो लोग प्रभु में मरे—और अब अपनी मेहनत से आराम कर रहे हैं—वे इस धरती पर रहते हुए कैसे जीते थे? दूसरे शब्दों में, वे कौन हैं? मैं संक्षेप में पाँच बातों पर विचार करना चाहूँगा:

पहला, वे पवित्र हैं।

प्रकाशितवाक्य 14:4 का पहला हिस्सा देखें: "ये वे लोग हैं जो स्त्रियों के साथ अशुद्ध नहीं हुए, क्योंकि वे पवित्र हैं" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "ये वे लोग हैं जिन्होंने खुद को स्त्रियों के साथ अशुद्ध किए बिना पवित्र बनाए रखा..."]। यहाँ, "ये लोग" उन 1,44,000 पवित्र लोगों को दर्शाते हैं जिन्हें पृथ्वी से छुड़ाया गया है (वचन 3)—वे जो पवित्र बने रहे और सांसारिक तरीकों के शक्तिशाली प्रलोभनों के बीच खुद को दूषित नहीं होने दिया (पार्क युन-सन के अनुसार "स्त्रियाँ" इसका प्रतीक हैं) (वचन 4)। ठीक जैसे एक कुंवारी दुल्हन अपने दूल्हे का स्वागत करने के लिए अपनी पवित्रता बनाए रखती है, वैसे ही ये पवित्र लोग—जो दुल्हन के रूप में कलीसिया का प्रतिनिधित्व करते हैं—खुद को शुद्ध और बेदाग रखते हैं, और दुनिया या पाप की सेवा करने से इनकार करते हैं, ताकि वे अपने दूल्हे, यीशु का स्वागत कर सकें (पार्क युन-सन)। इसलिए, कलीसिया को पवित्र होना चाहिए। कलीसिया को एक शानदार कलीसिया के रूप में स्थापित किया जाना चाहिए—पवित्र और दोषरहित, बिना किसी दाग या झुर्री के (इफिसियों 5:27)।

दूसरा, वे वे लोग हैं जो प्रभु के पीछे चलते हैं, जहाँ भी वह ले जाते हैं।

प्रकाशितवाक्य 14:4 के मध्य भाग को देखें: "...वे वे लोग हैं जो मेमने के पीछे चलते हैं, जहाँ भी वह जाता है..." [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "वे वे लोग हैं जो मेमने के पीछे चलते हैं, जहाँ भी वह जाता है"]। "जहाँ भी वह ले जाते हैं" वाक्यांश का अर्थ है कि यात्रा की दिशा अनुयायी को पहले से नहीं बताई जाती है। यहाँ तक कि जब आगे का रास्ता अनिश्चित लगता है, तब भी पवित्र संत—जिन्हें पृथ्वी से छुड़ाया गया है—प्रभु की आज्ञा मानते हैं, जो "मेमना" हैं (पार्क युन-सन)। अब्राहम ही वह व्यक्ति थे जिन्होंने इस तरह का विश्वासी कार्य करके दिखाया था। बाइबिल में इब्रानियों 11:8 कहता है: "विश्वास के द्वारा, अब्राहम ने आज्ञा मानी जब परमेश्वर ने उन्हें उस देश में जाने का आदेश दिया जिसका वादा उन्होंने उन्हें देने का किया था। वे बिना यह जाने ही निकल पड़े कि वे कहाँ जा रहे हैं" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। इसलिए, पवित्र कलीसिया को प्रभु ("मेमने") के मार्गदर्शन का पालन करना चाहिए, जो कलीसिया के मुखिया हैं। जब प्रभु कलीसिया को बुलाते हैं, तो उसे उनके पीछे चलना चाहिए, जहाँ भी वे ले जाएँ और उनके साथ जाना चाहिए (नया भजन-संग्रह संख्या 324, "यीशु मुझे बुलाते हैं," कोरस)।

तीसरा, वे परमेश्वर और प्रभु के हैं। प्रकाशितवाक्य 14:4 के बाद वाले हिस्से को देखें: "...उन्हें मनुष्यों में से छुड़ाया गया है और परमेश्वर और मेमने के लिए पहली उपज के रूप में भेंट किया गया है" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "ये वे लोग हैं जिन्हें मनुष्यों में से खरीदा गया और पहली उपज के रूप में परमेश्वर और मेमने को भेंट किया गया"]। "144,000 जिन्हें छुड़ाया गया" (पद 3) वे लोग हैं जो मसीह-विरोधी ("पशु") के पीछे नहीं चलते, बल्कि मेमने—प्रभु—के पीछे चलते हैं, जहाँ भी वह ले जाता है। इसके अलावा, मसीह-विरोधी के पीछे चलने वाली भीड़ के विपरीत, इन संतों के माथे पर यीशु का नाम और परमेश्वर का नाम लिखा होता है (पद 1)। यह इस बात का प्रतीक है कि वे परमेश्वर की संपत्ति हैं और उसकी सुरक्षा में हैं (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, वे परमेश्वर और प्रभु के हैं (पद 4)। कलीसिया दुनिया की नहीं है; बल्कि, प्रभु ने दुनिया में से कलीसिया को चुना है (यूहन्ना 15:19)। इसलिए, कलीसिया परमेश्वर और प्रभु की है। यह परमेश्वर की कलीसिया है (1 कुरिन्थियों 10:32; 2 कुरिन्थियों 1:1; 1 तीमुथियुस 3:5) और प्रभु की कलीसिया है (मत्ती 16:18)।

चौथा, वे वे लोग हैं जो झूठ नहीं बोलते और दोषरहित हैं।

प्रकाशितवाक्य 14:5 को देखें: "वे वे लोग हैं जो झूठ नहीं बोलते और दोषरहित हैं" (समकालीन कोरियाई संस्करण) [(संशोधित कोरियाई संस्करण) "उनके मुँह में कोई झूठ नहीं पाया गया; वे दोषरहित हैं"]। जो लोग झूठ बोलते हैं, वे वे हैं जो इस बात से इनकार करते हैं कि यीशु ही मसीह है—मसीह-विरोधी जो पिता परमेश्वर और पुत्र, यीशु का इनकार करते हैं (1 यूहन्ना 2:22)। वे झूठे हैं जो शैतान के हैं, जो झूठ का पिता है (यूहन्ना 8:44)। हालाँकि, वे संत जिन्हें क्रूस पर यीशु का लहू बहाए जाने के द्वारा छुड़ाया (बचाया) गया है, वे परमेश्वर और प्रभु के हैं। इसलिए, वे झूठ नहीं बोलते (प्रकाशितवाक्य 14:5)। प्रेरित पौलुस, जो एक सच्चे गवाह थे, उन्होंने भी झूठ नहीं बोला (नीतिवचन 14:5; 2 कुरिन्थियों 11:31)। कलीसिया, जो सच्चे गवाहों का समुदाय है, उसे भी झूठ नहीं बोलना चाहिए। जो संत मसीह के सुसमाचार पर विश्वास करते हैं, उन्हें सच्चा होना चाहिए। इसके अलावा, जो संत यीशु पर विश्वास करते हैं, उन्हें बेदाग होना चाहिए। इसका मतलब ऐसे लोगों से नहीं है जो बिल्कुल भी पाप नहीं करते, बल्कि उन लोगों से है जिन्हें क्रूस पर यीशु की मृत्यु के द्वारा पापों की क्षमा मिली है और उनके जी उठने के द्वारा धर्मी ठहराया गया है (रोमियों 4:25)। दूसरे शब्दों में, "दोषरहित" होने का अर्थ है परमेश्वर की दृष्टि में निर्दोष माना जाना (पार्क युन-सन)। कलीसिया को पापों की

क्षमा मिली है और परमेश्वर की कृपा तथा यीशु मसीह की मृत्यु और जी उठने के द्वारा उसे धर्मी ठहराया गया है। परमेश्वर की दृष्टि में, कलीसिया उन लोगों से बनी है जो दोषरहित हैं। जो कलीसिया दोषरहित है, उसे परमेश्वर और लोगों, दोनों के सामने सच्चा और झूठ से दूर रहना चाहिए।

अंत में, पांचवीं बात यह है कि वे ऐसे लोग हैं जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं और यीशु पर अपना विश्वास बनाए रखते हैं।

प्रकाशितवाक्य 14:12 को देखें: "यहाँ संतों का धीरज है; यहाँ वे लोग हैं जो परमेश्वर की आज्ञाओं और यीशु पर विश्वास को बनाए रखते हैं" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "इसलिए, जो संत परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं और यीशु पर सच्चा विश्वास रखते हैं, उन्हें ऐसे समय में धीरज की आवश्यकता है"]। यहीं संतों का धीरज और विश्वास है (13:10)। हालाँकि "पुराना साँप, जिसे शैतान या इब्लीस कहा जाता है" (9:9)—जो पूरी दुनिया को धोखा देता है (12:9) और "हमारे भाइयों पर दोष लगाने वाला" है (10:10)—बड़े क्रोध के साथ हमारे पास आता है, यह जानते हुए कि उसका समय कम है (12:12), और "गरजते हुए शेर की तरह घूमता है, यह ढूँढ़ते हुए कि किसे निगल जाए" (1 पतरस 5:8), फिर भी संत—इसके बावजूद—परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं (प्रकाशितवाक्य 12:17, 14:12), यीशु की गवाही को मजबूती से थामे रहते हैं (12:17), और यीशु पर अपना विश्वास बनाए रखते हैं (14:12)। वे मेमने के लहू और अपनी गवाही के वचन से शैतान पर जीत पाते हैं, और वे अपनी जान की परवाह नहीं करते, यहाँ तक कि मौत का सामना करने से भी नहीं डरते (12:11)। इसलिए, प्रेरित पौलुस की तरह, वे अच्छी लड़ाई लड़ते हैं, दौड़ पूरी करते हैं और विश्वास बनाए रखते हैं। उन्हें यकीन है कि "मेरे लिए धार्मिकता का मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी न्यायकर्ता है, उस दिन मुझे देगा" (2 तीमुथियुस 4:7–8)।

धन्य हैं वे जो प्रभु में मरते हैं; खुशकिस्मत हैं वे जो उस पर विश्वास करते हुए इस दुनिया से विदा होते हैं। वे पवित्र हैं और प्रभु के पीछे चलते हैं, जहाँ भी वह उन्हें ले जाता है; वे परमेश्वर और प्रभु के हैं; वे झूठ नहीं बोलते और बेदाग हैं; और वे मौत तक परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं और यीशु पर अपना विश्वास बनाए रखते हैं। अपनी मौत के बाद, वे अपनी मेहनत-मशक्कत से मुक्त हो जाते हैं और अपने अनंत घर में हमेशा के लिए आराम पाते हैं।

“स्वर्ग के घर पर अपनी नज़रें टिकाकर और पास आकर, मैं पिता के शानदार घर में आराम करना चाहता हूँ; भले ही मैं लायक नहीं हूँ, वह मेरा स्वागत करेंगे—क्योंकि उस शानदार जगह का राजा हमारा बचाने वाला, यीशु है।”

(न्यू हाइमनल नंबर 493, “स्वर्ग का रोशन रास्ता,” आयत 3)।

मैं शांति से अपनी आँखें बंद करना चाहता हूँ।

**“इसलिए मैं तुम्हें तुम्हारे पूर्वजों के पास ले जाऊँगा, और तुम्हें शांति से दफ़नाया जाएगा। तुम्हारी आँखें उस तबाही को नहीं देखेंगी जो मैं इस जगह पर लाने वाला हूँ।”
तो वे उसका जवाब राजा के पास ले गए (2 राजा 22:20)।**

मरने से पहले आप क्या देखना चाहते हैं? और ऐसी कौन सी चीज़ है जिसे आप बिल्कुल नहीं देखना चाहते? मरने से पहले, मैं परमेश्वर की उस महिमा को देखना चाहता हूँ जो उन मरती हुई आत्माओं को बचाती है जिनके लिए मैं प्रार्थना कर रहा हूँ। हालाँकि, मरने से पहले मैं जो बिल्कुल नहीं देखना चाहता, वह है मेरे बच्चों पर परमेश्वर का क्रोध। बेशक, मैंने पहले ही कुछ ऐसा देखा है जिसे मैं कभी नहीं देखना चाहता था: अपनी गोद में अपने बच्चे को मरते हुए देखना। फिर भी, परमेश्वर ने मुझे डायलन, येरी और यीउन के जन्म को देखने का मौका भी दिया—जो प्यार और कृपा के तोहफ़े हैं। मुझे अपनी पत्नी के साथ किसी की मौत के बारे में हुई एक बातचीत याद है; मैंने कहा था, “यह एक आशीर्वाद है कि वह यह सब देखे बिना ही गुज़र गया।” ऐसा इसलिए था क्योंकि उसकी मौत के बाद ही उसके दामाद ने अपराध किया, जेल गया और आखिरकार उसकी बेटी को तलाक़ दे दिया। कौन सा माता-पिता कभी चाहेगा कि उनके बच्चों के साथ ऐसी चीज़ें हों? आज का वचन, 2 राजा 22:20, भविष्यद्वक्ता हुल्दा (2 राजा 22:14) द्वारा राजा योशियाह के भेजे गए दल को बताए गए परमेश्वर के वचन को दर्ज करता है—इस दल में याजक हिल्कियाह, शापान का बेटा अहीकाम, मीकायाह का बेटा अकबोर, सचिव शापान और राजा का सेवक आसायाह शामिल थे (वचन 12)। यह परमेश्वर का एक वादा है कि वह राजा योशियाह को उन आपदाओं को देखने से बचाएगा जो वह यहूदा पर लाने वाला था, और इसके बजाय उन्हें उनके पूर्वजों के पास जाने और शांति से अपनी कब्र में जाने देगा। यह निस्संदेह आशीर्वाद का संदेश है। राजा योशियाह को परमेश्वर से यह आशीर्वाद क्यों मिला? ऐसा इसलिए

था क्योंकि वह एक ऐसे राजा थे जिन्होंने मूसा की सभी व्यवस्थाओं का पूरी तरह से पालन किया, और अपने पूरे दिल, आत्मा और ताकत के साथ प्रभु की ओर मुड़े (23:25)। जब राजा योशियाह को उस विपत्ति (वचन 16) के बारे में पता चला—जो यहूदा के लोगों के पूर्वजों द्वारा व्यवस्था की पुस्तक (जिसे महायाजक हिल्कियाह ने प्रभु के घर में पाया था, 22:8) की बातों को न मानने और उसमें लिखी आज्ञाओं का पालन न करने के कारण आने वाली थी, जिससे परमेश्वर का भारी क्रोध भड़क उठा था (वचन 13)—तो उन्होंने अपने कपड़े फाड़ डाले (वचन 11)। व्यवस्था की पुस्तक में लिखे परमेश्वर के क्रोध और श्राप की बातों को सुनकर उनका मन पिघल गया; उन्होंने परमेश्वर के सामने खुद को दीन किया, अपने कपड़े फाड़े और फूट-फूटकर रोए (वचन 19)। फिर उन्होंने यहूदा और यरूशलेम के सभी बुजुर्गों को अपने पास इकट्ठा किया (23:1) और प्रभु के घर में मिली वाचा की पुस्तक की हर बात को ज़ोर से पढ़कर सुनाया (वचन 2)—ताकि यहूदा के सभी लोग, यरूशलेम के निवासी, याजक, भविष्यद्वक्ता और प्रभु के घर में इकट्ठा हुए सभी लोग उसे सुन सकें। इसके बाद उन्होंने परमेश्वर के सामने पूरे मन और प्राण से उनकी आज्ञा मानने और उनके नियमों, विधियों और आदेशों का पालन करने की वाचा बांधी (वचन 3)। इसके बाद, राजा योशियाह ने धार्मिक सुधार का काम किया। उन्होंने यहूदा की धरती से सभी मूर्तियों को हटा दिया (वचन 4 आदि)। फिर भी, परमेश्वर का वह भयंकर क्रोध, जो यहूदा के विरुद्ध भड़का था, शांत नहीं हुआ (वचन 26)। इसका कारण राजा योशियाह के दादा मनश्शे द्वारा किए गए वे काम थे जिन्होंने परमेश्वर को बहुत क्रोधित कर दिया था (वचन 26)। हालाँकि, परमेश्वर ने वादा किया कि वे राजा योशियाह के जीवनकाल में वह सारा क्रोध नहीं बरसाएँगे और उन्हें भरोसा दिलाया कि वे शांति से अपनी आँखें मूँदेंगे (22:20)। यह कितनी अनमोल आशीष है!

कोई भी नहीं चाहता कि मरने से पहले उनके परिवार के सदस्यों पर परमेश्वर का क्रोध बरसे। कोई भी नहीं चाहता कि दुनिया से जाने से पहले वे अपने परिवार के सदस्यों की आत्माओं का विनाश होते देखें। हम यह जानते हुए मरने की स्थिति में कैसे हो सकते हैं कि हमारे परिवार पर परमेश्वर का क्रोध बरसा है और उनकी आत्माएँ नष्ट हो गई हैं? फिर भी, परमेश्वर पिता ने अपने एकलौते पुत्र यीशु को देखा, जब उन्होंने उस क्रोध का पूरा बोझ उठाया और क्रूस पर—जो श्राप का पेड़ था—कीलें ठुकवाकर प्राण त्याग दिए। परमेश्वर पिता ने ऐसा क्यों किया? ऐसा इसलिए था क्योंकि वह आपकी और मेरी आत्मा को बचाना चाहते थे। कारण यह है कि परमेश्वर हमसे—आपसे और मुझसे—इतना गहरा प्रेम करते हैं कि उन्होंने अपने एकलौते पुत्र को क्रूस पर मरने दिया। तो फिर, परमेश्वर के इस प्रेम को जानने और इसे लगातार बढ़ती गहराई, ऊँचाई और चौड़ाई

के साथ महसूस करने के बाद, हमें कैसा जीवन जीना चाहिए? राजा योशियाह की तरह, हमें पूरे दिल और पूरी ताकत से परमेश्वर की सभी बातों का पालन करना चाहिए। खास तौर पर, हमें अपना दिल तोड़कर परमेश्वर की ओर लौटना चाहिए—न केवल उनके वचन से पता चले पापों के लिए, बल्कि अपने पूर्वजों, अपने बड़े परिवारों, अपने साथी विश्वासियों और खुद के पापों के लिए भी दुखी होना चाहिए (योएल 2:13)। हमें फूट-फूटकर रोते हुए और पश्चाताप करते हुए परमेश्वर पिता के पास लौटना चाहिए। इसके अलावा, हमें अपने परिवारों, रिश्तेदारों और साथी विश्वासियों के सभी पापों को दूर करना चाहिए। जब हम ऐसा करेंगे, तो हम परमेश्वर के क्रोध या उन श्रापों और विपत्तियों का सामना नहीं करेंगे जो अन्यथा हम पर आ सकती थीं। जब हम ऐसा करेंगे, तो परमेश्वर हमें शांतिपूर्ण जीवन का अंत देंगे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि ऐसी आशीष आपके घरों और जीवन पर बनी रहे।

अब मौत नहीं होगी।

"वह उनकी आँखों से हर आँसू पोंछ देगा। अब न मौत होगी, न मातम, न रोना-धोना और न ही दर्द, क्योंकि पुरानी व्यवस्था खत्म हो चुकी है" (प्रकाशितवाक्य 21:4)।

बाइबल में सभोपदेशक 7:2 कहता है: "दावत वाले घर में जाने से बेहतर है मातम वाले घर में जाना, क्योंकि यही हर इंसान का अंत है, और जीवित लोगों को इस बात पर गंभीरता से सोचना चाहिए" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "दावत वाले घर की तुलना में मातम वाले घर में जाना बेहतर है। चूँकि हर किसी को मरना ही है, इसलिए जीवित रहते हुए इस बात को ध्यान में रखना बुद्धिमानी है"]। जैसा कि ये शब्द कहते हैं, हम सभी को एक दिन मरना ही है। इसलिए, जब तक हम जीवित हैं, हमें इस सच्चाई को ध्यान में रखना चाहिए और गंभीरता से सोचना चाहिए कि हमें अपना बाकी जीवन कैसे जीना चाहिए।

अपने जीवनकाल में, स्वर्गीय श्रीमती चोई बुन-नाम ने परिवार के चार प्रिय सदस्यों की मृत्यु का दुख सहा। उन्हें न केवल अपने प्रिय पति को, बल्कि अपने छह बच्चों में से तीन को भी खोना पड़ा, जिनकी मृत्यु उनसे पहले ही हो गई थी। मुझे वह दृश्य आज भी अच्छी तरह याद है। मुझे याद है कि जब श्रीमती चोई को पता चला कि उनके साथ रहने वाले बेटे की लिविंग रूम में मृत्यु हो गई है, तो वह फूट-फूटकर रोने लगी थीं। उसके बाद, जब वह रविवार को चर्च आती थीं, तो अक्सर रो पड़ती थीं। उनके दुख और पीड़ा की गहराई का अंदाज़ा ही लगाया जा सकता है। इसीलिए, जब भी मैं स्वर्गीय श्रीमती चोई बुन-नाम के बारे में सोचता हूँ, तो प्रकाशितवाक्य 21:4 के शब्द याद आते हैं: "वह उनकी आँखों से हर आँसू पोंछ देगा; अब न मौत होगी, न दुख, न रोना-धोना और न ही दर्द। क्योंकि पुरानी व्यवस्था खत्म हो चुकी है" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। एक बार मैं स्वर्गीय डीकनेस चोई बुन-नाम से उनके अपार्टमेंट में मिलने गया था, और हम डाइनिंग टेबल पर बैठकर बातें कर रहे थे। उस समय, वह बीमारी से जूझ रही थीं और उनकी भूख खत्म हो

गई थी, जिससे उनके लिए ठीक से खाना-पीना मुश्किल हो रहा था। मैंने उनसे 'प्रकाशितवाक्य 21:4' में बताए गए स्वर्ग के राज्य के बारे में बात की: "दादी, स्वर्ग में न तो आँसू होंगे, न दर्द, न दुख और न ही मौत। दादी, क्या आप स्वर्ग जाना चाहेंगी?" यह सुनकर उन्होंने कहा, "मैं स्वर्ग जाना चाहूँगी।" उनका जवाब सुनकर मैंने उनसे सबसे ज़रूरी सवाल पूछा: "दादी, आप यीशु पर विश्वास करती हैं, है ना?" उन्होंने जवाब दिया, "हाँ, मैं करती हूँ।"

पिछले सोमवार सुबह 9:00 बजे, उनके बच्चे, परिवार के सदस्य और चर्च के कुछ साथी सदस्य सेंट विसेंट हॉस्पिटल के इंटेंसिव केयर यूनिट (ICU) में जमा हुए—जहाँ वह भर्ती थीं—ताकि उनके आखिरी पलों के लिए प्रार्थना सभा की जा सके। हालाँकि एक दिन पहले वह अपनी आँखें नहीं खोल पा रही थीं, लेकिन उस दिन प्रार्थना सभा के दौरान उन्होंने आँखें खोलीं और हमें पहचाना। मैं बहुत आभारी महसूस कर रहा था। प्रार्थना सभा के बाद, मैंने उनसे कहा, "मैं आपसे प्यार करता हूँ।" भले ही उन्हें बहुत दर्द हो रहा होगा, फिर भी उन्होंने जवाब में सिर हिलाया। मुझे बाद में पता चला कि जब मेरी पत्नी ने उनसे बात की और पूछा, "दादी, क्या आप स्वर्ग जाना चाहेंगी?" तो उन्होंने हाँ में सिर हिलाया था। हालाँकि स्वर्गीय चोई बुन-नाम ने इस धरती पर अपने अस्सी से ज़्यादा सालों में बहुत दर्द, तकलीफ़, दुख और आँसू सहे—अपने प्यारे पति और तीन बच्चों की मौत का सामना किया—लेकिन अब वह उन सब चीज़ों से आज़ाद हैं। उन्हें अब स्वर्ग के राज्य में—जहाँ पहुँचने की वह बहुत चाहत रखती थीं—दर्द, तकलीफ़, दुख या आँसुओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। प्रभु ने उनकी आँखों से हर आँसू पोंछ दिया है। अब वह स्वर्ग में प्रभु के साथ हमेशा रहेंगी। उन्हें फिर कभी अपनों की मौत का दुख नहीं सहना पड़ेगा, और न ही उन्हें खुद मौत का सामना करना पड़ेगा। हालाँकि इस प्रार्थना सभा के बाद उनके शरीर का अंतिम संस्कार किया जाएगा, लेकिन हमारा विश्वास है कि उनके गुज़रने के साथ ही उनकी आत्मा स्वर्ग जा चुकी है। जिस दिन यीशु इस धरती पर लौटेंगे—जब दुनिया भर में आखिरी तुरही बजेगी (1 कुरिन्थियों 15:51)—तब उनकी आत्मा और शरीर फिर से एक हो जाएँगे और तुरंत बदल जाएँगे। उन्हें एक आध्यात्मिक और शानदार शरीर मिलेगा—ऐसा शरीर जो कभी नष्ट नहीं होगा और अमर होगा (वचन 53)। इसलिए, हम उन लोगों की तरह शोक नहीं मनाते जिनके पास कोई आशा नहीं है (2 थिस्सलुनीकियों 4:13)। चूँकि हम विश्वास करते हैं कि यीशु मरे और फिर जी उठे (पद 14), हम जानते हैं कि जब वे स्वर्ग से पृथ्वी पर लौटेंगे, तो जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे (पद 16)। उसके बाद, हम जो अभी

जीवित हैं, उनके साथ बादलों में प्रभु से हवा में मिलने के लिए ऊपर उठाए जाएँगे (पद 17)। और इस प्रकार, हम स्वर्ग के राज्य में सदा प्रभु के साथ रहेंगे (पद 17)। मैं प्रार्थना करता हूँ कि शोक संतप्त परिवार, और साथ ही हम सभी जो यहाँ एकत्रित हैं, इस आशा को थामे हुए और यीशु पर विश्वास करते हुए उस ऊँचे स्वर्गीय राज्य की ओर आगे बढ़ें।

1. दिन-प्रतिदिन उस ऊँचे स्थान की ओर आगे बढ़ते हुए, अपनी पूरी इच्छाशक्ति और भक्ति को समेटकर, मैं हर दिन प्रार्थना करता हूँ।
2. हालाँकि मैं यहाँ दुख और पाप की जगह पर रहता हूँ, मैं रोज़ उस तेजस्वी, ऊँचे लोक की ओर निहारता हूँ।
3. जहाँ संदेह की धुंध छँट गई है और चिंता के बादल दूर हो गए हैं, वहाँ ही सच्चा आनंद और वास्तविक शांति निवास करती है।
4. इस ऊबड़-खाबड़, खड़ी चढ़ाई वाले रास्ते पर संघर्ष करते हुए आगे बढ़ते हुए, मैं एक बार फिर प्रार्थना करता हूँ: "हे प्रभु, मेरा मार्गदर्शन कर।"
5. अपने प्रभु के पीछे-पीछे उस ऊँचे स्थान पर शान से खड़े होने के लिए, मैं अनंत आनंद का अनुभव करूँगा और खुशी का गीत गाऊँगा।

[कोरस]

हे प्रभु, मेरे हृदय को थामे रख और मुझे उस स्थान पर रख,
जहाँ प्रकाश और प्रेम सदा विद्यमान रहते हैं।

<नया भजन संग्रह संख्या 491, उस ऊँचे स्थान की ओर आगे बढ़ना>



अगर मरे हुए लोग जी न उठें तो क्या होगा?

[1 कुरिन्थियों 15:12-20]

2015 की शुरुआत से, हमने अपनी चर्च की कोरियाई-भाषा मिनिस्ट्री के दो सदस्यों के अंतिम संस्कार किए हैं। हमने जनवरी (15-16 तारीख) में स्वर्गीय डिकनेस चोई बुन-नाम और पिछले महीने, मार्च (26-27 तारीख) में स्वर्गीय डिकनेस इम बोंग-ही का अंतिम संस्कार किया। हालाँकि नए साल को शुरू हुए अभी तीन महीने ही हुए हैं, हमने अपनी दो बहनों को अंतिम विदाई दे दी है। ये दोनों बहनें हमारे विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च से बहुत प्यार करती थीं। जब तक उनकी सेहत ने साथ दिया, वे चर्च जाने और परमेश्वर की आराधना करने में पूरी तरह समर्पित रहीं। एक बहन ने सिर्फ हमारे चर्च में ही आने पर ज़ोर दिया, भले ही हालात उन्हें कहीं और जाने की इजाज़त देते थे, जबकि दूसरी ने बहुत लगन से हमारे चर्च की सेवा की। जिस बहन ने अस्पताल के इंटेंसिव केयर यूनिट (ICU) में अपनी आखिरी आराधना सेवा में हिस्सा लिया था, मुझे याद है कि मैंने व्यक्तिगत रूप से उनसे कहा था, "दादी, मैं आपसे प्यार करता हूँ," और उन्हें मेरी ओर देखते हुए और जवाब में सिर हिलाते हुए देखा था। दूसरी बहन वह थीं जिनके माथे को मैं तब चूमता था जब मैं उनसे उस नर्सिंग होम में मिलने जाता था जहाँ वे रहती थीं। उनके अंतिम संस्कार के समय, जब मैंने शोक संतप्त परिवार और शोक मनाने वालों को उपदेश दिया, तो मैंने आज के पाठ, 1 कुरिन्थियों 15:19 के शब्दों को साझा किया: "यदि हम केवल इस जीवन के लिए मसीह में आशा रखते हैं, तो हम सभी लोगों से ज़्यादा दया के पात्र हैं।" इस वचन पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैंने यह संदेश दिया कि यदि मरे हुएों का पुनरुत्थान न होता, तो इस दुनिया में हम ईसाइयों से ज़्यादा दया के पात्र कोई और नहीं होता। दोस्तों, अगर मरे हुए लोग जी नहीं उठते, तो हम इस दुनिया में सबसे ज़्यादा दया के पात्र लोग हैं। ऐसा क्यों है? बाइबल चार कारण बताती है:

पहला कारण यह है कि अगर मरे हुए लोग जी नहीं उठते, तो मसीह भी जी नहीं उठे हैं।

आज के पाठ, 1 कुरिन्थियों 15:13 और 16 को देखें: "यदि मरे हुआ का पुनरुत्थान नहीं होता, तो मसीह भी जी नहीं उठाए गए... यदि मरे हुए जी नहीं उठाए जाते, तो मसीह भी जी नहीं उठाए गए हैं।" क्या आप इस सच—इस हकीकत—पर यकीन करते हैं कि यीशु क्रूस पर मरे और तीन दिन बाद कब्र से जी उठे? 1 कुरिन्थियों 15:3-4 में साफ कहा गया है: "मैंने तुम्हें सबसे ज़रूरी बात बताई जो मुझे भी मिली थी: कि मसीह हमारे पापों के लिए धर्मग्रंथों के अनुसार मरे, उन्हें दफनाया गया, और वे धर्मग्रंथों के अनुसार तीसरे दिन जी उठे।" बाइबल साफ बताती है कि यीशु मसीह "हमारे पापों के लिए मरे, उन्हें दफनाया गया, और वे तीसरे दिन जी उठे, ठीक जैसा धर्मग्रंथों में कहा गया था।" जो लोग इस सच पर यकीन करते हैं, उन्हें यह भी मानना चाहिए कि क्योंकि यीशु जी उठे, इसलिए हम—जो उनके जी उठने पर यकीन करते हैं—भी मरे हुआ में से जी उठेंगे। वजह यह है कि यीशु का जी उठना असल में हमारा अपना जी उठना है। दूसरे शब्दों में, क्योंकि यीशु मसीह मरे हुआ में से जी उठे, इसलिए हम—मसीही जो उन पर यकीन करते हैं—भी मरे हुआ में से जी उठेंगे। रोमियों 8:11 देखिए: "अगर उसकी आत्मा, जिसने यीशु को मरे हुआ में से जिलाया, तुममें बसती है, तो जिसने मसीह को मरे हुआ में से जिलाया, वह उस पवित्र आत्मा के ज़रिए जो तुममें रहती है, तुम्हारे नश्वर शरीरों को भी जीवन देगा" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। बाइबल साफ कहती है कि अगर पवित्र आत्मा—परमेश्वर की वह आत्मा जिसने यीशु को मरे हुआ में से जिलाया—हममें बसती है, तो परमेश्वर ज़रूर हमारे नश्वर शरीरों को जीवन देगा, ठीक वैसे ही जैसे उसने पवित्र आत्मा के ज़रिए मसीह को जिलाया। हम इस सच पर यकीन करते हैं।

आज, यीशु आपसे और मुझसे यह सवाल पूछते हैं: "मैं ही पुनरुत्थान और जीवन हूँ। जो मुझ पर यकीन करता है, वह मरकर भी जी उठेगा, और जो कोई जीवित है और मुझ पर यकीन करता है, वह कभी नहीं मरेगा। क्या तुम इस पर यकीन करते हो?" (यूहन्ना 11:25-26)।

दूसरी वजह यह है कि अगर मरे हुआ का जी उठना नहीं होता—अगर मसीह नहीं जिलाए गए—तो हमारा प्रचार और हमारा विश्वास बेकार है।

आज के वचन, 1 कुरिन्थियों 15:14 और आयत 17 के पहले हिस्से को देखिए: "अगर मसीह नहीं जिलाए गए, तो हमारा प्रचार और तुम्हारा विश्वास बेकार है। ... और अगर मसीह नहीं जिलाए गए, तो तुम्हारा विश्वास भी बेकार है..." (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। यीशु मसीह का सुसमाचार, जिस पर हम विश्वास करते हैं और जिसका प्रचार करते हैं, वह सच है। वह सच्चा सुसमाचार यह है कि मसीह शास्त्रों के अनुसार हमारे पापों के लिए मरे, उन्हें दफनाया गया, और वे तीसरे दिन फिर जी उठे (पद 3-4)। लेकिन, अगर मरे हुएों का जी उठना नहीं होता, तो इसका मतलब है कि मसीह कब्र से नहीं जी उठे; नतीजतन, यीशु मसीह का सुसमाचार जिस पर हम विश्वास करते हैं और जिसका प्रचार करते हैं, वह बेकार हो जाएगा। हम ऐसे यीशु पर कैसे विश्वास कर सकते हैं और उनका प्रचार कैसे कर सकते हैं जो मरे हुएों में से जी नहीं उठे? ऐसे विश्वास और प्रचार से ज़्यादा बेकार और क्या हो सकता है? यह एक झूठा विश्वास और झूठी घोषणा होगी। संक्षेप में, हम परमेश्वर के झूठे गवाह बन जाएंगे (पद 15)।

लेकिन, जिस यीशु पर हम विश्वास करते हैं, वे ही पुनरुत्थान और जीवन हैं (यूहन्ना 11:25)। हमारे यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया, कब्र में दफनाया गया, और वे तीसरे दिन फिर जी उठे। हम वे लोग हैं जो यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान पर विश्वास करते हैं, और हम परमेश्वर के गवाह हैं जो उनके सच्चे सुसमाचार का प्रचार करते हैं। प्रेरितों के काम 1:8 को देखें: "लेकिन जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा, तो तुम्हें शक्ति मिलेगी; और तुम यरूशलेम में, और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।" हम यीशु मसीह के गवाह हैं। आप और मैं, जो यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान पर विश्वास करते हैं, वही सुसमाचार—यीशु मसीह की खुशखबरी—का प्रचार करते हैं। जिस सुसमाचार का हम प्रचार करते हैं वह सच है, और हमारा विश्वास भी सच है। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर ने पवित्र आत्मा के द्वारा मसीह यीशु को मरे हुएों में से जिलाया। चूँकि वही पवित्र आत्मा जिसने यीशु को मरे हुएों में से जिलाया, हमारे भीतर वास करता है, इसलिए हमें उस आत्मा की शक्ति के द्वारा यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान पर विश्वास करना चाहिए और उसका प्रचार करना चाहिए।

तीसरा कारण यह है कि यदि मरे हुएों का पुनरुत्थान नहीं होता—यानी मसीह को नहीं जिलाया गया—तो हम अभी भी अपने पापों में ही होते।

आज के वचन में 1 कुरिन्थियों 15:17 के बाद वाले हिस्से को देखें: "...तुम अभी भी अपने पापों में हो।" यीशु शास्त्रों के अनुसार हमारे पापों के लिए मरे (पद 3)। दूसरे शब्दों में, उन्होंने हमारे सभी पापों को अपने ऊपर ले लिया और उन्हें क्षमा करने के लिए क्रूस पर चढ़ाए गए। रोमियों 4:25 में लिखा है: "उन्हें हमारे पापों के कारण मौत के हवाले कर दिया गया और हमें धर्मी ठहराने के लिए उन्हें फिर से ज़िंदा किया गया।" हमें यीशु की मौत से पापों की माफ़ी और उनके फिर से ज़िंदा होने से धर्मी ठहराए जाने का वरदान मिला; अगर वे फिर से ज़िंदा न हुए होते, तो हम धर्मी नहीं ठहराए जाते और निश्चित रूप से अपने पापों में ही बने रहते। नतीजतन, हम—जैसा कि यीशु ने कहा था—"अपने पाप में ही मर जाते" (यूहन्ना 8:21)। अगर वे फिर से ज़िंदा न हुए होते, तो हम अब भी अपने पापों में होते और निश्चित रूप से हमेशा के लिए आध्यात्मिक मौत का सामना करते। अगर यीशु मरे हुआँ में से जी न उठे होते, तो न तो पापों की माफ़ी मिलती, न ही उद्धार, मेल-मिलाप या आध्यात्मिक जीवन—न तो अभी और न ही हमेशा के लिए।

लेकिन, अब हम अपने पापों में नहीं हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि क्रूस पर यीशु की मौत और उनके फिर से ज़िंदा होने के ज़रिए, हमें पहले ही माफ़ी मिल चुकी है और हम धर्मी ठहराए जा चुके हैं। रोमियों 5:9 पर गौर कीजिए: "जब अब हम उनके लहू के ज़रिए धर्मी ठहराए जा चुके हैं, तो उनके ज़रिए परमेश्वर के क्रोध से और भी ज़्यादा पक्का बचाव क्यों न पाएंगे!"

चौथा और आखिरी कारण यह है कि अगर मरे हुआँ का जी उठना न होता—यानी मसीह जी न उठते—तो जो लोग सो गए हैं (मर गए हैं) वे भी नष्ट हो जाते।

आज के वचन, 1 कुरिन्थियों 15:18 को देखिए: "तब वे भी जो मसीह में सो गए हैं, नष्ट हो गए हैं।" इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि अगर मरे हुआँ का जी उठना न होता, तो पुराने नियम के सभी संत और सभी ईसाई नष्ट हो जाते। कारण यह है कि उनका विश्वास व्यर्थ होता, और क्योंकि वे अभी भी अपने पापों में होते, इसलिए उनका अंजाम हमेशा की सज़ा होता। वे हमेशा के दुख में पड़ जाते। लेकिन, यीशु मसीह मरे हुआँ में से जी उठे। इसलिए, जो लोग मसीह में मरे, उन्हें हमेशा की सज़ा या हमेशा का दुख नहीं भुगतना पड़ा। इसके बजाय, यीशु द्वारा वादा किया गया अनंत जीवन (यूहन्ना 10:28) पाकर, वे नष्ट नहीं होते बल्कि स्वर्ग के राज्य में प्रभु के साथ हमेशा जीवित रहते हैं।

फिर भी बाइबल साफ-साफ सच बताती है। आज के वचन, 1 कुरिन्थियों 15:20 को देखिए: "पर अब मसीह मरे हुआओं में से जी उठे हैं, और जो सो गए हैं, उनमें से पहले फल बन गए हैं।" जैसा कि बाइबल कहती है, यीशु मसीह मरे हुआओं में से जी उठे। परमेश्वर ने पवित्र आत्मा के द्वारा यीशु को मरे हुआओं में से जिलाया। वही पवित्र आत्मा हममें वास करता है जो यीशु पर विश्वास करते हैं। आखिरी दिन, परमेश्वर हममें वास करने वाले पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे नश्वर शरीरों को भी जीवन देगा (रोमियों 8:11)। हम निश्चित रूप से जी उठेंगे। आखिरी तुरही की आवाज़ पर, हम पलक झपकते ही बदल दिए जाएँगे। हम अब ऐसे शरीर नहीं पहनेंगे जो कमज़ोर, नाशवान या पाप की ओर झुके हुए हों। हम एक पल में बदल जाएँगे, और ऐसे शरीर धारण करेंगे जो मज़बूत, अविनाशी और महिमामयी हों। आखिरी दिन, जो प्रभु में सो गए हैं, वे भी महिमामयी आत्मिक शरीर पहनकर जी उठेंगे; हम सब मिलकर स्वर्ग के अनंत राज्य में जाएँगे और हमेशा प्रभु के साथ रहेंगे (1 थिस्सलुनीकियों 4:17)। मैं यीशु के नाम से प्रार्थना करता हूँ कि विक्ट्री परिवार के हम सभी लोग विश्वास से जिँ, और जी उठने तथा अनंत जीवन की इस आशा को मज़बूती से थामे रहें।

"वह तुम्हारे नाशवान शरीरों को भी जीवन देगा"

एक दिन हम सब मर जाएँगे (सभोपदेशक 7:2)। हम शरीर और आत्मा से बने हैं (रोमियों 8:10)। दूसरे शब्दों में, हमारे शरीर "नाशवान शरीर" हैं (वचन 11)। हमारे शरीर और आत्मा दोनों का मरना एक व्यक्ति, आदम के पाप—मूल पाप—के कारण तय हुआ है (5:12)।

हालाँकि, अगर पवित्र आत्मा के ज़रिए मसीह हमारे अंदर वास करते हैं, तो भले ही पाप के कारण शरीर मर जाता है, आत्मा जीवित रहती है (8:10)। जब हम मरते हैं, तो हमारे शरीर मिट्टी में मिल जाते हैं, लेकिन हमारी आत्माएँ स्वर्ग चली जाती हैं।

मसीह यीशु मरे हुआँ में से जी उठे और उन लोगों के लिए 'पहला फल' बने जो सो गए हैं (मर गए हैं) (1 कुरिन्थियों 15:20)। यीशु फिर से जी उठे। क्योंकि यीशु फिर से जी उठे, इसलिए हम जो उनमें विश्वास करते हैं—जो "मसीह के हैं" (वचन 23)—हम भी फिर से जी उठेंगे, भले ही हम शारीरिक रूप से मर चुके हों। यीशु का जी उठना ही हमारा जी उठना है।

परमेश्वर, जिन्होंने यीशु को मरे हुआँ में से जिलाया, पवित्र आत्मा के ज़रिए हमारे नाशवान शरीरों को भी जीवन देंगे (रोमियों 8:11)। चूँकि जी उठना त्रिएक परमेश्वर का काम है (वचन 11), इसलिए हम निश्चित रूप से जी उठेंगे। जब मसीह वापस आएँगे (1 कुरिन्थियों 15:23) और आखिरी तुरही की आवाज़ गूँजेगी (वचन 52), तो हम महिमामय शरीरों के साथ जी उठेंगे, ठीक मसीह के जी उठे शरीर की तरह (फिलिप्पियों 3:21; 1 यूहन्ना 3:2)। तो फिर, हम विश्वासियों को—जो यीशु के जी उठने और अपने भविष्य के जी उठने पर भरोसा रखते

हैं—कैसे जीना चाहिए? हमें हमेशा प्रभु के काम में पूरी तरह से खुद को समर्पित करना चाहिए (1 कुरिन्थियों 15:58)।

पुनरुत्थान की आशा

[1 कुरिन्थियों 15:51-58]

क्या आप विश्वास करते हैं कि यीशु मरे हुए में से जी उठे?

आज के वचन, 1 कुरिन्थियों 15:35 में, कुरिन्थ की कलीसिया में दो सवाल उठाए गए हैं: "लेकिन कोई पूछेगा, 'मरे हुए कैसे जी उठते हैं? वे किस तरह के शरीर के साथ आते हैं?'" ये दो सवाल हैं: (1) "मरे हुए फिर से कैसे जी उठते हैं?" और (2) "मरे हुए किस तरह के शरीर के साथ आते हैं?" जब हम आज प्रेरित पौलुस द्वारा इन दो सवालों के जवाबों पर मनन करते हैं, तो मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सभी पुनरुत्थान की कृपा और आशा से भर जाएँ।

1 कुरिन्थियों 15 हमें पुनरुत्थान की आशा के दो पहलू बताता है:

पहला, पुनरुत्थान की आशा यह भरोसा दिलाती है कि हम "फिर से जी उठेंगे!" (1 कुरिन्थियों 15:35-41)।

1 कुरिन्थियों 15:36 को देखें: "हे मूर्ख मनुष्य! जो तू बोता है, वह तब तक जीवित नहीं होता जब तक कि वह मर न जाए।" यह वचन कुरिन्थ की कलीसिया में उठाए गए पहले सवाल का पौलुस का जवाब है: "मरे हुए कैसे जी उठते हैं?" पौलुस का जवाब यह है कि, जैसे बोया गया बीज तब तक जीवित नहीं हो सकता जब तक वह मर न जाए, वैसे ही हम पहले मरे बिना पुनरुत्थान का अनुभव नहीं कर सकते। पौलुस की बातों के बारे में आप क्या सोचते हैं? क्या आप मानते हैं कि कोई व्यक्ति मरे बिना फिर से जी सकता है? पौलुस कह रहा है कि जब तक हम मृत्यु के द्वार से नहीं गुजरते, तब तक हम पुनरुत्थान का अनुभव नहीं कर सकते। 1 कुरिन्थियों 15:3-4 को देखें: "...कि मसीह पवित्रशास्त्र के अनुसार हमारे पापों के लिए मरे, कि उन्हें दफनाया

गया, कि वे पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी उठे।" यीशु हमारे पापों के लिए "पवित्रशास्त्र के अनुसार" क्रूस पर मरे, और उन्हें दफनाया गया और वे "पवित्रशास्त्र के अनुसार" तीसरे दिन फिर से जी उठे। इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ है कि यीशु ठीक वैसे ही मरे और फिर से जी उठे जैसा पवित्रशास्त्र ने पहले बताया था। यह तथ्य कि यीशु पवित्रशास्त्र के अनुसार मरे और फिर से जी उठे, हमें अनंत आशा देता है। वह अनंत आशा यह है कि, जैसे यीशु मरे हुआओं में से जी उठे, वैसे ही आप और मैं भी मरे हुआओं में से जी उठेंगे। पुनरुत्थान की दूसरी उम्मीद यह है कि हम "स्वर्ग से आए व्यक्ति का रूप धारण करेंगे" (1 कुरिन्थियों 15:41-56)।

कुरिन्थ की कलीसिया में एक और सवाल उठा: "मरे हुए किस तरह के शरीर के साथ जी उठेंगे?" इस सवाल का जवाब आज के वचन, 1 कुरिन्थियों 15:42-44 में मिलता है: "मरे हुआओं का जी उठना भी ऐसा ही होगा। जो शरीर बोया जाता है वह नाशवान है, लेकिन जो जी उठता है वह अविनाशी है; जो अपमान में बोया जाता है, वह महिमा में जी उठता है; जो कमजोरी में बोया जाता है, वह सामर्थ्य में जी उठता है; जो प्राकृतिक शरीर के रूप में बोया जाता है, वह आत्मिक शरीर के रूप में जी उठता है..." बाइबल हमें बताती है कि मरे हुआओं के जी उठने में एक बदलाव शामिल है: पहला, एक नाशवान शरीर अविनाशी शरीर के रूप में जी उठता है; दूसरा, अपमान में बोया गया शरीर महिमा में जी उठता है; तीसरा, कमजोरी में बोया गया शरीर सामर्थ्य में जी उठता है; और चौथा, प्राकृतिक शरीर आत्मिक शरीर के रूप में जी उठता है। संक्षेप में, जिस शरीर के साथ मरे हुए जी उठेंगे, उसे "भविष्य का शरीर" कहा गया है (वचन 37)। यह "भविष्य का शरीर" वह नहीं है जिसे इंसान बोते हैं (वचन 37); बल्कि, यह वह है जो परमेश्वर देता है—एक ऐसा शरीर जो उसकी अपनी इच्छा के अनुसार होता है (वचन 38)। यह भविष्य का "शरीर" क्या है जिसे परमेश्वर अपनी इच्छा से हमें देना चाहता है? वचन 49 देखें: "जैसे हमने मिट्टी से बने मनुष्य का रूप धारण किया है, वैसे ही हम स्वर्ग से आए मनुष्य का रूप भी धारण करेंगे।" "स्वर्ग से आए मनुष्य का रूप"—जिसे धारण करना हमारी नियति है—इसका क्या अर्थ है? फिलिप्पियों 3:21 देखें: "वह हमारे दीन-हीन शरीर को अपने महिमामय शरीर जैसा बना देगा, उस सामर्थ्य के द्वारा जो उसे सब कुछ अपने अधीन करने में सक्षम बनाती है।"

इसलिए, एक ऐसी चीज़ है जिसका हम बेसब्री से इंतज़ार करते हैं। वह क्या है? वह है "आखिरी तुरही"। 1 कुरिन्थियों 15:51 देखें: "देखो! मैं तुम्हें एक रहस्य बताता हूँ। हम सब सो नहीं जाएँगे, लेकिन हम सब बदल दिए जाएँगे—एक पल में, पलक झपकते ही, आखिरी तुरही बजने पर।" हम आखिरी तुरही की आवाज़ का

इंतज़ार कर रहे हैं क्योंकि जैसे ही वह बजेगी, हम सब एक पल में बदल जाएँगे। आखिरी तुरही की आवाज़ पर, मरे हुए लोग शानदार, आध्यात्मिक शरीर पाएँगे जो कभी नष्ट न होने वाले और अमर होंगे (पद 52-53)। आइए हम सब जी उठने की इस उम्मीद को मज़बूती से थामे रखें, परमेश्वर का धन्यवाद करें, विश्वास में अडिग रहें और प्रभु के काम में खुद को और भी पूरी तरह से समर्पित करें।

जो सो गए हैं, उनके बारे में

[1 थिस्सलुनीकियों 4:13-21]

ब्रिटिश ईसाई अखबार *क्रिश्चियन टुडे* की कॉलमनिस्ट अलाना फ्रांसिस ने "मौत के बाद के जीवन के बारे में बाइबल की 11 आयतें" शीर्षक वाले अपने कॉलम में इस बात पर ज़ोर दिया कि ईसाइयों को मौत और मौत के बाद के जीवन के बारे में सही समझ होनी चाहिए। फ्रांसिस ने कहा कि हालाँकि बहुत से लोग अपनी आखिरी इच्छाओं और अंतिम संस्कार की योजनाओं के बारे में बात करते हैं, और मौत एक ऐसी चीज़ है जिसका सामना हम सभी को कभी न कभी करना ही है, फिर भी हममें से ज़्यादातर लोग असल में इसके लिए तैयार नहीं होते—चाहे व्यावहारिक रूप से हो या आध्यात्मिक रूप से। उन्होंने आगे कहा कि बहुत से लोग मौत को एक डरावनी घटना मानते हैं, और इसके बाद क्या होता है, इस बारे में बातचीत अक्सर नकारात्मक नतीजों पर केंद्रित होती है। हालाँकि, उन्होंने कहा, "ईसाइयों के लिए, मौत के बारे में एक अलग, उज्ज्वल और उम्मीद भरी सोच है। भले ही मौत कई चीज़ों का अंत हो सकती है, लेकिन यह हमें उस चीज़ से कहीं ज़्यादा देगी जो हम अपने सांसारिक जीवन में पाते हैं।" फ्रांसिस ने आगे कहा, "ईसाई होने के नाते, हमें न केवल मौत के बाद के वादे किए गए जीवन का भरोसा है, बल्कि परमेश्वर के साथ अनंत जीवन का भी भरोसा है। जब हम मौत के बारे में सोचते हैं—इस सच्चाई का सामना करते हैं कि हमें आखिरकार परिवार और दोस्तों को पीछे छोड़ना होगा—तो स्वाभाविक रूप से हमें डर लगता है। फिर भी, परमेश्वर के वचन के ज़रिए हमें बहुत दिलासा मिल सकता है।" उन्होंने ज़ोर देकर कहा, "मौत असल में अनंत जीवन की ओर ले जाती है, और मौत के बारे में बेहतर समझ हासिल करना हमारे विश्वास की यात्रा का एक अहम हिस्सा है।"

आज के अंश, 1 थिस्सलुनीकियों 4:13 में, प्रेरित पौलुस थिस्सलुनीके की कलीसिया के विश्वासियों को लिखते हैं: "भाइयों और बहनों, हम नहीं चाहते कि आप उन लोगों के बारे में अनजान रहें जो मौत की नींद सो गए हैं, ताकि आप बाकी लोगों की तरह शोक न करें, जिनके पास कोई उम्मीद नहीं है।" *ह्युंडई-इनई सोंगयोंग* (आधुनिक कोरियाई बाइबल) इसका अनुवाद इस तरह करती है: "भाइयों, हम नहीं चाहते कि आप उन लोगों के बारे में अनजान रहें जो पहले ही मर चुके हैं। नहीं तो, आप भी उन लोगों की तरह शोक करेंगे जिनके पास कोई उम्मीद नहीं है।" इन दोनों अनुवादों की तुलना करने पर, *रिवाइज़्ड न्यू कोरियन वर्शन* (GAE-YEOK-GAE-JEONG) में "जो सो गए हैं, उनके बारे में" कहा गया है, जबकि *ह्युंडई-इन-उई सोंग-योंग* (समकालीन कोरियाई संस्करण) में "जो पहले ही मर चुके हैं, उनके बारे में" कहा गया है। दोनों में से, जो अनुवाद मूल ग्रीक भाषा के अर्थ को ज़्यादा सही ढंग से बताता है, वह है "जो सो गए हैं" (concerning those who sleep)। हालाँकि, *Hyundai-in-ui Seong-gyeong* में इसका अनुवाद "जो पहले ही मर चुके हैं" (concerning those who have already died) के तौर पर किया गया है, क्योंकि प्रेरित पौलुस द्वारा इस्तेमाल किया गया वाक्यांश "जो सो गए हैं" असल में उन लोगों के बारे में है जो मर चुके हैं। यूहन्ना 11:11 में, यीशु जानते थे कि उनका प्रिय लाज़र—जो बीमार था (वचन 3)—मर चुका है, और उन्होंने अपने चेलों से कहा, "हमारा दोस्त लाज़र सो गया है।" यह सुनकर, चेलों ने यीशु से कहा, "प्रभु, अगर वह सो गया है, तो वह ठीक हो जाएगा" (या *Hyundai-in-ui Seong-gyeong* में: "प्रभु, अगर वह सो रहा है, तो वह ठीक हो जाएगा")। उन्होंने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि, हालाँकि यीशु लाज़र की मौत के बारे में बात कर रहे थे, चेलों को लगा कि वह लाज़र के सोने और आराम करने के बारे में बात कर रहे हैं (वचन 13)। इसलिए, यीशु ने अपने चेलों से "साफ़-साफ़" कहा कि "लाज़र मर गया है" (वचन 13)। इस तरह, बाइबल में दर्ज है कि यीशु ने मरे हुएों को "सोए हुए" लोगों के तौर पर बताया है; यीशु के अलावा, बाइबल के कई अन्य लेखकों ने भी मरे हुएों का वर्णन इसी तरह किया है। हम प्रेरितों के काम (Acts) की किताब के लेखक लूका को भी प्रेरितों के काम 7:60 में इस वाक्यांश का इस्तेमाल करते हुए देखते हैं: "वह घुटनों के बल बैठा और ऊँची आवाज़ में चिल्लाया, 'प्रभु, इस पाप का दोष उन पर न लगाना।' यह कहने के बाद, वह सो गया" (या *Hyundai-in-ui Seong-gyeong* में: "तब वह घुटनों के बल बैठा और ऊँची आवाज़ में कहा, 'प्रभु, इस पाप का दोष उन पर न लगाना।'") ...और इसके साथ ही, उसने आखिरी साँस ली" (प्रेरितों के काम 7:60)। प्रेरित पतरस ने भी 2 पतरस 3:4 में मरे हुएों को "सोए हुए" लोगों के तौर पर बताया है: "वे कहेंगे, 'वह वादा कहाँ है कि प्रभु आ रहे हैं? जब से हमारे पूर्वज सो गए हैं, तब से सब कुछ वैसा ही है जैसा सृष्टि की शुरुआत

में था" (2 पतरस 3:4)। प्रेरित पौलुस ने ही सबसे ज़्यादा बार मरे हुए लोगों के रूप में बताया है। पौलुस ने न केवल आज के वचन—1 थिस्सलुनीकियों 4:13—में, बल्कि 'पुनरुत्थान वाले अध्याय'—1 कुरिन्थियों 15 (वचन 6, 18 और 51)—में भी इसी तरह कहा है: "उसके बाद, वह एक ही बार में पाँच सौ से ज़्यादा भाइयों को दिखाई दिए; उनमें से ज़्यादातर अभी भी ज़िंदा हैं, हालाँकि कुछ सो गए हैं... जो मसीह में सो गए हैं, वे भी खो जाएँगे... देखो, मैं तुम्हें एक रहस्य बताता हूँ: हम सब सोएँगे नहीं, लेकिन हम सब बदल जाएँगे—एक पल में, पलक झपकते ही, आखिरी तुरही फूँके जाने पर" (1 कुरिन्थियों 15:6, 18, 51)। इस तरह, पौलुस ने बार-बार मरे हुए लोगों को ऐसे लोगों के तौर पर बताया जो सो रहे हैं। असल में, आज के हिस्से—1 थिस्सलुनीकियों 4:13—में पौलुस ने उन्हें "सोने वाले" कहा, फिर भी आयत 16 तक, उसने उन्हें "मसीह में मरे हुए" कहा। आखिर में, जैसा कि प्रेरित पौलुस ने थिस्सलुनीकी विश्वासियों को लिखा, उसने आयत 9–12 में "भाईचारे के प्यार" के बारे में बात की, और फिर, हमारे सामने वाले हिस्से (आयत 13–21) में, उसने "सोने वालों" (यानी जो पहले ही मर चुके हैं) के बारे में बात की। इसके बाद, अध्याय 5, आयत 1–11 में, उसने उनसे "समय और मौसमों" के बारे में बात की—खासकर, यीशु के दूसरी बार आने के समय के बारे में। तो फिर, पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को "सोने वालों" के बारे में क्यों लिखा—यानी, जो पहले ही मर चुके थे? इसका कारण यह पक्का करना था कि वे "बाकी लोगों की तरह शोक न करें, जिनके पास कोई उम्मीद नहीं है" (4:13b)। "बाकी लोग, जिनके पास कोई उम्मीद नहीं है" का मतलब है दुनिया में वे सभी लोग जो यीशु पर विश्वास करने वाले मसीहियों के अलावा हैं। दूसरे शब्दों में, जो लोग मरे हुए लोगों के लिए बिना उम्मीद के शोक करते हैं, वे इस दुनिया के वे सभी अविश्वासी लोग हैं जो यीशु पर भरोसा नहीं करते। पौलुस चाहता था कि उसके प्यारे थिस्सलुनीकी विश्वासी अपने साथी विश्वासियों—जो विश्वास में मरे थे—की मौत पर उसी तरह शोक न करें, जैसे अविश्वासी लोग करते हैं, जिनके पास कोई उम्मीद नहीं होती।

अविश्वासी जो यीशु पर भरोसा नहीं करते, वे कहते हैं, "आओ खाएँ-पीएँ, क्योंकि कल हम मर जाएँगे" (1 कुरिन्थियों 15:32)। इस तरह, जलप्रलय के समय के अविश्वासी गैर-यहूदियों की तरह, वे खाते-पीते हैं, शादी करते हैं और शादियाँ करवाते हैं (लूका... 17:27)। वे आराम से रहते हैं और मज़ा करते हैं। (12:19)। इसका कारण यह है कि वे मानते हैं कि मौत ही सब कुछ खत्म कर देती है। दूसरे शब्दों में, क्योंकि जो लोग विश्वास नहीं करते, वे मानते हैं कि मौत ही अंत है और मरने के बाद की ज़िंदगी में विश्वास नहीं करते, इसलिए वे

खाते-पीते हैं और ज़िंदगी का मज़ा लेते हैं, लेकिन मरने पर उन्हें निराशाजनक दुख का सामना करना पड़ता है (1 थिस्सलुनीकियों 4:13)। हालाँकि, जो ईसाई यीशु में विश्वास करते हैं, उनके साथ ऐसा नहीं है। यानी, ईसाइयों को उन लोगों की तरह शोक नहीं करना चाहिए जिनके पास कोई उम्मीद नहीं है। आज के हिस्से की 14वीं आयत से, लेखक उन कारणों को बताता है कि हमें इस तरह शोक क्यों नहीं करना चाहिए। इसलिए, 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-21 और "जो सो गए हैं, उनके बारे में" विषय पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं उन दो कारणों पर विचार करना चाहता हूँ कि क्यों ईसाइयों को विश्वास में अपने प्रियजनों की मौत पर उन लोगों की तरह शोक नहीं करना चाहिए जो विश्वास नहीं करते, और इस तरह उन सीखों को अपनाना चाहिए जो परमेश्वर हमें देते हैं।

पहला कारण यह है कि ईसाइयों को विश्वास में अपने प्रियजनों की मौत पर उन लोगों की तरह शोक नहीं करना चाहिए जो विश्वास नहीं करते, क्योंकि हम मानते हैं कि यीशु मरे और फिर जी उठे।"

आज के वचन के पहले हिस्से को देखिए, 1 थिस्सलुनीकियों 4:14: "क्योंकि हम विश्वास करते हैं कि यीशु मरे और फिर जी उठे..." क्या आप इस सच्चाई पर विश्वास करते हैं कि यीशु क्रूस पर मरे और तीन दिन बाद कब्र से जी उठे? या क्या आप यीशु की मौत पर तो विश्वास करते हैं, लेकिन इस बात पर विश्वास नहीं कर पाते कि वे मरे हुआओं में से जी उठे? कुरिन्थ की कलीसिया में कुछ विश्वासी ऐसे थे जिनका कहना था कि मरे हुआओं का जी उठना नहीं होता (1 कुरिन्थियों 15:12)। अगर मरे हुआओं का जी उठना नहीं होता, तो मसीह भी मरे हुआओं में से जी नहीं उठ सकते थे (वचन 13, 15, 16)। और अगर मसीह फिर से जी नहीं उठे, तो जो सुसमाचार पौलुस और हम सुनाते हैं वह बेकार है, और आपका विश्वास भी बेकार है (वचन 14, 17)। इसके अलावा, हम—जो यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करते हैं, यानी क्रूस पर उनकी मौत और उनके जी उठने का—परमेश्वर के झूठे गवाह साबित होंगे (वचन 15)। और जो लोग मसीह में सो गए (मर गए) हैं, वे भी नष्ट हो गए होंगे (वचन 18)। अगर मसीह में हमारी आशा केवल इसी जीवन तक सीमित है, तो हम सभी लोगों में सबसे ज़्यादा दयनीय हैं (वचन 19)। हालाँकि, 1 कुरिन्थियों 15:20 कहता है: "लेकिन अब मसीह मरे हुआओं में से जी उठे हैं और जो सो गए हैं, उनमें से पहले फल बन गए हैं।" यीशु मसीह का वह सुसमाचार जो पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया को सुनाया, वह यह है कि मसीह हमारे पापों के लिए मरे और पवित्रशास्त्र के अनुसार दफ़नाए गए, और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन फिर से जी उठे (वचन 3-4)। पौलुस ने

थिस्सलुनीका के लोगों को यहूदी आराधनालय में तीन सब्त के दिनों तक यीशु मसीह के इस सुसमाचार के बारे में गवाही दी। प्रेरितों के काम 17:1-3 को देखिए: "पौलुस और सीलास एम्फिपोलिस और अपोलोनिया से होते हुए थिस्सलुनीका पहुँचे, जहाँ एक यहूदी आराधनालय था। अपनी आदत के अनुसार, पौलुस आराधनालय गए और तीन हफ्तों तक सब्त के दिनों में पवित्रशास्त्र का इस्तेमाल करके लोगों से तर्क-वितर्क किया। उन्होंने समझाया कि मसीह के लिए दुख उठाना और मरे हुआओं में से जी उठना ज़रूरी था, और उन्होंने गवाही दी, 'यह यीशु जिसका मैं तुम्हें प्रचार करता हूँ, वही मसीह है'" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। नतीजतन, "उनमें से कुछ ने विश्वास किया और पौलुस और सीलास के साथ हो लिए, साथ ही बहुत से धर्मपरायण यूनानी और कई प्रमुख महिलाएँ भी" (पद 4)। इसीलिए पौलुस 1 थिस्सलुनीकियों 4:14 के पहले भाग में—जो आज का मुख्य वचन है—कहता है, "हम विश्वास करते हैं कि यीशु मरे और फिर जी उठे" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। दूसरे शब्दों में, इस पत्र को लिखने वाले पौलुस और इसे पाने वाले थिस्सलुनीके की कलीसिया के सदस्य, दोनों ही यह मानते थे कि यीशु मरे और फिर जी उठे। इसलिए, पौलुस ने थिस्सलुनीके के विश्वासियों को सलाह दी कि वे उन लोगों (संतों) के लिए शोक न करें जो पहले ही मर चुके हैं, जैसा कि गैर-ईसाई करते हैं—जिनके पास कोई आशा नहीं होती क्योंकि वे यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान में विश्वास नहीं करते (पद 13)।

यीशु पर विश्वास करने से पहले, हम इस दुनिया में बिना आशा के लोग थे। इफिसियों 2:12 को देखें: "उस समय तुम मसीह से अलग थे, इस्राएल की नागरिकता से बाहर थे और प्रतिज्ञा के वाचाओं से अनजान थे, बिना आशा के और दुनिया में बिना परमेश्वर के थे" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "उस समय, मसीह के साथ तुम्हारा कोई संबंध नहीं था, तुम इस्राएल के नागरिक नहीं थे, परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर आधारित वाचाओं से बाहर थे, और इस दुनिया में बिना आशा और बिना परमेश्वर के जी रहे थे"]। हालाँकि, हम जो कभी दूर थे, अब मसीह यीशु में मसीह के लहू के द्वारा पास लाए गए हैं (पद 13)। हमने परमेश्वर के अनुग्रह से यीशु मसीह पर विश्वास करके उद्धार पाया है (पद 8, समकालीन कोरियाई संस्करण)। केवल परमेश्वर के अनुग्रह से, हमने यीशु पर विश्वास करके परमेश्वर से उपहार के रूप में अनंत जीवन पाया है (रोमियों 6:23)—जो पवित्रशास्त्र के अनुसार हमारे पापों के लिए मरे, दफनाए गए, और तीसरे दिन फिर जी उठे (1 कुरिन्थियों 15:3-4)। इसलिए, अब हमारे पास आशा है। वह आशा वास्तव में "हमारे शरीरों का छुटकारा" है (रोमियों 8:23)। जब आखिरी तुरही की आवाज़ गूँजेगी, तो हम सब एक पल में, पलक झपकते ही बदल दिए जाएँगे

(1 कुरिन्थियों 15:51)। 1 कुरिन्थियों 15:52-53 को देखिए: “जब आखिरी बार तुरही फूँकी जाएगी, तो पलक झपकते ही मरे हुए लोग अविनाशी शरीर के साथ जी उठेंगे, और हम सब बदल दिए जाएँगे। इस नाशवान शरीर को अविनाशी शरीर धारण करना होगा, और इस नश्वर शरीर को अमर शरीर धारण करना होगा” (समकालीन कोरियाई संस्करण)। इसलिए, हम रोमियों 8:24-25 की बातों पर ध्यान देते हैं: “क्योंकि इसी आशा में हमारा उद्धार हुआ है। लेकिन जो आशा दिखाई देती है, वह असल में आशा नहीं है। जो चीज़ हमारे पास पहले से है, उसके लिए कौन आशा करता है? लेकिन अगर हम उस चीज़ की आशा करते हैं जो हमारे पास अभी नहीं है, तो हम धैर्यपूर्वक उसकी प्रतीक्षा करते हैं।”

दूसरी बात, हम ईसाइयों को अपने प्रिय साथी विश्वासियों की मृत्यु पर उन लोगों की तरह शोक नहीं करना चाहिए जो विश्वास नहीं करते, क्योंकि परमेश्वर उन्हें अपने साथ लाएँगे जो यीशु में मरे हैं।

आज के पाठ में 1 थिस्सलुनीकियों 4:14 के बाद वाले हिस्से को देखिए: “...परमेश्वर उन्हें अपने साथ लाएँगे जो यीशु में सो गए हैं” [(समकालीन कोरियाई संस्करण) “इसलिए हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर उन्हें अपने साथ लाएँगे जो यीशु पर विश्वास करते हुए मरे”]। बाइबल कहती है कि जो आशा दिखाई देती है, वह आशा नहीं है (रोमियों 8:24)। यदि हम उस चीज़ की आशा करते हैं जिसे हम नहीं देखते, तो हमें धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करनी चाहिए (पद 25)। सचमुच, थिस्सलुनीका की कलीसिया के विश्वासियों ने “आशा में दृढ़ता” दिखाई—यानी, उन्होंने प्रभु यीशु मसीह में आशा के साथ दृढ़ता बनाए रखी (1 थिस्सलुनीकियों 1:3)। दूसरे शब्दों में, थिस्सलुनीका के विश्वासी परमेश्वर के पुत्र यीशु के स्वर्ग से नीचे आने की प्रतीक्षा कर रहे थे, जो मरे हुए लोगों में से जी उठे थे (पद 10)। इससे पहले कि पॉल के माध्यम से सामर्थ्य, पवित्र आत्मा और गहरे विश्वास के साथ सुसमाचार उन तक पहुँचा (पद 5)—यानी, उनके यीशु पर विश्वास करने से पहले—थिस्सलुनीका की कलीसिया के सदस्य मूर्तिपूजक थे (पद 9)। परमेश्वर ने ऐसे मूर्तिपूजकों से प्रेम किया, उन्हें चुना (1:4), और उन्हें अपने राज्य और महिमा में बुलाया (2:12)। नतीजतन, थिस्सलुनीका की कलीसिया के विश्वासी प्रभु यीशु के आने पर पॉल की आशा, आनंद और गर्व का मुकुट बन गए (पद 19-20)। हमारी उम्मीद यीशु के दोबारा आने की है। और हमारी उम्मीद पर टिके रहने का मतलब है उनके लौटने के लिए प्रार्थना करना, उसका इंतज़ार करना और उसकी राह देखना। क्या हम सच में इस तरह से इंतज़ार करते हैं? जो विश्वासी

यीशु के दोबारा आने का इंतज़ार करते हैं, वे किसी साथी विश्वासी की मौत पर वैसे दुखी नहीं होते जैसे वे लोग होते हैं जो विश्वास नहीं करते—यानी जिनके पास कोई उम्मीद नहीं होती (5:13)। इसकी वजह यह है कि जो विश्वासी यीशु के दोबारा आने का इंतज़ार करते हैं और उसके लिए तैयारी करते हैं, वे मानते हैं कि यीशु मरे और फिर जी उठे (आयत 14)। इसके अलावा, उनके दुखी न होने की वजह यह है कि उन्हें विश्वास है कि परमेश्वर उन लोगों को अपने साथ लाएगा जो यीशु में सो गए हैं (यानी मर गए हैं) (आयत 14)। संक्षेप में, जो विश्वासी यीशु के दोबारा आने का इंतज़ार करते हैं, वे उम्मीद में खुश रहते हैं और मुश्किलों का सामना करते हैं (रोमियों 12:12)। साथ ही, थिस्सलुनीके के विश्वासियों के लिए उम्मीद पर टिके रहने का मतलब था पवित्र जीवन जीना। थिस्सलुनीके के विश्वासियों के बारे में—जो उनकी उम्मीद, खुशी और गर्व का ताज बन गए थे—प्रेरित पौलुस ने प्रार्थना की कि जब हमारे प्रभु यीशु अपने सभी पवित्र लोगों के साथ आएँ, तो वे हमारे परमेश्वर पिता के सामने पवित्रता में बेदाग पाए जाएँ (3:13)। पौलुस ने यह प्रार्थना इसलिए की क्योंकि "आपकी पवित्रता" (4:2) ही परमेश्वर की इच्छा है (आयत 3)। चूँकि परमेश्वर ने उन्हें अशुद्धता के लिए नहीं बल्कि पवित्रता के लिए बुलाया था (आयत 7), इसलिए पौलुस ने थिस्सलुनीके की कलीसिया के विश्वासियों को सलाह दी कि वे यौन अनैतिकता से दूर रहें, अपनी पत्नियों के साथ पवित्रता और सम्मान से पेश आएँ, और उन गैर-यहूदियों की तरह वासना के वश में न हों जो परमेश्वर को नहीं जानते (4:3-5)।

प्रभु के दोबारा आने का इंतज़ार करने वाले विश्वासी का जीवन पवित्र होता है। अगर हम यीशु के लौटने की प्रार्थना कर रहे हैं, उसका इंतज़ार कर रहे हैं और उसकी राह देख रहे हैं, तो हमें परमेश्वर की इच्छा के अनुसार पवित्र जीवन जीना चाहिए। पौलुस—जिसने पहले थिस्सलुनीकियों के विश्वासियों की उम्मीद की मज़बूती को याद करते हुए धन्यवाद की प्रार्थना की थी (1:2-3)—ने आज के हिस्से (4:13-14) में उन विश्वासियों के बारे में बात की जो पहले ही मर चुके थे। वह यह पक्का करना चाहता था कि वे उन लोगों की तरह शोक न करें जिनके पास कोई उम्मीद नहीं है; इसके बजाय, उसने उन्हें भरोसा दिलाया कि परमेश्वर यीशु के साथ उन्हें भी लाएगा जो उसमें मरे थे, ठीक वैसे ही जैसे उसने यीशु को मरे हुआँ में से जिलाया था। इस बात का मतलब यह है कि जब प्रभु खुद स्वर्ग से ज़ोरदार हुक्म, प्रधान स्वर्गदूत की आवाज़ और परमेश्वर की तुरही की आवाज़ के साथ नीचे आएंगे, तो जो मसीह में मरे हैं वे सबसे पहले जी उठेंगे (वचन 16)। दूसरे शब्दों में, जो मसीह में मर चुके हैं वे प्रभु के लौटने के समय सबसे पहले जी उठेंगे, और फिर परमेश्वर उन जी उठे संतों को यीशु के साथ वापस लाएगा। तो फिर, यीशु इस दुनिया में वापस क्यों आ रहा है? यूहन्ना

14:1-3 देखें: "तुम्हारा मन व्याकुल न हो। तुम परमेश्वर पर विश्वास करते हो; मुझ पर भी विश्वास करो। मेरे पिता के घर में बहुत से कमरे हैं; अगर ऐसा न होता, तो क्या मैं तुम्हें बताता कि मैं वहाँ तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जा रहा हूँ? और अगर मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करता हूँ, तो मैं वापस आऊंगा और तुम्हें अपने साथ ले जाऊंगा ताकि तुम भी वहाँ रहो जहाँ मैं हूँ।" यीशु के इस दुनिया में लौटने का कारण परमेश्वर के छुड़ाए हुए बच्चों को स्वर्ग ले जाना है। आखिर में, प्रेरित पौलुस थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के विश्वासियों को समझाता है कि जो मसीह में मर चुके हैं वे यीशु के लौटने पर सबसे पहले जी उठेंगे—परमेश्वर उन्हें यीशु के साथ वापस लाएगा (वचन 14)—और जो विश्वासी उस समय जीवित होंगे, वे उनके साथ बादलों में प्रभु से हवा में मिलने के लिए ऊपर उठाए जाएंगे (वचन 17)। इसके अलावा, जो मरे हुएों में से जी उठे हैं और जो उसके लौटने तक जीवित रहेंगे, वे दोनों स्वर्ग में प्रभु के साथ हमेशा रहेंगे (वचन 17)। इसलिए, पौलुस ने थिस्सलुनीकियों से कहा कि वे "इन बातों से एक-दूसरे का हौसला बढ़ाएं" (वचन 18)। जब हम किसी प्रियजन की मौत के गम में डूबे हों, तो हमें परमेश्वर के उस वादे पर भरोसा रखना चाहिए कि जो लोग मसीह में मरे हैं, उन्हें वह यीशु के साथ वापस लाएगा। हमें विश्वास करना चाहिए कि जब प्रभु खुद स्वर्ग से एक ऊंचे हुक्म, प्रधान स्वर्गदूत की आवाज़ और परमेश्वर की तुरही की आवाज़ के साथ उतरेंगे, तो जो लोग मसीह में मरे हैं वे सबसे पहले जी उठेंगे, और हम जो अभी ज़िंदा हैं, अचानक बदल दिए जाएंगे और बादलों में उनके साथ प्रभु से हवा में मिलने के लिए उठा लिए जाएंगे। और हमें विश्वास करना चाहिए कि हम सब स्वर्ग में प्रभु के साथ हमेशा रहेंगे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सब इस पक्की और साफ़ अनंत आशा के साथ एक-दूसरे का हौसला बढ़ाते हुए जिएं।

हमें न केवल मौत के बाद एक वादे के अनुसार जीवन का भरोसा दिया गया है, बल्कि परमेश्वर के साथ अनंत जीवन का भी भरोसा मिला है। जब हम मौत के बारे में सोचते हैं—इस सच्चाई का सामना करते हैं कि हमें आखिरकार परिवार और दोस्तों से अलग होना ही है—तो स्वाभाविक रूप से हमें डर लगता है। फिर भी, हमें परमेश्वर के वचन से बहुत दिलासा मिल सकता है। आज के बाइबल वचन के ज़रिए, परमेश्वर हमें बताते हैं कि मसीही होने के नाते, हमें साथी विश्वासियों की मौत पर वैसे दुखी नहीं होना चाहिए जैसे गैर-विश्वासी होते हैं। इसका कारण यह है कि हम विश्वास करते हैं कि यीशु मरे और फिर जी उठे। यीशु का जी उठना ही हमारा जी उठना है। जब प्रभु यीशु वापस आएंगे, तो जो संत पहले ही मर चुके हैं वे फिर से जी उठेंगे, और जीवित संत तुरंत बदल दिए जाएंगे; वे सब मिलकर बादलों में प्रभु से हवा में मिलने के लिए उठा लिए

जाएंगे। और हम स्वर्ग में हमेशा प्रभु के साथ रहेंगे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि पवित्र आत्मा आपको इस संदेश से दिलासा दे।

मेरी मौत...

हमारी मौत से परमेश्वर की महिमा ज़ाहिर होनी चाहिए (यूहन्ना 11:4)।

हमें मौत का सामना इस तरह करना चाहिए जिससे हमारे परिवार, रिश्तेदारों, चर्च के साथियों, दोस्तों और पड़ोसियों का भला हो (पद 50–52)।

मैं अपनी मौत के बारे में सोचने लगा।

मैं एक अंतिम संस्कार में शामिल हुआ।

अंतिम संस्कार की रस्म पूरी होने और ताबूत में रखे मृतक को देखने के बाद, मैं शोक-संतप्त परिवार—पास्टर की पत्नी और उनके तीन बच्चों—से संवेदना व्यक्त करने गया। पत्नी और दो बेटियों को फूट-फूटकर रोते हुए देखकर मैंने उनके प्रति सहानुभूति जताई, जिस बेटे ने श्रद्धांजलि भाषण दिया था, उससे मजबूती से हाथ मिलाया और घर लौट आया।

मैंने उस पत्नी के दिल के हाल के बारे में सोचा जो अपने प्यारे पति—एक पास्टर—को खोने का गम मना रही थी, और उन बच्चों के दिलों के बारे में भी जो अपने प्यारे पिता के जाने का दुख सह रहे थे। ऐसा करते हुए, मैंने एक ऐसे दृश्य की कल्पना की जिसमें मैं खुद उस ताबूत में लेटा हुआ हूँ, और मेरी पत्नी, डायलन, येरी और यीउन उसके पास खड़े होकर शोक मनाने वालों का अभिवादन कर रहे हैं। यह मेरे लिए अपनी ही मौत के बारे में सोचने का समय था।

हमें अपनी मौत के बारे में सोचना चाहिए।

जीवित होने के नाते, हमें यह बात याद रखनी चाहिए कि मौत ही इस धरती पर हर किसी का आखिरी पड़ाव है (सभोपदेशक 7:2)। हमें शादियों के बजाय अंतिम संस्कार में जाना चाहिए और अपनी नश्वरता पर विचार करना चाहिए। जीवन के अंत के बारे में गहराई से सोचकर, हमें सावधानी से विचार करना चाहिए कि हम अपने बचे हुए दिन कैसे जिएं ताकि प्रभु प्रसन्न हों। एक समय ऐसा आएगा जब हम सभी को जीवन की यात्रा के आखिरी पड़ाव पर उतरना होगा।

नए साल के दिन, यानी 1 जनवरी से ही...

मुझे 2016 में अपनों के गुजर जाने की खबर मिलने का अंदाज़ा तो था, लेकिन साल के पहले ही दिन ऐसी खबर सुनने की उम्मीद नहीं थी। ऐसी दुनिया में रहते हुए जहाँ हर मोड़ पर मौत का साया मंडराता दिखता है, मैं यह मानता और स्वीकार करता हूँ कि सिर्फ़ यीशु ही हमारी सच्ची उम्मीद हैं।

क्या जीवन का अंत?

साल के आखिर में, मैं एक हॉस्पिस (गंभीर रूप से बीमार लोगों की देखभाल करने वाली जगह) गया, जहाँ हमारे प्रेस्बिटरि के एक पादरी भर्ती थे। साल को खत्म करते हुए, मैं अपने खुद के जीवन के अंत के बारे में सोच रहा हूँ। जब मैं अपनी मौत के बारे में सोचता हूँ, तो मुझे अपने प्यारे परिवार, चर्च के सदस्यों, दोस्तों, साथियों और आस्था से जुड़े कई भाई-बहनों से कुछ समय के लिए अलग होने का ख्याल आता है। फिर भी, मुझे मौत से डर नहीं लगता। मुझे ज़्यादा डर इस बात का है कि जब मैं प्रभु के सामने अपने जीवन का हिसाब देने के लिए खड़ा होऊँगा, तो शायद उनकी तारीफ़ न पा सकूँ।

अगर कभी ऐसा समय आया जब मुझे पूरी तरह से वेंटिलेटर पर निर्भर रहना पड़े...

एक दिन, अपनी पत्नी को एयरपोर्ट ले जाते समय मैंने उनसे कहा, "अगर कभी ऐसी स्थिति आ जाए कि मुझे वेंटिलेटर पर निर्भर रहना पड़े, तो मैं चाहूँगा कि तुम उसे हटवा दो।" बिना एक पल की भी हिचकिचाहट के, उन्होंने तुरंत जवाब दिया, "मैं भी यही चाहूँगी।" यह सुनकर मैं मुस्कुराया और उनसे कहा कि चूँकि हमें अनंत जीवन मिला है, इसलिए मौत से डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। मेरी प्यारी पत्नी मेरी बात से सहमत थीं। फिर मैंने उनका हौसला बढ़ाते हुए कहा कि क्योंकि हमें अनंत जीवन का वादा मिला है, इसलिए मौत का सामना करते समय हमें इस दुनिया से चिपके नहीं रहना चाहिए, बल्कि उस आने वाली दुनिया—यानी स्वर्ग—की ओर उम्मीद भरी नज़रों से देखना चाहिए।

मुझे गेहूँ का एक दाना बन जाना चाहिए...

जब मैं अपनी मौत के बारे में सोचता हूँ, तो मैं सोचता हूँ कि क्या मैं उस मिशन को ईमानदारी से पूरा कर रहा हूँ जो भगवान ने मुझे सौंपा है। मैं यह भी सोचता हूँ कि मेरे जाने के बाद लोग मेरे बारे में क्या कहेंगे। मुझे गेहूँ का एक दाना बनकर ज़मीन पर गिरकर मर जाना चाहिए...

मौत में भी...

मैं चाहता हूँ कि मौत में भी प्रभु मेरा इस्तेमाल करें।
सिर्फ़ भगवान की महिमा के लिए...

मृत्यु

हमें मृत्यु के बारे में सोचना चाहिए।

हमें मृत्यु का डटकर सामना करना चाहिए।

हमें मृत्यु के नज़रिए को अपनाना चाहिए।

हमें कृतज्ञता के साथ और बिना किसी पछतावे के मरने में सक्षम होना चाहिए, भले ही ऐसा अभी इसी क्षण क्यों न हो जाए।

"मौत पर ध्यान"

"आज मौत से बचने के बजाय पाप से बचना ज़्यादा आसान है। और बदकिस्मती से, हम जितना ज़्यादा जिएंगे, हमारे पाप उतने ही ज़्यादा बढ़ेंगे। अगर आपको मरने से डर लगता है, तो आपको यह समझना चाहिए कि लंबी ज़िंदगी जीना और भी डरावना है। इसलिए, हमेशा मौत के लिए तैयार रहें (लूका 21:36)। जिसने मौत के दिन बिना पछतावे के ज़िंदगी जीने की कोशिश की है, वह समझदार और खुशनसीब है। अपनी आत्मा की मुक्ति को बाद के लिए न टालें, और दोस्तों या पड़ोसियों पर निर्भर न रहें। यह बहुत दुख की बात है कि जब कोई हमेशा की ज़िंदगी पा सकता है, तो अपनी काबिलियत के हिसाब से न जी पाए। मौत के बारे में भरोसा पाने के लिए, पछतावे के ज़रिए अपने शरीर को सौंप दें। जब आप मरेंगे तो आपको कौन याद रखेगा, और कौन आपके लिए प्रार्थना करेगा? इसलिए, मेरे दोस्त, अभी वह सब कुछ करें जो आप कर सकते हैं। जब आपके पास समय है, तो अपने लिए हमेशा की दौलत जमा करें (लूका 12:33)। सिर्फ़ मुक्ति के बारे में सोचें, और अपना ध्यान सिर्फ़ भगवान की बातों पर लगाएं। आगे बढ़ें ताकि मौत के बाद आपकी आत्मा खुशी-खुशी भगवान से मिल सके।"

[थॉमस ए केम्पिस, "द इमिटेशन ऑफ़ क्राइस्ट" (चैप्टर 23, "ऑन मेडिटेटिंग ऑन डेथ")]

क्या मौत को गहराई से महसूस करने की ज़रूरत है?

"किसी के दुख में पूरी तरह डूब जाने की अच्छी वजह है।

जब आप सच में मौत को ग्रेविटी के साथ महसूस करेंगे, तो आप ज़िंदा होने का अजूबा महसूस कर पाएँगे।"

(रॉबर्ट वेनिंगा)

"अगर आपको अपनी ज़िंदगी दोबारा जीने का मौका मिले, तो आप कैसे जीना चुनेंगे?"

"स्कॉलर टोनी कैम्पोलो ने एक बार बुजुर्गों पर हुई एक स्टडी के नतीजे पब्लिश किए थे। उन्होंने 95 साल और उससे ज़्यादा उम्र के पचास लोगों का सर्वे किया, और उनसे यह सवाल पूछा: 'अगर आपको अपनी ज़िंदगी दोबारा जीने का मौका मिले, तो आप कैसे जीना चुनेंगे?' उसने उनसे हर एक को तीन जवाब देने को कहा। तीन जवाब इस तरह थे:

पहला, मैं रोज़ाना सोच-विचार करके ज़िंदगी जीऊँगा। मैं इतना बेचैन था कि मैंने कभी अपने होने का मकसद सोचना बंद नहीं किया; मैं और ज़्यादा सोच-समझकर जीऊँगा।

दूसरा, मैं बहुत डरपोक तरीके से जीता था। मैंने नाइंसाफ़ी के साथ समझौता किया और लगातार इस बात की चिंता में जीता था कि दूसरे मेरे बारे में क्या सोचते हैं। अब से, मैं और हिम्मत से जीना चाहूँगा।

तीसरा, मैं इस बात को ध्यान में रखकर जीना चाहूँगा कि ऐसा दिन—ज़िंदगी का अंत—आखिरकार आता ही है। मैं मौत को ध्यान में रखकर जीना चाहूँगा। मरने के बाद मेरा क्या होगा? मैं अपने पीछे क्या छोड़ जाऊँगा? उन्होंने सबने इस बात पर अफ़सोस जताया कि वे ऐसे सोच-विचार के बिना नहीं जी पाए" (इंटरनेट)।

आइए हम मौत के नज़रिए से जिएं।'

जब मैंने एक बार फिर मौत का नज़रिया अपनाया (सभोपदेशक 7:2), तो अलग-अलग परेशानियां अब मुझे ज़्यादा परेशान नहीं करतीं।

हमें मौत को ध्यान में रखकर जीना चाहिए।

हमें अपने प्यारे माता-पिता के साथ हर दिन इस बात को ध्यान में रखते हुए व्यवहार करना चाहिए कि हमें नहीं पता कि वे कब गुज़र जाएँगे।

जब हम उन्हें मौत के नज़रिए से देखते हैं, तो हम उनके साथ बिताने का कोई भी मौका या पल नहीं गँवाना चाहते। मौत का नज़रिया—और हमेशा बने रहने वाले जीवन (अनंत जीवन) का नज़रिया।

"दावत वाले घर में जाने से शोक वाले घर में जाना बेहतर है, क्योंकि यही हर इंसान का अंत है, और जो जीवित हैं, वे इस बात पर गंभीरता से विचार करेंगे" (उपदेशक 7:2)।

हमें मौत को ध्यान में रखकर जीना चाहिए।

इसके अलावा, हमें हमेशा बने रहने वाले जीवन (अनंत जीवन) के नज़रिए से भी जीना चाहिए।

हमें इसी नज़रिए के साथ जीना चाहिए...

हमें हर दिन न सिर्फ़ मौत के नज़रिए से, बल्कि प्रभु से मिलने के नज़रिए से भी जीना चाहिए...

क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु...

क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु किसी भी तरह से दुखद घटना नहीं है; यह खुशी की बात है। ऐसा इसलिए है क्योंकि क्रूस पर उनकी मृत्यु एक शानदार मृत्यु थी। इसने परमेश्वर के असली स्वभाव को प्रकट किया—खासकर, इसने हमें दिखाया कि परमेश्वर प्रेम है। इसलिए, जब हम क्रूस पर चढ़े यीशु के बारे में सोचते हैं, तो हम धन्यवाद और प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकते, और परमेश्वर के पूर्ण प्रेम से प्रेरित होकर खुशी से भर जाते हैं। इसके अलावा, परमेश्वर का वह पूर्ण प्रेम हमें अपने पड़ोसियों से प्रेम करने के लिए प्रेरित करता है। जिस तरह प्रभु ने हमसे इतना प्रेम किया कि उन्होंने अपनी जान दे दी, उसी तरह हम भी प्रभु और अपने पड़ोसियों से प्रेम करने के लिए खुद को समर्पित करने के लिए प्रेरित होते हैं, यहाँ तक कि अपनी जान देने की हद तक भी। हम क्रूस के प्रेम के कारण आनंदित होते हैं—एक ऐसा प्रेम जो हमें अंत तक परमेश्वर और अपने पड़ोसियों से प्रेम करने का जीवन जीने की शक्ति देता है।

किसी प्रियजन की मृत्यु...

किसी प्रियजन की मृत्यु मुझे पुरानी यादों में ले जाती है।

किसी प्रियजन की मृत्यु मुझे परमेश्वर पिता की ओर ले जाती है। किसी प्रियजन की मृत्यु मुझे स्वर्ग के लिए और भी अधिक लालायित करती है। किसी प्रियजन की मृत्यु मुझे अनंत जीवन की ओर भी अधिक चाहत महसूस कराती है।

किसी प्रियजन की मृत्यु के माध्यम से...

किसी प्रियजन की मृत्यु के माध्यम से, मैं यीशु की मृत्यु पर मनन करता हूँ और उस अनंत जीवन के लिए धन्यवाद देता हूँ जो हमें उनके द्वारा एक उपहार के रूप में मिला है।

एक शहीद की पत्नी की डायरी

यह बारबरा यूडेरियन की डायरी का एक अंश है—जो उत्तरी अमेरिका के उन पाँच युवा मिशनरी शहीदों में से एक की पत्नी थीं—जिसे एलिज़ाबेथ इलियट की किताब *थ्रू गेट्स ऑफ़ स्प्लेंडर* में दर्ज किया गया है:

"आज रात, कैप्टन ने हमें बताया कि नदी के किनारे चार शव मिले हैं। एक ने टी-शर्ट और जींस पहनी थी; रोजर ही एकमात्र व्यक्ति थे जिन्होंने ऐसे कपड़े पहने थे। दो दिन पहले, परमेश्वर ने मुझे भजन संहिता 48:14 का वचन दिया था: 'क्योंकि यह परमेश्वर सदा-सर्वदा हमारा परमेश्वर है; वह अंत तक हमारा मार्गदर्शक रहेगा।' रोजर की मृत्यु की खबर सुनकर, मेरा हृदय परमेश्वर की स्तुति से भर गया। वह अपने स्वर्गीय घर जाने के योग्य थे। हे प्रभु, मुझे माँ और पिता दोनों की भूमिकाएँ अच्छी तरह से निभाने में मदद कर। मुझे 'प्रभु की शिक्षा और सलाह' (इफिसियों 6:4) जानने दे... आज रात, स्वर्ग गए अपने पिता के लिए प्रार्थना करते हुए, बेथ ने मुझसे एक सवाल पूछा। वह उन्हें एक पत्र लिखना चाहती थी और उसने पूछा कि क्या वे उसे लेने के लिए स्वर्ग से नीचे नहीं आ सकते। जब मैंने कहा, 'यह संभव नहीं है; डैडी यीशु के साथ हैं,' तो बेथ ने जवाब दिया, 'लेकिन यीशु डैडी की नीचे आने में मदद कर सकते हैं। परमेश्वर डैडी का हाथ पकड़ लेंगे ताकि वे फिसलें नहीं।' मैंने हमारे मिशन समर्थकों को पत्र लिखकर उस शांति के बारे में बताया जो मैं महसूस कर रही हूँ। मैं आत्म-दया की भावना से मुक्त होना चाहती हूँ; यह शैतान का एक हथियार है जो जीवन को निगल जाता है। मुझे पूरा विश्वास है कि यह परमेश्वर की उत्तम इच्छा है..."

एक शहीद मिशनरी की पत्नी द्वारा लिखी गई इस डायरी प्रविष्टि को पढ़कर मुझे गहरी चुनौती महसूस हुई— या यूँ कहें कि मुझे चुनौती मिल रही है। मैं लगातार प्रार्थना करता हूँ और अपनी प्यारी पत्नी और परमेश्वर द्वारा दिए गए तीन बच्चों को प्रभु को समर्पित करता हूँ। इस हफ़्ते, मुझे खबर मिली कि एक पादरी—जो

सेमिनरी में मेरे वरिष्ठ सहयोगी थे—की दस साल की दूसरी बेटी का बीमारी के कारण अचानक निधन हो गया। किसी दिन, हो सकता है कि मुझे भी अपने जाने से पहले अपनी पत्नी या बच्चों से अलग होना पड़े। मैं अपनी पत्नी और बच्चों से उतना प्यार नहीं करना चाहता जितना मैं प्रभु से करता हूँ; मैं उन्हें भी उन्हीं को सौंपना चाहता हूँ। इसीलिए इस पादरी की पत्नी की डायरी मुझे गहराई से चुनौती देती है। मेरी इच्छा है कि मैं, मेरी पत्नी और मेरे बच्चे अपने सच्चे स्वर्गीय घर में प्रवेश करने के योग्य बनें। जब मैं अपने प्यारे परिवार के साथ हूँ, तो मैं उस "आत्म-दया" (self-pity) में नहीं पड़ना चाहता, जिसका ज़िक्र उन्होंने किया था; बल्कि, मैं एक बड़ी महिमा को देखना चाहता हूँ। मेरी पत्नी और बच्चे प्रभु की कृपा से मुझे मिले अनमोल उपहार हैं, और जो प्रभु का है, उसे प्रभु को लौटाना ही सही है। आत्म-दया में डूबे रहने के बजाय, मैं उस अनंत घर की महिमा में लीन होना चाहता हूँ जो हमारा इंतज़ार कर रहा है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि एक दिन मेरी पत्नी भी उनकी तरह डायरी लिख सके। बेशक, मुझे भी प्रभु के नाम के लिए मौत का सामना करने को तैयार रहना होगा।

"लेकिन मैं अपने जीवन को अपने लिए कुछ भी नहीं समझता, अगर मैं अपनी दौड़ पूरी कर सकूँ और उस काम को पूरा कर सकूँ जो प्रभु यीशु ने मुझे सौंपा है—परमेश्वर की कृपा के सुसमाचार की गवाही देने का काम" (प्रेरितों के काम 20:24)।

क्या प्यार मौत से भी ज़्यादा मज़बूत नहीं होता? ...

आज, मुझे खबर मिली कि मेरे दो दोस्त अपनी पत्नियों से अलग हो गए हैं। दोनों ने बाद में शादी की, इसलिए उनके बच्चे अभी छोटे हैं। एक दोस्त एक एक्सीडेंट के बाद एक साल से ज़्यादा समय से पूरी तरह पैरालाइज़्ड था; वह पिछले हफ़्ते गुज़र गया—अपनी पत्नी से अलग होने के लिए आपसी सहमति से सहमत होने के लगभग एक महीने बाद। हमें छोड़ने से पहले वह ज़रूर बहुत इमोशनल दर्द में रहा होगा... मैंने सुना है कि दूसरे दोस्त का लगभग दो महीने पहले तलाक हो गया था। मैंने उसके बहुत कहने पर बहुत सोच-विचार के बाद उनकी शादी करवाई थी, इसलिए उनके तलाक की खबर सुनकर मेरा दिल भारी हो गया है।

मेरे मन में तरह-तरह के ख्याल आ रहे हैं। उस दोस्त के बारे में सोचकर जो गुज़र गया, मैं सोचता हूँ कि शारीरिक तकलीफ़ की तुलना में इमोशनल असर कितना ज़्यादा तकलीफ़देह रहा होगा। मैं सोच सकता हूँ कि जब वह अलग होने के लिए राज़ी हुआ होगा तो उसकी मनःस्थिति कैसी रही होगी। क्या मुश्किल समय में एक कपल को और भी मज़बूती से एक साथ नहीं खड़ा होना चाहिए? ... ये बस मेरे अपने निजी विचार हैं। शायद एक कपल के प्यार का असली रूप मुश्किल समय में सबसे साफ़ तौर पर सामने आता है। (जहां तक उनकी पत्नी की बात है, मैं सिर्फ़ सोच सकता हूँ कि उनके लिए ऐसा फ़ैसला लेना कितना मुश्किल रहा होगा—और मुझे चिंता है कि वह यहां U.S. में अपने छोटे बेटे के साथ, बिना किसी परिवार या रिश्तेदार के, कैसे मैनेज करेंगी...)

कैंसर के मरीज़ को कैसा महसूस होता होगा?

आज हमारी प्रेस्बिटरी (धार्मिक मंडल) के एक पादरी का अंतिम संस्कार हो रहा है। उन्हें टर्मिनल लिवर कैंसर होने का पता चलने के सिर्फ़ दो महीने बाद ही उनका निधन हो गया। प्रेस्बिटरी के एक दूसरे पादरी ने सभी सदस्यों को ईमेल करके उनके निधन की जानकारी दी; दिलचस्प बात यह है कि उसी पादरी को भी पिछले हफ़्ते ही स्टेज 3 का पेट का कैंसर होने का पता चला था। मैं सोच रहा था कि जब वह अपने उस साथी के अंतिम संस्कार की जानकारी हमें ईमेल कर रहे थे, जिसकी मौत टर्मिनल लिवर कैंसर से हुई थी, तो उनके मन में क्या चल रहा होगा—खासकर तब, जब वह खुद स्टेज 3 के पेट के कैंसर से जूझ रहे थे।

“प्यार मौत जितना ही मज़बूत होता है”

“प्यार मौत जितना ही मज़बूत होता है” — ये शब्द मन में आते हैं (सोलोमन का गीत 8:6)। 2016 को याद करते हुए, जिस प्यार ने मेरे दिल पर गहरी छाप छोड़ी, वह सचमुच मौत जितना ही मज़बूत प्यार था। भले ही वह प्यारा इंसान अब हमारे बीच नहीं है, लेकिन उनके ज़रिए परमेश्वर ने जो प्यार मुझ पर ज़ाहिर किया, वह मेरे दिल में गहराई से बसा हुआ है। बिछड़ने के दुख और दर्द के बावजूद, मैं परमेश्वर के प्यार को और भी गहराई से महसूस कर पाया। खासकर, परमेश्वर पिता के प्यार पर मनन करने के ज़रिए—जिन्होंने अपने एकलौते बेटे, यीशु को इस धरती पर भेजा—परमेश्वर ने मुझे पूरे साल ऐसे ही त्यागी और भेजने वाले प्यार का अनुभव करने का मौका दिया। मैं उस अनमोल प्यार को अपने दिल में बहुत संजोकर रखता हूँ।

मरने से पहले माफ़ कर दें

“मरने से पहले खुद को माफ़ कर दें। और दूसरों को भी माफ़ कर दें।” — मिच एल्बोम की किताब *ट्यूजडेज़ विद मॉरी* से

“मरने के बाद माफ़ करना असली माफ़ी नहीं है।

असली माफ़ी वह है जो इंसान के ज़िंदा रहते हुए दी जाए।

माफ़ी ही वह एकमात्र रास्ता है जो खुद को और दूसरों को भी बचाता है।”

मरने से पहले आपको माफ़ कर देना चाहिए।

मरने से पहले हमें सुलह कर लेनी चाहिए।

मैंने अंतिम संस्कार के समय शोक मना रहे परिवार के सदस्यों के बीच तालमेल की कमी देखी है। अक्सर, मैंने माता-पिता के अंतिम संस्कार के दौरान बच्चों को आपस में झगड़ते हुए देखा है। इसे शब्दों में बयां करना मुश्किल है, लेकिन यह कोई अच्छा नज़ारा नहीं था; यह सचमुच अफ़सोस की बात थी।

इसके उलट, एक व्यक्ति ऐसा भी था जिसने मरने से पहले उन सभी लोगों से संपर्क किया जिनसे उसके रिश्ते खराब थे, ताकि वह माफ़ी मांग सके और सुलह कर सके। यह एक बहुत अच्छा नज़ारा था। हालाँकि, दुख की बात यह थी कि उस व्यक्ति के अंतिम संस्कार में, उसके एक भाई या बहन ने ज़िद की कि शोक मनाने वालों द्वारा भेजे गए फूलों को वहाँ से हटा दिया जाए। जबकि मरने वाले ने तो सभी से सुलह कर ली थी, लेकिन ऐसा लगा कि उसके भाई या बहन में से किसी एक ने ऐसा नहीं किया था। शांतिपूर्ण विदाई सुनिश्चित करने के लिए—और एक ऐसा अंतिम संस्कार करने के लिए जो ईश्वर की महिमा करे, शोक मनाने वालों को अनुग्रह दे और एक गहरी, सार्थक छाप छोड़े—मुझे रोमियों 12:18 का वह सबक फिर से याद आता है: "यदि हो सके, तो जहाँ तक तुम पर निर्भर हो, सभी के साथ शांति से रहो।"

अगर आप ऐसा नहीं करते हैं, तो आपको ज़िंदगी भर पछतावा होगा।

आज मैं यूनिवर्सिटी में अपनी एक जूनियर की माँ के अंतिम संस्कार में शामिल हुआ। अंतिम संस्कार के बाद, शोक में डूबा परिवार ताबूत के पास खड़ा था और शोक मनाने वाले लोग अपनी संवेदनाएँ व्यक्त करने के लिए लाइन में लगकर वहाँ जा रहे थे। मैं एक महिला के साथ लाइन में खड़ा था जो उस जूनियर की कॉलेज की रूममेट थी; वह जूनियर, जिसने अभी-अभी अपनी माँ को खोया था, बुरी तरह रो रही थी। जब उसने आँसुओं के साथ मुझे धन्यवाद दिया—और मुझे "पास्टर" कहकर बुलाया—तो मैंने बस उसका हाथ मिलाया, ताकि उसे अपना हौसला और साथ दे सकूँ। बाद में, जब मैं उस जूनियर और उसकी कॉलेज की रूममेट्स के साथ खाना खा रहा था, तो मुझे पता चला कि अपनी माँ के गुज़रने से पहले, जब वे इंटेन्सिव केयर यूनिट में थीं, तब वह उनसे अपने दिल की बात कह पाई थी। यह सुनकर मुझे बहुत अच्छा लगा और मैंने ऐसा करने के लिए उसकी तारीफ़ की।

आज मुझे एक बार फिर याद आया कि अपने प्रियजनों के हमें छोड़कर जाने से पहले, हमें वे सभी बातें कह देनी चाहिए जो हम सच में उनसे कहना चाहते हैं। अगर हम ऐसा नहीं करते हैं, तो हमें ज़िंदगी भर पछतावा होगा।

मौत ही अंत नहीं है।

मौत ही अंत नहीं है। मरने का मतलब दुखों का अंत नहीं है। अगर आप यीशु पर विश्वास किए बिना मरते हैं, तो आपको नरक में हमेशा के लिए दुख सहना पड़ेगा।

मौत भी खूबसूरत है।

मौत भी खूबसूरत है। दुख के बीच भी, मौत खूबसूरत है।

मौत भी खूबसूरत है। क्योंकि इसमें प्यार के आँसू होते हैं, इसलिए मौत खूबसूरत है।

मौत भी खूबसूरत है। क्योंकि कुछ पल के बिछड़ने के बाद भी हमेशा के लिए फिर से मिलने की उम्मीद होती है, इसलिए मौत खूबसूरत है।

मौत भी खूबसूरत है। क्योंकि एक खूबसूरत ज़िंदगी जी गई थी, इसलिए मौत खूबसूरत है।

मौत भी खूबसूरत है। क्योंकि हम यीशु की सुंदरता को देखते हैं, इसलिए मौत खूबसूरत है।

मौत भी खूबसूरत है। क्योंकि हम सब मिलकर प्रभु की महिमा और महानता की प्रशंसा करते हैं, इसलिए मौत खूबसूरत है।

मौत भी खूबसूरत है। क्योंकि परमेश्वर की महान महिमा प्रकट होती है, इसलिए मौत खूबसूरत है।

सच तो यह है कि हमारे पास प्यार करने के लिए ही समय है।

यह बहुत दुखद खबर है। दिवंगत अभिनेता किम जू-ह्युक (उम्र 45) के निधन और उनकी पार्टनर, ली यू-यंग को लगे सदमे के बारे में पढ़कर मेरे मन में कुछ विचार आए।

पहला, जब मुझे उनके किए गए ड्रामा याद आए, तो मुझे गहरा सदमा लगा; वे एक जाना-पहचाना चेहरा थे, फिर भी इतनी अचानक चल बसे।

दूसरा, यह बात कि वे 45 साल की कम उम्र में हमें छोड़कर चले गए, बहुत दुखद है और मुझे याद दिलाती है कि हम इंसान सच में नहीं जानते कि आगे क्या होने वाला है। इससे मुझे एहसास होता है कि मुझे बस उस दिन के लिए शुक्रगुजार होना चाहिए जो मुझे मिला है, उसे ईश्वर को सौंप देना चाहिए और उन पर भरोसा करके जीना चाहिए।

तीसरा, यह पढ़ने के बाद कि उनकी मौत की एक संभावित वजह मायोकार्डियल इन्फार्क्शन (हार्ट अटैक) थी, मैंने इस स्थिति के बारे में ऑनलाइन कुछ जानकारी देखी। मैंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि मैं एक पादरी को जानता हूँ—जो मुझसे छोटे हैं—और वे भी दिल की समस्याओं से जूझ रहे हैं। मैंने सुना था कि दूसरे पादरी की हालत बहुत ज़्यादा तनाव की वजह से हुई थी, और किम जू-ह्युक के बारे में पढ़कर मुझे लगा कि क्या उन्हें भी बहुत ज़्यादा तनाव की वजह से हार्ट अटैक आया होगा। इससे मुझे कोरिया के उन बहुत से युवाओं की चिंता होने लगी जो अलग-अलग वजहों से बहुत ज़्यादा तनाव में हैं।

चौथा, मैं ली यू-यंग के बारे में सोचने लगा, जिन्होंने अपने पार्टनर को खो दिया है; मैंने सोचा कि 27 साल की कम उम्र में ऐसी चौंकाने वाली खबर मिलने के बाद उन्हें कैसा लग रहा होगा। मैं अक्सर अपनी मौत के बारे

में सोचता हूँ और कल्पना करता हूँ कि मेरी पत्नी को कैसा लगेगा, या इसके उलट, अगर वे मुझसे पहले गुज़र जाएँ तो मुझे कैसा लगेगा। इसीलिए मैं प्रार्थना करता हूँ कि ईश्वर मेरी पत्नी और मुझे एक साथ स्वर्ग बुलाएँ। प्यारे भाइयों और बहनों, आइए हम उस दिन के लिए ईश्वर का धन्यवाद करें जो हमें मिला है। आइए हम उन लोगों की मौजूदगी के लिए भी धन्यवाद करें जो हमें मिले हैं—हमारे पार्टनर, जीवनसाथी, बच्चे, माता-पिता और अन्य लोग। आइए हम यह न भूलें कि, सबसे ज़्यादा प्यार करने वाले जोड़ों के लिए भी, इस धरती पर एक समय ऐसा आएगा जब उन्हें अलग होना पड़ेगा। सच तो यह है कि हमारे पास प्यार करने के अलावा और कुछ नहीं है।

टाइटैनिक के डूबने की एक दिल को छू लेने वाली कहानी, जिसे एक बचे हुए अफ़सर ने बताया

कई सालों तक चुप रहने के बाद, हादसे में बचे एक अफ़सर ने आखिरकार अपनी कहानी सुनाई। 14 अप्रैल, 1912 का दिन खौफनाक था; इस हादसे में 1,514 लोगों की जान चली गई, जबकि 710 लोगों को बचाया जा सका। टाइटैनिक के सेकंड अफ़सर चार्ल्स लाइटोलर—जो उस समय 38 साल के थे—अकेले ऐसे क्रू मेंबर थे जो बचे और बाद में बचाए गए यात्रियों की ज़िम्मेदारी संभाली। नीचे लाइटोलर की बताई गई टाइटैनिक त्रासदी की घटनाओं का 17 पन्नों का संस्मरण दिया गया है।

जब कप्तान ने आदेश दिया कि पहले महिलाओं और बच्चों को बचाया जाए, तो कई महिला यात्रियों ने अपने परिवारों से अलग होने के बजाय पीछे रुकने का फैसला किया। लाइटोलर ने याद करते हुए कहा, "मैंने चिल्लाकर कहा, 'महिलाएं और बच्चे, इस तरफ़ आएं!' लेकिन बहुत कम लोग अपने परिवारों को छोड़कर अकेले लाइफबोट में बैठने को तैयार थे।" "मैं उस रात को कभी नहीं भूलूंगा जब तक मैं ज़िंदा हूँ!" जैसे ही पहली लाइफबोट समुद्र में उतारी गई, मैंने डेक पर एक महिला से कहा: "मैडम, प्लीज़ लाइफबोट में बैठ जाइए!" उम्मीद के उलट, उसने सिर हिलाकर मना कर दिया। "नहीं, मैं जहाज़ पर ही रहूंगी।" जब उसके पति ने उससे कहा, "प्लीज़, बस बैठ जाओ! मेरी प्यारी," तो उसने शांति से जवाब दिया, "मैं अकेले नहीं जाऊंगी। मैं तुम्हारे साथ इसी जहाज़ पर रहूंगी।" वह आखिरी बार था जब मैंने उस जोड़े को देखा था। मिस्टर एस्टर IV—जो उस समय दुनिया के सबसे अमीर आदमी थे—ने अपनी पाँच महीने की गर्भवती पत्नी को लाइफबोट में बिठाकर विदा किया; जैसे-जैसे वह दूर होती गई, वह डेक पर बैठ गए, एक हाथ में छोटा कुत्ता और दूसरे में सिगार पकड़े हुए, और चिल्लाए, "मैं तुमसे प्यार करता हूँ, मेरी प्यारी!" जब यात्रियों को निकालने में मदद कर रहे एक क्रू मेंबर ने उनसे लाइफबोट में बैठने का आग्रह किया, तो एस्टर ने साफ़ मना कर दिया और कहा, "आखिरकार, एक आदमी का ज़मीर भी तो होता है।" फिर उन्होंने अपनी आखिरी बची हुई सीट पास खड़ी एक आयरिश महिला को दे दी। कुछ दिनों बाद, बचे हुए लोगों की तलाश कर रहे एक क्रू

मेंबर को एस्टर का शव मिला, जो जहाज़ के मलबे से बुरी तरह कुचल गया था। हालाँकि उनके पास इतनी दौलत थी कि वे टाइटेनिक जैसे दस जहाज़ बना सकते थे, फिर भी उन्होंने खुद को बचाने का हर मौका ठुकरा दिया; यह एक महान व्यक्ति का खास फ़ैसला था, जिन्होंने अपनी जान देकर भी अपनी ज़मीर की आवाज़ सुनी। एक सफल बैंकर, मिस्टर गुगेनहाइम ने मौत के साये में भी फॉर्मल इवनिंग सूट पहना और कहा, "अगर मुझे मरना ही है, तो मैं अपनी गरिमा बनाए रखूँगा और एक जेंटलमैन की तरह मरूँगा।" अपनी पत्नी के लिए छोड़े गए एक नोट में उन्होंने लिखा: "मेरी वजह से इस जहाज़ पर कोई महिला नहीं मरेगी। मैं जानवर जैसी ज़िंदगी जीने के बजाय एक जेंटलमैन की तरह मरना पसंद करूँगा।" अमेरिका में मेसीज़ डिपार्टमेंट स्टोर के संस्थापक मिस्टर स्ट्रॉस दुनिया के दूसरे सबसे अमीर व्यक्ति थे। बहुत समझाने के बाद भी उनकी पत्नी रोज़ली लाइफ़बोट पर चढ़ने को तैयार नहीं हुईं। उन्होंने अपने पति का साथ छोड़ने से साफ़ इनकार कर दिया और उनसे कहा, "मैं हमेशा वहीं गई हूँ जहाँ आप गए हैं। मैं दुनिया में कहीं भी आपके साथ जाऊँगी।" लाइफ़बोट नंबर 8 के इंचार्ज कू-मेंबर ने 67 वर्षीय मिस्टर स्ट्रॉस से लाइफ़बोट पर चढ़ने का आग्रह किया और भरोसा दिलाया, "आपके सीट लेने पर कोई आपत्ति नहीं करेगा।" मिस्टर स्ट्रॉस ने दृढ़ता से मना कर दिया और कहा, "मैं दूसरे पुरुषों से पहले नाव पर नहीं चढ़ूँगा," मौत के सामने भी उन्होंने अद्भुत संयम दिखाया। फिर उन्होंने अपनी 63 वर्षीय पत्नी रोज़ली का हाथ थामा, धीरे से डेक चेयर पर बैठे और अपने आखिरी पलों का इंतज़ार करने लगे। न्यूयॉर्क के ब्रॉक्स में स्ट्रॉस दंपति के सम्मान में बने स्मारक पर लिखा है: "ऐसा प्यार जिसे पानी भी बुझा नहीं सका।" वाट्यू नाम के एक फ़्रांसीसी व्यापारी ने अपने दो बच्चों को लाइफ़बोट पर चढ़ने वाली महिलाओं को सौंप दिया और उन्हें विदा करने के लिए जहाज़ पर ही रुक गए। उनके बेटों को बचा लिया गया, और दुनिया भर के अख़बारों में उनकी तस्वीरें छपने की वजह से वे अंततः अपनी माँ से मिल पाए; हालाँकि, वे अपने पिता से फिर कभी नहीं मिल सके। मिसेज़ लीडर-फ़ॉस, जो अपने पति के साथ हनीमून के लिए अमेरिका गई थीं, अकेले जीवित रहने को तैयार नहीं थीं और अपने पति से कसकर लिपटी हुई थीं; अंततः उनके पति को उन्हें मुक्का मारकर बेहोश करना पड़ा। जब उन्हें होश आया, तो उन्होंने खुद को समुद्र में तैरती एक लाइफ़बोट में पाया। उन्होंने दोबारा शादी नहीं की और अपनी बाकी ज़िंदगी अपने पति की याद में बिताई। स्विट्ज़रलैंड के लॉज़ेन में बचे हुए लोगों की एक सभा में, मिसेज़ स्मिथ ने उस महिला को याद किया जिसने उनके लिए अपनी सीट छोड़ दी थी। उन्होंने कहा: "जब मेरे दो बच्चे लाइफ़बोट में चढ़े, तो वह भरी हुई थी और मेरे लिए जगह नहीं थी। तभी, एक महिला खड़ी हुई, मुझे खींचकर नाव में बिठाया और कहा, 'अंदर आ जाओ। बच्चों को अपनी माँ की ज़रूरत होती है!'" उस अद्भुत महिला ने अपना नाम नहीं बताया; लोगों ने उसकी याद में "द नेमलेस मदर" (बिना नाम वाली माँ) नाम से

एक स्मारक बनाया। पीड़ितों में कई जाने-माने लोग शामिल थे—जैसे अरबपति एस्टर, मशहूर पत्रकार स्टेड, आर्मी मेजर बट और जाने-माने इंजीनियर रोब्लिंग—फिर भी उन सभी ने अपनी जगहें पास की गरीब ग्रामीण महिलाओं को दे दीं। टाइटेनिक के लगभग पचास मुख्य कू सदस्यों में से, सेकंड ऑफिसर लाइटोलर—जो बचाव कार्यों के इंचार्ज थे—को छोड़कर बाकी सभी ने अपनी जगहें छोड़ दीं और जहाज के साथ ही अपनी जान गंवा दी। सुबह 2:00 बजे, भागने के आदेश के बावजूद, सीनियर वायरलेस ऑपरेटर जॉन फिलिप्स रेडियो रूम में अपनी पोस्ट पर डटे रहे और आखिरी पल तक "SOS" सिग्नल भेजते रहे। जैसे ही जहाज का पिछला हिस्सा डूबने लगा—ज़िंदगी और मौत के उन आखिरी पलों में—लोग एक-दूसरे से चिल्लाकर कह रहे थे: "मैं तुमसे प्यार करता हूँ! मैं तुमसे प्यार करता हूँ!" उस दिन, उन सभी ने सच्चे प्यार का मतलब दिखाया। मुझे उम्मीद है कि आप जानते होंगे कि मैं आपसे कितना प्यार करता हूँ। हालाँकि, एक अपवाद भी था: होसोनो नाम के एक जापानी रेलवे अधिकारी ने महिला का भेष बदला और लाइफबोट नंबर 10 में चढ़ गए, जो महिलाओं और बच्चों से भरी हुई थी। घर लौटने पर उन्हें तुरंत नौकरी से निकाल दिया गया; जापानी अखबारों और जनता ने उनकी सार्वजनिक रूप से निंदा की, और उन्होंने अपनी बाकी ज़िंदगी पछतावे और शर्म में बिताई।

1912 में टाइटेनिक की याद में आयोजित एक कार्यक्रम में, जहाज बनाने वाली कंपनी 'व्हाइट स्टार लाइन' ने पीड़ितों के बारे में कहा: "समुद्री नियमों में पुरुषों से ऐसी कुर्बानी देने की कोई शर्त नहीं है। उनके काम कमज़ोर लोगों के प्रति उनकी संवेदनशीलता और परवाह को दिखाते थे—यह उनकी अपनी मर्ज़ी थी।"

मंगोलिया की एक बहन की आखिरी इच्छा और वसीयत

नमस्ते। मैं इस पत्र को पढ़ने वाले सभी लोगों का यीशु मसीह के प्रेम के साथ अभिवादन करती हूँ। चूँकि अब मैं परमेश्वर के साथ हूँ, मुझे उम्मीद है कि कोई भी मेरे लिए शोक नहीं मनाएगा। मैं बस आप सभी से थोड़ा पहले घर लौट रही हूँ। कृपया मेरा अंतिम संस्कार ईसाई रीति-रिवाजों से करें। मैं चाहती हूँ कि पादरी तुकसु इस सेवा का संचालन करें और ओटनू आराधना का नेतृत्व करें। "ओटनू, कृपया ये भजन गाएँ: 1. नं. 227, 2. नं. 36, 3. नं. 236, और 4. नं. 360।"

*माँ, कृपया अपनी बेटी को माफ़ कर दें। मैं आपसे बहुत प्यार करती हूँ, हालाँकि मैं एक बेटी के रूप में अपनी भूमिका निभाने में असफल रही। लेकिन माँ, कृपया यीशु पर और भी अधिक जोश के साथ विश्वास करें। यदि आप ऐसा करती हैं, तो परमेश्वर आप पर इतना प्रेम बरसाएँगे जितना इस दुनिया में किसी और को कभी नहीं मिला। मैं हमेशा आपके और परिवार के लिए प्रार्थना करूँगी।

*सोटो और अल्गा, मुझे खेद है। मैं आप दोनों से बहुत प्यार करती हूँ। कृपया मुझे एक अच्छी बहन न बन पाने के लिए माफ़ कर दें। मैं चाहती हूँ कि आप जानें कि मेरी मृत्यु किसी की गलती नहीं है; मैंने यह रास्ता खुद चुना है। सोटो, मेरी एक आखिरी गुज़ारिश है: मुझे उम्मीद है कि तुम यीशु मसीह पर विश्वास करोगे—जिन पर मैं विश्वास करती हूँ और जो मुझसे बहुत प्यार करते हैं—ताकि हम स्वर्ग में फिर से मिल सकें। मेरे छोटे भाइयों से: मेरी आखिरी गुज़ारिश है कि तुम परमेश्वर से मिलो, क्योंकि वह जीवित हैं।

*आंटी नागी, मैं सचमुच आपकी आभारी हूँ। मुझे यीशु से मिलाने वाला पुल बनने के लिए धन्यवाद। अंकल सोइरा, मैं हमेशा आपके लिए प्रार्थना करूँगी। कृपया यीशु मसीह पर दृढ़ विश्वास रखें और प्रेरित पौलुस जैसे व्यक्ति बनें। *आंटी आया और अंकल दामजिन, मैं आप दोनों का धन्यवाद करती हूँ। कृपया यीशु पर दृढ़ विश्वास रखें, और यदि मैंने कभी आप में से किसी को भी दुख पहुँचाया हो, तो कृपया मुझे माफ़ कर दें। कभी भी रविवार की सभा न छोड़ें। मेरा विश्वास है कि परमेश्वर आपके परिवार के माध्यम से कार्य करेंगे। *मेरी

बहनों से—मैं आप सभी से सच्चा और गहरा प्रेम करती हूँ। मुझे उम्मीद है कि आप परमेश्वर के शासन के अधीन अपना जीवन पूरी तरह से जिएँगी। मेरे तीन भाइयों से—सोटो, सोर्टो और अल्गा—मुझे उम्मीद है कि आप सभी पादरी बनेंगे। कृपया पादरी बनें; सेमिनरी ज़रूर जाना।

*इटर्नल लव चर्च में मेरे सभी आस्थावान भाई-बहनों—मैं आप सभी से सच्चे दिल से प्यार करती हूँ। मैं यह कहना चाहती हूँ कि आपके प्यार ने मुझे हिम्मत और ताकत दी है। मेरा "इटर्नल लव चर्च" सचमुच प्यार का चर्च बनेगा, जो दुख झेल रहे लोगों को बचाएगा और उन्हें उम्मीद देगा। मुझे विश्वास है कि इस काम में ईश्वर हमारी मदद करेंगे और हमारे साथ रहेंगे।

*मैं अपने शिक्षकों की बहुत आभारी हूँ। पादरी तुकसु मेरे आध्यात्मिक पिता थे, और शिक्षिका ओह युन-सोन (मिशनरी युन हयांग-सुक) मेरी आध्यात्मिक माँ बनीं। अब, मैं अपने सच्चे आध्यात्मिक पिता से मिलने जा रही हूँ। आपने मेरे लिए जो कुछ भी किया है, उसके लिए धन्यवाद।

*माँ, कृपया मेरे कपड़े चर्च के बच्चों या ज़रूरतमंद बच्चों को दे देना। और कृपया मेरी इस्तेमाल की हुई सभी किताबें चर्च को दान कर देना। माँ, मैं आपसे बहुत प्यार करती हूँ। आपने मुझे जो प्यार दिया है, उसके बारे में सोचकर मैं सचमुच बहुत आभारी महसूस करती हूँ।

*अंकल गनबा, मैं आपको माफ़ करती हूँ। प्लीज़, अंकल, यीशु पर विश्वास करें। एक ईश्वर है जो हमसे प्यार करता है और हमारे पापों को माफ़ करता है। माँ, प्लीज़ अंकल गनबा को यह ज़रूर बताना। और मेरी आँटियों—होला, सोपता और दावा—और मेरे अंकलों—मिंडे और सुहे—से मेरी दिली गुज़ारिश है कि आप सभी यीशु मसीह को अपनाएँ। और इस तरह, हम सब स्वर्ग में खुशी-खुशी मिलें।

मैं प्रभु के प्यार के साथ आप सभी से प्यार करती हूँ।

12 सितंबर, 2013 – ओ. सोडुन-त्सेत्सेग द्वारा लिखित।

मृत्यु

लगभग दो हफ्ते पहले, ईस्टर संडे की दोपहर को बाइबल स्टडी के दौरान, मैंने मंडली के साथ "मृत्यु" के बारे में चर्चा की। जब मैंने पूछा, "आप कैसी मृत्यु चाहते हैं?" तो ज़्यादातर बुजुर्ग सदस्यों—साठ साल से ज़्यादा उम्र वालों—ने जवाब दिया कि वे बिना दर्द के, प्यार और इस इच्छा के साथ मरना चाहते हैं कि वे अपने बच्चों पर बोझ न बनें। मैंने जवाब दिया, "ऐसे में, हार्ट अटैक ही इसका जवाब हो सकता है।" इसके उलट, चालीस और पचास की उम्र वाले सदस्यों ने इस विषय पर ज़्यादा गहराई से नहीं सोचा था। इसलिए मैंने उन्हें खास तौर पर इस बात पर गहराई से सोचने और प्रार्थना करने की चुनौती दी कि वे मृत्यु का सामना कैसे करना चाहते हैं। मैंने उनसे यह भी आग्रह किया कि वे हर दिन को अच्छे से जिएं ताकि वे एक "अच्छी मृत्यु"—एक सुंदर विदाई—का अनुभव कर सकें।

कुछ समय पहले, मैंने एक बहन से बात की जो ब्रदर मार्क की आसन्न मृत्यु की खबर सुनकर बहुत दुखी थीं। शुरू में इंस्टेंट मैसेंजर पर बात करने के बाद, हमने फ़ोन पर बात की; उन्हें बेतहाशा रोते हुए सुनकर, मुझे आज सुबह फिर से "मृत्यु" पर अपने विचार लिखने का मन हुआ।

किसी तीसरे व्यक्ति के लिए—जो किसी भाई को अंत का सामना करते हुए देख रहा हो—मृत्यु एक ऐसा पल लगता है जहाँ दुख और खुशी आपस में जुड़े होते हैं। जब मैं ब्रदर मार्क के बारे में सोचता हूँ, जिन्होंने हमें "स्वर्ग में मिलेंगे" कहकर विदा किया, तो मुझे उदासी और दिल में एक अजीब सा भारीपन महसूस होता है। फिर भी, साथ ही यह जानकर कि उन्होंने सियोह्युन चर्च में इंग्लिश मिनिस्ट्री (SEM) के ज़रिए यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता स्वीकार किया था और उन्हें हमेशा के लिए स्वर्ग में प्रवेश का भरोसा है, वह भारी दिल हल्का हो जाता है और खुशी में बदल जाता है। एक भाई के जीवन और उसकी आसन्न मृत्यु पर विचार करते हुए, और अपने अंदर दुख और खुशी को एक साथ महसूस करते हुए, मुझे लगता है कि यह सचमुच

एक सुंदर मृत्यु का संकेत है। इस नज़रिए से देखें तो, मेरा मानना है कि ब्रदर मार्क उस तरह की मृत्यु की ओर बढ़ रहे हैं जिसकी मैं कामना करता हूँ।

मुझे याद है कि मैंने ईस्टर बाइबल स्टडी के दौरान मंडली के साथ "सुंदर मृत्यु" पर विचार साझा किए थे। मैं एक सुंदर मृत्यु की कल्पना ऐसे करता हूँ जहाँ मेरे अंतिम संस्कार में वे भाई-बहन इकट्ठा हों जिन्होंने मेरे ज़रिए मसीह की छवि और प्रेम का अनुभव किया है, और वे परमेश्वर की आराधना करें। मेरे गुज़र जाने पर उन्हें दुख तो होगा—इस बात का कि मैं अब इस दुनिया में उनके साथ नहीं हूँ—लेकिन साथ ही वे खुश भी होंगे और ईश्वर की तारीफ़ करेंगे, यह जानकर कि मैं स्वर्ग में उस प्रभु से मिलने गया हूँ जिनसे मैं बहुत प्यार करता था और जिनसे मिलने के लिए तरसता था। मैं ऐसे ही अंतिम संस्कार का सपना देखता हूँ और उसके लिए प्रार्थना करता हूँ। फिर भी, ऐसी खूबसूरत मौत का स्वागत करने के लिए, मुझे हर दिन—या यूँ कहें कि अभी और इसी पल—एक खूबसूरत ज़िंदगी जीने की गहरी ज़िम्मेदारी महसूस होती है।

ब्रदर मार्क ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने सियोह्युन चर्च समुदाय में उस गहरी ज़िम्मेदारी को खुशी-खुशी अपनाया। उन्होंने मुझसे भी ज़्यादा समय चर्च में बिताया (मुझे याद है कि वे रोज़ वहाँ आते थे; यहाँ तक कि सीनियर पादरी ने मुझसे पूछा था, "जेम्स, क्या तुमने चर्च आना छोड़ दिया है?")। "सासा" ग्रुप (जिसका अर्थ है "प्यार करने वाले लोग") के ज़रिए और चर्च कैफ़े के नाम को सार्थक करते हुए, उन्होंने मसीह के प्यार को फैलाने का काम किया और बहुत से लोगों को उसी प्यार से प्यार किया। मेरा मानना है कि आज फ़ोन पर बात करते हुए जो बहन रो रही थीं, उन्हें भी वही प्यार मिला था। हालाँकि उन्होंने ब्रदर मार्क से कहा कि उन्होंने बदले में कुछ नहीं किया, लेकिन मेरा मानना है कि उन्होंने जो अच्छा काम किया, वह था मार्क के गहरे प्यार को विनम्रता और खुशी के साथ स्वीकार करना। सचमुच, ब्रदर मार्क प्यार देना चाहते थे, और मेरा मानना है कि बदले में हम उन्हें जो सबसे बड़ा तोहफ़ा दे सकते थे, वह था उस प्यार को एक बच्चे की तरह विनम्रता और खुशी के साथ स्वीकार करना। चूँकि मैं कभी-कभी ऐसा करने में नाकाम रहा, इसलिए कई बार ऐसा हुआ जब मैंने अपनी कमियों के लिए उनसे माफ़ी माँगी। मेरी—इसे क्या कहें, "शिकायत"?—यह थी कि उन्हें प्यार देना तो आता था, लेकिन प्यार लेना ठीक से नहीं आता था। इस वजह से हमारे बीच कुछ—इन्हें

"मतभेद" कह सकते हैं—बातें हुईं। इसीलिए आज मैं यह मानता हूँ कि मैं ही वह व्यक्ति था जो मार्क से उतना प्यार नहीं कर पाया जितना मुझे करना चाहिए था।

मैं सोचता हूँ: अगर हमें अपनी ज़िंदगी की आखिरी मंज़िल पता होती—अगर हमें ठीक-ठीक पता होता कि हम कब इस दुनिया को छोड़कर प्रभु से मिलने जाएँगे—तो हम आज का दिन कैसे जीते? क्या हम अभी की तरह जीने के बजाय कुछ अलग तरह से जीने की कोशिश करते? मुझे पता है कि मैं तब भी अपनी "साइ मिनिस्ट्री" (Cy Ministry) जारी रखता। मैं ऐसा इसलिए करूँगा क्योंकि मेरा मानना है कि यह सेवा-कार्य उस नींव का काम करता है जो मुझे अपने जीवन के सुंदर अंत तक पहुँचने में मदद करेगी।

हो सकता है कि मेरे प्यारे भाई मार्क के पास अपनी यात्रा पूरी करने के लिए मुझसे कम समय बचा हो। फिर भी, मेरा मानना है कि अपनी अंतिम मंज़िल की ओर बढ़ते हुए, वे इस दुनिया में बचे अपने कीमती समय का इस्तेमाल उन लोगों तक प्यार का आखिरी संदेश पहुँचाने के लिए कर रहे हैं जो उनके दिल के करीब हैं। मेरी दिली प्रार्थना है कि जब हम उस प्यार को खुशी और विनम्रता के साथ स्वीकार करें, तो हम न केवल मसीह के उस प्यार की निशानी को अपने दिलों में संजोकर रखें, जिसे उन्होंने हमारे दिलों में छोड़ा है, बल्कि ऐसे संदेशवाहक भी बनें जो उस प्यार को दूसरों तक पहुँचाएँ।

पास्टर जेम्स किम के विचार,

जिन्हें भाई मार्क के ज़रिए प्रभु का प्यार मिला है

(22 अप्रैल, 2004 — उन सभी लोगों के साथ दिल से साझा किया गया, जिनके जीवन को भाई मार्क के प्यार ने छुआ है)



बच्चों के साथ बातचीत

कुछ समय पहले, रविवार की सुबह चर्च जाते समय मैंने कार में कुछ गॉस्पेल म्यूज़िक (धार्मिक संगीत) चलाया। एक गाने में "गॉड" (ईश्वर) शब्द सुनकर येरी ने कहा, "मैं यह गाना जानती हूँ," और गाने लगी, "गॉड इज़ सो गुड" (ईश्वर बहुत अच्छे हैं)। फिर उसने मुझे यह कहकर हैरान कर दिया, "मैं गॉड बनना चाहती हूँ।" जब मैंने उसकी बात सुनी और सोचा कि वह गॉड क्यों बनना चाहती है—जो कि 'न्यू एज' फ़िलॉसफ़ी का एक मुख्य विचार है—तो मेरी पत्नी ने प्यार से उसे सही करते हुए पूछा, "क्या तुम गॉड *के साथ* रहना चाहती हो?"

इसके बाद डायलन के साथ यह बातचीत हुई:

येरी: "मैं गॉड के साथ रहना चाहती हूँ।"

डायलन: "तो तुम्हें मरना होगा।"

येरी: "क्या तुम्हें मेरी याद आएगी?"

बच्चों के बीच हुई यह बातचीत सुनकर मेरे चेहरे पर मुस्कान आ गई।

अंकल मार्क के गुज़रने के बाद, हमने बच्चों को बताया था कि वे अब स्वर्ग में गॉड के साथ हैं; लगता है डायलन ने यह समझ लिया था कि स्वर्ग जाने और गॉड के साथ रहने के लिए मरना ज़रूरी है।

उनकी इस मासूम बातचीत ने जहाँ मेरे चेहरे पर मुस्कान ला दी,
वहीं मेरे मन में एक चाहत भी जगा दी—मार्क की तरह ही स्वर्ग में गॉड के साथ रहने की इच्छा।

[18 जुलाई, 2004]

हमारी पहली संतान की मौत

नवंबर 1997 में—हमारी शादी के सात महीने बाद—मैं अपनी गर्भवती पत्नी को थैंक्सगिविंग के समय लॉस एंजिल्स के गुड समैरिटन हॉस्पिटल ले गया। पत्नी की जाँच करने के बाद, एक नर्स को कुछ असामान्य लगा और उसने अल्ट्रासाउंड करवाने का सुझाव दिया। नतीजों से पता चला कि बच्चे में गंभीर कमियाँ थीं। डॉक्टर ने बताया कि बच्चे के एक तरफ डायफ्राम नहीं था, जिससे अंदरूनी अंग ऊपर की ओर खिसक गए थे; नतीजतन, बायाँ फेफड़ा नहीं था, दिल काफी हद तक दाईं ओर खिसक गया था, और रीढ़ की हड्डी "S" आकार में मुड़ गई थी। हम यह खबर सुनकर टूट गए थे। फिर भी, भगवान द्वारा दिए गए तोहफे के लिए शुक्रगुजार दिल के साथ, मेरी पत्नी ने 3 मार्च, 1998 को हमारी पहली संतान, जुयंग को सुरक्षित जन्म दिया। (मेरे पिता ने जुयंग नाम चुना था, जिसका अर्थ है "प्रभु की महिमा," जबकि मैंने उसे अंग्रेजी नाम चैरिस दिया, जो "कृपा" के लिए ग्रीक शब्द है।) डिलीवरी के तुरंत बाद, डॉक्टर ने मेरी पत्नी को बच्चे को कुछ सेकंड के लिए गोद में लेने दिया, फिर उसे इनक्यूबेटर में रखा, जल्दी से बाहर ले गए, और एम्बुलेंस से लॉस एंजिल्स चिल्ड्रेन्स हॉस्पिटल के इंटेंसिव केयर यूनिट में पहुँचाया। जुयंग वहाँ 55 दिनों तक रही। जब भी मैं उससे मिलने जाता, तो मैं अपनी प्यारी बेटी के लिए "जीसस लव्स मी" गाना गाता था। क्योंकि वह कई ट्यूबों से जुड़ी हुई थी—जिसमें एक उसके मुँह में भी थी—मैंने उसे कभी रोते हुए नहीं सुना। उसके पूरे शरीर पर, यहाँ तक कि सिर पर भी सुई के निशान थे।

हम उस दर्द की कल्पना भी नहीं कर सकते थे जो जुयंग सह रही थी। हमने बस प्रार्थना की और उम्मीद की कि हमारी बच्ची बच जाएगी। दो बड़ी सर्जरी के बाद, डॉक्टरों ने कहा कि प्रक्रियाएँ बहुत अच्छी तरह से हुई थीं—इतनी अच्छी तरह से कि वे खुद भी हैरान थे। मैंने इसे इस संकेत के रूप में लिया कि भगवान बच्ची को बचाना चाहते थे। हालाँकि, 54वें दिन पड़ने वाले रविवार को—जो हमारी शादी की सालगिरह भी थी—मेरी छोटी बहन अस्पताल से चर्च लौटी और खबर दी कि जुयंग की हालत गंभीर है। उसने बताया कि बच्ची का पूरा शरीर गहरा नीला पड़ गया था, शायद खून के बहाव में कमी के कारण। मेरी पत्नी तुरंत अस्पताल के

कमरे में भागी। फिर भी, एक दोस्त की कही बात याद करके मैं उलझन में पड़ गया; हालांकि मेरा दिल जुयॉन्ग के पास भागने को कर रहा था, पर मैंने तय किया कि पहले चर्च में अपनी ज़िम्मेदारियाँ पूरी करूँगा और काम खत्म होने के बाद ही अस्पताल जाऊँगा। वहाँ पहुँचने पर डॉक्टर ने मुझे अलग ले जाकर दो विकल्प दिए: (1) बच्चे को धीरे-धीरे मरने दिया जाए, या (2) बच्चे को जल्दी मरने दिया जाए। मैंने पहला विकल्प चुना—बच्चे को धीरे-धीरे मरने देने का—क्योंकि मैं अभी उम्मीद छोड़ने को तैयार नहीं था। बाद में घर लौटकर मैंने अपनी पत्नी से बात की; यह महसूस करते हुए कि हम नहीं चाहते थे कि हमारा बच्चा और ज़्यादा तकलीफ़ सहे, हमने आखिरकार जुयॉन्ग को जल्दी जाने देने का फैसला किया।

अगले सोमवार की सुबह, बाइबल पढ़ते समय, भजन संहिता 63:3 ने मेरे दिल को गहराई से छू लिया और मैंने वह आयत अपनी पत्नी को सुनाई: "क्योंकि तेरी करुणा जीवन से भी उत्तम है, इसलिए मेरे होंठ तेरी स्तुति करेंगे।" यह मानते हुए कि परमेश्वर का अनंत प्रेम जुयॉन्ग के 55 दिनों के जीवन से कहीं बड़ा है और हमारे होंठों को उसकी स्तुति करनी चाहिए, हम अस्पताल गए। डॉक्टर को अपना फैसला बताने के बाद, मैंने अपने माता-पिता, बड़े भाई और उनकी पत्नी, और छोटी बहन से संपर्क किया; हम सब इंटेंसिव केयर यूनिट में इकट्ठा हुए और सबसे पहले परमेश्वर की आराधना की। उसके बाद, जब बाकी लोग पास के कमरे में इंतज़ार कर रहे थे, मैंने जुयॉन्ग को अपनी गोद में लिया—पहली और आखिरी बार—और उस कमरे में गया। उसी पल, मैं बेतहाशा रो रहा था और मेरी साँसें उखड़ रही थीं। मैंने जुयॉन्ग को अपनी गोद में थामे रखा और अगले कमरे की ओर बढ़ा। वहाँ मौजूद हर कोई रो रहा था, लेकिन मेरे ससुर ने जुयॉन्ग को गोद में लेने की इच्छा जताई; उन्होंने बच्चे को सहलाया, बच्चे के सिर पर हाथ रखा और यूहन्ना 3:16 का पाठ किया। थोड़ी देर बाद, एक डॉक्टर आया, उसने जुयॉन्ग के दिल की धड़कन सुनी और पुष्टि की कि बच्चा अब साँस नहीं ले रहा था।

कुछ दिनों बाद, जुयॉन्ग का अंतिम संस्कार होने के बाद, मैं और मेरी पत्नी उसकी अस्थियाँ लेकर एक झील पर गए। हमने एक छोटी नाव किराए पर ली; मैं नाव के पिछले हिस्से से उसे चला रहा था जबकि मेरी पत्नी अगले हिस्से में बैठी थी और उसने अस्थियों वाला छोटा डिब्बा पकड़ रखा था। हम झील के एक सुनसान कोने की ओर गए, जहाँ उसने उन्हें बिखेर दिया। जब हम वापस लौट रहे थे, तो मेरी पत्नी अचानक मेरी ओर

मुड़ी और कहा—शायद मज़ाक में—"टाइटैनिक।" फिर भी, यह कहते हुए ही उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।

उसे उस हालत में देखकर, भगवान ने मुझे प्रेरित किया कि मैं आसमान की ओर देखूँ और पूरे दिल से अमेरिकी गॉस्पेल भजन "माई सेवियर्स लव" (जिसे "आई स्टैंड अमेज्ड" भी कहा जाता है) गाऊँ:

(पद 1) नासरत के यीशु की उपस्थिति में मैं हैरान खड़ा हूँ, और सोचता हूँ कि वह मुझसे कैसे प्यार कर सकते हैं, एक पापी, दोषी और अशुद्ध इंसान से।

(पद 2) मेरे लिए ही उन्होंने बगीचे में प्रार्थना की: "मेरी नहीं, बल्कि आपकी मर्जी पूरी हो।" अपने दुखों के लिए उनकी आँखों में आँसू नहीं थे, लेकिन मेरे दुखों के लिए उनके माथे से खून की बूँदें टपक रही थीं।

(पद 3) दया से स्वर्गदूतों ने उन्हें देखा, और प्रकाश की दुनिया से आए, ताकि उस रात मेरी आत्मा के लिए सहे गए दुखों में उन्हें सांत्वना दे सकें।

(पद 4) उन्होंने मेरे पापों और दुखों को अपना लिया; उन्होंने उन्हें पूरी तरह अपना बना लिया; वे कलवरी तक बोझ उठाकर ले गए, और अकेले ही दुख सहा और प्राण त्याग दिए।

(पद 5) जब महिमा में छुड़ाए गए लोगों के साथ मैं आखिरकार उनका चेहरा देखूँगा, तो युगों-युगों तक मेरे लिए उनके प्यार का गुणगान करना ही मेरी खुशी होगी।

(कोरस) ओह, कितना अद्भुत! ओह, कितना शानदार! और मेरा गीत हमेशा यही होगा: ओह, कितना अद्भुत! ओह, कितना शानदार! है मेरे उद्धारकर्ता का मेरे लिए प्यार!



पापा ने क्या सबक सीखा?

शुक्रवार दोपहर, 15 मार्च, 2013।

डिलन और येरी को चर्च छोड़ने के बाद (क्योंकि उनकी प्री-टीन क्लास थी), मैं सिर्फ यीउन को अपनी पत्नी के काम की जगह पर ले गया। हमने अपनी पत्नी को साथ लेकर जापानटाउन में डिनर पर जाने का प्लान बनाया था। जब मैं कार में अपनी पत्नी के बाहर आने का इंतज़ार कर रहा था, तो बातचीत किसी तरह एक ऐसी माँ के बारे में शुरू हुई जिसके तीन बच्चे थे; यीउन ने कहा, "उस औरत के बहुत सारे बच्चे थे," तो मैंने उससे कहा, "असल में तुम्हारी माँ ने चार बच्चों को जन्म दिया था।" हाहा। ऐसा करते हुए, मैंने यीउन को हमारे पहले बच्चे, चैरिस (जुयंग) के बारे में बताया, जिसकी मौत हो गई थी। थोड़ी देर बाद, यीउन ने मुझसे पूछा, "आपने भगवान से क्या सबक सीखा?" जब यह सवाल पूछा गया, तो मैंने बिना किसी हिचकिचाहट के यीउन को जवाब दिया, "भगवान का प्यार।" मैंने समझाया कि अपने पहले बच्चे, चैरिस की मौत के ज़रिए मैं भगवान के प्यार को गहराई से समझ पाया और इस तरह मैंने उनके गहरे प्यार के बारे में जाना। फिर यीउन ने पूछा कि जब भगवान ने ही बच्चे की मौत होने दी, तो मैं प्यार के बारे में कैसे सीख सकता था—यह सवाल उसके नज़रिए से पूरी तरह समझने लायक था। मैं एक पल के लिए हिचकिचाया, यह समझ नहीं पा रहा था कि भगवान से सीखे गए गहरे प्यार को एक बच्चे को कैसे समझाऊँ। फिर, जैसे खुद से ही बात करते हुए, यीउन ने कुछ बुदबुदाया जो कुछ ऐसा लग रहा था, "जैसे भगवान ने अपने बेटे यीशु को मरने दिया, वैसे ही उन्होंने उस बच्चे को भी मरने दिया, तो..." ऐसा लगा कि वह मेरी कही बातों को अपने तरीके से समझने की कोशिश कर रही थी। उसी पल, मैंने अपनी पत्नी को अपनी काम की जगह वाली बिल्डिंग से बाहर भागते हुए देखा और यीउन से कहा, "देखो, माँ बाहर आ रही है।" यीउन ने पीछे की खिड़की से बाहर देखा, और हमने साथ मिलकर अपनी पत्नी के कार में बैठने का इंतज़ार किया। जैसे ही मेरी पत्नी बैठी, मैंने उसे संक्षेप में बताना शुरू किया कि यीउन ने क्या कहा था और मैं उससे यीउन के सवाल का जवाब देने के लिए कहने ही वाला था, लेकिन यीउन ने मुझे कुछ भी न कहने के लिए कहा। मैंने अपनी पत्नी को कोरियाई भाषा में

बताया कि ये-उन ने मुझसे पूछा था कि कैरिस की मौत से मैंने क्या सीखा, लेकिन मेरे लिए यह बताना मुश्किल था कि उस नुकसान के ज़रिए मैंने भगवान के प्यार को कैसे समझा। जब मैंने कहा कि ऐसा लगा जैसे ये-उन नहीं चाहती थी कि मैं वह बातचीत किसी और को बताऊँ, तो मेरी पत्नी ने कहा, "लगता है ये-उन बस अपने पापा से बात करना चाहती थी।" डिनर के लिए रेस्टोरेंट जाते समय हमने कैरिस के बारे में और कोई बात नहीं की। लेकिन... मैं अपने मन ही मन अपनी सबसे छोटी बेटी, कैरिस ये-उन से यह कहना चाहता था: "भले ही भगवान ने पहली बच्ची कैरिस को हमसे दूर कर दिया, लेकिन उन्होंने मम्मी और पापा को तोहफ़े के तौर पर *तुम्हें*, कैरिस, दिया।"

चिंता मत करो, मम्मी!

बुधवार शाम, 22 सितंबर, 2010।

उस शाम, जब हम अपने तीनों बच्चों के साथ रात का खाना खा रहे थे, तो मेरी प्यारी पत्नी ने उन्हें बताया कि एरिज़ोना में दादाजी (उनके पिता) को कैंसर हो गया है। यह खबर सुनकर वे सब हैरान रह गए और "सच में?", "कैंसर?", "अरे नहीं," और "हे भगवान" जैसे शब्द कहने लगे। फिर, हमारी सबसे बड़ी बेटी, येरी ने कहा, "लगता है भगवान उन्हें जल्दी स्वर्ग बुलाना चाहते हैं।" इसके बाद उसने अपनी मम्मी को दिलासा देते हुए कहा, "चिंता मत करो, मम्मी! तुम भी तो मरने वाली हो।" फिर उसने अपनी मम्मी को गले लगा लिया। हाहा।

मेरी पत्नी ने फ़ोन पर मुझे यह बातचीत बताई; वह यह कहानी सुनाते हुए हंस रही थी। वह इसलिए हंस रही थी क्योंकि कैंसर की खबर सुनकर बच्चों का रिएक्शन हैरान करने वाला था। वह येरी की बात सुनकर भी हंसी: "चिंता मत करो, मम्मी! तुम भी तो मरने वाली हो।" हाहा। वह हमेशा से ही थोड़ी अजीब और अनोखी बच्ची रही है... हाहा।

यह कहानी सुनकर मैंने मन ही मन सोचा: "लगता है बच्चों को थोड़ा-बहुत अंदाज़ा है कि कैंसर क्या होता है। लगभग दो साल तक उन्हें नर्सिंग होम ले जाने के बाद, लगता है कि वे मौत के बारे में थोड़ा-बहुत समझने लगे हैं" (नोट: हम बच्चों के साथ चर्च की दो बुजुर्ग महिलाओं से मिलने जाते थे, और बच्चे जानते हैं कि अब वे दोनों गुज़र चुकी हैं)। "लगता है येरी को मौत से ज़्यादा डर नहीं लगता—यहाँ तक कि अपनी मम्मी की मौत के ख्याल से भी नहीं..." ...और भी बहुत कुछ।

हालांकि हमें मौत को हल्के में नहीं लेना चाहिए, लेकिन मुझे यह भी लगता है कि इसे बहुत ज़्यादा भारी या दुखद नज़रिए से देखना भी शायद सही नहीं है।

"मैं पापा का अंतिम संस्कार (cremation) करूंगी।"

शुक्रवार की दोपहर, 23 जनवरी, 2015।

लगता है मुझे अपने अंतिम संस्कार की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। हाहा। वजह यह है कि मेरी सबसे छोटी बेटी, कैरिस (ये-उन) है। हाहा। जब वह और छोटी थी, तब उसने कहा था कि वह मम्मी और पापा को घर के पिछवाड़े में दफनाएगी, लेकिन इस बार, उसने कहा कि वह मेरा अंतिम संस्कार करेगी। हाहा। उस शुक्रवार दोपहर, बच्चों के साथ वियतनामी नूडल्स खाने के बाद (हमने बाहर जाने का प्लान बुधवार से शुक्रवार कर दिया था, हाहा), हम हमेशा की तरह पास के कोरियन मार्केट गए। मैंने डायलन और चर्च के एक दोस्त जून को पाँच डॉलर दिए और उन्हें *बुंग-इओ-पैंग* (मछली के आकार की पेस्ट्री) खरीदने के लिए अंदर भेजा। जब मैं कार में येरी और कैरिस के साथ इंतज़ार कर रही थी, तो मुझे अपने चौथे अंकल से काकाओटॉक (KakaoTalk) पर एक मैसेज मिला। उन्होंने मुझसे कोरियन में लिखे एक मैसेज का इंग्लिश में अनुवाद करने को कहा। यह मैसेज उनके एक दोस्त की वियतनामी पत्नी के लिए था—जो ईसाई धर्म को नहीं मानती थीं—और जिनके पति की साठ साल की उम्र के आसपास बीमारी से मौत हो गई थी। मैसेज पढ़ने के बाद, मैंने अपनी प्यारी बेटियों, येरी और कैरिस को उसका मतलब समझाया और बताया कि अंकल के दोस्त का भी अंतिम संस्कार किया गया था (मैंने बच्चों को पहले भी हमारे चर्च की दादी चोई बुन-नाम के निधन के बाद उनके अंतिम संस्कार के बारे में बताया था...)। यह सुनकर, मेरी सबसे छोटी बेटी कैरिस ने कहा कि *वह* मेरा अंतिम संस्कार करेगी। हाहा। तो, मैंने उससे कहा कि *मैं*—यानी उसके पापा—ही अपनी वसीयत (will) के बारे में आखिरी फैसला लेने वाले इंसान हूँ (मतलब यह उसके तय करने की बात नहीं थी, बल्कि मुझे तय करना था... हाहा)। यह सुनकर, कैरिस ने पूछा कि *मैं* क्या चाहती हूँ। तो, मैंने उससे कहा, "मेरे लिए इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता।" जब मैंने उनसे कहा कि मेरे लिए इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि मुझे दफनाया जाए या मेरा अंतिम संस्कार किया जाए, तो ये-उन ने कहा कि वह मेरा अंतिम

संस्कार ही करवाएगी। हाहा। जब मैंने उससे वजह पूछी, तो उसने कहा कि उसे यह बात पसंद नहीं है कि अगर मुझे ज़मीन के नीचे कब्र में दफनाया जाए तो मेरे शरीर पर कीड़े रेंगें। हाहा। (ऐसा लग रहा था कि वह उस पिता के शरीर पर कीड़े-मकोड़ों के रेंगने की बात बर्दाश्त नहीं कर पा रही थी, जिनसे वह बहुत प्यार करती थी।) थोड़ी देर की खामोशी के बाद, मैंने येरी और ये-उन से कहा कि भले ही मम्मी-पापा के गुज़र जाने पर उन्हें दुख होगा, लेकिन असल में उन्हें खुश होना चाहिए। मेरे बगल में बैठी येरी ने पूछा कि वे भला खुश कैसे हो सकते हैं। फिलिप्पियों 1:22–24 की बातों को याद करते हुए, मैंने येरी को समझाया कि हम इस दुनिया को छोड़कर उस प्रभु के पास जाने के लिए बेताब रहते हैं जिन्हें हम बहुत याद करते हैं। मैंने उनसे कहा कि जब मम्मी-पापा की मौत होगी, तो हम स्वर्ग जाएँगे—वह जगह जिसके लिए हम तरसते हैं—और प्रभु के साथ हमेशा रहेंगे, इसलिए उन्हें खुश होना चाहिए।

हमारी बातचीत खत्म ही हो रही थी कि तभी डिलन और जून कोरियन मार्केट से बाहर निकले, और जून ने छह उंगलियाँ दिखाईं... पता चला कि उसने पाँच डॉलर में छह *बुंग-इओ-पैंग* (मछली के आकार की पेस्ट्री) खरीदी थीं (जबकि मैंने उससे सात खरीदने को कहा था! हाहा)। मौत के साये में भी, हम मज़ेदार *बुंग-इओ-पैंग* का मज़ा ले रहे थे... हाहा।

दादी जांग का किस

पिछले सोमवार (10 सितंबर) को, मैं लगभग तीन हफ़्तों में पहली बार नर्सिंग होम गया ताकि हमारे चर्च के दो प्यारे सदस्यों—सीनियर डीकनेस पार्क चुन-ही और दादी जांग यूल-सू—से मिल सकूँ। सीनियर डीकनेस पार्क, जो डिमेंशिया (याददाश्त खोने की बीमारी) के गंभीर दौर से गुज़र रही हैं, मेरे पहुँचने पर सो रही थीं, ठीक वैसे ही जैसे पिछली मुलाकातों में होता था। उनका हाल-चाल जानने के बाद, मैं उस वार्ड में गया जहाँ दादी जांग थीं; वह सो रही थीं लेकिन उन्हें शायद मेरे होने का एहसास हुआ, और वह जाग गई और खुशी-खुशी मज़बूती से हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ बढ़ाया। मैंने दादी जांग को कोरिया और मंगोलिया से अपनी सुरक्षित वापसी के बारे में बताया—जो ईश्वर की कृपा से संभव हुआ था—और फिर हमने भजन नंबर 40 गाया, जो उन्हें बहुत पसंद है। उन्होंने बताया कि पिछले तीन हफ़्तों से अपने पसंदीदा भजन (नंबर 40 और नंबर 355) न गा पाने या भजन संहिता 23 का पाठ न कर पाने के कारण, वह उनके बोल काफी हद तक भूल गई थीं। इसलिए, जब हमने भजन नंबर 40 के पहले और दूसरे पद बार-बार गाए, तो मैंने देखा कि वह भी साथ-साथ गा रही थीं और उनकी याददाश्त वापस आने लगी थी। उन्होंने शिकायत की कि उनका सिर गर्म लग रहा है, इसलिए मैंने अपना हाथ उनके सिर पर रखा और ईश्वर से प्रार्थना की; तब भी, उन्होंने ज़ोर-ज़ोर से "आमीन, आमीन" कहकर जवाब दिया। जब जाने का समय हुआ और मैंने अलविदा कहा, तो उन्होंने अपना हाथ बढ़ाया; जैसे ही मैंने उसे मज़बूती से पकड़ा, उन्होंने अचानक अपना सिर उठाया और मेरे हाथ के पिछले हिस्से को चूमा। जवाब में, उनका हाथ पकड़े हुए ही, मैंने भी उनके हाथ के पिछले हिस्से को चूमा। दादी जांग उस दिन का बेसब्री से इंतज़ार कर रही हैं जब यीशु उन्हें अपने पास बुलाएँगे; वह दिल से चाहती हैं कि वह उड़कर प्रभु की गोद में पहुँच जाएँ। हमारा विश्वास है कि सही समय आने पर, प्रभु दादी जांग को अपनी गोद में बुलाएँगे और उन्हें चूमेंगे, ठीक वैसे ही जैसे पिता ने घर लौटने पर अपने भटके हुए बेटे को चूमा था।

[13 सितंबर, 2007]



मैं उनके दुख और आंसुओं में शामिल होना चाहता हूँ।

पिछले रविवार की दोपहर (12 तारीख को), मैं अपने माता-पिता—जो हमारे चर्च के पास्टर एमेरिटस और उनकी पत्नी हैं—के साथ दो प्यारे डीकन से मिलने गया। मैं चाहता था कि मिशन फील्ड पर लौटने से पहले मेरे पिता उनसे मिल लें, क्योंकि मुझे लगा कि इस मुलाकात से उन्हें खुशी और सुकून मिलेगा। जब हम डीकन किम के घर पहुँचे, तो वे लेटे हुए थे। कैंसर से बहुत ज़्यादा तकलीफ़ होने के बावजूद, उन्होंने अपने कमज़ोर शरीर को बिस्तर से उठाया, कपड़े पहने और लिविंग रूम में आकर अपनी पत्नी और दो बच्चों के साथ ईश्वर की आराधना की। जब पास्टर एमेरिटस ने पूछा कि उन्हें कौन सा भजन पसंद है, तो उन्होंने भजन 543, "प्रेसिंग ऑन टुवर्ड द हायर ग्राउंड" (ऊँचे स्थान की ओर बढ़ना) चुना, और हम सबने मिलकर ईश्वर की स्तुति में इसे दो बार गाया। फिर मेरे पिता ने भजन संहिता 23 पढ़ी, और हमने अपने प्यारे डीकन किम के लिए दिल से प्रार्थना की। प्रार्थना सभा के बाद, हमने "हैप्पी बर्थडे" गाया, क्योंकि उनकी पत्नी का जन्मदिन था। वे दोनों एक-दूसरे के सामने बैठे थे; हालाँकि शारीरिक रूप से यह मुश्किल रहा होगा, फिर भी डीकन किम ने अपनी पत्नी का खास दिन मनाने के लिए धीरे-धीरे गाना गाया, और वह उन्हें प्यार से देख रही थीं... जब हम विदा ले रहे थे, तो पास्टर एमेरिटस ने डीकन किम को गले लगाया। मुझे आज भी डीकन किम की वह मुस्कान याद है—उनका चेहरा चमक रहा था—लेकिन मुझे यह देखकर दुख हुआ कि उनका शरीर कितना कमज़ोर और दुबला-पतला लग रहा था... (कल बुधवार की प्रार्थना सभा में उनकी पत्नी अकेली आई; डॉक्टरों का कहना है कि स्थिति ऐसी हो गई है कि अब और कुछ नहीं किया जा सकता।) हमारी उम्मीद सिर्फ़ प्रभु पर है! डीकन किम के घर से निकलने के बाद, हम पास के एक नर्सिंग होम गए जहाँ दादी इम—जो हमारे चर्च की सबसे बुजुर्ग सदस्य हैं—रहती हैं। जब हम पहुँचे, तो वह खाना खाने के बाद कैफेटेरिया में बैठी थीं। कांच के दरवाज़ों से हमें देखकर वह बहुत खुश हुई। मेरे माता-पिता उन्हें उनके कमरे तक ले गए, और थोड़ी देर बैठने और बातचीत करने के बाद, हमने ईश्वर के लिए भजन "ऑल द वे माय सेवियर लीड्स मी" (मेरे उद्धारकर्ता मुझे हर कदम पर ले जाते हैं) गाया। दादी इम इस जगह को ही वह स्थान मानती हैं जहाँ वह अपने जीवन के आखिरी दिन बिताएँगी। 91 साल की उम्र होने के बावजूद, वह मानसिक रूप से

बहुत तेज़ हैं, जबकि उनसे कम उम्र के कई लोग डिमेंशिया से पीड़ित दिखते हैं। शायद उस माहौल की वजह से, उन्हें ज़्यादा मुश्किल हो रही थी। मुझे याद है कि मैं अपने चर्च की दो बुजुर्ग महिलाओं से नर्सिंग होम में मिलने गई थी, उनके गुज़रने से पहले। उनके आखिरी सफ़र के दौरान साथ में गाना, प्रार्थना करना, बातें करना और हँसना—वे पल बहुत कीमती थे। मैंने 'ग्रेंडमा इम' के साथ भी मज़ाक-मस्ती की और हँसी-मज़ाक किया। जब हम वहाँ से निकले तो वह हमें दरवाज़े तक छोड़ने आई, और जब मैं पार्किंग लॉट की तरफ़ जा रही थी, तो मैंने आखिरी बार पीछे मुड़कर देखा। मुझे आज भी उनका दूर जाते हुए दिखना याद है।

जब मैं सियोह्युन चर्च में थी, तो मुझे कोरिया के युवा लोगों से बहुत लगाव हो गया था। हालाँकि, अमेरिका लौटने और अपने मौजूदा चर्च में सेवा करने के बाद, मुझे वहाँ के बुजुर्ग सदस्यों से भी लगाव हो गया। उनके ज़रिए, मैंने मौत के बारे में एक नया नज़रिया सीखा; भगवान मुझे सिखा रहे थे कि इसे कैसे देखना चाहिए। शायद इसीलिए मुझे अक्सर अपनी पहली संतान, जू-यंग की याद आती थी, जो मेरी गोद में शांति से सोती थी। साथ ही, मैं अक्सर अपनों की मौत और अपनी खुद की मौत के बारे में सोचती रहती थी। प्रार्थना करते समय मुझे उन प्रियजनों की भी याद आती थी जो स्वर्ग जा चुके थे। भगवान ने मुझे मौत से जुड़े दर्द और आँसुओं के बीच थोड़ा-बहुत ही सही, पर आगे बढ़ने में मदद की है। आज भी, प्रभु मुझे उन प्रियजनों की ओर देखने के लिए प्रेरित करते हैं जो मौत के डर, दर्द और आँसुओं के बीच हैं। मेरी दिली इच्छा है कि मैं उनके दर्द में शामिल होऊँ और उनके साथ रोऊँ। मैं प्रभु की ओर देखना और उनके साथ मिलकर प्रार्थना करना चाहती हूँ, और उनके साथ उम्मीद में खुशियाँ मनाना चाहती हूँ। दिन-ब-दिन, पल-पल, मैं प्रभु के साथ खूबसूरत यादें बनाना चाहती हूँ और उन्हें अपने दिल में संजोकर रखना चाहती हूँ।

[16 फरवरी, 2012]



श्रीमती इम बोंग-ही

हमारे चर्च में श्रीमती इम बोंग-ही नाम की एक 92 साल की महिला हैं। आज, मैंने उनकी बेटी के काम की जगह पर फ़ोन करके उस नर्सिंग होम का पता पूछा जहाँ वे रहती हैं, और हमारे चर्च के एक एल्डर (बुजुर्ग सदस्य) के साथ उनसे मिलने गया। उन्हें व्हीलचेयर पर बैठे देखकर मुझे बहुत हैरानी हुई; पिछली बार जब मैंने उन्हें देखा था, तब से वे काफ़ी बूढ़ी हो गई थीं। उन्होंने मुझे बताया कि अब उन्हें चीज़ें करने में बहुत मुश्किल हो रही है। इसलिए, एल्डर और मैंने उनका बायाँ हाथ पकड़ा और परमेश्वर पिता से प्रार्थना की। वे बस हमारे प्रति आभार जता रही थीं—श्रीमती इम, जो प्रभु, हमारे स्युंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च, हमारे सीनियर पादरी, और साथ ही मुझे और हमारे चर्च परिवार को बहुत प्यार करती हैं। जब मैंने धीरे से उनकी पीठ सहलाई, तो मैंने उन्हें स्वर्ग के अनंत राज्य में अपनी उम्मीद बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित किया। सुंदर कपड़ों में—जो शायद उनके बच्चों ने उन्हें तोहफ़े में दिए थे—और सलीके से कटे बालों के साथ, श्रीमती इम मेरे ख्यालों में बसी हैं; हालाँकि उनका शरीर दिन-ब-दिन कमज़ोर होता जा रहा है और उनकी हिम्मत जवाब दे रही है, पर मुझे भरोसा है कि परमेश्वर पिता, जो उनसे सबसे ज़्यादा प्यार करते हैं, उन्हें सहारा देंगे और मज़बूत बनाएँगे। अलग होने से पहले, उनकी कही एक बात मेरे मन में बस गई: "मेरे पास बहुत सारी यादें हैं।" उन बहुत से पलों की यादें जो परमेश्वर ने उन्हें स्युंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च लाने के बाद उनके दिल में बसाए थे... मुझे आज भी अच्छी तरह याद है कि जब वे स्वस्थ थीं, तो वे सड़कों पर घूमकर खाली डिब्बे इकट्ठा करती थीं और उनसे मिलने वाले पैसे चर्च में दान करती थीं। मुझे वह समय भी याद है जब डिब्बे इकट्ठा करते समय वे गिर गई थीं और उनके हाथ पर प्लास्टर चढ़ाना पड़ा था। दादी इम—जो पढ़-लिख नहीं सकती थीं, फिर भी चर्च के प्रति गहरे प्यार के कारण परमेश्वर के वचन का पालन करने की कोशिश करती थीं; जिन्होंने मुश्किल समय में भी ईमानदारी से अपना दसवां अंश (tithe) दिया, और गर्व के साथ मुझसे इस बारे में बात भी करती थीं; जिन्होंने सीनियर अपार्टमेंट में मिलने जाने पर हमेशा मेरे लिए कॉफ़ी बनाई—आज, जब हम अलग हो रहे थे, तो मैंने धीरे से उनके गाल को सहलाया, उनसे कहा कि मैं उनसे प्यार करता हूँ, और उन्हें गले लगाया।

[20 मार्च, 2013]



नेल क्लिपर

गुरुवार, 24 जुलाई, 2014 – दोपहर के खाने का समय।

आज, मैं काफी समय बाद दादी इम बोंग-ही से मिलने गया। मैं उनके नर्सिंग होम में नेल क्लिपर का एक सेट ले गया—जो चर्च की 34वीं सालगिरह का एक यादगार तोहफ़ा था—लेकिन वहाँ पहुँचकर देखा कि वह बिस्तर पर लेटी हुई थीं और सो रही थीं (या शायद उन्होंने बस आँखें बंद कर रखी थीं)। मैंने चुपचाप उनके बिस्तर के पास कुर्सी रखने की कोशिश की, लेकिन उन्हें शायद आवाज़ सुनाई दे गई; उन्होंने आँखें खोलीं, तो मैंने गर्मजोशी से उनका अभिवादन किया, कुर्सी रखी और उनके पास बैठ गया। मैंने उन्हें बताया कि मैं चर्च से एक तोहफ़ा लाया हूँ और उन्हें नेल क्लिपर सेट दिखाया। फिर, मैंने पूछा कि क्या मैं उनके नाखून काट सकता हूँ। हालाँकि मुझे पता था कि उनकी एक बेटी ने गलती से दो बार उनके नाखूनों के आस-पास की त्वचा काट दी थी—जिससे खून निकल आया था—फिर भी मैंने हिम्मत करके (?)—या शायद नादानी में—खुद ऐसा करना चाहा। मैंने उनसे कहा, "दादी, मैं इन्हें बेहतर ढंग से काट सकता हूँ," और उनके बाएँ हाथ के नाखूनों से शुरुआत की। इसके बाद, मैंने नाखूनों को चिकना करने के लिए एक और औज़ार (मुझे नहीं पता कि उसे क्या कहते हैं) का इस्तेमाल किया। कम से कम बाएँ हाथ का काम तो ठीक-ठाक हो गया। समस्या तब हुई जब मैं उनके दाहिने हाथ पर पहुँचा; नाखून मोटे थे और क्लिपर में आसानी से नहीं आ रहे थे। ज़बरदस्ती करने की कोशिश में (?), गलती से नाखून के आस-पास की थोड़ी सी त्वचा कट गई। वह चौंक गई और उन्हें दर्द हुआ, इसलिए मैंने उनसे बहुत माफ़ी माँगी। मैंने पूरे आत्मविश्वास के साथ कहा था कि मैं उनकी बेटी से बेहतर काम कर सकता हूँ, लेकिन आखिर में... *आह*। इसके बावजूद, दादी चुपचाप बैठी रहीं और मैंने उनके दाहिने हाथ की बाकी चार उंगलियों के नाखून काटे। मुझे लगा कि शायद वह इसलिए इतनी चुपचाप बैठी थीं क्योंकि उस समय वह कुछ और कर ही नहीं सकती थीं। हालाँकि ऑक्सीजन ट्यूब उनकी नाक के बजाय माथे पर रखी हुई थी, लेकिन जब मैंने पूछा, "दादी, क्या यह आपकी नाक में

नहीं होनी चाहिए?" तो वह सहमत हो गई, इसलिए मैंने उसे उनकी नाक में लगा दिया। ऐसा लग रहा था कि वह ऐसी स्थिति में थीं जहाँ वह अपने लिए लगभग कुछ भी नहीं कर सकती थीं। यहाँ तक कि वह अपनी उम्र भी भूल गई थीं; जब मैंने पूछा, "दादी, आप बानवे साल की हैं, है ना?" तो उन्होंने कहा कि उन्हें पता नहीं। दादी इम बोंग-ही को धीरे-धीरे कमज़ोर होते देख, मैंने उनसे पूछा, "दादी, आप प्रभु से प्यार करती हैं, है ना?" यह अच्छी तरह जानते हुए कि वह प्रभु, हमारे चर्च, और सीनियर पास्टर और उनकी पत्नी से प्यार करती थीं, मुझे ऐसा लगा जैसे मैं उनसे कोई सवाल नहीं पूछ रहा था, बल्कि इस सच को उनके सामने दोहरा रहा था। इसके बाद, मैंने उनके साथ स्युंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च में बिताए समय की यादें साझा कीं—खासकर वे पल जो उन्हें अच्छी तरह याद थे और जब भी मैं उनसे मिलने जाता था, तो वे अक्सर उनके बारे में बात करती थीं। हमने याद किया कि कैसे वह चर्च की रसोई में चावल के चार बड़े बर्तन बहुत मेहनत से धोती थीं—एक ऐसा काम जिसके बारे में उनका कहना था कि इससे उनकी उंगलियों की हालत पर असर पड़ा था। उन्हें वे दिन भी याद थे जब मैं एक युवा, कुंवारा प्रचारक था और चर्च की वैन चलाकर उन्हें और उनके पति को लेने और घर छोड़ने जाता था; उन्हें याद था कि उनके पति मुझसे पूछते थे कि मैं शादी कब करूंगा। मुस्कुराते हुए, मैंने उनसे कहा, "दादी, मेरी शादी को तो सत्रह साल हो चुके हैं।" दादी के साथ कई यादें साझा करते हुए, मैंने उनसे स्वर्गीय क्रोन-सा (सीनियर डीकनेस) किम यंग-ह्वा—मेरी अपनी सगी दादी—के बारे में बात की, जो अब स्वर्ग में हैं। मैंने यह बात इसलिए छेड़ी क्योंकि मुझे पता था कि दादी इम बोंग-ही को स्वर्गीय क्रोन-सा किम से इतना प्यार मिला था कि वह उन्हें अपनी पूरी ज़िंदगी कभी नहीं भूलीं। मैंने दादी इम से कहा कि जब प्रभु हमें बुलाएंगे, तो हम "सो जाएंगे" (यह समझाते हुए कि बाइबिल विश्वासियों की मृत्यु को नींद के रूप में बताती है) और एक ऐसे अनंत स्वर्ग में प्रवेश करेंगे जो बीमारी, दर्द, अकेलेपन और मृत्यु से मुक्त होगा; वहाँ, हम स्वर्गीय क्रोन-सा किम यंग-ह्वा और स्वर्गीय दादा इम जोंग-ह्वान (दादी इम बोंग-ही के पति) दोनों से फिर से मिलेंगे। इस बारे में बात करने के बाद कि हम सब प्रभु के साथ अनंत काल तक कैसे रहेंगे, मैंने परमेश्वर की स्तुति में भजन "सिंस आई मेट माय सेवियर" (जिसे "माई सोल हैज़ रिसीव्ड ग्रेस" के नाम से भी जाना जाता है) गाया और फिर उनके लिए प्रार्थना की। प्रार्थना के बाद जब मैंने उनके चेहरे की ओर देखा, तो मैंने उनकी बाईं आँख के कोने में आँसू आते देखे। उस दिन बातचीत के दौरान दादी इम बोंग-ही ने तीन बार अपना आभार व्यक्त किया; उनके शांत और आभारी व्यवहार को देखकर, मैंने धीरे से उनके माथे पर चूमा।

[26 जुलाई, 2014]

सीनियर केयर फैसिलिटी का दौरा

चर्च में अपनी मिनिस्ट्री की ड्यूटी खत्म करने के बाद, मैं सीनियर केयर फैसिलिटी गया, जहाँ प्यारे कपल, डीकन किम डोंग-यून और डीकन किम सेउंग-कान रहते हैं। जब मैं पहली बार डीकन किम डोंग-यून के कमरे में गया, तो वह बिस्तर पर लेटे हुए थे, छत की तरफ देखते हुए एक क्रिश्चियन रेडियो ब्रॉडकास्ट सुन रहे थे। किसी वजह से, वह आज रोज़ से ज़्यादा कमज़ोर और बूढ़े लग रहे थे। जैसे ही मैं अंदर गया, मैं उनका स्वागत करने के लिए उनके बिस्तर के पास रखी कुर्सी पर बैठ गया; उन्होंने हाथ बढ़ाकर मेरा दाहिना हाथ कसकर पकड़ लिया, तो मैंने भी उनके दोनों हाथों को अपने दोनों हाथों से मज़बूती से पकड़ लिया। पार्किंसंस बीमारी से पीड़ित होने के कारण—और शायद दवा की वजह से बहुत ज़्यादा चक्कर आने के कारण—वह सिर्फ़ 75 साल के होने के बावजूद अपने बिस्तर पर ही हैं। जब हम बात कर रहे थे, तो उन्होंने बताया कि वह कितनी बार अपने माता-पिता के बारे में सोचते हैं, जो पहले ही गुज़र चुके हैं और स्वर्ग चले गए हैं। नॉर्थ कोरिया से साउथ कोरिया के सफ़र को याद करते हुए उनकी आँखों में आँसू आ गए—खासकर वह पल जब उनके पिता ने उन्हें बर्फीले इलाके में अपनी पीठ पर लादकर ले जाया था, जबकि उनके पास जूते नहीं थे। उन्हें अपने गुज़र चुके पिता की बहुत याद आ रही थी। उन्होंने यह भी बताया कि जब भी वह महीने में एक बार हमारे चर्च आते थे, तो मेरी माँ को देखकर ही—जो उनकी ही उम्र की हैं—उनकी आँखों में आँसू आ जाते थे। यह एक बहुत ही दिल को छू लेने वाली मुलाकात थी। इसने मुझे उन समयों की याद दिला दी जब मैं नर्सिंग होम या इंटेंसिव केयर यूनिट में बुजुर्ग महिलाओं से मिला था; ऐसे मुश्किल हालात में भी, वे अक्सर अपनी माँ और पिता के लिए तरसती थीं। यह देखकर कि लोग बुढ़ापे में भी अपने गुज़रे हुए माता-पिता को कैसे याद करते हैं, ऐसा लगता है कि माता-पिता का प्यार सच में बहुत ज़्यादा होता है। डीकन से अलग होने से पहले, मैंने प्रार्थना करने के लिए अपना हाथ उनके माथे पर रखा, और उन्होंने अपने दोनों हाथ मेरे माथे पर रख दिए। फिर हमने गॉड फादर से—हमारे फादर गॉड से प्रार्थना की। प्रार्थना के बाद जब मैं उनके कमरे से निकला, तो मैंने देखा कि वह लगातार हाथ हिला रहे थे।

इसके बाद, मैं बगल वाली बिल्डिंग के उस कमरे में गया जहाँ डीकन किम सेओंग-ग्वान और सीनियर डीकनेस किम यांग-सुक रह रहे थे और दरवाज़ा खटखटाया। थोड़ी देर बाद, सीनियर डीकनेस बाहर आई और दरवाज़ा खोला; फिर मैंने डीकन किम सेओंग-ग्वान का दरवाज़ा खटखटाया और पूछा कि क्या मैं अंदर आ सकता हूँ, और उन्होंने मुझे अंदर बुलाया। अंदर जाने पर, मैंने देखा कि डीकन किम अपने बिस्तर पर लेटे हुए थे, उन्होंने मास्क पहना हुआ था। मुझे देखकर उन्होंने कहा, "मेरी तबीयत ठीक नहीं है।" उनकी बेटी भी कमरे में थी, इसलिए मैं डीकन के पास गया, उनका हाथ पकड़ा और प्रार्थना की। मैंने हमेशा रहने वाले भगवान से प्रार्थना की, डीकन के विश्वास और उम्मीद को बढ़ाया। मैंने भगवान पिता से प्रार्थना की कि हमेशा रहने वाले राज्य के लिए उनकी उम्मीद – जो जीसस में उनके विश्वास पर आधारित है – पक्की रहे। इसके बाद, सीनियर डीकनेस और बेटी के कहने पर कि मैं थोड़ी देर बैठूँ, मैं लगभग भागकर बाहर निकल गया – हाहा। यह सिर्फ़ तीन से पाँच मिनट की एक छोटी सी मुलाकात थी। ये दोनों सात साल से हमारे चर्च आ रहे थे, लेकिन इस सीनियर केयर फैसिलिटी में आने के बाद—जो चर्च से बहुत दूर है—अब वे महीने में सिर्फ़ एक बार आने का प्लान बना रहे हैं; हालाँकि, उनकी खराब सेहत को देखते हुए, यह देखना बाकी है कि वे अगले रविवार आ पाते हैं या नहीं। आखिर, हम नहीं जान सकते कि कल क्या होगा...

[रविवार दोपहर, 29 सितंबर, 2013]

स्वर्गीय भाई ली जिन-गू जिनका शांतिपूर्वक निधन हो गया

आज रविवार की इंग्लिश सर्विस खत्म होने के बाद, किचन के पास एक एल्डर से यह खबर सुनकर मुझे बहुत हैरानी हुई कि भाई ली जिन-गू का निधन हो गया है। मुझे बिल्कुल भी अंदाज़ा नहीं था कि वे इतनी अचानक गुज़र जाएंगे। लंच के समय भी मैंने उनकी बेटी, डीकनेस किम यून-ही से पूछा था कि फादर ली कैसे हैं, इसलिए उनके निधन की खबर सुनकर मुझे धक्का लगा। मैंने जल्दी से बाइबिल उठाई, और भाई ली जिन-गू के सबसे छोटे बेटे के साथ डीकन ली सियोक-वू के घर गया। वहाँ पहुँचकर, मैं फादर ली के कमरे में गया और देखा कि वे कुर्सी पर शांति से सो रहे थे। जब मैंने उनका हाथ छुआ, तो वह अभी भी गर्म था, लेकिन थोड़ा ठंडा भी महसूस हो रहा था। उन्हें इस तरह नींद में आखिरी साँस लेते हुए देखकर, मैंने डीकनेस किम यून-ही, डीकन ली सियोक-वू और उनकी पत्नी और बच्चों के साथ मिलकर फादर ली जिन-गू के पार्थिव शरीर के पास परमेश्वर की स्तुति और आराधना की। (जब स्वर्गीय एल्डर चोई जियोंग-ह्यो, जो संत ली जिन-गू की पत्नी थीं, का निधन हुआ था, तब भी हमने डीकन ली सियोक-वू और उनकी पत्नी के साथ उनके शरीर के पास परमेश्वर की आराधना की थी; यह लगभग 22 महीने पहले की बात है...)। हम परमेश्वर की आराधना धन्यवाद के साथ इसलिए कर पाए क्योंकि परमेश्वर स्वर्गीय फादर ली जिन-गू से प्रेम करते थे और उन्होंने उनका उद्धार किया। उनके बच्चे लगातार उनकी आत्मा के उद्धार के लिए प्रार्थना कर रहे थे, और लगभग दो साल पहले, उनकी पत्नी एल्डर चोई के अंतिम संस्कार के दौरान, परमेश्वर ने फादर ली जिन-गू के हृदय में कार्य किया, उनके हृदय के द्वार खोले और उन पर अपनी कृपा बरसाई। मुझे अच्छी तरह याद है कि परमेश्वर के प्रेम को जानने के बाद, फादर ली जिन-गू उस समय एक एल्डर के साथ हमारे घर आए थे ताकि बपतिस्मा ले सकें। इस प्रकार, परमेश्वर ने स्वर्गीय फादर ली जिन-गू को अपने जीवन के बिल्कुल अंतिम समय में यीशु को स्वीकार करने और बपतिस्मा लेने के लिए प्रेरित किया, और लगभग दो साल बाद उन्हें अपने पास बुला लिया। इसके अलावा, वे नींद में शांतिपूर्वक गुज़रे। इसलिए, हमने धन्यवाद के साथ परमेश्वर की स्तुति और आराधना की, और अंतिम संस्कार के समय भी हम ऐसा ही करेंगे। केवल परमेश्वर की कृपा से!

[11 अगस्त, 2014]



मेरी सबसे बड़ी बुआ के पति

इस रविवार सुबह, चर्च जाने से पहले, मैं उस नर्सिंग होम गया जहाँ मेरी सबसे बड़ी बुआ के पति—यानी मेरे फूफाजी—भर्ती थे। मुझे नहीं पता था कि वे कब आखिरी सांस लेंगे—और मुझे लग रहा था कि शायद आज ही वह दिन हो—इसलिए मैं उनसे मिलने गया। वहाँ पहुँचकर जब मैं कमरे में गया, तो मैंने देखा कि मेरी कज़िन—उनकी सबसे छोटी बेटी—अकेली कुर्सी पर बैठी थी। वह अपने पिता के पास लगातार बैठी थी, यहाँ तक कि रात भर भी वहीं रही थी; मुझे उसकी बहुत चिंता थी, लेकिन उसे हिम्मत से काम लेते देख मुझे अच्छा लगा। उसकी समझदारी की वजह से मैं फूफाजी के पास जा पाया; ऑक्सीजन मास्क लगे होने के बावजूद उन्हें ठीक से साँस लेने में तकलीफ़ हो रही थी, इसलिए मैंने अपना हाथ उनकी छाती पर रखा और मन ही मन भगवान से प्रार्थना की। मैंने तय किया कि चर्च के काम निपटाने के बाद मैं उनसे फिर मिलने जाऊँगा, ठीक वैसे ही जैसे पिछले रविवार को गया था। चर्च पहुँचने के बाद, मुझे फ़ैमिली ग्रुप चैट से पता चला कि उनका ब्लड प्रेशर खतरनाक हद तक गिर गया है, इसलिए मैंने चर्च के एक बुजुर्ग सदस्य से सलाह ली जो डॉक्टर थे। वे बुजुर्ग, जो मेरे फूफाजी को अपने ही परिवार का सदस्य मानते थे, उन्होंने मुझसे कहा कि आज का समय बहुत नाजुक हो सकता है। इसलिए, दोपहर की इंग्लिश सर्विस के दौरान, मैंने अपना फ़ोन अपनी जेब में रखा और सर्विस शुरू होने तक लगातार फ़ैमिली चैट पर अपडेट्स चेक करता रहा। सर्विस के बाद, उन बुजुर्ग सदस्य ने—जो लंच ब्रेक के दौरान नर्सिंग होम हो आए थे—मुझे बताया कि फूफाजी की हालत ऐसी लग रही थी जैसे वे ज़िंदगी के आखिरी पड़ाव पर हों, इसलिए मैं सीधे नर्सिंग होम गया, हाथ में बाइबिल लिए हुए। परिवार के कई सदस्य और रिश्तेदार वहाँ जमा थे और एक प्रार्थना-सभा कर रहे थे; मैं भी उन बुजुर्ग सदस्य के साथ भगवान की आराधना में शामिल हो गया। इसी बीच, मेरे दूसरे फूफाजी—जो एक पादरी थे और सर्विस का संचालन कर रहे थे—उन्होंने घोषणा की कि स्युंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च के सीनियर पादरी (यानी मैं) आ गए हैं। उन्होंने मुझसे उपदेश के बाद सर्विस का संचालन संभालने के लिए कहा, और मैंने विनम्रतापूर्वक उनकी बात मान ली। फूफाजी का बायाँ हाथ पकड़कर, मैंने पूरे दिल से भगवान

से प्रार्थना की। उसके बाद, हमने 'प्रभु की प्रार्थना' (लॉर्ड्स प्रेयर) पढ़ी; जैसे ही हमने प्रार्थना खत्म की, मेरी कज़िन ने कहा कि ऐसा लग रहा था जैसे उनके पिता की साँसें रुक गई हों। मैं नर्स के पास गया और उससे स्टेथोस्कोप से धड़कन जाँचने के लिए कहा। वह जल्दी से स्टेथोस्कोप लेकर लौटी, उनके दिल और आँखों की जाँच की, और हमें बताया कि उनका निधन हो गया है। और इस तरह, मेरी सबसे बड़ी मौसी के पति हमें छोड़कर चले गए। मौसी ने मुझे बताया कि अपनी आखिरी इच्छा में उन्होंने अंतिम संस्कार का इंतज़ाम मुझे—विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सीनियर पादरी को—सौंपा था। मेरे तीसरे मौसाजी—जो खुद भी एक पादरी थे—ने भी गुज़रने से पहले मुझसे ही उनके ताबूत में रखे जाने की रस्म (encoffining service) की अगुवाई करने को कहा था, और यहाँ तक कि प्रवचन का टेक्स्ट भी दिया था; और अब, मेरी सबसे बड़ी मौसी के पति ने भी ठीक वैसा ही किया था... *आह*। फ़्यूनरल होम के कर्मचारी शव ले जाने के लिए आ गए। मैं एक बार फिर अपने मौसाजी के पास गया, जो शांति से सोए हुए लग रहे थे, और उनके माथे, गाल और हाथ को छुआ। उनका शरीर ठंडा पड़ चुका था। उनका हाथ बिल्कुल सफ़ेद था। मैंने मन ही मन धीरे से कहा, "मौसाजी..."

[रविवार, 16 अगस्त, 2015]



हमें मिले समय को गँवाना नहीं चाहिए...

एक रविवार की सुबह, मैं उस नर्सिंग होम गया जहाँ मेरे प्यारे सबसे बड़े चाचाजी भर्ती थे। मैंने उन्हें ऑक्सीजन मास्क लगाकर सोते हुए देखा। उनकी मुश्किल से चल रही साँसों को देखकर, मैंने अपना हाथ उनके दिल पर रखा और परमेश्वर पिता से प्रार्थना की।

कोरियन सर्विस खत्म होने के कुछ ही देर बाद, मैंने हमारे फ़ैमिली ग्रुप चैट में मैसेज देखे। मैंने पढ़ा कि मेरे चाचाजी का परिवार—उनके बच्चे और पोते-पोतियाँ—अपने प्यारे पिता और दादाजी के कानों में अपनी आखिरी बातें कह रहे थे। मैंने अपने सबसे छोटे चाचाजी का भी एक मैसेज देखा, जो मिस्र में बहुत दूर मिशनरी के तौर पर सेवा कर रहे हैं; उन्होंने हमसे कहा था कि हम काकाओटॉक (KakaoTalk) के ज़रिए उनकी आखिरी बात पहुँचा दें—"धन्यवाद, और मैं आपसे प्यार करता हूँ"। वह कल अपने जीजाजी से मिलने के लिए मिस्र से खास तौर पर आ रहे हैं... लेकिन मुझे चिंता है कि क्या तब तक मेरे चाचाजी ज़िंदा रहेंगे। सालों पहले, जब मेरे सबसे छोटे चाचाजी भारत में सेवा कर रहे थे, तो वह कैंसर से मरने वाले अपने बड़े भाई से मिलने के लिए हवाई जहाज़ से आए थे, लेकिन रास्ते में ही उनके भाई का निधन हो गया; उन्हें भारत लौटने से पहले सिर्फ़ अंतिम संस्कार में शामिल होने का मौका मिला... मुझे डर है कि इस बार भी कहीं ऐसा ही न हो जाए।

मुझे उपदेशक (Ecclesiastes) 3:2 की बातें याद आईं: जन्म लेने का समय और मरने का समय होता है। "रोने का समय और हँसने का समय, शोक मनाने का समय और नाचने का समय" (वचन 4)। "प्यार करने का समय और नफ़रत करने का समय..." (वचन 8)।

मैं परमेश्वर के समय के बारे में सोचता हूँ। हमेशा अपने प्यारे माता-पिता से प्यार ज़ाहिर करने का मौका नहीं मिलता, और न ही हमेशा माफ़ करने या माफ़ी माँगने का समय मिलता है...

हमें उस समय को गँवाना नहीं चाहिए जो परमेश्वर ने हमें दिया है।

[17 अगस्त, 2015]

मुझे उनकी कमी खलेगी।

कल, शनिवार को, हमारे चर्च के एक बुजुर्ग सदस्य के लिए आखिरी सर्विस करने से पहले, हम भगवान की तारीफ़ करते रहे। मैंने सदस्य के परिवार और रिश्तेदारों को हिम्मत दी कि वे हॉस्पिस के बेड पर लेटे हुए उनके पास जाएं और उनसे अपनी आखिरी बातें कहें। सबसे पहले, एक सीनियर डीकनेस, अपने प्यारे पति को अलविदा कहते हुए बहुत रो रही थीं, और उनके कान में कुछ कहा। इसके बाद, उनकी इकलौती बेटी, जिसने अपनी माँ के साथ लंबे समय तक उनकी देखभाल की थी, अपने प्यारे पिता से आखिरी बातें कहते हुए रो पड़ी। जब सबने बारी-बारी से बेहोश सीनियर से कुछ बातें कहीं, तो हमने उस कमरे को भगवान के लिए एक पवित्र जगह बना दिया और तारीफ़ और पूजा की। सर्विस के बाद, परिवार को छोड़कर बाकी सब हॉस्पिस से चले गए; हालाँकि, लगभग तीन घंटे बाद, मुझे उस बहन से काकाओटॉक के ज़रिए एक मैसेज मिला। उसमें लिखा था कि हमारे प्यारे संत शांति से सो गए हैं और अब भगवान की बाहों में हैं। और बाद में, उन्होंने एक और काकाओटॉक मैसेज भेजा: "पास्टर, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। हर बार जब मैंने कोई मदद मांगी, तो आप आए और डैड और हमारे परिवार को तारीफ़ और वचन से दिलासा दिया, जिससे हम डैड को शांति से गॉड फादर की गोद में भेज सकें। डैड की आखिरी तस्वीर शांतिपूर्ण थी। मैं खुश हूँ।" मैंने भगवान का शुक्रिया अदा किया, शुक्रिया। आज रविवार है, और मैं चर्च जाने के लिए तैयार हो रहा हूँ। जब मैं एक कप कॉफ़ी के साथ पवित्र जगह के सबसे पीछे बैठा हूँ, तो मुझे लगता है कि मुझे उस प्यारे एल्डर की खाली सीट याद आएगी। मुझे याद आएगा कि वह अपनी प्यारी बेटी के साथ गाना बजाने वालों की सबसे पीछे वाली लाइन में भगवान की तारीफ़ गा रहे थे। मुझे उनकी याद आएगी।

[2016. 11. 21.]



श्रीमती चोई बुन-नाम

ईस्टर संडे की संयुक्त प्रार्थना सभा के बाद, जब हम एक-दूसरे का अभिवादन कर रहे थे और हाथ मिला रहे थे, तो मैं श्रीमती चोई बुन-नाम के पास गई—जो अस्सी साल से ज़्यादा उम्र की थीं—ताकि उनका हाल-चाल पूछ सकूँ। उन्होंने मेरी ओर देखा और एक प्यारी सी मुस्कान के साथ कहा, "पता नहीं प्रभु मुझे अपने पास कब बुलाएँगे?" मुझे वह पल आज भी अच्छी तरह याद है। उनके पति का बहुत पहले निधन हो गया था और उनके छह बच्चों में से दो भी गुज़र चुके थे; फिर, कुछ समय पहले, जब उन्होंने सुबह अपने उस बेटे को जगाने की कोशिश की जिसके साथ वह रहती थीं, तो उसे बेजान पाया—यह एक ऐसा दुखद हादसा था जिसने उन्हें गहरे शोक में डुबो दिया। उस बेटे के अंतिम संस्कार के बाद, उन्होंने मुझसे कहा, "मुझे भगवान से शिकायत है।" मैं उस माँ के दिल का हाल सोच भी नहीं सकती जिसे अपने छह बच्चों में से तीन को खोना पड़ा हो... फिर भी, ईस्टर की उस प्रार्थना सभा के बाद स्वर्ग जाने की अपनी इच्छा ज़ाहिर करते हुए श्रीमती चोई की मुस्कान को याद करके मुझे खुशी होती है।

[2013] 1 अप्रैल

स्वर्गीय श्रीमती चोई बुन-नाम की याद में

"मैं उस अपार्टमेंट कॉम्प्लेक्स में गई जहाँ श्रीमती चोई बुन-नाम—जो हमारी चर्च की एक प्यारी सदस्य थीं—रहती थीं। हालाँकि मुझे लगा था कि शायद उनसे मुलाकात न हो पाए, लेकिन किस्मत से वह मुझे ऑगन में मिल गई और हम साथ-साथ उनके अपार्टमेंट में गईं। जब हम मेज़ पर बैठीं, तो उन्होंने फ्रिज से पानी की

बोतल निकाली; फिर, मूँग दाल का आधा खाया हुआ पैनकेक एक तरफ़ हटाकर, उन्होंने मुझे उसके नीचे रखा एक ताज़ा पैनकेक दिया। उन्हें कुछ भी खाने का मन नहीं था और वह मुश्किल से ही कुछ खा पाती थीं; चक्कर आने और तेज़ दर्द से परेशान होकर उन्होंने कहा कि जीने से बेहतर तो मौत है। मैंने उनसे कहा, 'हम स्वर्ग में प्रभु के साथ हमेशा रहेंगे—एक ऐसी जगह जहाँ दर्द, अकेलापन, दुख और मौत नहीं है।' यह सुनकर उन्होंने कहा कि वह जल्द ही उस स्वर्ग में जाना चाहती हैं। मैंने पूछा, 'आप यीशु में विश्वास करती हैं, है ना?' और उन्होंने जवाब दिया, 'हाँ, करती हूँ।'" जब मैंने उसका विश्वास का बयान सुना, तो मैं अपनी कुर्सी से उठा, उसके पास गया, उसके कंधों पर हाथ रखे और ईश्वर से प्रार्थना की। जब मैं वहाँ से निकलकर दरवाज़े की ओर जा रहा था, तो उसने 'पास्टर...' कहकर मुझे बुलाते हुए मेरे पीछे आने की कोशिश की; इसलिए मैं वापस मुड़ा और उसे गले लगा लिया। वह मुझ पर झुककर रोने लगी और मैंने उसे कसकर, दिलासा देते हुए गले से लगा लिया।

[5 सितंबर, 2017]



निष्कर्ष

मौत हम सभी का आखिरी अंजाम है; कोई भी इससे बच नहीं सकता। इसलिए, हमें अपनी मौत के बारे में गहराई से और बार-बार सोचना चाहिए। ऐसा करने के लिए, हमें शादियों के बजाय अंतिम संस्कार में शामिल होने को प्राथमिकता देनी चाहिए। जब हम किसी अंतिम संस्कार में जाते हैं, तो हमें न केवल अपनी मौत के बारे में सोचना चाहिए, बल्कि यह भी सोचना चाहिए कि हमें कैसे जीना चाहिए और अपनी ज़िंदगी को कैसे एक सार्थक अंजाम तक पहुँचाना चाहिए। इसके अलावा, अपने प्रियजनों की मौत के ज़रिए भी, हमें गंभीरता से सोचना चाहिए कि एक संत की मौत कैसी होती है—एक ऐसी मौत जो परमेश्वर की नज़र में अनमोल और सुंदर हो।

ऐसी अनमोल और सुंदर मौत का अनुभव करने के लिए, हमें मौत के प्रति सही नज़रिया अपनाना होगा। इस नज़रिए और बाइबल की शिक्षाओं से प्रेरित होकर, हमें यह सीखना होगा कि इस दुनिया में परमेश्वर द्वारा दिए गए समय में कैसे और किस मकसद के लिए जीना है। हमें यीशु मसीह की मौत और जी उठने पर पक्के विश्वास के साथ उस मिशन को पूरा करना है जो प्रभु ने हममें से हर एक को सौंपा है। बेशक, इस मिशन को पूरा करने में दुख और मुश्किलें तो आएँगी ही। फिर भी, प्रेरित पौलुस की तरह, हमें अपनी ज़िंदगी से ज़्यादा प्रभु द्वारा दिए गए मिशन को अहमियत देनी चाहिए; हमें इसे पूरा करने के लिए मौत का सामना करने को तैयार रहना चाहिए, और—किसी भी मुश्किल के बीच—उस महिमा की उम्मीद के साथ मेहनत और ईमानदारी से काम करना चाहिए जो हमारा इंतज़ार कर रही है। हो सकता है कि राजा हिजकिय्याह की तरह, हमें भी जानलेवा बीमारी का सामना करना पड़े। ऐसे पलों में, जब हम इंसानी कमज़ोरी को गहराई से महसूस करते हैं और सच्चे दिल से परमेश्वर की मदद माँगते हैं, तो अगर वह हमें और ज़िंदगी देता है, तो हमें मौत के उस नज़रिए से प्रेरित होकर और अपने मिशन के प्रति समर्पित होकर सिर्फ़ प्रभु के लिए और भी पक्के इरादे से जीना चाहिए। हमें गेहूँ के एक दाने की तरह बनना चाहिए, जो मिशन की भावना से जल रहा हो—एक ऐसा रास्ता जिसके लिए कुर्बानी की ज़रूरत होगी ही। हमें ऐसी कुर्बानी को भी परमेश्वर की

कृपा का काम मानकर स्वीकार करना चाहिए, और सच्चे दिल से यह चाहना चाहिए कि—हमारी अपनी मौत के ज़रिए भी—यीशु मसीह की खुशबू और परमेश्वर की महिमा ज़ाहिर हो।

जी उठने की उम्मीद रखने वालों के तौर पर, हमें ज़िंदगी और मौत के दोराहे पर खड़े होने पर भी परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, और ऐसी ज़िंदगी जीनी चाहिए जो यीशु मसीह का सम्मान करे, जब तक कि वह हमें अपने पास न बुला ले। ऐसा करते हुए, हमें मरने से पहले उन सभी को माफ़ कर देना चाहिए जिन्हें माफ़ी की ज़रूरत है और उन सभी के साथ मेल-मिलाप कर लेना चाहिए जिनके साथ मेल-मिलाप की ज़रूरत है। इसके अलावा, हमें मिले समय की कद्र करनी चाहिए और प्रभु के वचनों के अनुसार जीना चाहिए—यानी परमेश्वर और अपने पड़ोसियों से और भी गहरे प्रेम के साथ। हमें कभी भी ऐसा कुछ नहीं करना चाहिए जिसका हमें बाद में पछतावा हो। यह गहराई से समझते हुए कि हमारे पास सच्चा प्रेम करने के लिए ही समय है, हमें अपने परिवारों, चर्च के साथियों और पड़ोसियों के साथ प्रभु के प्रेम से—ऐसा प्रेम जो मृत्यु से भी अधिक शक्तिशाली है—जुड़कर जीना चाहिए। तब, जब प्रभु हमें बुलाएँगे, तो अपनी सांसारिक जिम्मेदारियों को पूरा करने और अपने प्रियजनों से उचित विदाई लेने के बाद, हम प्रभु की गोद में शांति से विश्राम करेंगे। मैं पूरे दिल से प्रार्थना करता हूँ कि इस दुनिया से जाने के बाद, पृथ्वी पर हमारा मसीह-केंद्रित जीवन हमारे परिवारों, चर्च के साथियों और हमारे आस-पास के सभी लोगों के लिए सुंदर यादों के रूप में बना रहे।

